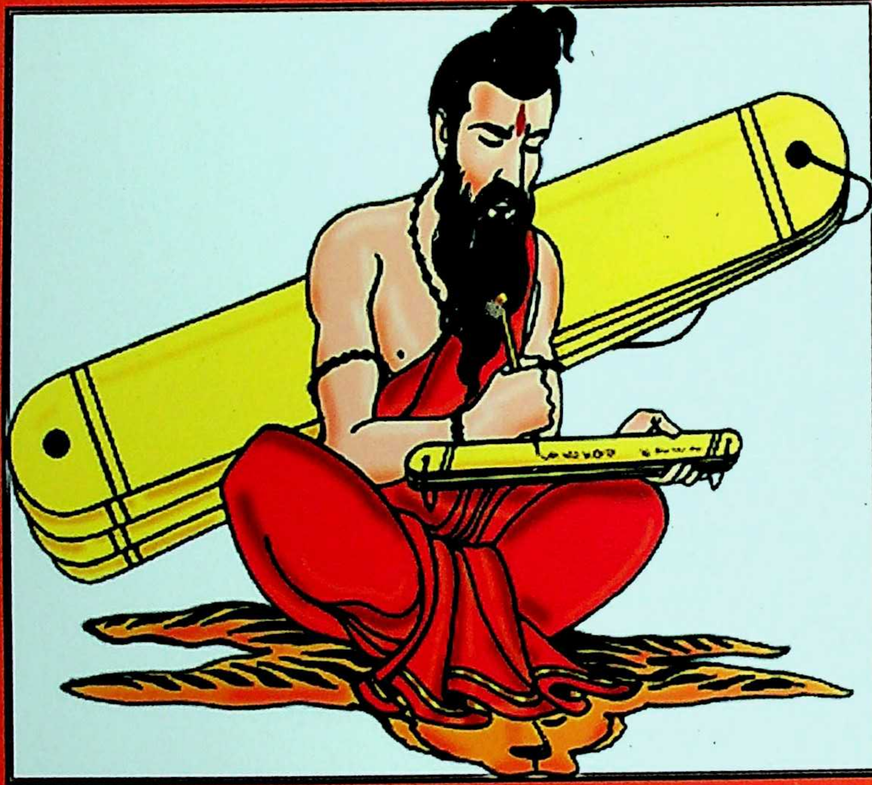


ॐ

अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः

संकलनकर्ता

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

वार्ड नं-3, कैलास गेट, डाकः कैलास गेट,
मुनि की रेती, ऋषिकेश, तह0- नरेन्द्रनगर,
जिला: टिहरी गढ़वाल, 249137 उत्तराखण्ड
चलदूरभाष्: 9557130251
ईपत्र : swsdsr@gmail.com
Web: www.satyamsadhana.org

क्र.सं.	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	मूल्य
1.	शिवपूजापद्धतिप्रकाशः	मुफ्त
2.	योगपंचदशी	100
3.	सर्वदर्शनसारः	175
4.	श्रीचक्रपूजापद्धतिप्रकाशः	250
5.	वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः	120
6.	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम्	120
7.	श्रीदुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः	250
8.	श्रीदुर्गासप्तशतीहोमविधिः	250

क्र.सं.	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	मूल्य
9.	उणादिकोशः	30
10.	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
11.	शिव-शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
12.	Holistic Yoga	220
13.	An Advatik View of Kantian Thoughts	560
14.	Wisdom of Yoga	Free
15.	लघुसिद्धान्तकौमुदी, तर्कसंग्रहः, अर्थसंग्रहः	50
16.	अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः	300

ॐ

अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः

संकलनकर्ता
स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर
वार्ड नं-3, कैलास गेट, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषिकेश
तह0- नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल, 249137 उत्तराखण्ड
चलदूरभाष्: 9557130251
ईपत्र : swsdsr@gmail.com   Web: www.satyamsadhana.org

ग्रन्थनामः-अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः
प्रकाशकः- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,** ऋषिकेश

प्रथम संस्करण : गुरु पूर्णिमा, 27 जुलाई 2018

प्रतियां : 1000 (एक हजार)

प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सम्पादक मण्डल : स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती और पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल
अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,
ग्राम/डाक- वार्ड नं 3, कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषिकेश, तह0 : नरेन्द्रनगर, जिला: टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
दूरभाष संख्या:- 91-9557130251, ईपत्र : swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 300/=

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश

प्रस्तावना

मानवमात्र के इहलोक व परलोक के सुखप्राप्ति और जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्षप्राप्ति हेतु ऋषिमुनियों ने निष्कामकर्मयोग और ज्ञानयोग के बीच में पंचदेव उपासना रूपी निष्कामभक्तियोग को रखा है। वैदिक सनातन धर्म में पंचमहाभूतों (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के अधिष्ठात्री देवताओं को पंचदेव कहा है- गणेश, विष्णु, सूर्य, शक्ति और शिव। प्रस्तुत ग्रन्थ विविध फल प्राप्ति के लिये पूजा पाठ करने वाले व उपासना करने वाले सर्व सामान्य तथा साधक, जिज्ञासु आदि के लिये है। पूर्व में मुद्रित शिवपूजापद्धतिप्रकाशः, पूर्णिका सहित श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः, वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः, दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः, दुर्गासप्तशतीहोमविधिः को पढ़कर पाठकों, जिज्ञासुओं, कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं उपासकों ने 'अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः' को प्रकाशित करने के लिये निवेदन किया। इसलिये हमने 'अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः' को मुद्रित करने का निर्णय लिया है। अतः पूर्वोक्त उन सब की प्रेरणा से सर्व प्रथम इस ग्रन्थ 'अनुभूतानुष्ठानप्रकाशः' का संकलन करने के लिये प्रयास करने लगा तो पूर्ववत् दक्षिण व उत्तर भारत के अनेकों पण्डितों ने सहयोग दिये हैं। विशेषतः पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल जी ने तो संशोधन कार्य में भी पूर्ण सहयोग दिये हैं जो कि अविस्मरणीय ही नहीं अपितु अत्यन्त श्लाघनीय है। इसकी सफलता में अनेक प्रकार से सहयोग देने वाले सभी का मैं अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ। पूर्ववत् इस ग्रन्थ से सभी को मार्गदर्शन मिले और सभी लाभान्वित हों ऐसी प्रार्थना सनातन गुरु परम्परा से करते हुये सद्गुरुदेव के चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

सभी की आत्मा
स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

विषयसूची

2.16-1 सर्वतोभद्रमण्डलहोमः, 2.6-2 एकलिंगतोभद्रहोमः, 2.17-1 फलीकरणहोमः,
2.17-2 स्थापितदेवतानां पूजनम्, 2.18-1 सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञक (स्विष्टकृत्) होमः, 2.18-2 व्याहृतिहोमः,
2.18-3 प्रायश्चित्तसंज्ञकहोमः, 2.19 बलिदानम्, 2.20 पूर्णाहुतिहोमः, वसोर्धाराहोमः, पूर्णपात्रदानं च;
2.21 भस्मधारणम्, संस्रवप्राशनं, प्रणीताविमोकः; 2.22 प्रदक्षिणा, गोदानम्; 2.23 श्रेयः सम्पादनम्, अभिषेकः;
2.24 अवभृथस्नानम्, 2.25 ब्राह्मणभोजनञ्च।

6. चित्रों के नाम की सूची: **437-440**

1, 2. श्रीसरस्वतीयन्त्रम्, 3. श्रीभुवनेश्वरीयन्त्रम्, 4, 5. श्रीशिवयन्त्रम्, 6. श्रीमृत्युञ्जययन्त्रम्, 7. श्रीमृत्युञ्जयाख्यमृत्युदूरकयन्त्रम्,
8. श्रीमृत्युञ्जयकवचयन्त्रम्, 9. श्रीगायत्रीयन्त्रम्, 10. श्रीदक्षिणामूर्तियन्त्रम्, 11. श्रीचिन्तामणियन्त्रम्, 12. श्रीवेव्यासयन्त्रम्
13, 14. श्रीभैरवयन्त्रम्, 15. श्रीबगलामुखीयन्त्रम्, 16. श्रीगणेशयन्त्रम्, 17, 18. श्रीगौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्,
19. श्रीकूर्मचक्रम्, 20, 21. श्रीवास्तुमण्डलम्-64 पद, 22, 23. श्रीवास्तुमण्डलम्-81 पद, 24. हवनकुण्डस्थयन्त्रम्/चक्रम्

1 विविधविषयखण्डः

1.1-1 पूजा - पाठ आदि शुभ कर्म करने के लिये व्यक्ति को ब्रह्ममुहूर्त में ही उठना चाहिये। जैसे कि मनुस्मृति में कहा है-

'ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्ध्येत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमेव च।।'

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ईश्वर, धर्म और शरीर के क्लेशों व उनके मूल कारणों का चिन्तन करें (वेदतत्त्वार्थ = ईश्वर)। अतः यह जानना जरूरी है कि ब्रह्ममुहूर्त किस समय को कहा जाता है।

1.1-2 अतः **ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय** जानें - ब्रह्ममुहूर्त का निर्णय विष्णुपुराण में दिया है-

'रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः। स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने।।

पंचपंच उषःकालः सप्तपंचारुणोदयः। अष्टपंच भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः।।'

अर्थात् रात्रि के अन्तिम याम (अन्तिम 3 घण्टा) के तीसरे मुहूर्त को ब्रह्म मुहूर्त समझें, वह समय उठने के लिये विहित है। यानि 6 बजे को सूर्यास्त माने तो 6 से 9 प्रथम याम, 9 से 12 द्वितीय याम, 12 से 3 तृतीय याम और 3 से 6 अन्तिम याम है। 45 मिनट का मुहूर्त मानकर तीसरा मुहूर्त होगा 4:30 बजे से 5:15 बजे तक का समय - यही ब्रह्म मुहूर्त है। उसके बाद के 25 कला यानि 10 मिनट (5.15-5.25) उषाकाल है, तदनन्तर 35 कला यानि 14 मिनट (5.25-5.39) अरुणोदय काल है, उसके बाद के 40 कला यानि 16 मिनट (5.39-5.55) प्रातः काल है, तदुत्तरकाल (5.55-6.00) को सूर्योदय काल कहा गया है।

1.1-3 रत्नावली में **ब्रह्ममुहूर्त में न उठने के दोष** के बारे में कहा है-

'ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी। तां करोति द्विजो मोहात्पादकृच्छ्रेण शुध्यति।।'

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में जो निद्रा की जाती है वह पुण्य का क्षय करनेवाली है, लेकिन मोहवशात् जो द्विज उस (ब्रह्म मुहूर्त) में सोता है वह पादकृच्छ्रव्रत (1 पाद यानि 1 पाव, अर्थात् सूर्यास्त तक 1 पाव जल पीकर ही रहना है) से ही शद्ध होता है।

1.1-4 प्रातः उठनके के बाद बिस्तर पर बैठे हुये ही दोनों हथेलियों को परस्पर मल कर एक मिनट के लिये आंखों पर रखें और अपने सामने हथेलियों को देखते हुये निम्न मन्त्र को पढ़ें व भावना करें-

'कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्द प्रभाते करदर्शनम्।।'

तत्पश्चात् जमीन पर पैर रखने से पहले हाथ से भूमि को स्पर्श कर निम्न मन्त्र पढ़ें-

'समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।'

तदनन्तर शौच आदि नित्य कर्म करें, तदर्थ जब निकले तब निम्न बातों का ध्यान रखें।

1.2 प्रातः काले दर्शनीयादर्शनीयपदार्थाः-

आचारप्रदीप में कहा है-

'श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितं तथा। प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते।।'

अर्थात् प्रातः जागने के बाद श्रोत्रिय ब्राह्मण, सौभाग्यवती स्त्री, गौ, वैदिक अग्नि और आहिताग्नि त्रैवर्णिक का दर्शन करें उससे वह सकल आपदाओं से मुक्त होता है। अन्यग्रन्थ में भी कहा है-

'भारद्वाजमयूराणां चाषस्य नकुलस्य च। प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठे विशेषतः।।'

अर्थात् प्रातःकाल अपने बायीं ओर से निकलता हुआ चक्रवाक (चातक) पक्षी, मयूर, नीलकण्ठ पक्षी और नेवला को देखें तो वह अत्यन्त शुभ है। नागदेव ने भी कहा है-

'पापिष्ठं दुर्भगं चान्धं नग्नमत्कृत्तनासिकम्। प्रातरुत्थाय यः पश्येत्तत्कलेरुपलक्षणम्।।

भल्लातकं कर्षफलं काकमार्जारमूषकम्। क्लीबं च गर्दभं चैव न पश्येत्प्रातरेव हि।।'

(भल्लाटकं-ऐसा भी पाठभेद है जिसका अर्थ है गंजा।) अर्थात् प्रातः उठकर जो व्यक्ति पापी, दुर्भगा, अन्धा, नग्न अथवा कोढी को देखें तो समझें की वह दर्शन लड़ाई का सूचक है। प्रातः उठकर भिलावे का पौधा, खाई में उत्पन्न जंगली कड़वा (जहरीला) फल, कौवा, बिल्ली, चूहा, नपुंसक और गदहा को नहीं देखना चाहिये।

1.3-1 शौचकरणे दिशानिर्णयः-

यमस्मृति में कहा है कि-

'प्रत्यङ्मुखस्तु पूर्वाह्णेऽपराह्णे प्राङ्मुखस्तथा। उदङ्मुखस्तु मध्याह्ने निशायां दक्षिणामुखः।।'

अर्थात् पूर्वाह्ण में (सूर्योदय से 10 बजे तक) पश्चिमाभिमुख, मध्याह्न में (10 बजे से 2 बजे तक) उत्तराभिमुख, अपराह्ण में (2 बजे से सूर्यास्त तक) पूर्वाभिमुख और रात्रि में दक्षिणाभिमुख बैठकर शौच कर्म करें।

1.3-2 शौचकाले यज्ञोपवीत धारणनिर्णयः - आह्निककारिका में -

'मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके *। उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत्।।' (* कर्णयोर्द्वयोः- पाठभेद है)

अर्थात् मूत्रविसर्जन काल में दाहिने कान पर, मलत्याग काल में बायें कान पर अथवा सिर पर घुमाते हुए दोनों कान पर यज्ञोपवीत को धारण करे और मैथुन काल में उपवीति ही रहे। सायणीय में कहा है-

'मलमूत्रं त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा।।'

अर्थात् जो द्विज यदि कान पर डालना भूलकर मल मूत्र को त्यागता है तो वह उसी समय उस धारित यज्ञोपवीत का विधिवत् उत्सर्जन कर नया यज्ञोपवीत धारण करे।

1.4 कुल्ला (गण्डूष) कर शुद्ध होना -

आश्वलायन में -

'मूत्रे (4) पुरीषे (12) भुक्त्यन्ते (16) रेतः प्रस्रवणे (8) तथा। चतुरष्ट द्विषट् द्व्यष्ट गण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात्।।'

अर्थात् मूत्र त्यागने पर 4 बार, मल त्याग करने पर 12 बार, भोजन के बाद 16 बार और स्वप्न दोष होने पर 8 बार कुल्ला करने से ही द्विज शुद्ध होता है।

1.5 मौनपूर्वक करने योग्य कर्म -

हारीतस्मृतिः-

'उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने। श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्।।'

अर्थात् मलत्याग, मैथुन, मूत्रत्याग, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजन काल - इन छह कर्मों को करते वक्त (तथा स्वप्नदोष होते वक्त) मौन आचरण करें। आङ्गिरसस्मृतिः-

'सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्ये भोजने दन्तधावने । पितृकार्ये च दैवे च तथा मूत्रपुरीषयोः।।
गुरूणां सन्निधौ दाने योगे चैव विशेषतः। एतेषु मौनमातिष्ठन्स्वर्गं प्राप्नोति मानवः।।'

अर्थात् जो मनुष्य दोनों सन्ध्यावन्दन काल में तथा जप, भोजन, दन्तधावन, श्राद्ध, देवपूजन, मल-मूत्र त्याग, दान और योगसाधना काल में और गुरु के सान्निध्य में मौन रहता है वह निश्चित ही स्वर्ग को प्राप्त करता है।

1.6 दन्तधावन विधिः-

1.6-1 दन्तधावन में दिशाज्ञान -

'प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च। दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः।।
उत्तरेण गवां नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च। पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान्कामानवाप्नुयात्।।'

अर्थात् दन्त शोधन करते समय पूर्वाभिमुख हो तो उसे धृति, सुख और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है तथा ईशानकोणाभिमुख हो तो समस्त कामनायें पूरी होंगी। यदि दक्षिणाभिमुख हो तो कष्ट, पश्चिमाभिमुख हो तो पराजय, उत्तराभिमुख हो तो गौ आदि धन सहित स्त्री और परिजनों का नाश प्राप्त होता है।

1.6-2 दन्तमार्जनी (दातून) प्रार्थना मन्त्र -

दातून (टूथब्रश) को हाथ में लिये हुये विश्वामित्रकल्प में बताये गये प्रार्थना मन्त्र का पाठ करे-

'आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून्वसूनि च। ब्रह्म प्रज्ञां मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते।।'

अर्थात् हे वनस्पते! तुम मुझे आयु, बल, यश, वर्चस्व, सन्तान, पशु, धन, प्रज्ञा, मेधा और वेद को दो। चकार अनुक्त सकल शुभ के समुच्चय के लिये है।

1.6-3 दन्तधावन मन्त्र पारस्करगृह्यसूत्र (2.6.17) में इस प्रकार दिया है-

'अन्नाद्याय व्यूहध्वश्वसोमो राजाऽयमागमत्। स मे मुखं प्रमाक्ष्यंते यशसा च भगेन च।।'

इति मन्त्रेणौदुम्बरेण दन्तान्धावेत्। मुखप्रक्षालन करके गणेश, गौ सूर्य, तुलसी, नारायण (विष्णु), देवी, शिव, राम, कृष्ण, नवग्रह इत्यादि की स्तुति द्वारा स्मरण करें।

1.7-1 उष्णोदकस्नाविधिः -

यमस्मृति में कहा है -

'आप एव सदा पूतास्तासां वह्निर्विशोधकः। तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाम्भः पावनं स्मृतम्।।'

अर्थात् यद्यपि जल अपने आप में पवित्र है फिर भी अग्नि उसका शोधक है। इसलिये सभी काल में गरम जल ही पवित्रकारक है, अतः सालभर गरम जल से ही नहाना चाहिये। मारीचकल्प में कहा है -

'भूमिष्ठमुद्धृतं वापि शीतमुष्णमथापि वा। गांगं पयः पुनात्येव पापमामरणात्कृतम्।।'

अर्थात् भूमि (कुंआ) में स्थित अथवा रेहट (पम्प आदि) से उद्धृत जल ठण्डा हो अथवा गरम का आमरण पर्यन्त सेवन करने (स्नानादि में प्रयोग करने) से वह गंगा जल के समान पापों का नाश करता है। अन्यत्र भी कहा है -

'सरित्सु देवखातेषु तीर्थेषु नदीषु च। क्रियास्नानं समुद्दिष्टं स्नानं तत्रामलाः क्रियाः।।'

अर्थात् झरने, मन्दिर का कुंआ, तीर्थ और नदी में ही क्रिया (कर्म) और स्नान करने का विधान है। उनमें व उनसे कृत कर्म व स्नान अत्यन्त पवित्र कारक होते हैं। तथा

'वाप्यां कूपे तडागे वा नद्यां वा चोष्णवारिणा। प्रातः स्नानं सदा कुर्यादुष्णेनैव सदातुरः।।'

अर्थात् बावड़ी, कुंआ, तालाब, नदी अथवा गरम जल से ही प्रातः स्नान करना चाहिये। आतुर यानि रोगी हो तो सदा गरम जल से ही स्नान करें।

1.7-2 **स्नान करने की विधि-**

बैठकर नहाने के लिये एक लकड़ी का पाटा रख लें और बाल्टी में पानी भर लें। पाटे पर जल को छिड़कते हुये निम्न मन्त्र का पाठ करें-

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरिकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।'

अब पाटे पर बैठें और बायें हाथ से बाल्टी में से एक लोटा/मग्गा पानी लेकर दाहिने हथेलि के उपर से निम्न मन्त्र का पाठ करते हुये बाल्टी में ही छोड़ें-

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।'

अब पुनः अपने ऊपर प्रोक्षण करें-

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरिकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।'

अब स्नान करें, स्नान करते वक्त भगवान के नाम स्मरण व उच्चारण करते हुये स्नान करें। स्नान के पश्चात् शुभ्र वस्त्र को पहनते वक्त व केश (बालों) को संस्कारित करते वक्त कुछ मन्त्र जो नित्य प्रातः स्मरण करने चाहिये उन्हें दर्शाया गया है उनका पाठ करें।

1.8 'नित्य प्रातः स्मरणीयमंत्राः'

ॐ गं महागणाधिपतये नमः। ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः। ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐकाराय नमः। ॐ श्रीसर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वाभ्यो देवीभ्यश्च नमः सर्वेभ्यो गुरुभ्यो नमः। ॐ श्रीनवदुर्गायै नमः। ॐ श्रीगंगायै नमः। ॐ नमः शिवाय। ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः। ॐ श्रीभगवते परशुरामाय नमः। ॐ श्रीजगद्गुर्वाद्यशंकराचार्याय नमः (अपने संप्रदाय के आद्य आचार्य को स्मरण करें)। ॐ श्रीशिवानन्दसरस्वत्यै परमगुरवे नमः (अपने परमगुरु यानी दादा गुरु को स्मरण करें)। ॐ श्रीसत्यानन्दसरस्वत्यै गुरवे नमः (अपने दीक्षा गुरु को स्मरण करें)। श्रीहरिहरतीर्थाय नमः। ॐ श्रीरामानन्दसरस्वत्यै नमः (अपने विद्या गुरुओं को स्मरण करें)। ॐ श्रीगणेशाय नमः। ॐ श्रीसूर्यनारायणाय नमः। ॐ श्री विष्णवे नमः। ॐ श्रीसर्वलिंगाय नमः। ॐ श्रीचक्रराजस्थमहाराज्ञिमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। ॐ श्रीचक्रराजाय नमः। ॐ श्री राजराजेश्वर्यै नमः। ॐ श्रीचक्रराजस्थसर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वाभ्यो देवीभ्यश्च नमः। ॐ श्री श्रीसत्यानन्दगुरवे नमः। ॐ श्री सत्यानन्दगुरुचरणपादुकाभ्यां नमः। ॐ श्रीदत्तात्रेयाय नमः। ॐ श्रीदत्तगुरुचरणपादुकाभ्यां नमः। ॐ श्रीशंकरगुरवे नमः। ॐ श्रीशंकरगुरुचरणपादुकाभ्यां नमः। ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ श्रीमहादेवाय शिवाय नमः। ॐ श्रीकार्तिकेयाय नमः। ॐ श्रीकृष्णाय नमः। ॐ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः। ॐ श्रीमूकाम्बिकायै नमः। ॐ श्री गायत्र्यै नमः। ॐ भूर्भुस्वःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। ॐ श्रीमहामृत्युंजयाय नमः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ श्री पञ्चदशाहयन्त्रस्थमहालक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रीगणेशाय नमः। ॐ श्रीलक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रीसरस्वत्यै नमः। ॐ श्री नर्मदेश्वराय नमः। ॐ श्रीद्विहस्ताभ्यां

नमः। ॐ श्रीद्विहस्ताभिमानिदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीशंखाय नमः। ॐ श्रीशंखाभिमानिदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीघंटराजाय नमः। ॐ श्रीघंटाराजाभिमानिदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीशालग्रामाय नमः। ॐ श्रीशालग्रामभिमानिदेवताभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमहालक्ष्म्यै नमः। (केवल संन्यासियों के लिये - ॐ भूः संन्यस्तं मया। ॐ भुवः संन्यस्तं मया। ॐ स्वः संन्यस्तं मया। ॐ भूर्भुस्वःस्वः संन्यस्तं मया। ॐ सर्वं संन्यस्तं मया। अभयं सर्वभूतेभ्यो प्रदत्तं मया। ॐ हंसः सोऽहं परमात्मा चिन्मयोऽहं सच्चिदानन्दस्वरूपोऽहं सोऽहं ब्रह्म। ॐ हंसः हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।।) ॐ ह्रीं दुं दुर्गे उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा। ॐ रथांगपाणये भयापहाय निग्रहाय चक्रिणे नमः। ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।। ॐ नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि। प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च।। ॐ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। शरणागतदीनार्त परित्रापरायणे। सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।। ॐ दीनदयालु बिरदु संभारि, हरहु नाथ मम संकट भारि। ॐ ह्रीं ॐ। ॐ श्रीं ॐ। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। ॐ हौं जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं हौं ॐ। (केवल संन्यासियों के लिये - अहं ब्रह्मास्मि।) हर हर गंगे हर। हरिः ॐ तत्सत्। ब्रह्मार्पणमस्तु। सर्वार्पणमस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

तत्पश्चात् नित्य सन्ध्या, पूजा-पाठ आदि (द्वितीय खण्ड में देखें) तथा अपनी साधना आदि से निवृत्त होकर बालभोग (यानि नाश्ता)/दूध (अथवा चाय, काफी आदि पेय पदार्थ) भोजन आदि को निम्न विधि से ग्रहण करें-

1.9 **नाश्ता/पेय आदि भोजनग्रहणविधिः**

हाथ-पैर धोकर दक्षिण अथवा पूर्व की ओर मुख करके आसन के ऊपर भोजन के लिये बैठें -

1. **ॐ भूर्भुवःस्वः**- इस मन्त्र में से दो बार आचमन करें।
2. **ॐ श्री शिवार्पणमस्तु** - भोजन के दोनों हाथ जोड़कर इस मंत्र को बोलें।
3. **ॐ अस्माकं नित्यमस्त्वेतत्** - दोनों हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना करें।
4. **ॐ सत्येन त्वर्तेन त्वा परिषिंचामि**- दिन में दाहिने हाथ में जल लेकर भोजन पर छिड़कें। रात में इस मंत्र से करें - **ॐ ऋतं त्वा सत्येन त्वा परिषिंचामि।**
5. **ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।**
   - दाहिने हाथ में जल लेकर इस मंत्र को बोलते हुए थाली के चारों और गोलाकार में बायें से दाहिने तरफ जल छोड़ें।
6. **ॐ भूपतये स्वाहा। ॐ भुवनपतये स्वाहा। ॐ भूतानां पतये स्वाहा। ॐ धर्माय स्वाहा। ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा। ॐ यत्र क्वचन संस्थानां क्षुत्तृषोपहतात्मनाम्। भूतानां तृप्तयेऽक्ष्य्यमिदमस्तु यथासुखम्।। स्वाहा।।**
   - इन छः मन्त्रों से छः ग्रास रोटी/भात थाली के बाहर दाहिने तरफ ऊपर से नीचे की ओर एक सीध में थोड़े-थोड़े दूर में रखें।
7. **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** - जल से आचमन करें।
8. **ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ परमात्मने स्वाहा** - इन छः मंत्रों से छः बार रोटी/भात का ग्रास मुख में डालकर निगलें, दांतों से न चबायें। इसके बाद

मन में इष्टदेवता का नाम के जप करते हुए भोजन करें। बातचीत न करें, मौन रहें। भोजन समाप्ति के बाद-

9. **ॐ अमृताऽपिधानमसि स्वाहा** - आचमन करें।

10. **ॐ श्री रुद्रार्पणमस्तु** तथा **ॐ रौरवे पुण्यनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम्। आर्तानामुदकं दत्तमक्ष्य्यमुपतिष्ठतु।।**
इन दो मंत्रों को बोलकर थाली में जल छोड़ें।

11. **हरिः ॐ तत्सत्** - कहें।
तत्पश्चात् उठकर हाथ-पैर धोवें और गीले हाथों से आँखें पोछें और पेट पर दाहिने हाथ को घड़िनुमा फेरते हुए अथवा दाहिने हाथ से स्पर्श करके इस मंत्र को बोलें-

'अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलं। आहारपरिपाकार्थं स्मरेद्भीमं च पंचमं।।
आतापी मारितो येन वातापी च निपातितः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।'

तत्पश्चात् शवासन में लेटकर स्वाभाविक 8 श्वास गिनें फिर दाहिने करवट में 16 और बायें करवट में 32 श्वास गिनें। उसके बाद उठकर अपने काम में लगें। रात्रि भोजन के बाद 100 कदम घूमकर अपने काम में लगें। आवश्यक हो तो वज्रासन में बैठ सकते हैं।।

विशेष सूचनाः- आपने प्रातः उठने के समय से लेकर सोते वक्त तक क्या क्या खाने पीने के पदार्थ खायें हैं उसके ऊपर निर्भर होता है आपका शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य। इसलिये प्रतिदिन जो हम खाते पीते हैं उसकी एक डायरी में निष्कपट भाव से दर्शित तालिका के अनुसार लिखें और स्वयं देखें कि पूर्व दिन में खाये पीये पदार्थों का क्या असर रहा। अपनी साधना के अनुकूलता व प्रतिकूलता के आधार पर कौन से पदार्थ को त्यागना

है और किस पदार्थ को ग्रहण करना है यह निर्णय ले सकेंगे। केवल साधक ही नहीं बल्कि रोगी, विद्यार्थी तथा स्वस्थ व्यक्ति भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने व उन्नति पाने के लिये इस प्रक्रिया को अपना सकते हैं। नित्य कर्तव्य खण्ड यानि परीक्षा आदि खण्ड अर्थात् द्वितीय खण्ड में तालिका को दर्शाया गया है।

1.10 सर्वकर्मोपयोगी किंचिज्ज्ञातव्यम्:-

1.10-1 वस्त्रम्

'अधौतकारुधौते च परिदध्यान्न वाससी। अहतं तु परिदध्यात्सर्वकर्मणि संयतः।। (वराह पुराण)

अर्थात् न धुले हुए व ठीक से नहीं धुले कपड़ों को नहीं पहनना चाहिये। अहत (दागादि व मल रहित) कपड़े को ही सकल कर्मों में संयमी पुरुष (यानि यजमान) पहनें। अहत कपड़े का अर्थ करते हैं कात्यायन स्मृति में:-

'ईषद्धौतं नवं श्वेतं सदशं यन्न धारितम्। अहतं तद्विजानीयात्सर्वकर्मसु पावनम्'।

अर्थात् नये कपड़े को एक बार सादे पवित्र जल से धुले व सफेद रंग के कपड़े जिसे दस दिन पूर्व से कभी स्वयं से पहना हुआ न हो ऐसे कपड़े को सभी कर्मों में पहनने योग्य 'अहत' वस्त्र कहा गया है। कपड़े स्वयं धोने हैं अथवा अन्य ?

'स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रिया धर्मा विपश्चिता। न तु रजकधौतेन नोपयुक्तेन वा क्वचित्।।' (कात्यायन स्मृतिः)

अर्थात् सफल धार्मिक कर्मों के लिये स्वयं के द्वारा धुले कपड़े को ही बुद्धिमान पहनें। धोबी, पत्नी या अन्य किसी से धुले कपड़े और दूसरे से पहनकर उपयोग किये हुए कपड़े कभी न पहनें।

सफल कार्यों में एक ही वस्त्र का प्रयोग करने निषेध किया गया है।

'अन्यमेव भवेद्वासः शयनीये नराधिप। अन्यद्रथ्यासु देवानामर्चायामन्यदेव हि।।
अन्यच्च लोकयात्रायामन्यदीश्वरदर्शने। अभावे धौतवस्त्रस्य शाणक्षौमाविकानि च।।'
कुतपं योगपट्टं वा विवासा येन नो भवेत्।। (मार्कण्डेयपुराण)

अर्थात् सोते (निद्रा के) समय अलग, मार्ग के लिये (गाँव/कार्यालय, व्यापार आदि) अलग, देव पूजा के समय अलग, दूर के यात्रा में अलग, देवदर्शन के लिये अलग, ऐसे अलग-अलग वस्त्र पहनें। यदि इतने धुले वस्त्र न हों तो सन/रेशम/ऊन/कुशा अथवा योगपट्ट का प्रयोग करें। (योगपट्ट का मतलब पीठ से घुटने तक ढ़कने योग्य छोटा वस्त्र)। ताकि व्यक्ति नग्न न हो।

उत्तरीयवस्त्र (उपवस्त्र) व अधोवस्त्र (वस्त्र) दोनों के बिना कर्म नहीं, विष्णुपुराण में-

'होमदेवार्चनाद्यासु क्रियास्वाचमने तथा। नैकवस्त्रः प्रवर्तेत द्विज वाचनके जपे।।
सव्यदेशात्परिभ्रष्टं कटिदेशे धृताम्बरम्। एकवस्त्रं तु तं विद्याद्दैवे पित्र्ये च वर्जयेत्।'

अर्थात्- होम, देव पूजा आदि शुभ कर्मों में, आचमन, द्विजों से वेद पाठ करते-कराते वक्त, जपकाल में एकवस्त्र न पहनें। बायें भुजा खुला रहना और/अथवा कटि पर्यन्त अधो वस्त्र पहने हुये को एक वस्त्र कहा जाता है। जो कि सकल देव एवं पितृ कर्म में वर्जित है। कहने का तात्पर्य है कि सकल मंगल कर्मों में द्विवस्त्र ही होना चाहिये।

निषिद्ध वस्त्रः-

'काषायकृष्णवस्त्रं च मलिनं केशदूषितम्। जीर्णं च संधितं वापि पारक्यं मैथुने धृतम्।।
छिन्नाग्रमुपवस्त्रञ्च कुत्सितं धर्मतो विदुः।।' (व्याघ्रपादस्मृतिः)

अर्थात् काषायरंग (भगवा/गेरुवे) व कालेरंग के वस्त्र, मैला, केशादि से दूषित, फटा अथवा सीला हुआ, दूसरे से पहना हुआ, मैथुन्काल में पहना हुआ, जिसके अग्र छिन्न-भिन्न हो गया हो ऐसे वस्त्र को यानी धोति को उपवस्त्र अथवा अधोवस्त्र के रूप में पहनना धर्म दृष्ट्या निंदित है यानी निषिद्ध है।

'नोत्तरीयमधः कुर्याद्रात्रिवासस्तथा दिवा। कटिवेष्ट्यं तु यद्वस्त्रं पुरीषे येन वा कृतः।।
मूत्रमैथुनकृद्वस्त्रं धर्मकार्ये विवर्जयेत्।।' (संस्कारकौस्तुभ)

अर्थात् उत्तरीयवस्त्र को कभी अधोवस्त्र के रूप एवं विपरीत अधो वस्त्र को उत्तरीय के रूप में प्रयोग न करें। रात्रि में (निद्राकाल में) पहने हुए को दिन में न पहने एवं विपरीत भी समझें। शौच (स्नानाद्यर्थ) पहने कटिवस्त्र तथा मलत्याग, मूत्रत्याग व मैथुनकाल में प्रयुक्त वस्त्र को धार्मिक कार्यों के लिये उपयोग न करें।

1.10-2 धोती कैसे पहनें (अथो वस्त्र धारण विधिः)

'वामे पृष्ठे तथा नाभौ कच्छत्रयमुदाहृतम्। त्रिभिः कच्छैः परिज्ञेयो विप्रो यः स शुचिर्भवेत्।।
आदौ कच्छस्ततो नीवि नाभिमध्ये च वाससी। नीवि दक्षिणतः स्थाप्या एतत्त्रिकच्छलक्षणम्।।'

अर्थात्- कटि के बायें भाग, कमर के पिछले भाग और नाभि के सामने इन तीन स्थानों में धोती का कच्छ बाँधने कहा गया है। जो विप्र इस प्रकार धोती पहने वही शुद्ध होता है। पहले कच्छ, तदनन्तर नीवि और नाभि मध्य में इस क्रम से पहने हुए धोती को नीवि के दक्षिण भाग में स्थापित करें यही त्रिकच्छ का लक्षण है।

1.10-3 कर्माधिकारित्वलक्षणम्:-

'स्नातोऽधिकारी भवति दैवे पित्र्ये च कर्मणि। पवित्राङ्कस्तथा जाप्ये दाने च विधिचोदिते।।

सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलमश्नुते।।' अग्निपुराणं)

अर्थात्- देवपूजन, पितृकार्य, जप, दान आदि कर्म में अष्टविध स्नान कर (विशेष अनुष्ठान प्रसङ्ग में) अन्यथा केवल जल स्नान करके पवित्री धारण किया हुआ व्यक्ति ही कर्म का अधिकारी होता है- ऐसा विधान है। सन्ध्यावन्दन न किये हुए व अशुद्ध (अपवित्र) व्यक्ति किसी भी कर्म के योग्य अधिकारी कदापि नहीं हो सकता, फिर भी वह यदि कर्म करता है तो उस कर्म का उसे कोई फल नहीं मिलेगा बल्कि प्रत्यवाय लगेगा यानी पाप ही मिलेगा। अतः

'कुशपाणिः सदा तिष्ठेत् ब्राह्मणो दम्भवर्जितः। स नित्यं हन्ति पापानि तूलराशिमिवानलः' (मार्कण्डेयपुराण)

अर्थात्- ब्रह्मण को सदा पवित्री धारण किये हुये रहना चाहिये क्योंकि वह पवित्री नित्य ही सकल पापों का नाश कर देती है जैसे रूई को आग अनायास जलाकर भस्म कर देता है।

'यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। तृतीयमुत्तरार्थं वस्त्राभावे तदिष्यते।।'

अर्थात् कर्माधिकारी को सदा दो यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये श्रौत और स्मार्त कर्म करते वक्त और यदि उत्तरीयवस्त्र नहीं है तो तीसरा (एक और) यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। तात्पर्य यह है कि जब दीक्षित/संकल्पित कर्म में नहीं बैठे हैं अर्थात् सन्ध्यावन्दनादि नित्य कर्म करने के लिये एक ही यज्ञोपवीत धारण करें।

यदि कर्म करते वक्त या दीक्षित/संकल्पित काल के बीच में निम्न वर्जित कार्य/क्रिया हो तो जलस्पर्श (हस्त प्रक्षालान व आचमन) करके ही पुनः कर्म आगे बढ़ाना चाहिये। जैसे कि कात्यायन स्मृति में कहा गया है।

'पित्र्यमन्त्रानुब्रुवाणो आत्मालभेदऽधमेक्षणे। अधोवायुसमुत्सर्गे प्रहासेऽनृतभाषणे।।
मार्जारमूषकस्पर्शे आक्रुष्टे क्रोधसंभवे। निमित्तेष्वेषु सर्वेषु कर्म कुर्वन्नपः स्पृशेत्।'

अर्थात्- पितृ सम्बन्धीमन्त्रोच्चारण करने पर, अपने शरीर के किसी भी अंग का स्पर्श करने पर, शूद्र आदि अधम मनुष्यों का दर्शन करने पर, अपान वायु का त्याग (यह मल-मूत्र त्याग का उपलक्ष्य है), हंसी-मजाक/झूठ बोलने पर, बिल्ली, चूहे, कुत्ता आदि ग्राम्य जीव-जन्तुओं का स्पर्श होने पर, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा हाथ आदि अंग पकड़कर खींचे जाने पर एवं क्रोधादि राजसी व तामसी वृत्ति (जम्भई आदि का उपलक्षक है) अभिव्यक्त होने पर जलस्पर्श यानि हस्तप्रक्षालन पूर्वक आचमन करके ही पुनः कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये।

'स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि। करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याऽभिवादने।।' (प्रयोग पारिजतः)

'अनामिकामूलदेशे पवित्रं धारयेद्द्विजः।' (अत्रि स्मृतिः)

अर्थात् स्नान, होम, जप, दान, स्वाध्याय (पढ़ाई), पितृकर्म, सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म और नमस्कार करते वक्त त्रैवर्णिक को अपने हाथ में पवित्री को अवश्य धारण करना चाहिये। वह भी हाथ के अनामिका अंगुली में।

1.10-4 मन्त्राधनुष्ठाने विधिविशेषः-

किसी भी मन्त्र का अनुष्ठान करने निम्न कुछ बातें जानना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे कि स्मृतियों में कहा गया है-

'आर्षं छन्दश्च दैवत्यं विनियोगस्तथैव च। वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशेषतः।

अविदित्वा तु यः कुर्याद्याजनाध्ययनं जपम्। होमपूजाजपादीनि तस्य चाल्पफलं भवेत्।।' अथवा

'अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च। योऽध्यापयेज्जपेद्वापि पापीयाञ्जायते तु सः।।''

अर्थात् विशेषतः ब्राह्मण को (वस्तुतः त्रैवर्णिक द्विजों) प्रयत्नपूर्वक ऋषि, छन्दः, देवता, (बीज, शक्ति, कीलक) और विनियोग जानना चाहिये। इन्हें जाने बिना जो वेद आदि का अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन, होम पूजन आदि कर्म करता है

वह कर्म अल्प फलदायक होगा अथवा ऋषि, छन्दः, देवता और विनियोग (तथा बीज, शक्ति, कीलक) को जाने बिना जो वेद आदि को पढ़ता है अथवा मन्त्रादि को जपता (पाठ) करता है वह निश्चित ही महापापी हो जायेगा।

अतः मन्त्र के (स्तोत्रादि के) ऋषि, छन्दः, देवता, बीज, शक्ति, कीलक और विनियोग को जाने बिना मन्त्र, स्तोत्र आदि का जप व पाठ आदि अनुष्ठान नहीं करना चाहिए।

'ऋषिणा येन यद्दृष्टं सिद्धिः प्राप्ता च येन वै। मन्त्रेण तस्य तत्प्रोक्तमृषेर्भावस्तदार्षकम्।।' अथवा **'येन दृष्टं यद्वाक्यं तस्य स ऋषिः'**, अर्थात् जिसके द्वारा ध्यान-समाधि काल में देखा गया (हृदय में अभिव्यक्त/प्रकट होकर अनुभव किया गया) एवं जिस मन्त्र (आदि) से सिद्धि यानी फल प्रापत किया गया और लोककल्याण के लिये जिसके वाणी से सर्वप्रथम उपदेश हुआ उस व्यक्ति विशेष को मन्त्र का द्रष्टा ऋषि कहा जाता है।

'छन्दसा छन्द उद्दिष्टं वाससी इव चाकृतेः। आत्मा संछादितो देवैर्मृत्योर्भीतैस्तु वै पुरा।।
आदित्यैर्वसुभी रुद्रैस्तेनच्छन्दांसि तानि वै।।' अथवा

'यदक्षरपरिमाणेन आच्छादितं व्याप्तं तच्छन्दः' अर्थात् जैसे शरीर को वस्त्र से ढ़का जाता है उसी प्रकार वैदिक मन्त्रों को छन्द से ढ़का गया है। सृष्टि के आदि काल में मृत्यु से भयभीत रुद्र, वसु, आदित्य आदि देवता छन्दों से ही अपने को ढ़क लिये थे इसलिये (ढ़क कर रक्षा करने के स्वभाव के कारण) इन्हें छन्दा कहा गया अथवा मन्त्र में विद्यमान अक्षरों की संख्या (व्यंजन सहित वर्ण) द्वारा मन्त्र को ढ़का गया यानि व्याप्त कर दिया है उसे (नियत संख्या अनुसार) छन्दः कहते हैं। जो कि छन्द शास्त्रों में प्रसिद्ध है।

'यस्य यस्य तु मन्त्रस्य उद्दिष्टा देवता तु या। तदाकारं भवेत्तस्य देवत्वं देवतोच्यते।।' अथवा

'या तेनोच्चते सा देवता' अर्थात् जिसकी स्तुति अथवा वर्णन जिस मन्त्र के द्वारा किया गया और जिस आकार को वह मन्त्र प्राप्त कराता है। वह उस मन्त्र का देवता है।

'मन्त्रस्य योनि बीजम्' अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के मूल में एक बीज होता है जिससे मन्त्र की उत्पत्ति हुई है उसे मन्त्र का बीज कहा गया है।

'मन्त्रस्य प्राणः शक्तिः' अर्थात् मन्त्र जिससे जीवित रहता है यानि फलदेने में समर्थ होता है उसे मन्त्र की शक्ति कहते हैं।

'मन्त्रस्य यत्ध्रुवं येन प्रतिबद्धं तत्कीलकम्' अर्थात् मन्त्र का केन्द्रीभूतबिन्दु जिससे बन्धा हुआ मन्त्र दृढ़ होता है उसे मन्त्र का कीलक कहते हैं।

'पुरा कल्पे समुत्पन्ना मन्त्रा कर्मार्थ एव च। अनेन चेदं कर्तव्यं विनियोगः स उच्यते।।' अथवा

'मन्त्रस्योद्देशो योगः' अर्थात् मन्त्र को जपने व अनुष्ठान करने का जो उद्देश यानी संकल्पित फल को विनियोग कहा गया है।

'न च स्मरेदृषिं छन्दः श्राद्धे वैतानिके मखे।'

कृष्णभट्टीय कर्मप्रयोगरत्न में कहा गया है कि श्राद्ध और वैतानिककर्म में ऋषि, छन्द आदि का उच्चारण/पाठ न करें। कात्ययन ने भी कहा है कि–

'अग्निहोत्रे वैश्वदेवे विवाहादिविधौ तथा। होमकाले न दृश्यन्ते प्रायश्छन्दर्षिदेवताः।।' एवमन्यत्र

'शान्तिकादिषु कार्येषु मन्त्रपाठजपादिषु। होमे नैव प्रकर्तव्याः कदाचिदृषिदेवताः।।'

अर्थात् अग्निहोत्र, वैश्वदेव, विवाहादि संस्कार तथा होम काल में प्रायः ऋषि, छन्दः, देवता आदि प्रयोग नहीं किये जाते हैं। मन्त्र/वेदपाठ जप, शान्तिक आदि कर्म में ऋषि, छन्द आदि का प्रयोग करना चाहिये किन्तु होम कर्म में कदापि ऋषि, छन्दः, देवतादि आदि प्रयोग न करें।

किसी भी मन्त्र के जप (नित्य, नैमित्तिक, काम्य) का आरम्भ में दाहिने हाथ में जलाक्षतपुष्प लेकर ऋषि आदि का उच्चारण

(विनियोग) कर जल छोड़ कर ऋष्यादिन्यास करना चाहिये। ऋषि को सिर पर, छन्द: को मुख में, देवता को हृदय में, बीज को गुह्य में, शक्ति को पैरों में, कीलक को नाभि में और विनियोग को सम्पूर्ण शरीर में स्थापित करें।

न्यास क्या है और उसकी आवश्यकता:-

वेदों में कहा गया है-'**देवो भूत्वा देवान्यजेत्**' अर्थात् अपने में देवभाव लाकर ही देवता का पूजन आदि करना चाहिये। अपने में देवभाव लाने की प्रक्रिया को न्यास कहते हैं अर्थात् मन्त्र व उसके देवता आदि को अपने शरीर के विभिन्न अंगों में स्थापित कर भावना करना है कि मैं मन्त्रमय व देवमय हो गया हूँ। न्यूनतम तीन न्यास (ऋषि, अंग, कर) करना चाहिये व अधिकतम 64 न्यास किया जाता है। विस्तृत जानकारी के लिये हमारे द्वारा प्रकाशित **श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश:** को देखें।

क्या शक्तिपात मन्त्रादिसिद्धि के लिये आवश्यक है? यह प्रश्न प्राय: सभी साधकों को सताता है। सच्चाई तो यह है कि मलों का पाक (नष्ट होकर शुद्ध) होने से शैवी शक्ति का पात स्वयं होता है। इसलिये कहा गया है-

'परस्परविरोधेन निवारितविपाकयो:। कर्मणो: सन्निपाते न शैवी शक्ति: पतत्यसौ'।।

अर्थात् परस्पर विरोध के कारण जिन कर्मों का फलदान रुक गया है उन कर्मों के रहते हुए शैवी शक्ति का पात नहीं होता है। मृगेन्द्र आगम में कहा गया है कि-

'तम:शक्त्यधिकारस्य निवृत्तेस्तत्परिच्युतौ। व्यनक्ति दृक्क्रियानन्त्यं जगद्बन्धुरणो: शिव:।।'

अर्थात् आवरणशक्ति के अधिकार की निवृत्ति हो जाने पर यानी उस शक्ति का क्षय होने पर जगद्बन्धु परमेश्वर शिव बद्धजीव (अणु=पशु) के प्रति उसकी ज्ञानशक्ति के अनन्तत्व को अभिव्यक्त कर देते हैं। यही शक्तिपात है। इसलिये साधक का कर्तव्य केवल आवरणमल का नाश करने के लिये आवश्यक कर्म व उपासना को निष्कामभाव से करें। अत: कहा है मतंग आगम में

'बहिर्मुखस्य मन्त्रस्य वृत्तयो या: प्रकीर्तिता:। ता एवान्तर्मुखस्यास्य शक्तय: प्रकीर्तिता:।

अर्थात् चित्त के बहिर्मुख होने पर जो मन्त्र 'वृत्ति' कही जाती है वही चित्त के अन्तर्मुख होने पर 'शक्ति' कहलाती है। यह कैसे संभव है? जानो–

'तदागमवशात्साध्यं गुरुवक्त्रान्महाधिया। शिवशक्तिकरावेशाद् गुरुः शिष्यप्रबोधकः।।'

अर्थात् वह मन्त्रशक्ति आगम और गुरुमुख के द्वारा प्राप्त होती है। गुरु का चित्त जब शिवशक्तिमय करस्पर्श से आप्लुत रहता है तब भगवान् की शक्तिरूप किरण गुरु के माध्यम से शिष्य में पात होता है। इसे ही शक्तिपात कहते हैं। अतः किसी भी मन्त्र आदि का अनुष्ठान करने से पूर्व उस मन्त्र आदि को उसके ऋष्यादि के ज्ञान सहित गुरुमुख से अवश्य ग्रहण करना चाहिये। अपनी पात्रता के अनुसार शक्तिपात के प्रभाव का वर्णन इस प्रकार किया गया है– तीव्र, मध्य व मन्द शक्तिपात। पुनः प्रत्येक को तीन प्रकार का माना गया है तीव्र तीव्र, तीव्रमध्य, तीव्रमन्द, मध्यतीव्र, मध्यमध्य, मध्यमन्द, मन्दतीव्र, मन्दमध्य और मन्दमन्द। रत्नमाला आगम में तीव्रतीव्र के बारे में कहा है–

"यस्मिन्काले तु गुरुणा निर्विकल्पं प्रकाशितम्। तदैव किल मुक्तोऽसौ यन्त्रं तिष्ठति केवलम्।।"

अर्थात् सर्वोत्तम अधिकारी शिष्य यानी जिसके आवरणादि सकल मल नष्ट होकर चित्त अत्यन्त विशुद्ध है उस शिष्य को जिस समय गुरु के द्वारा निर्विकल्प बोध प्रकाशित कर दिया जाता है उसी समय वह शिष्य मुक्त हो जाता है, फिर वह केवल यन्त्र के समान रह जाता है, मतलब ईश्वर ही उस शरीर के प्रारब्धकर्मानुसार उस शरीर की जीवन यात्रा का संचालन करता है। यही तीवतीव्र शक्तिपात है। इसी के अनुसार अन्य को समझें। अतः इन्हें क्रम से शिवदीक्षा, पुत्रकदीक्षा, शक्तिदीक्षा, शिवधर्म- साधकदीक्षा आदि नाम से आगम ग्रन्थों में बताया गया है।

सामान्यतः शैव शाक्त अगामों के अनुसार दीक्षा तीन प्रकार की है– शाक्तिकी, शाम्भवी और मान्त्री (आणवी)। आणवी दीक्षा पुनः दस प्रकार की है– स्मार्ती, मानसी, यौगी, चाक्षुषी, स्पार्शिनी, वाचिकी, मान्त्रिकी, हौत्री, शास्त्री और आभिषेचिकी। जब की

शारदापटल में दीक्षा के केवल चार भेद बताकर विस्तार से वर्णन किया गया है- क्रियावती, वर्णमयी, कलावती और वेधमयी। विस्तार के भय से यहाँ हमने संकेत मात्र किये हैं।

मन्त्रानुष्ठान में ध्यान देने योग्य बातें है- स्थान, भोजन आदि जिनके बारे में पूर्व में वर्णन किया गया है। कुछ विशेष ज्ञातव्य है मन्त्र में सूतक, मन्त्रसिद्धि के लिये वर्ज्य, मन्त्र चैतन्य, मन्त्रार्थ, मन्त्र की कुल्लुका, मन्त्रसेतु, महासेतु, मन्त्रनिर्वाण, मुखशोधन, प्राणयोग, दीपनी, मन्त्र गत आठ दोष और मन्त्र के दस संस्कार। एवं माला और माला संस्कार।

मन्त्रों में दो प्रकार के **सूतक** होते हैं- एक जातसूतक और दूसरा मृतसूतक। इन दोनों अशुद्धियों को भंग करने की विधि यह है कि जप के आरम्भ में ओंकार सम्पुटित करके मन्त्र को 108/27/7 बार जप कर लेना चाहिये। तदनन्तर योनीमुद्रा के साथ मन्त्रार्थ और मन्त्र चैतन्य कर लेना चाहिये। अथवा भूत-लिपि का विधान किया गया है- ''अ'' से लेकर ''ह'' पर्यन्त समस्त वर्णों का उच्चारण कर अपने मन्त्र का उच्चारण करके विपरीत क्रम से ''ह'' से लेकर ''अ'' पर्यन्त उच्चारण करना। इस प्रकार एक महीने तक नित्य एक हजार जपने से दोनों अशुद्धियाँ भंग हो जाते हैं।

मन्त्र सिद्धि के लिये **वर्ज्य** है- आलस्य, जँभाई, नींद, छींक, थूकना, डरना, अपवित्र अंगों का स्पर्श, क्रोधादि तामसी वृत्ति और लोभादि राजसी वृत्ति। **12 नियमों** का पालन आवश्यक है- भूमिश्यन, ब्रह्मचर्य, मौन, गुरुसेवा, त्रिकालस्नान, पापकर्मत्याग, नित्य सन्ध्या व पूजा, मन्त्र का देवता की स्तुत्यादि, नैमित्तिक पूजा, मन्त्रदेवता व गुरु में पूर्ण विश्वास तथा जप में निष्ठा।

मन्त्र **चैतन्य** का तात्पर्य यह है कि मन्त्र का मूलस्वरूप विशुद्धचैतन्य जिसे ब्रह्म, स्फोट, ध्वनि आदि शब्दों से कहा गया है और जो निर्गुण निराकर है। इसी को मन्त्र, देवता और गुरु का ऐक्य कहा गया है। अतः मन्त्र केवल शब्दात्मक नहीं अपितु शुद्ध चैतन्य ही है ऐसी भावना करना ही मन्त्र चैतन्य है।

मन्त्रार्थ का मतलब है मन्त्र के प्रत्येक वर्ण का गूढ़ रहस्य जो गुरु ने बताया है व शास्त्रों से आप जान सके हैं उसका चिन्तन

करना। जैसे "ह्रीं-ह्=शिव, र्=प्रकृति, ई=महामाया, ˘ = नाद = विश्वमाता और ' ˙ ' = बिन्दु = दुःखनाश। अर्थात्- शिवयुक्त विश्वमाता महामाया प्रकृति समस्त दुःख नाशक है। यह अति संक्षिप्त अर्थ है। मन्त्रार्थ के विषय में शंकर भगवान् का यह वचन है।

'ध्यानेन परमेशानि यद्रूपमुपस्थितम्। तदेव परमेशानि मन्त्रार्थं विद्धि पार्वति।।'

अर्थात् ध्यान करते समय जो रूप हृदय में प्रकट हो वही मन्त्रार्थ है ऐसे जानो।

सरस्वती तन्त्र में कहा गया है कि मन्त्र के जपने से पूर्व उसी की **कुल्लुका** को सिर में न्यास करें। कुछ मन्त्रों के कुल्लुका इस प्रकार है- भुवनेश्वरी का ह्रीं, गणेशजी का गं, लक्ष्मी का श्रीं, सरस्वती का ऐं, शिवजी का हौं, इत्यादि।

मन्त्रों का **सेतु** प्रधानतः 'ॐ' ही है। हृदय में इसका न्यास कर लेना चाहिये। कुछ आगमों के अनुसार ब्राह्मण व क्षत्रियों के लिये 'ॐ' वैश्यों के लिये 'फट्' और शूद्रों के लिये 'ह्रीं'

प्रत्येक मन्त्र का **महासेतु** होता है जिसका जप करने से सभी अवस्थाओं, सभी देश व काल में जपने का अधिकार प्राप्त होता है। सभी मन्त्रों का प्रधानतः महासेतु 'ॐ स्त्रीं ॐ' है। विशेषतः त्रिपुरसुन्दरी का 'ह्रीं', काली का 'क्रीं', तारा का 'हूँ', इत्यादि।

मन्त्र **निर्वाण** अर्थात् मन्त्र का सम्यगाधान यानी दीप्त कर फलोन्मुख करना है। अपने मन्त्र को **'ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ओं ऐं औं अं अः'** और **'ऐं, ॐ'** से सम्मुटित कर नाभि में न्यास करना है। अर्थात्- **'ॐ ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ओं ऐं औं अं अः ॐ** अपना मन्त्र **ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ओं ऐं औं अं अः ॐ।'**

मुखशोधन का तात्पर्य अपने मुख यानी जिह्वा को जपने योग्य बनाना। इसके लिये जिस देवता का मन्त्र जपना हो उसके अनुसार मुखशोधन मन्त्र का न्यूनतम 11 बार जपना चाहिये। प्रधानतः सभी मन्त्रों का मुखशोधन मन्त्र **'ॐ'** ही है। विशेषतः

जैसे गणेश जी का '**ॐ गं ॐ**', लक्ष्मी का '**ॐ श्रीं ॐ**', इत्यादि।

प्राणयोग उसे कहते हैं जिससे मन्त्र को प्राणयुक्त किया जाय। माया बीज '**ह्रीं**' से सम्पुटित कर अपने मन्त्र को 7 बार जपना प्राण योग है। मन्त्र को प्रकाशित कर लेने को मन्त्र**दीपनी** कहा गया है। '**ॐ**' से सम्पुटित करके अपने मन्त्र को 7 बार जपने को दीपनी कहा गया है। आगमग्रन्थों में मन्त्र के यद्यपि पचास दोष गिनाये व बताये गये हैं किन्तु उन सब को आठ में अन्तर्भाव कर संक्षेप में यहाँ बताया जा रहा है क्योंकि-

'दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान्भजते जडः। सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि।।'

अर्थात् मन्त्रगत **आठ दोषों** को जाने बिना (और उन्हें दूर करने वाले दस संस्कारों को जाने बिना) जो मन्त्र को जपता है उस जड़बुद्धिवाले को सेकड़ों कल्प जपने पर भी मन्त्र सिद्ध नहीं होगा। वे दोष इस प्रकार हैं।

1. अभक्ति- मन्त्रों को शब्दरूप मानना, देवता नहीं।
2. अक्षरभ्रान्ति- मन्त्र के अक्षर क्रम में उलट फेर हो जाना।
3. लोप- मन्त्र के किसी वर्ण या मात्रा का लुप्त हो जाना।
4. छिन्न- मन्त्रगत संयुक्तवर्णों में किसी व्यञ्जन का छूट जाना।
5. ह्रस्व- मन्त्रगत दीर्घ को ह्रस्व उच्चारण करना एवं दीर्घ को अस्थल में प्लुत आदि उच्चारण करना।
6. दीर्घ- मन्त्रगत ह्रस्व को दीर्घ उच्चारण करना एवं ह्रस्व को अस्थल में प्लुत आदि उच्चारण करना।
7. कथन- अपना मन्त्र किसी को बताना, विशेषतः स्वपरम्परा विरोधी अथवा अनधिकारी को बताना।
8. स्वप्न कथन- स्वप्न में अपना मन्त्र किसी को बताना।

उक्त समस्त दोषों का निवारण करने के लिये निम्न दस संस्कारों से मन्त्र को संस्कारित कर लेना चाहिये।

अथ मंत्र संस्कार:-

किसी भी मन्त्र को जपने से पहले उसको दस (10) संस्कारों से शुद्धकर उत्कीलन करना आवश्यक है, क्योंकि शिवजी कलियुग में मन्त्रों के संभावित दुरुपयोग को ध्यान में रखते हुए मन्त्रों को कीलित किये हैं। अत: बिना उत्कीलन व संस्कार किये जपे गये मन्त्र निष्फल होते हैं। अत: निम्न प्रकार से दस संस्कार बताये गये हैं-

'मन्त्राणां दश कथ्यन्ते संस्काराः सिद्धिदायिनः। जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा।।
अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः। तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मंत्रसंस्क्रिया।।'

अर्थात् सफलता प्रदान करने वाले दस संस्कार मन्त्रों के कहे गये हैं। वे दस संस्कार हैं- जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गुप्ति (गोपन)। प्रत्येक का लक्षण आगे बताया जा रहा है।

तेषां स्वरूपम् :-

मन्त्राणां मातृकायन्त्रादुद्धारो जननं स्मृतम्। प्रणवान्तरितान्कृत्वा मन्त्रवर्णान्जपेत्सुधीः।।
एतज्जीवनमित्याहुर्मन्त्रतन्त्रविशारदाः। मन्त्रवर्णान्समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा।।
प्रत्येकं वायुना मन्त्री ताडनं तदुदाहृतम्। विलिख्य मन्त्रं तं मन्त्री प्रसूनैः करवीरजैः।।
तन्मन्त्राक्षरसंख्यातैर्हन्याद्वातेन बोधनम्। स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया।।
अश्वत्थपल्लवैर्मन्त्रमभिषिंचेद्विशुद्धये। संचिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिर्मन्त्रेण निर्दहेत्।।
मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं त्विदम्। तारं व्योमाग्निमनयुग्दण्डो ज्योतिर्मनुर्मतः।।

कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णं प्रोक्षणं मनोः। तेन मन्त्रेण विधिवदेतदाप्यायनं मतम्।
मन्त्रेण वारिणा मन्त्रतर्पणं तर्पणं स्मृतम्। तारमायारमायोगे मनोर्दीपनमुच्यते।।
जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशनम्। संस्कारा दश संप्रोक्ताः सर्वतन्त्रेषु गोपिताः।।
यान्कृत्वा संप्रदायेन मन्त्री वांछितमश्नुते।।

अर्थात् मन्त्र को मातृकायन्त्र से उद्धृत (निकालना) जनन (जन्म) नाम का संस्कार है यानी मन्त्र के प्रत्येक वर्ण को
अलग-अलग कर उच्चारण करना। प्रणव से संपुटित कर मन्त्र के प्रत्येक वर्ण को जपना इसे मन्त्र-तन्त्र ज्ञाता विद्वान् लोग द्वितीय
जीवन नाम का संस्कार कहते हैं। भोजपत्र अथवा ताड़पत्र पर मन्त्र को लिखकर प्रत्येक वर्ण पर चन्दन मिश्रित जल से कुशा
द्वारा छींट लगाने (प्रोक्षण करने) को ताड़न नाम से कहते हैं। करवीर पुष्पों से मन्त्र को लिखकर (मन्त्र के अक्षरों की संख्या
के बराबर संख्या पुष्प से ही लिखना हैं) हथेली के ऊपर से प्रत्येक अक्षर पर फूंक मारे इसे बोधन नाम से कहा गया है।
स्वतन्त्र=अपने तन्त्र अर्थात् अपनी परम्परा में कहे विधि से अश्वत्थ (पीपल) के पत्तों से मन्त्राक्षर संख्या (मन्त्र में जितने अक्षर
है उतने ही संख्या बराबर) अभिषेक करें, मन्त्र की शुद्धि के लिये [स्वच्छन्दतन्त्र में विहित विधि-एक बिल्व पत्र (त्रिशाखा
युक्त) में 5 दूर्वा और 5 तुलसी पत्र वैष्टित कर कर्पूरादि सुगन्धि द्रव्य युक्त जल से प्रोक्षण करना] इसे अभिषेक नामक संस्कार
कहते हैं। ज्योतिर्मन्त्र यानि अग्निबीज (रं) से मन ही मन प्रत्येक वर्ण को सम्पुटित कर जपते हुए मलत्रय (शाम्भव, आणव,
कार्म) को जलाकर नष्ट होने की भावना करें। यह विमलीकरण संस्कार है। **'ॐ हं रं हं ॐ'** - इसे तारव्योमाग्नियुक्त दण्डात्मक
ज्योतिर्मनु (अग्नि का विशेष मन्त्र) कहा गया है, इससे अभिमन्त्रित कुशोदक से मन्त्र के प्रत्येक वर्ण पर प्रोक्षण करने को
आप्यायन संस्कार कहा गया है। मन्त्र (जाप्य मन्त्र) से अभिमन्त्रित (दूध मिश्रित) जल से मन्त्राक्षरसमसंख्या तर्पण करने को
तर्पण संस्कार कहते हैं। तारमायरमायोग मन्त्र यानि **'ॐ ह्रीं श्रीं'** इस मन्त्र से सम्पुटित कर जाप्य मन्त्र के प्रत्येक वर्ण का उच्चारण

करना दीपन नाम का संस्कार हैं। अपने द्वारा जाप्यमन्त्र को प्रकाशित न करना यानी किसी को भी न बताना गोपन नाम का संस्कार है। सभी शास्त्रों में परोक्ष रूप से कथन करते हुए रक्षित इस दस संस्कारों को करके अपने मन्त्र को जपने से पूर्व जपने वाला अपने अभीष्ट फल प्राप्त करने केलिये मन्त्र के इन संस्कारों को कर लेता है तो अवश्य ही उसको अपने अभीष्ट फल प्राप्त होगा। संस्कार करने के पश्चात् मन्त्र के 10 माला जप करें। किन्तु माला श्री संस्कारों से शोधित होना चाहिये।

1.10-5 अथ माला संस्कार:-

तत्रादौ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रनवकै रचिते कमले स्थापयित्वा -

ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं -

इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमन्त्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन **प्रोक्ष्य** पुनः-

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।1।। इति मन्त्रेण शीतजलेन **प्रक्षालयेत्।**

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।1।। इति मन्त्रेण चन्दनागुरुकर्पूरादिसुगन्धद्रव्यै-**र्घर्षयेत्।**

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। शर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।1।। इति मन्त्रेण तां **धूपयेत्।**

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।1।। इति मन्त्रेण मालायाश्चन्दनं **लेपयेत्।**

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम्।।1।। इति

मन्त्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृत्सकृदेवा**भिमंत्रयेत्**। इत्यभिमन्त्र्य **प्राणप्रतिष्ठां** कुर्यात्।। तद्यथा–'**अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि। क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता। आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् अस्यां मालायां प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। ॐ आं ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां इह प्राणास्तिष्ठन्तु। ॐ आं ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः क्रौं ह्रीं आं हंसः सोऽहं अस्यां मालायां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानीहागत्य स्वस्ति सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**'

एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुष्पाक्षतान् कुंकुमाक्तान् निःक्षिप्य गर्भाधानादि पंचदशसंस्कारसिद्ध्यर्थ पंचदशप्रणवावृत्तिं कृत्वा प्राणशक्तिं **ध्यायेत्**–

"रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरुढा कराब्जैः, पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पंचबाणान्।।

बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या, देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।1।।

एवं प्राणशक्तिं ध्यात्वा तत्रेष्टदेवतामावाह्य मूलमन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूज्य

'ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।1।।' इति **प्रार्थ्य**।

'अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।' – इति तामादाय मालादेवीं ध्यायन् हृदये मालां धारयन् मन्त्रार्थ स्मरन् मध्यदिनावधि 10 मालां मंत्रं **जपेत्**। तद्यथा–'**ॐ नमो सर्वार्थसाधिनी स्वाहा**'। ततः जपान्ते पुनः **प्रणवमुच्चार्य** –

'त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ।।1।।

तेन सत्येन सिद्धिं में देहि मातर्नमोऽस्तु ते। ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः।।'

इति मालां शिरसि निधाय प्राणानायम्य गोमुखौ रहसि **स्थापयेत्**। ततः जपस्य दशांशं (1 माला) स्थण्डिले हवनं कुर्यात्।

अथ हवनार्थं स्थण्डिलकरणं :-

'कुण्डवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परं। बौधायने प्रोक्तं स्थण्डिलं चतुरस्रकं।। '

ततः शुद्धभूमौ चतुर्विंशत्यङ्गुल्यायतं स्थण्डिलं परिकल्पयेत्। तथा चोक्तम् -

'स्थण्डिलं मृन्मयं कार्यं चतुर्विंशाङ्गुल्यायतम्। द्विरङ्गुलं भवेत्कण्ठं व्यासस्य वचनं यथा।।'

अग्निकर्म -

तत्र तावत्कुण्डसंस्कारादिपारस्करगृह्यसूत्रानुसारेण कार्यः :-

'परिसमुह्योपलिप्योल्लिख्योद्धृत्याभ्युक्ष्याऽग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्मासनं चास्तीर्य प्रणीय परिस्तीर्यार्थवदासाद्य पवित्रे कृत्वा प्रोक्षणीः संस्कृत्यार्थवत्प्रोक्ष्य निरूप्याज्यमधिश्रित्य पर्यग्निं कुर्यात्। स्रुवं प्रतप्य संमृज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य निदध्यादाज्यमुद्वास्योत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्च पूर्ववदुपयमनकुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयादेष एव विधिर्यत्र क्वचिद्धोमः ।' इति।

तत्र तावत्कर्ता सुस्नातः शुचिः शुक्लाम्बरधरस्सोत्तरीयः कर्मस्थानमागत्य वारणादियज्ञियवृक्षोद्भवासने प्रागग्रानुदगग्रान् वा कुशानास्तीर्य तत्र प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा **'अमुककर्माङ्गतया भूसंस्कारान् करिष्ये'** इति संकल्पं कुर्यात्। तथा च कात्यायनः -

'संकल्प एव मुख्यः स्यात्स्नानदानादिकर्मसु। कर्म संकल्परहितं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्'।। इति।

अर्थात् स्नान, दान, सन्ध्या, पूजा, पाठ, याग, होमआदि कर्मों में संकल्प ही मुख्य है। संकल्प रहित कृत सब कर्म निष्फल होते हैं।

तत्र परिसमूहनादिविचारः- (प्रत्येक संस्कार के वैदिक मन्त्रों तथा शेष हवन विधि के लिये पंचम खण्ड **'अग्नि खण्ड (हवन खण्ड)'** में देखें।)

2 नित्यकर्तव्यखण्डः (परीक्षा आदि खण्डः)

2.1 आहारतालिका

........मास, ...पक्ष, ...तिथि, ...नक्षत्र, ...करण, ...पर्व, दिनांकः ....

समय	पेय	भक्ष्य	लेह्य	चोष्य	करपट्टिका	व्यंजनं	मिष्ठान्नं	लावणिकं	उपसेचनं
3:00 AM									
4:00 AM									
5:00 AM									
6:00 AM									
7:00 AM									
8:00 AM									
9:00 AM									
10:00 AM									
11:00 AM									
12:00 AM									

1:00 PM									
2:00 PM									
3:00 PM									
4:00 PM									
5:00 PM									
6:00 PM									
7:00 PM									
8:00 PM									
9:00 PM									
10:00 PM									
11:00 PM									
कुलमात्रा									
अनुभव:									
टिप्पणं									

इसी प्रकार हर साधक को अपने शारीरिक व्यवहार और मानसिक स्थिति का आंकलन करने के साथ-साथ अपने में सुधार लाने केलिये व संसार से वैराग्य को परिपक्व करने केलिये एक दिनचर्या का डायरी बनाना होगा। प्रति दिन आप किस कार्य केलिये व किसका चिन्तन में कितना समय लगाये हैं इसका निष्कपट भाव से यदि लिखेंगे तो अवश्य अपने में परिवर्तन लाकर साधना में तेजी से आगे बढ़ सकते हैं। इस केलिये उपयोगी तालिका निम्न प्रकार हैं -

2.2 दैनिकदिनचर्या तालिका

.... मास, ...पक्ष, ...तिथि, ...नक्षत्र, ...करण, ...पर्व, दिनांक: ....

व्यवहार/वृत्ति	समय	अनुभव	परिणाम	व्यवहार/वृत्ति	समय	अनुभव	परिणाम
जागना				चरित्रचिंतनं			
बहि:शौच				शारीरिकतप			
आसन-स्थिर				वाक्तप			
प्राणायाम				मानसतप			
प्रत्याहार				प्रणवजप			
शम				गायत्रीजप			
दम				अन्यमंत्रजप			

उपरति				ईश्वरप्रणिधान			
तितिक्षा				देवपूजा			
श्रद्धा				संकल्पचिंतन			
समाधान				निष्ठाचिंतन			
धारणा				लक्ष्यचिंतन			
ध्यान				मैत्रीभाव			
समाधि-शान्ति				करुणा			
पारायण				मुदित			
स्वाध्याय-श्रवण				उपेक्षा			
प्रवचन-मनन				सत्य			
अभ्यास-निधिध्यासन				अहिंसा			
वृत्त्यंतरमुखता				अस्तेय			
चित्रपटचिंतन				ब्रह्मचर्य			

दर्पणसूर्यचिंतन				अपरिग्रह			
लयचिंतन				अन्त:शौच			
प्रणवधनु:चिंतन				संतोष व सुख			
मनोदर्शन				अहंता व ममता			
बुद्धिदर्शन				विहार व संग			
कण्ठस्थकरणं				टी वी वर्ज्य			
एकान्तसेवनं				अखबार वर्ज्य			
मिथ्यात्वचिंतन				होटल वर्ज्य			
उदासीनता				नशा वर्ज्य			
साक्षीभाव				काम व क्रोध			
मौनं				लोभ व मोह			
श्मशानदर्शनं				मद व मात्सर्य			
चिकित्सालयदर्शनं				निंदा व स्तुति			

अनित्यत्वचिंतनं				अर्थ संचय			
गतदु:खचिंतनं				अर्थ व्यय			
शिक्षा-प्रायश्चित्त				निद्रा			
दिन का अनुभव							
कण्ठस्थश्लोक							

-----00000-----

2.3 शान्ति पाठः

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।1।।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।2।।

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः छन्दोभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधयाऽपिहितः। श्रुतं मे गोपाय। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।3।।

ॐ अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव। ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि। द्रविणꣳसवर्चसम्। सुमेधा अमृतोऽक्षितः। इति त्रिशंकोर्वेदानुवचनं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।4।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।5।।

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुःश्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदं। माहं ब्रह्म निराकुर्या। मा मा ब्रह्म निराकरोद्। अनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु। ते मयि सन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।6।।

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमावीर्आवीर्म एधि। वेदस्य म आणिस्थः। श्रुतं मे मा प्रहासीरनेना-धीतेनाहोरात्रान्संदधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारं। अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।7।।

ॐ भद्रं नोऽपिवातय मनः। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।8।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।9।।

ॐ यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं। यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै। तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं। मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।10।।

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो महद्भ्यो नमो गुरुभ्यः। सर्वोपप्लवरहितः प्रज्ञानघनः प्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि ब्रह्मैवाहमस्मि।।11।।

ॐ नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च। व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यं।। श्रीशंकराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यं। तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद् गुरून्संततमानतोऽस्मि।। श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयं। नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरं।। शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणं। सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।। ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने। व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।12।।

2.4 अथ संक्षिप्त-नित्यसन्ध्योपासनविधिः

स्नान आदि से निवृत्त होकर शिखाबन्धन, स्वकुलपरम्परा के अनुसार तिलक धारण करके सन्ध्यावन्दन करने के लिये अपने आसन, पंचपात्र, अर्घ्यपात्र, आदि सामग्री तैयार करके बैठकर आचमन करें-

ॐ केशवाय स्वाहा, ॐ नारायणाय स्वाहा, ॐ माधवाय स्वाहा।

हाथ धोवें - **ॐ हृषीकेशाय नमः।**

शरीरशुद्धिकरण मन्त्र का विनियोग पढ़ें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, विष्णुर्देवता, शरीर/हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

अपने शरीर पर जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

आसनशुद्धिमन्त्र का विनियोग पढ़े-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

अपने आसन के नीचे थोड़े जल डालकर गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजन करें-

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोकाः, देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

सन्ध्या का संकल्प-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने तत्सत्श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽअष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे --- क्षेत्रे --- ग्रामे बौद्धावतारे उत्तरायने/दक्षिणायने विक्रमशके षष्ठिसंवत्सराणां मध्ये --- संवत्सरे --- ऋतौ --- मासे --- पक्षे --- तिथौ --- वासरे प्रातः/मध्याह्न/सायं काले --- गोत्रोत्पन्नो --- शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽअहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

निम्न मन्त्र से पवित्री को धारण करें (कुशा की पवित्री अथवा सोने की अंगूठी हो) -

ॐ भूर्भुवः स्वः।

जलोपस्पर्शन मन्त्र का विनियोग पढ़ें-

ॐ ऋतं चेति मन्त्रस्य मधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भावृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमनीय पात्र के जल को स्पर्श कर इस मन्त्र को पढ़ें-

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

प्राणायाम के इन चार विनियोगों को पढ़ें-

ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवीगायत्री छन्दः अग्निः परमात्मा देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

ॐ भूरित्यादिसप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यस्छन्दांसि अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविष्णवो देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ आपो ज्योतिरिति मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

प्रणायाम के मन्त्र-

ॐ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।।

प्राणायाम के अनन्तर किये जानेवाले आचमन का विनियोग-

1. प्रातः सन्ध्या में आचमन का विनियोग-

ॐ सूर्यश्च मेति मन्त्रस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता आचमने/अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

प्रातः आचमन मन्त्र-

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

2. मध्याह्नकालीन सन्ध्या में आचमन का विनियोग–

ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मध्याह्नकालीन आचमन मन्त्र–

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनन्तु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳस्वाहा।।

3. सायंकालीन सन्ध्या में आचमन का विनियोग–

ॐ अग्निश्च मेति मन्त्रस्य रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता आचमने/अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

सायंकालीन आचमन मन्त्र–

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्तीभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जन का विनियोग पढ़ें–

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य/मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

अब मार्जन करें – (बायें हाथ से जल लेकर कुशाओं से अथवा दाहिने हाथ की अंगुलियों से 1 से 7 तक मन्त्रों की बोलते हुये सिर पर जल छिड़कें। 8 वें मन्त्र से पृथिवी पर छोड़ें और 9 वें मन्त्र से पुनः सिर पर जल छिड़कें।)

1. ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। 2. ॐ ता न ऊर्जे दधातनः। 3. ॐ महे रणाय चक्षसे।

4. ॐ यो वः शिवतमो रसः। 5. ॐ तस्य भ्राजयते ह नः। 6. ॐ उशतीरिव मातरः।

7. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। 8. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। 9. ॐ आपो जनयथा च नः।

शिरस्सेक मन्त्र का विनियोग पढ़ें-

ॐ द्रुपदादिवेति मन्त्रस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता शिरस्सेके विनियोगः।

शिरस्सेक मन्त्र पढ़ते हुये सिर पर जल छिड़कें-

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

अघमर्षण मन्त्र का विनियोग पढ़ें-

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

अघमर्षण करें यानि दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर निम्न मन्त्र पढ़ें और ध्यान करें की समस्त पाप दाहिने नाक से निकलकर हाथ के जल में आ गये हैं। फिर उस जल को विना देखें बायीं ओर फेंकें-

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवदधि संवत्सरोऽअजायत अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

पुनराचमन मन्त्र का विनियोग पढ़ें-

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

अब इस मन्त्र से आचमन करें-

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

सूर्य को अर्घ्य देने से पहले सूर्यार्घ्य का इन तीन विनियोगों को पढ़ें-

1. ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।

2. ॐ भूर्भुवः स्वरितिव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभस्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।

3. ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।

(यदि सूर्योदय तथा सूर्यास्त से तीन घड़ी बीतने के बाद अर्घ्य दे रहे हैं तो पहले प्रायश्चित्तरूप अर्घ्य निम्न मन्त्र से दें-

'**ॐ भूभुर्वःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। स्वर्भुवर्भूरोम्**' तत्पश्चात् नित्य अर्घ्य दें।)

अब गायत्री मन्त्र से अर्घ्य दे-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

1. प्रातःकाल में - '**ॐ ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।
2. मध्याह्नकाल में- '**ॐ विष्णुस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।
3. सायंकाल में - '**ॐ रुद्रस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।

सूर्योपस्थानविधिः-

सर्वप्रथम इन चार विनियोगों को पढ़ें-

1. ॐ उद्वयमित्यस्य मन्त्रस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

2. ॐ उदु त्यमित्यस्य मन्त्रस्य प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

3. ॐ चित्रमिति मन्त्रस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

4. ॐ तच्चक्षुरित्यस्य मन्त्रस्य दध्यङ्थर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

प्रातःकालीन सन्ध्या में पूर्वाभिमुख खड़े होकर हथेलियों को स्वस्तिक मुद्रा में पेट के सामने धारण कर, मध्याह्नकालीन सन्ध्या में उत्तराभिमुख खड़े होकर दोनों हाथों को ऊपर उठाकर और सायंकालीन सन्ध्या में बैठे हुये हृदय के सामने हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों से सूर्योपस्थान करें-

1. ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।
2. ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।
3. ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।
4. ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

गायत्री मन्त्र जपने का संक्षिप्त विधिः-

गायत्री मन्त्र का जप करने से पूर्व षड़ंगन्यास, ध्यान, आवाहन, उपस्थान और विनियोग करना आवश्यक है। अतः उन्हें क्रम से बताया जा रहा हैं-

षड़ंगन्यासः-

ॐ ॐ हृदयाय नमः- हृदये, **ॐ भूः शिरसे स्वाहा**- शिरसि, **ॐ भुवः शिखायै वषट्**- शिखायाम्, **ॐ स्वः कवचाय हुम्**- बाह्वोः, **ॐ भूर्भुवःस्वः नेत्रत्रयाय वौषट्**- नेत्रत्रये, **ॐ भूर्भुवःस्वः** - अस्त्राय फट्।

प्रातःकालीन सन्ध्या में ब्रह्मरूपा गायत्री का ध्यान

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्। रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रधरां तथा।
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्। ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।।

मध्याह्नकालीन सन्ध्या में विष्णुरूपा गायत्री का ध्यान

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्। युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्।।

सांयकालीन सन्ध्या में रुद्र (शिव) रूपा गायत्री का ध्यान

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्। सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

गायत्री का आवाहन करने विनियोग पढ़ें-

ॐ तेजोऽसीति धामनामासीति च मन्त्रयोः परमेष्ठी प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

गायत्री का आवाहन करें (भावना करें कि सूर्यमण्डल से मां भगवती गायत्री आ रही हैं)-

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि ।।1।। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।2।।

गायत्री के उपस्थान (प्रणाम) का विनियोग पढ़ें-

ॐ गायत्र्यसीति मन्त्रस्य विवस्वानृषिः स्वराणमहापंक्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

गायत्री का उपस्थान करें (यानि प्रणाम करें)-

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरियाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।।

गायत्री मन्त्र के इन तीन विनियोगों को पढ़ें-

1. **ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता जपे विनियोगः।**
2. **ॐ भूर्भुवःस्वरितिव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभस्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवता जपे विनियोगः।**
3. **ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।**

अब गायत्री मन्त्र का कम से कम 1 माला जप करें-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

सूर्य को प्रदक्षिणा करते हुये प्रणाम करें-

यानि कानि च पापानि जन्मन्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

जप को भगवान् के चरणों में अर्पण करें-

अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान्नरायणः प्रीयताम्, न मम।

गायत्री का विसर्जन करने के लिये विनियोग पढ़ें-

ॐ उत्तमे शिखर इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

गायत्री विसर्जन मन्त्र (भावना करें कि गायत्री वापस सूर्यमण्डल में विलीन हो रही हैं) -

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।।

सन्ध्योपासनकर्म को परमेश्वर के चरणों में अर्पण करें-

अनेन सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम।

भगवान् का स्मरण कर सन्ध्योपासना को पूरा करें-

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। श्रीविष्णुस्मरणात्परिपूर्णताऽस्तु।।

विशेषसूचनाः-

1. गायत्री का उपस्थान करने के बाद ब्रह्मशाप, वसिष्ठशाप, विश्वामित्रशाप और शुक्रशाप को तत्तत् विनियोग व मन्त्र पाठ पूर्वक विमोचन कर मन्त्र जप करना श्रेष्ठ है।
2. जप के पूर्व 24 मुद्रायें और जप के बाद 8 मुद्राओं को दर्शाने का विधान है।

इन दोनों को करने के इच्छुक गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा मुद्रित 'नित्यकर्म-पूजाप्रकाश' का अवलोकन करें।

2.5 सकल अनुष्ठानोपयोगी सर्वसामान्यसंकल्पः (प्रधानसंकल्पः) –

दाहिने हाथ में गन्धाक्षतपुष्पदक्षिणापूगीफलसहित कुशजल को धारण कर इष्टदेवता का ध्यान पूर्वक संकल्प करे –

गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्।।

स्थानाधिपं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भूतं शशीपुत्रं बृहस्पतिम्।।

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।।

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनीश्च कथयाम्यहम्। गर्गमुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्।।

वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम्।।

सर्वे नमस्कृतास्ते मे यज्ञं रक्षन्तु सर्वदा। तेभ्यस्सर्वेभ्यः पूजार्थं पुष्पादींश्च समर्पये।।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः स्वस्ति श्रीमत्सच्चिदानन्दब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भितऽविद्यायोगात् कालकर्म स्वभावादाविर्भूतमहत्तत्त्वादितोऽहंकारतृतीयोद्भूतशब्दादिपंचतन्मात्रेन्द्रियदेवतासमुदायनिर्मितचतुर्दशभुवनात्मकेऽण्डकटाहे लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीमन्नारायणस्य नाभिकमलोद्भूतसकललोकपितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं प्रकुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापतिना प्रार्थितस्य सकलजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य जगद्रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्याच्युतानन्तवीर्यस्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्याचिन्त्यापरिमितशक्त्याऽऽध्येयमानस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रम्यमाणानामनेककोटिब्रह्माण्डा- नामेकतमे महदहंकाराकाशवायुतेजोऽप्पृथिव्याद्यैरावरणैरावृतैरस्मिन्ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्ति श्रीमद्वराहदंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्तवासुकितक्षककुलिककर्कोटकपद्ममहापद्मशंखमहानागैः संध्रियमाणे ऐरावतपुण्डरीक वामनकुमुदांजनपुष्पदन्तसार्वभौम- सुप्रतीकेत्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठितेऽतलवितलसुतलतलातलरसातलमहातलपातालोकनामुपरि भागे भूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोक- महर्लोकजनलोकतपोलोकसत्यलोकेतिसप्तलोकस्याधोभागे चक्रवालशैलमहावलयनगमध्यवर्तिनो महाकालमहाफणिराजशेषस्य

सहस्रफणानां मणिमण्डलमण्डिते दिग्दिन्ति शुण्डोत्तम्भितेऽमरावतीभोगवतीसिद्धवतीगान्ध र्ववत्यलकावत्यादिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानेतिदिक्पालप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुरससुरासर्पिदधि क्षीरोदकेतिसप्तार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौंचशाकपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यताम्रगभस्तिनागसौम्यगन्धर्व चारणभारतेतिनवखण्डमण्डिते सवर्णगिरिकर्णिकोपेतमहासरोरुहाकारपंचाशत्कोटियोजनविस्तीर्णे भूमण्डलेऽयोध्या-मथुरामायाकाशीकांच्यवन्तिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीप्रतिष्ठिते शालग्रामसम्भलग्रामनन्दिग्रामेतिग्रामत्रयविराजिते चम्पकारण्य-बद्रिकारण्यार्बुदारण्यधर्मारण्यपद्मारण्यगुह्यारण्यजम्बुकारण्यनैमिशारण्येतिनवारण्ययुक्ते सुमेरुनिषदरजतकूटशुभ्र-कूटारकूटहिमाचलानां हरिवर्षकिम्पुरुषवर्षैश्च दक्षिणदिग्विराजमाने नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचलविन्द्या-चलाद्यनेकमहापर्वतमण्डितेस्वर्णप्रस्थेन्द्रप्रस्थचण्डप्रस्थसूक्तिकावर्त्तकरमणकमहारमणकपांचजन्यसिंहललंकेतिनवखण्डोप-द्वीपमण्डिते दक्षिणावस्थितस्य रेणुकाद्वयसूकरकाशीकांचीकालिकावटेश्वरकालंजरमहाकालेतिनवोखरयुते सोमनाथ-मल्लिकार्जुनमहाकालममलेश्वरकेदारेश्वरभीमाशंकरविश्वनाथ त्र्यम्बकेश्वरवैद्यनाथनागेश्वररामेश्वरघुश्मेश्वरेतिद्वादश-ज्योतिर्लिंगयुते गंगायमुनासरस्वतीतापीपयोष्णीकावेरीगोदावरीनर्मदेत्यादिपुण्यनदीविलसिते हिमवन्मेरुगोवर्धनक्रौंचश्रीशैल-चित्रकूटहेमकूटमहेन्द्रमलयविन्ध्याद्यनेकपर्वतसमन्विते मत्तंगादिमहानगरयुते कोंकणहिरण्यशृंगकुब्जार्बुदमणिकर्णिका-शालग्रामसूकरमथुरागयानिष्क्रमणलोहार्गलप्रोतस्वामीबदरीतिचतुर्दशगुह्यस्थलविलसितेऽस्मिन् जम्बूद्वीपे कर्मभूमौ बौद्धावतारे गंगादिसरिद्भिः पाविते भारतवर्षे भरतखण्डे निखिलजनपावने परमभागवतोत्तमशौनकाद्यृषिगणशोभिते पुण्यस्थले आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तात् अमुक दिग्भागावस्थिते अमुक जनपदे कुरुक्षेत्रादिमध्यरेखाया अमुक दिग्भागे भगवत्या अमुक पुण्यनद्या अमुक तटे अमुक क्षेत्रान्तर्वर्ति सोमसूर्यान्वयोपेतभूभृत्प्रतिष्ठिते श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीमन्नारायणस्य श्रीविष्णोर्नाभिकमलोद्भूतस्य प्रवर्तमानस्य परार्द्धजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे पंचाशदधिके वर्षे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसेऽह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते

रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्येऽष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वयंभ्वादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे सत्ययुगादिचतुर्युगानां मध्ये कलियुगे कलिप्रथमचरणे ब्रह्मावर्तैकदेशे.....खण्डे श्रीक्षेत्रे.....मण्डले देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्यात्प्रवर्तमाने प्रभवादिषष्ठीसंवत्सराणां मध्ये.......नाम संवत्सरे......अयने ....ऋतौ महामांगल्यप्रदे मासानामुत्तमे....मासे....पक्षे....पुण्यतिथौ.....वासरे....नक्षत्रे.....योगे.....करणे.....राशिस्थिते सूर्ये .....राशिस्थिते चन्द्रे.....राशिस्थिते शनौ.....राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थितेषु सत्स्वेवं ग्रहगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ....... गोत्रोत्पन्नस्य......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं वेदान्तर्गत.....शाखाऽध्यायी.....सूत्राध्यायी च....प्रवरान्वितो.....गोत्रोत्पन्नो....शर्मा नामकार्चकेन प्रतिनिधिभूतेन मम श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तफलप्राप्तिपूर्वकाध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकतापोन्मूलनार्थं, दुःस्वप्न दुःशकुन दुर्निमित्त दुर्विचिन्त्य दुर्दशोत्पातकृत्यादिशमनपूर्वकजन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्गोचरलग्नाद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहाणां क्रूरदोषनिवारणार्थं, तैर्जन्यं जनिष्यमाणं च यदनिष्टं तन्निरसनपूर्वकं तेभ्य एकादशस्थानस्थितशुभफलप्राप्त्यर्थं, अहरहरभ्युदयार्थं च श्रीविद्यासकलविद्यानां परिशीलनजनितपरमज्ञानावाप्तिपूर्वकपरमपदप्राप्तये देवताया अनुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतादिसर्वबाधा-निवृत्तिपूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशादुत्पन्नदोषेण व्यवहारे चोत्पन्नानामुत्पद्यमानोत्पत्स्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं, भौम्यान्तरिक्षदिव्यमहोत्पातागामी संचितसूचितदुष्टानिष्टदोषपरिहारपूर्वकं विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैरन्यैर्वा कृत क्रियमाण कारयिष्यमाण दुष्टयंत्रमंत्रतंत्रविशशल्यौषधप्रतिमास्थापनादिसर्वाभिचारकर्मघातकर्मफणिहवनश्येनयजन-दुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादिक्षुद्रकर्मजन्यदोषपरिहारपूर्वकं विशेषतो न्यायालये राजादिसभायां तद्द्वारे वा सर्वत्र महालक्ष्मीकृपाकटाक्षप्राप्त्यर्थमलक्ष्मीपरिहारार्थं (भो मात ह्रीं दुं दुर्गे किं स्वपिषी उत्तिष्ठ पुरुषी सर्वतः समुपस्थितानर्थनिवृत्तये स्वयं कुरु वा मां निमित्तीकृत्य वा यत्कर्तव्यं तत्कारय) तदर्थं.......तिथित आरभ्य......तिथिपर्यन्तं.......पूजाया/पाठस्य/मन्त्रस्य/यागस्य न्यासादिविधिसहितध्यानपूर्वकं अर्चन/पाठ/जप/हवनस्य कर्मणोऽअंगतया स्वस्तिपुण्याहवाचनं ओंकारश्रीसमन्वितषोडशमातृकाणां

षड्विनायकानां सप्तस्थलमातृकाणां सप्तघृतमातृकाणां पूजनसहितकलशस्थापनपूर्वकं सांकल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यसहितपाठकानां वरणपूर्वकं नवग्रहमण्डले अधिदेवताप्रत्यधिदेवता पंचलोकपालदशदिक्पालसमन्वितनवग्रहाणां रुद्रकलशे एकादशरुद्रानावाह्य स्थाप्य संपूज्य कीलनपूर्वकं भगवत:/भगवत्या वा......आवाहनस्थापनपूजनपुरस्सरं यन्त्रस्थदेवानां पीठस्थदेवानां आवरणदेवानां च आवाहनस्थापनपूजनादिसमस्तांगानां श्री.......देवताप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्तिपूजाक्रमं यन्त्रस्थापनादिपूर्वकं श्री.......देवतापूजनस्य निर्विघ्नतापूर्वकसिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं यथोपलब्धोपचारद्रव्यैरहं आचरिष्ये तेन परमेश्वरसहितपरमेश्वरीं प्रीणयामि। तत्राधिकारप्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषोपशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च यथायोग्यं निष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

2.6 सर्वकर्मोपयोगी गणपतिगौर्योः पूजनम्

गौरीतिलकमण्डलोपरि (एकलिंगतोभद्रोपरि) (पृ.सं. 439, चित्र संख्या 17-18) कलशं स्थापयेत्। तत्र च गणेशयन्त्रं (पृ. सं. 439, चित्र संख्या 16) स्थापयेत् प्रणपतिष्ठां च कृत्वा पूजयेत् अथवा द्वयोः पूगीफलयोरेवावाहनादिकं कुर्यात्-

आवाहनम्

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा पियपतिर्ठ0 हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठ0 हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽबालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास मादयन्तामो३ँ प्रतिष्ठ।।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।

गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
अलङ्कारसमायुक्तं मुक्ता-मणि विभूषितम्। दिव्यं सिंहासनं चारु प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
गौरी सुत! नमस्तेऽस्तु शङ्कर प्रियकारक! भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय!।।1।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।
व्रतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादिसंयुतम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।2।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।
सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।3।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।4।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतमः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु। शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।5।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।6।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः।।
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।7।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपठं0 संव्ययस्व विभावसो।।8।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।9।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्नद्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।
गन्धकर्पूरसंयुक्तं कुङ्कुमेन सुवासितम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।10।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

रक्तचन्दनम्

ॐ अठ्ठशुनाते अठ्ठशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। असतोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।12।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि माल्यादीनि वै प्रभो!। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण प्रणतप्रिय!।।13।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ति पुरुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।।14।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वां समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शुघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दनूर्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।15।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर–गुलाल

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परि बाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः।।

अबीरं च गुलालं च मिश्रितं चन्दनेन च। अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।16।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अबीरं गुलालं च समर्पयामि।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।17।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपो ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।18।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन्।।
अनेकस्वादुसंयुक्तं नानाफलसमन्वितम्। मोदकं पायसं चैव गृहाण परमेश्वर!।।19।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।20।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां ताम्बूलं समर्पयामि।

आचमनीयजलम्

गणाधिप! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन! गृहाण चाचमनीयं त्वं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।21।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्

ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।22।।

ऋतुफलम्।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः।।23।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः सम्वत्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधारः पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।24।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

ॐ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरठ्ठ सर्वगणठ्ठ सर्वगणठ्ठ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्नभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्ने पयो रेतो अस्मासु धत्त।।1।। आ रात्रि पार्थिवठ्ठ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाठ्ठसि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।2।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।25।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पांजलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ गणानां त्वा गणपतिठ्ठ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिठ्ठ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिठ्ठ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो

ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकाराडिती।। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं ग्रहण परमेश्वर!।।26।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाठं० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे।।27।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानां भयनाशक त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा नमः।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थनाः

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय। गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय। सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय। भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!।।4।।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।6।। (गणेशकवचपाठं च कुर्यात् पृ. 286)

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

2.7 सर्वकर्मोपयोगी कलशपूजनम्

आचार्य 'महीद्यौः' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से जिस स्थान पर कलश स्थापित करवाना हो, वहाँ की भूमि का स्पर्श करवा के वहाँ कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदलपद्म का निर्माण करवें।

ॐ मही द्यौः पृथिवी चनऽश्मं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।

यजमान ने भूमि का जहाँ स्पर्श किया हो वहाँ आचार्य एक किलो सप्तधान्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए छुड़वायें-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि।।

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः। प्राणिनां जीवनोपायः कलशाधः क्षिपाम्यहम्।।1।।

आचार्य धान्य पुञ्ज पर निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश स्थापित करवायें-

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकला। सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन उच्यते!।।2।।

कलश में शुद्ध जल को गजमान से आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए भरवायें-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदनयसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

आपस्त्वमसि देवेश! ज्योतिषांपतिरव्यय!। भूतानां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम्।।3।।

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश में गन्ध छुड़वायें-

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मामुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम्।।4।।

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वायें-

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ0 शतं धामानि सप्त च।।

सर्वौषधयः सुगन्धाढ्या दिव्यवृष्टिसमुद्भवा। कलशाप्यायनार्थाय मङ्गलाय क्षिपाम्यहम्।।5।।

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वायें-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

दूर्वे! ह्यमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे। शतं मे हर पापानि शतमायुः विवर्धिनी।।6।।

आचार्य कलश में पञ्चपल्लव निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वायें–

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवत्थ्पुरुषम्।।

यज्ञीयवृक्षसम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुभान्। अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम्।।7।।

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए कलश में पूगीफल यजमान से छुड़वायें–

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ0हसः।।

इदं फलं मया सम्यक् प्रक्षिप्तं कलशे यतः। तेनायं कलशः सम्यक् फलवानस्तु सर्वदा।।8।।

आचार्य कलश में पञ्चरत्न निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वायें–

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।

रत्नगर्भोद्भवादूर्मी रत्नगर्भाढ्यभूधरा। कलशो रत्नगर्भः स्यात् तस्माद्रत्नानीदं क्षिपेत्।।9।।

आचार्य कलश में हिरण्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वायें–

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम्।।10।।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से दो वस्त्रों के द्वारा कलश को चारों ओर से वेष्टित करावे–

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ0 संव्ययस्व विभावसो।।11।।

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से ताम्र के पात्र में अक्षत भरवाकर कलश के ऊपर स्थापित करवायें–

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जठ० शतक्रतो।।

धान्यपूर्णं इदं पात्रं स्थापितं कलशे यतः। तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः!।।12।।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर अपने अभिमुख लालवस्त्र आदि से वेष्टित नारिकेल फल का स्थापन यजमान से करवे-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः।।13।।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्थापित कलश में अंग के सहित सपरिवार सायुध-सशक्तिक वरुण का आवाहन व स्थापन यजमान से करावें-

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः।।14।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहायामि स्थापयामि भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव।

'**ॐ अपां पतये वरुणाय नमः**' इस नाममन्त्र से आवाहन कर उस कलश पर ही देवताओं का निम्न श्लोकों से आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।1।।

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी। अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।2।।

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी। तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।3।।

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः। पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।4।।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।5।।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।6।।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।7।।

कलशाधिष्ठात्र्यो विष्ण्वादिदेवताः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु।

भावार्थ- कलश के मुख में भगवान् विष्णु का, कण्ठ में रुद्र का, मूल में ब्रह्मा का, कलश के मध्य में मातृगणों का, कुक्षि में सात समुद्रों, सात द्वीपों एवं मेदिनी का, अर्जुन, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वती, कावेरी, गंगा, महानदी, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदा, अनेक प्रकार के नद, सभी प्रकार के नदियाँ, भूमण्डल में जो तीर्थ हैं, वे कलश में रहे। सभी समुद्र, तालाब, तीर्थ, जल के नद, वे सभी दुरित क्षय को नष्ट करने के लिए तथा मेरी शान्ति-कामना के लिए कलश में आवें। सभी अंगों सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इस कलश में रहें। यहाँ पर गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टि और कलश के अधिष्ठातृ देवता दुरितों का नाश कर शान्तिकामना के लिए यहाँ आवें। कलश के अधिष्ठातृ विष्णु आदि देवता यहाँ सुप्रतिष्ठित हों।।

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्राणप्रतिष्ठा करें-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं0समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ।।

वरुणपूजनम्

ध्यानम्

आश्रित्य यं भवति धन्यतरा प्रतीची रत्नाकरत्वमुपयाति पयः समूहः।

पाशश्च यस्य भवपाशविनाशकारी तं पाशधारिणमहं हृदि चिन्तयामि।।1।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। ध्यायामि पूजयामि।

आवाहनम्

यद् दृष्टिकोणरहिता वसुधा सदैव वन्ध्येव भाति विफलीकृतबीजशक्तिः।
तं वारिवारिणमहं वरुणं सदैव धाराधरं सुखकरं प्रियमाह्वयामि।।2।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। वरुणामावाहयामि स्थापयामि।

आसनम्

अयि विभो शरणागतवत्सल यदपि हीनमिदं भवतां कृते।
तदपि भक्तजनं खलु वीक्ष्य मां समुचितं प्रियमासनमास्यताम्।।3।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

अहो मदीय खलु पुण्यसञ्चितं श्रीमद्भिरद्यावधि रक्षितोऽस्मि यत्।
अकिञ्चनोऽहं भवतां कृते यदि तथापि पाद्यार्थमिदं प्रगृह्यताम्।।4।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

विमलचम्पकपुष्पसमन्वितं विविधतापविनाशननायकम्।

प्रियकर प्रियमर्घ्यमिदं विभो परिगृहाण जलाधिप पाशभृत्।।5।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कस्तूरिकासुरभिचन्दनवासवासि स्वेलालवङ्गलवलीपरिपूरितं च।
मध्याह्नसूर्यप्रतिबिम्बमिवप्रकामं दत्तं गृहाण वरमाचमनं मयेदम्।।6।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतम्

सौवर्णपात्रधृतप्रीतिविवर्धकेन पञ्चामृतेन मधुना पयसा घृतेन।
मिश्रीकृतेन सितया च शुभया च दध्ना देवो दधातु हृदये करुणामयेऽस्मिन्।।7।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनवासितेन काश्मीरजेन घनसारसमन्वितेन।
एलालवङ्गलवलीविमलोदकेन स्नानं कुरुष्व भगवन् सुनिवेदितेन।।8।।
ॐ भूर्भुवस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ब्रह्माण्डमेतद्दयया्ऽप्यखण्डं संपन्नमेभिर्वसनैस्तनोषि।

तस्मै प्रदेयः किमु वस्त्रखण्डस्तथापि भावो मम रक्षणीयः।।9।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

आलिङ्ग्यते यस्य शताग्रभागं पूता विमुक्ता वपुषोऽधमास्ते।
यज्ञोपवीतं किमु तस्य पूर्त्यै दीयेत भक्तेषु समर्थनाय।।10।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उत्तरीयम्

श्रद्धातुरो यत्र मनस्तु सूत्रं भक्तिं च वेमानमवाततान् वै।
हृत्कौलिकः सुविमलोत्तरीयं तनोमि तत्ते तनुकल्पवल्याम्।।11।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। उत्तरीयं समर्पयामि।

गन्धम्

अमन्दगन्धं विकिरन्ति यत्र वृन्दारकाः पृच्छति तत्र को माम्।
मयाऽपि हे नाथ हृदोपनीतं द्रव्यं सुगन्धं विमलं गृहाण।।12।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्

पुष्पाक्षतानक्षतपुष्पराशिरादाय तुभ्यं समुपस्थितोऽस्मि।

एतं हि लज्जानतमस्तकोऽस्मि द्रुतं गृहीत्वा कुरु मां कृतार्थम्।।13।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। अक्षतान्समर्पयामि।

पुष्पम्

आसेचनं पेलवपादयुग्मं कृते कठोरः कुसुमोपहारः।
धाष्ट्र्योद्भवं मेऽपराधमेनं क्षमस्व दीनस्य हि दीनबन्धो।।14।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। पुष्पं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्

निखिलभुवनमध्ये विस्तृता यस्य कीर्तिः सुरनरमुनिवन्द्यो वन्दनीयप्रभावः।
स खलु वरुणदेवो भक्तिपूर्वं प्रदत्तं भुविभयहारी अङ्गरागं दधातु।।15।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम्

कर्पूरकुङ्कुमसुगन्धि सुगन्धितं हि कस्तूरिचन्दनरसैः परिवर्धितं तम्।
विज्ञैर्बुधैश्च विबुधैः समुपासितं त्वं धूपं गृहाण सुरभि परिपावनं च।।16।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। धूपं समर्पयामि।

दीपम्

तमोनाशकं दीप्तिदीप्तं प्रदीपं प्रभाभासुरं भासयन्तं गृहन्तः।

स्फुरज्ज्योतिषं वर्तियुक्तं सुदीपं जगद्देवदेव त्वमङ्गीकुरुष्व।।17।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। दीपं समर्पयामि।

नैवेद्यम्

सौवर्णपात्रे समलङ्कृतेऽस्मिन् यथायथं तद्विनिवेशितं च।
सुस्वादु शीतं मधुरं नवं च नैवेद्यमङ्गीकुरु देव-देव।।18।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

एलालवङ्गलवलीक्रमुकादियुक्तं सुस्वादुगन्धिसुरभिं सुमनोहरं च।
भूपः प्रयाणसमये प्रियमाधृत ताम्बूलरागमुररी कुरु देव-देव।।19।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

भूसुरैः सुरसमैरखिलैर्या वन्दितामृतभुजैः समुपास्या।
तां गृहाण निजभक्तनिवेद्यां दक्षिणां सुमनसापि च मुद्राम्।।20।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

कस्तूरिकुङ्कुमसुगन्धिसुगन्धितेन एलालवङ्गघनसारसमन्वितेन।

सौवर्णपात्रघृतगोमयवर्धकेन नीराजनमपि करोमि तवाप्तिथेयीम्।।21।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

समागतानां भवपाशनाशिनां भवादृशानां त्रयतापहारिणाम्।
विधीयते या विदुषां गृहे सदा प्रदक्षिणां दक्षिणतस्ते करोमि।।22।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अपां पतये वरुणाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे याद्ध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषान्तजादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकाराडिती। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

हे पाशभृद्वरुण नाथ जलेश देव दीने दयां मयि विधेहि सदा सुदेव।
नातः परं किमपि याचयितव्यमस्ति पुष्पाञ्जलिं ननु गृहाण सदा मदीयम्।
अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।।

कलश-प्रार्थना प्रारम्भः

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।३।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कुर्तमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु देवेश! प्रसन्नो भव सर्वदा।।४।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।५।।
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!। पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधो भव।।६।।

2.8 सर्वकर्म के आरम्भ में अवश्यकर्तव्य पंचदेवपूजा (संक्षिप्त)

सनातन धर्म के प्रमुख धर्मशास्त्रों में मानवमात्र का कल्याण के लिये पंचदेवपूजा व पंचमहायज्ञ का विधान किया गया है जिन्हें नित्य सन्ध्यावन्दन करने के पश्चात् करना है। इनके बिना (नित्यसन्ध्यावन्दन, नित्यपंचदेवपूजा और नित्यपंचमहायज्ञ) मनुष्य का जीवन निरर्थक ही नहीं बल्कि जीवनभर जितने भी पुण्य कर्म करते सब व्यर्थ प्राय हो जायेगा। तन्त्र शास्त्रों में भी पंचदेवपूजन का वर्णन मिलता है। जैसे कि कपिल तन्त्र में-

'आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी। वायोः सूर्यः क्षितिरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।'

अर्थात्- विष्णु आकाश के, सूर्य वायु के, शक्ति अग्नि की, गणेश जी जल के और शिवजी पृथिवी के अधिपति हैं। अतः पञ्चतत्त्वों से बना हुआ इस शरीर के स्वस्थ रहकर अपना लक्ष्य मोक्ष की यात्रा को सफल बनाने के लिये इन पंचदेवों की उपासना अति आवश्यक है। तथा अनेकों पुराणों में इस प्रकार कहा गया है-

'आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्। पञ्चदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

एवं यो भजते विष्णुं रुद्रं दुर्गां गणाधिपम्। भास्करं च धिया नित्यं स कदाचिन्न सीदति।।'

केशव (विष्णु), सूर्य, देवी, गणेश और शिव ये पांच देवों की पूजा सभी कर्म के आरम्भ में करना चाहिये। जो विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और देवी की आदरपूर्वक भक्ति व श्रद्धा से आराधना करते हैं वे कभी हीन नहीं होते यानि उनके यश, पुण्य, धन, आयु, आरोग्य आदि कभी घटती नहीं बल्कि दिन प्रतिदिन बढ़ते ही रहेंगे। पंचदेव पूजन में पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार, अष्टादशोपचार, षट्त्रिंशदुपचार, चतुष्षष्ट्युपचार, राजोपचार, आवरणोपचार और मानसोपचार किया जा सकता है यथाशक्ति और यथोपलब्ध सामग्रियों से। अत: वैदिक संप्रदाय भी केवल पांच ही हैं, जैसे कि तन्त्रसार में कहा गया है।-

'शैवानि गाणपत्यानि शाक्तानि वैष्णवानि च। साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि कानि च।।'

जो कुछ भी व जितने भी साधनायें हैं (वेदों, स्मृतियों, पुराणों व रूढ़ि में) उन सब को पांच देवताओं को उद्देश करके होने से (साक्षात् अथवा परम्परया) पांच ही सम्प्रदाय है- शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत और सौर।

श्रीमद्भागवत महापुराण में दूसरे स्कन्ध के तीसरे अध्याय में श्लोक दो से ग्यारह (2.3/2-11) में विशेष रूप से किस कार्य/फल की सिद्धि के लिये किस देवता की उपासना करनी चाहिये इसका विवरण किया गया है। यद्यपि उसमें ब्रह्मा, इन्द्र, दक्षप्रजापति, अष्टवसु, एकादशरुद्र आदि विशेष देवताओं की उपासना करने का विधान भी किया गया है किन्तु वे सब कर्मों के फल की सिद्धि नित्य नियमितरूप से पंचदेवोपासना करते रहने से ही होगी। अत: ऋग्वेद में कहा गया है।

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'

सर्वकर्मारम्भ में पंचदेवोपासना करने की अत्यन्त संक्षिप्त विधि यहाँ दी गई हैं।

1. गणेशस्यावाहनं-
"हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज, सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुःपितः। नागास्य नागहार त्वं गणनाथ चतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः।2। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।3। ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानि गीर्धमात्त्वमजासि गर्भधम्।4। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।" (श्वेतपुष्पश्वेताक्षतदूर्वाङ्कुरैः स्थापयेत्) अथ ध्यानं- नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।।1।। श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्र सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुखरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्। दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयधरमनीशं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं, ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।2।। बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पलं व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रद्योत्कराम्भोरुहं। ध्याये वल्लभया सपद्मकरया क्लिष्टोज्ज्वलद्भूषय विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरं विघ्नेशमिष्टार्थदं।।3।।" अथ प्रार्थना- "विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।1। वक्रतुण्डमहकाय सूर्यकोटिसमप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।2।" पुष्पार्चनं कुर्यात्।

2. अथ दुर्गाया आवाहनं- "नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।1। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे ते नमः।2। महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि।3। देवेशी भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते। यावत्त्वं पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव।4। ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि" (रक्तपुष्परक्ताक्षतैः स्थापयेत्)।
अथ ध्यानं- "मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।1।।

श्यामाङ्गि शशिशेखरां निजकरैर्दानं च रक्तोत्पलं, रत्नाढ्यं कलशं परं भयहरं सम्बिभ्रतीं शाश्वतीम्। मुक्ताहारलसत्पयोधरनतां नेत्रत्रयोल्लासिनीं, ध्यायेत्तां सुरपूजितां हरवधूं रक्तारविन्दस्थिताम्।।2।। हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभां। पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे। ध्याये दुर्गां ब्रह्मसुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरं।।3।।" अथ प्रार्थना- "यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता। दुर्गात्संत्रायते यस्माद्देवी दुर्गेति कथ्यते।। तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीं। प्रपद्ये शरणं देवीं दुं दुर्गे दुरितं हर।।" पुष्पार्चनं कुर्यात्।

3. अथ विष्णोरावाहनं- "ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।1। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं।2। मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गं। पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथं।3। ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि" (पीतपुष्पपीताक्षतैः स्थापयेत्)। अथ ध्यानं- "सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्। सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।1।। ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायण सरसिजासनसन्निविष्टः। केयूरवान्मकरकुण्डल-हारकिरीटी हारीहिरण्मयवपुः धृतशङ्खचक्रः।2।" अथ प्रार्थना- "क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेर्मौक्तिकानाम्। मालाक्लृप्तासनस्थस्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः।1। शुभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तिपीयूषवर्षैः। आनन्दी नः पुनियादरिनलिनगदाशङ्ख पाणिर्मुकुन्दः।2।" पुष्पार्चनं कुर्यात्

4. अथ सूर्यस्य आवाहनं- "आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नृतं मर्त्यं च। हिरण्मयेन सविता रथेना देवो यानि भुवनानि पश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं। कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शन्तमं हृदे। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि" (रक्तपुष्परक्ताक्षतैः स्थापयेत्)। अथ ध्यानं- "सूर्यरश्मिर्हरिकेशः

पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ2 अजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे प्राति विद्वान् सम्पश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः।।1।। ध्यायेत्सूर्यमनन्तकोटिकिरणं तेजोमयं भास्करं, भक्तानामभयप्रदं दिनकरं ज्योतिर्मयं शंकरं। आदित्यं जगदीशमच्युतमजं त्रैलोक्यचूडामणिं, भक्ताभीष्टवरप्रदं दिनमणिं मार्ताण्डमाद्यं शुभं।2।'' अथ प्रार्थना- ''जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरं।1। ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे हरिः।2।'' पुष्पार्चनं कुर्यात्।

5. अथ शिवस्य आवाहनं- ''नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।1। नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।2। ॐ भूर्भुवःस्वः शिवमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि'' (पुष्पाक्षतैः स्थापयेत्)। अथ ध्यानं- ''ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं।। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।'' अथ प्रार्थना- ''भीतिर्नैव भुजंगपुंगवविषात् प्रीतिर्न चन्द्रामृतात्। नाशौचं गले रुण्डमाललुलनान्न शौचं गंगाजलात्।। नोद्वेगश्चितिभस्मनो न च सुखं गौरीस्तनालिङ्नात्। स्वात्मारामतया हिताहित सम स्वस्थो हर पातु वः।।'' पुष्पार्चनं कृत्वा पुनः प्रार्थयेत्- ''आगता ये सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिराः समे। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्तिष्ठन्तु सन्निधौ।। ॐ शिवविष्णुगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः।'' पुष्पाणि समर्प्य षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत्। पुरुषसूक्त से देवों का षोडशोपचारपूजन और देवियों का श्रीसूक्त से षोडशोपचारपूजन कर सकते हैं।

2.9 सर्वमन्त्रादिकर्मानुष्ठानयोग्यः प्रयोगक्रमः-

संस्कार भास्कर में कहा गया है कि-

''शान्तिक्रमं प्रवक्ष्यामि नारदेन यथोदितम्। गणेशं पूजयेदादौ स्वस्तिपुण्याहवाचनम्।। मातृणां पूजनं कार्यं नान्दीश्राद्धमतः परम्। आचार्यं वरयित्वाथ ब्रह्माणं गाणपत्यकम्।। सदस्यानृत्विजश्चैव जापकान्वरेयत्ततः। दिग्रक्षणं ततः कार्यं पञ्चगव्यं यथाविधि।। भूमिं संपूज्य विधिवत्तत्र संस्कारपञ्चकम्। स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य कलशान्स्थापयेत्क्रमात्।। मूर्त्त्यग्न्युत्तारणं प्राणप्रतिष्ठा स्थापनार्चनम्। ग्रहादीन्स्थापयित्वाथ स्थापयेद् रुद्रकुम्भकम्।। ब्रह्मासनं ततो दत्त्वा कारयेत्कुशकण्डिकाम्। लिङ्गोक्तैर्नाममन्त्रैर्वा यथाविधि यथाक्रमम्।। देवताग्रहहोमं च यथासंख्यपुरः सरम्। पूजा स्विष्टिं नवाहुत्यो बलिं पूर्णाहुतिस्तथा।। संस्रवादिविमोकान्तं होमशेषं समापयेत्। श्रेयः संपाद्य दानञ्च ह्यभिषेको विसर्जनम्।। विप्राशिषः प्रगृह्णीयात्तान्मिष्टान्नेन भोजयेत्। भोजयित्वा ततोऽतिथीन्स्वयं चैवाशनं कुर्वीत।।

किसी भी मन्त्रादि का अनुष्ठानपूर्वकहवनपर्यन्त कर्म को करने का यह वैदिक क्रम है। स्नानादिकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनं कुर्यात् ततः पूजा अन्ते च होमः।

पूर्वांगकर्मः-

1. आचमनम्।, 2. शरीरशुद्धिः, 3. पवित्रधारणम्, 4. शिखाबन्धनम्। 5. प्राणायामः, 6. पुनराचमनम्। 7. दिग्रक्षणं (संक्षिप्त), 8. पृथिवीपूजनम्, 9. शंखपूजनम्, 10. दीपार्चनम्, 11. घण्टापूजनम्, 12. यजमानतिलकम्, 13. शान्तिपाठः, 14 कर्मपात्रपूजनम्, 15. सूर्यार्घ्यः, 16. प्रधानसंकल्पः, 17. गणेशाम्बिकयोः पूजनम्, 18. कलशपूजनम्, 19. स्वस्तिपुण्याहवाचनम्, 20. मातृकाणां पूजनम्, 21. ओंकारश्रीपूजनम्, 22. त्रिदेवपूजनम्, 23. पंचदेवपूजनम्, 24. नान्दीश्राद्धम्, 25. आचार्यादिवरणम्, 26. मधुपर्कपूजनम्।

मण्डपान्तर्वर्तिकर्मः-

1. मण्डपप्रवेशः, 2. भूतोत्सादनम्, 3. पञ्चगव्यकरणम्, 4. वास्तुकीलनम्, 5. वास्तुपूजनम् संक्षिप्त, 6. चतुष्षष्ठीयोगिनीपूजनम्,

7. क्षेत्रपालपूजनम् संक्षिप्त, 8. नवग्रहपूजनम्, संक्षिप्त, 9. प्रधानपीठे प्रधान देवतापूजनम्, 10. यन्त्र लेखनम्/मूर्तिशोधनम्, 11. यन्त्र/मूर्ति अग्न्युत्तारणम् प्राणप्रतिष्ठा च, 12. भूमिं सम्पूज्य पञ्चभूसंस्कारकरणम्, 13. मालादिसंस्कारार्थं स्थण्डिले अग्निस्थापनम्, 14. मालासंस्कारः, 15. मातृकादिन्यासकरणम्।

उपचाराः (16 में से 10)

1. ध्यानं व आवाहनम्, 2. आसनम्, 3. पाद्यम्, 4. अर्घ्यम्, 5. आचमनादि, 6. स्नानादि, 7. वस्त्रोपवस्त्रम्, 8. यज्ञोपवीतादि, 9. गन्धादि, 10. पुष्पादि।

प्रधानपूजाप्रकरणम्:-

1. प्रधानदेवताया अंगानां पूजा, 2. यन्त्रस्यावरणानां पूजा, 3. यन्त्रस्य/मूर्तेर्वा शेषपूजा।

अवशिष्टोपचाराः- (11 से 16)

1. धूपम्, 2. दीपम्, 3. नैवेद्यादि, 4. नमस्कारः, 5. प्रदक्षिणा, 6. पुष्पाञ्जलिः।

अवशिष्टपूजा:-

1. नवग्रहपूजनम् (अधिदेवताः, प्रत्यधिदेवताश्च) 2. पंचलोकपालपूजनम्, 3. दशदिक्पालपूजनम्, 4. वास्तुदेवतापूजनम्, 5. क्षेत्रपालदेवतापूजनम्, 6. सर्वतोभद्रमण्डल/एकलिंगतोभद्रदमण्डल (गौरीतिलकमण्डल) पूजनम्, 7. अखण्डदीपपूजनम्, 8. नारिकेलबलिदानम्, 9. पाठक/जापक पूजनम्।

हवनम्:-

1. अग्निस्थापनम्-

1. कुण्डपूजनम्, वैदिक विधिः / आगमविधिः / संक्षिप्तविधिः। 2. अग्निस्थापनम्। 3. अग्निसम्मुखीकरणम्।

2. होमप्रकरणम्:-

1. आघाराज्यभागहोमः, 2. द्रव्यत्यागः, 3. अग्निपूजनम्, 4. वराहुतिहोमः, 5. अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितनवग्रहहोमः, 6. पंचलोकपालहोमः, 7. दशदिक्पालहोमः, 8. प्रधानदेवताहोमः, 9. पीठदेवतानां होमः, 10. आवरणदेवतानां होमः, 11. प्रधानदेवतायाः 108/1000 नामावलिहोमः, 12. तर्पणम्, 13. मार्जनम्, 14. वास्तुहोमः, 15. चतुष्षष्ठीयोगिनीहोमः, 16. क्षेत्रपालहोमः, 17. मण्डलदेवताहोमः, 18. फलीकरणहोमः, 19. स्थापितदेवतानां पुनः संक्षिप्त पूजनम्, 20. पूर्णाहुतिः, 25. वसोर्धारा, 26. पूर्णपात्रदानम्, 27. यज्ञभस्मधारणम्, 28. संस्रवप्राशनम्, 29. प्रणीताविमोकः, 30. प्रदक्षिणा, 31. गोदानम्, 32. श्रेयःसम्पादनम्, 33. अभिषेकः, 34. विसर्जनम्, 35. अवभृथस्नानम्, 36. ब्राह्मणभोजनम्, 37. अतिथ्यादिभोजनम्।

-----00000-----

3 अनुष्ठानविधिखण्डः

3.1 श्रीगुरुपादपूजापद्धतिः

अथ विघ्नेश्वर प्रार्थना :-

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

संकल्पः :-

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीगुरोः प्रसादसिद्ध्यर्थं दृढवैराग्यपूर्वकपरिपूर्णज्ञानसिद्ध्यर्थं च श्रीगुरुपादपूजां करिष्ये।
(सशरीरगुरोरभावेऽनुपस्थिते वा वेदव्यासयन्त्रे पूजनं कुर्यात्। यन्त्रं च पृष्ठ संख्या 438 चित्र संख्या 12)

ध्यानम् :- ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यदिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
ब्रह्मविद्याप्रदातारं सद्गुरुमावाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

1. आसनम् :- ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने। व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः।।
सर्वव्यापिने सद्गुरवे नमः, आसनं समर्पयामि।।

2. पूर्णकुम्भः :- अन्तः पूर्णो बहिः पूर्णः पूर्णकुम्भ इवार्णवे। अन्तः शून्यो बहिः शून्यः शून्यकुम्भ इवाम्बरे।।
पूर्णाय सद्गुरवे नमः, पूर्णकुम्भं समर्पयामि।।

3. पाद्यम् :- यत्पादपंकजद्वन्द्वग्रहणेन मुमुक्षवः। तुरीयं पादमीप्सन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
तुरीयपादप्रापकाय सद्गुरवे नमः, पाद्यं समर्पयामि।।

4. अर्घ्यम् :- अलब्ध्वाऽतिशयं यस्माद् व्यावृत्तास्तमसादयः। गरीयसे नमस्तस्मा अविद्याग्रन्थिभेदिने।।
अविद्यानाशकाय सद्गुरवे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।।

5. स्नानम् :- यच्छुद्धवाक्यतीर्थेषु स्नाताः पुण्या मुमुक्षवः। विरजा ब्रह्म गच्छन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
महावाक्योपदेशकर्त्रे सद्गुरवे नमः, स्नानं समर्पयामि।।

6. वस्त्रम् :- मूलं तरोः केवलमाश्रयन्त पाणिद्वयं भोक्तुममत्रवन्तः। कन्यामिव श्रीमपि कुत्सयन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः।। कृतकृत्याय सद्गुरवे नमः, वस्त्रं समर्पयामि। भस्मादिकं च समर्पयामि।।

7. गन्धः :- विप्राणां विनयो ह्येषः शमः प्राकृत उच्यते। दमः प्रकृतिदान्तत्वादेवं विद्वान् शमं व्रजेत्।।
प्रकृतिशान्ताय सद्गुरवे नमः, शीतान् गन्धान् समर्पयामि।।

8. कुंकुमम् :- श्रोत्रियोऽवृजिनोऽकामहतो यो ब्रह्मवित्तमः। ब्रह्मण्युपरतः शान्तः निरिन्धन इवानलः।।
विरक्ताय सद्गुरवे नमः, हरिद्राकुंकुमं समर्पयामि।।

9. पुष्पमाला :- येन षड्लिंगसूत्रेण कृता तात्पर्यमालिका। वेदान्तवाक्यपुष्पेभ्यः तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
वेदान्ततात्पर्यबोधकाय सद्गुरवे नमः, पुष्पमालिकां समर्पयामि।।

10. अर्चना :- भावाद्वैतं सदा कुर्यात् क्रियाद्वैतं न कर्हिचित्। अद्वैतं त्रिषु लोकेषु नाद्वैतं गुरुणा सह।।
परमपूज्याय सद्गुरवे नमः, पुष्पैः पूजयामि।।

11. धूपः :- चन्दनागरुधूपेन सुगन्धो मारुतो यथा। यस्य संगादहं धन्यः तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
सत्पुरुषाय सद्गुरवे नमः, धूपमाघ्रापयामि।।

12. दीपः :- आवृतस्वस्वरूपाणां त्रितापक्लिष्टदेहानां। शास्त्रवाक्यार्थदीपेन वृतिनाशकमाश्रये।।
आवृतिनाशकाय सद्गुरवे नमः, दीपं दर्शयामि।।

13. नैवेद्यम् :- क्षुत्पिपासाऽन्ध्यबाधिर्यकामक्रोधादयोऽखिलाः। लिंगदेहगता एते ह्यलिंगस्य न विद्यते।।
क्षुत्पिपासारहिताय सद्गुरवे नमः, इदं सर्वं निवेदयामि।।

14. नीराजनं :- हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्मनिष्कलं। तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः तद्यदात्मविदो विदुः।।
ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।। ज्योतिःस्वरूपाय सद्गुरवे नमः, नीराजनं सन्दर्शयामि।।

15. सर्वोपचाराः :-अजमनिद्रमस्वप्नं अनामकमरूपकं। सकृद्विभातं सर्वज्ञं नोपचारः कथंचन।।
अव्यवहाराय सद्गुरवे नमः, सर्वोपचारान् समर्पयामि।।

16. स्तोत्रम् :- दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः।
स्पर्शश्चेन्नात्र कल्प्यः स नयति यदहो स्वर्णतामश्मसारं।।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये। (श्रीसद्गुरुपादस्तवं च पठेत्-पृष्ठ संख्या 290)
स्वीयं साम्यं विधत्ते निरुपमस्तेन वाऽलौकिकोऽपि।। निरुपमाय सद्गुरवे नमः, स्तोत्राणि समर्पयामि।।

प्रदक्षिणानमस्काराः :-

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मय्येव सर्वं परिकल्पितं च। इत्थं विजानामि सदाऽऽत्मरूपं तस्यांघ्रिपद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यं।
दुर्दर्शमतिगम्भीरमजं साम्यं विशारदम्। बुद्ध्वा पदमनानात्वं नमस्कुर्मो यथाबलं।।
स्वात्मरूपाय सद्गुरवे नमः, अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।।
गुरुपादपूजाकर्मसाद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। वैदिकपुष्पांजलिं कृत्वा
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
गुर्वष्टोत्तरशतनामावलि (स्तोत्र खण्ड में देखें पृष्ठ संख्या 292) से पुष्पार्चन करें।

3.2 श्रीसरस्वतीमन्त्रप्रयोगः

फलम्– विद्याप्राप्तिः, वाक्सिद्धिः, कवित्वसिद्धिश्च। अनुष्ठानम्–48 दिन में 1,25,000। पुरश्चरण 24 लाख+दशांशादिः।

ॐ प्रणो देवीत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीसरस्वती देवता, अं बीजं, उं शक्तिः, मं कीलकम्, परमपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :–

ॐ प्रणो देवीत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाजर्षये नमः – शिरसि, **ॐ श्री गायत्रीछन्दसे नमः** – मुखे, **ॐ श्री सरस्वती देवतायै नमः** –हृदये, **ॐ अं बीजाय नमः** –गुह्ये, **ॐ उं शक्तये नमः** –पादयोः, **ॐ मं कीलकाय नमः** – नाभौ, **परमपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः** – सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः –

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ ॐ नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ प्रणो नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ देवी नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ सरस्वती नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ वाजेभिर्वाजिनीवती नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ धीनामवित्र्यवतु नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् :-

या वेदान्तार्थतत्त्वैकस्वरूपा परमार्थतः। नामरूपात्मना व्यक्ता सा मां पातु सरस्वती।।

न्यूनतम पंचोपचारपूजन करें –

ॐ लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै गन्धं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि,

ॐ हं आकाशतत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै पुष्पं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि,

ॐ यं वायुतत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै धूपं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि,

ॐ रं वह्नितत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै दीपं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि,

ॐ वं जलतत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै नैवेद्यं परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि,

ॐ सं सर्वतत्त्वात्मिकायै महासरस्वत्यै ताम्बूलादिसर्वोपचारान् परिकल्पयामि पूजयामि समर्पयामि।

सरस्वतीयन्त्रे वा विशेषतः (पृष्ठ संख्या 437 चित्रसंख्या 1 अथवा 2) पूजां कृत्वा श्रीसरस्वतीक्षमायाचनास्तोत्रं च पठेत् (पृष्ठ संख्या 288)।

तत्पश्चात् यथाशक्ति जपं कुर्यात्–

"ॐ प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनामवित्र्यवतु"

इस चतुर्विंशत्यक्षरीमन्त्र का जप करके सरस्वती के कोई भी स्तोत्र (स्तोत्र खण्ड में देखें) का पाठ कर भगवती को समर्पित करें।

3.3 एकाक्षरी/भुवनेश्वरीमन्त्रानुष्ठानविधिः

फलम्- श्रीयन्त्रपूजाधिकारित्वप्राप्तिः, सर्वकामसिद्धिः, लक्ष्मीप्राप्तिश्च। अनुष्ठानम्- 21 दिन में 51000। पुरश्चरण 3 लाख+दशांशदि।

विनियोग- **ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो, भुवनेश्वरी देवता, हकारो बीजम्, ईकारः शक्तिः, रेफः कीलकं, चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः:-

ॐ शक्ति ऋषये नमः - शिरसि। **ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः** - मुखे। **ॐ श्रीभुवनेश्वरीदेवतायै नमः** - हृदये।
ॐ हकारबीजाय नमः - गुह्ये। **ॐ ईकारशक्तये नमः** - पादयोः। **ॐ रकारकीलकाय नमः** - नाभौ।
ॐ चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः :-

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ ह्रां नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ ह्रीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ ह्रूं नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ ह्रैं नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ ह्रौं नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ ह्रः नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

ॐभूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं- **बालविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।**
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

श्रीभुवनेश्वरीयन्त्रं (पृष्ठ संख्या 437, चित्र संख्या 3) अथवा श्रीभुवनेश्वरीमूर्तौ स्थापयित्वा पूजयेत्/मानसोपचारपूजां वा कुर्यात्। एकाक्षरीमन्त्र से पूजा करें- **ह्रीं** तत्पश्चात् **ह्रीं** मन्त्र का जप कर निम्न तीन स्तोत्रों का पाठ करें।

भुवनेश्वरी स्तोत्रम्

प्रसीद प्रपञ्चस्वरूपे प्रधाने प्रकृत्यात्मिके प्राणिनां प्राणसंज्ञे।
प्रणोतुं प्रभो प्रारभे प्राञ्जलिस्त्वां प्रकृत्याप्रतर्क्यप्रकामप्रवृत्ते।।1।।
स्तुतिर्वाक्यबद्धा पदात्मैव वाक्यं ध्रुवं त्वां त्वमेवाक्षरैस्त्वन्मयैः।
स्तौष्यतस्त्वन्मयी वाक्प्रवृत्तिर्यतः स्यात् सा परा त्वमेव भवानी।।2।।
अजाधोक्षजत्रीक्षणा चापि रूपं परं नाभिजानन्ति मायामयं ते।
स्तुवन्तीशितां त्वाममी स्थूलरूपां तदेतावदम्बेह युक्तं ममापि।।3।।
नमस्ते महत्त्वं प्रपन्ने प्रधाने नमस्ते त्वहङ्कारतत्त्वस्वरूपे।।4।।
नमः शब्दरूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्शरूपे नमो वायुरूपे।
नमो रूपतेजोरसाम्भःस्वरूपे नमस्तेऽस्तु गन्धात्मिके भूस्वरूपे।।5।।
नमः श्रोत्रचर्माक्षिजिह्वाख्यनासास्यवाक्पाणिपत्पायुसोपस्थरूपे।
मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तस्वरूपे विरूपे नमस्ते विभो विश्वरूपे।।6।।

रवित्वेन भूत्वान्तरात्मा दधासि प्रजाञ्चन्द्रमस्त्वेन पुष्णासि भूयः।
दधत्यग्निमूर्तिं दहस्याहुतिं वा महादेवि तेजस्त्रयं त्वत्त एव।।7।।
चतुर्वक्त्रयुक्ता लसद्धंसवाहा रजःसंश्रिता ब्रह्मसंज्ञां दधाना।
जगत्सृष्टिकार्या जगन्मातृरूपे वरं त्वत्पदं ध्यायसीशि त्वमेव।।8।।
विराजत्किरीटा लसच्छंखचक्रा वहन्ती च नारायणाख्यां जगत्सु।
गुणं सत्त्वमास्थाय विश्वस्थितिं यः त्वमेव करोतीह सोंऽशोऽपि देवि।।9।।
जटाबद्धचन्द्राहिगणां त्रिनेत्रां जगत्संहरन्ती च कल्पावसाने।
तमः संश्रितां रुद्रसंज्ञां दधाना वहन्ती परश्वक्षमाले विभासि।।10।।
सचिन्ताक्षमाला सुधाकुम्भलेखाधरा त्रीक्षणार्धेन्दुराजत्कपर्दा।
सुशुक्लांशुकाकल्पदेहा सरस्वत्यपि त्वन्मयैवेशि वाचामधीशा।।11।।
लसच्छंखचक्रा लसद्खड्गचक्रा लसद्खड्गभीमा नदत्सिंहवाहा।
द्रवद्दैत्यवर्गा स्तुवत्सिद्धवर्गा त्वमम्बेशि दुर्गापि सर्गादिहीने।।12।।
पुराराતિदेहार्धभागा भवानी गिरीन्द्रात्मजात्वेन यैषा विभासि।
महायोगिवन्द्या महेशा सुनाथा महेश्यम्बिका तत्त्वतस्त्वन्मयैव।।13।।
लसत्कौस्तुभोरसि ते व्योमनीले वसन्तीं च वक्षःस्थले कैटभारेः।
जगद्वल्लभां सर्वलोकैकनाथां श्रियं त्वां महादेव्यहं तामवैमि।।14।।

अजाद्रीगुहाब्जाक्षपोत्रीन्द्रकाणां महाभैरवस्यापि बिन्दुं वहन्त्यः।
विभो मातराः सप्त तद्रूपरूपाः स्फुरन्त्यस्त्वदंशा महादेवि ताश्च।।15।।
समुद्यद्दिवाकृत्सहस्राभभासा सदा सन्तताशेषविश्वावकाशे।
लसन्मौलिबद्धेन्दुलेखे सपाशांकुशाभीत्यभीष्टात्तहस्ते नमस्ते।16।।
प्रभाकीर्तिकान्तिदिवारात्रिसन्ध्याः क्रियाशा तमिस्रा क्षुधाबुद्धिमेधा।
धृतिर्वाङ्मतिः सन्मतिः श्रीश्च कान्तिस्त्वमेवेशि येऽन्ये च शक्तिप्रभेदाः।।17।।
हरे बिन्दुनादैः सशक्त्याख्यशान्तैर्नमस्तेऽस्तु भेदप्रभिन्नैरभिन्नैः।
सदा सप्तपाताललोकाचलाब्धिगुहद्वीपधातुस्वरादिस्वरूपे।18।।
नमस्ते नमस्ते समस्तस्वरूपे समस्तेषु वस्तुष्वनुस्यूतरूपे।
अतिस्थूलसूक्ष्मस्वरूपे महेशि स्मृते बोधरूपेऽप्यबोधस्वरूपे।19।।
मनोवृत्तिरस्तु स्मृतिस्ते समस्ता तथा वाक्प्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि।
शरीरप्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि शरीरप्रवृत्तिः प्रणामक्रिया स्यात्।।20।।
हल्लेखाजपविधिसमर्चनविशेषानेतांस्तां स्तुतिमपि नित्यमादरेण।
योऽभ्यसेत् स खलु परां श्रियं परस्य धाम्नः प्राप्नोत्येव न संशयः।।21।।

।। इति भुवनेश्वरीस्तुतिः।।

अथ अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्-

महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा। महेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणि ब्रह्मरूपिणी।।1।।
वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटिसेविता। जया च विजया चैव कौमारी सर्वमङ्गला।।2।।
हिङ्गला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी। ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी।।3।।
वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता। वामाङ्गा वामचारा च वामदेवप्रिया तथा।।4।।
डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका। पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती।।5।।
भूचरी खेचरी माया मातङ्गी भुवनेश्वरी। कान्ता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी।।6।
इन्द्राणि ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा।।7।।
सर्वधातुमयीमूर्तिर्जलरूपा जलोदरी। आकाशी रणगा चैव नृकपालविभूषणी।।8।।
नर्मदा मोक्षदा चैव कामधर्मार्थदायिनी। गायत्री चाथ सावित्री त्रिसन्ध्या तीर्थगामिनी।।9।।
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा। पौर्णमासी कुहुरूपा तिथिमूर्तिस्वरूपिणी।।10।।
सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला। अनला अर्धमात्रा च अरुणा पीतलोचना।।11।।
लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी। नागपाशधरा मूर्तिरगाधा धृतकुण्डला।।12।।
क्षत्ररूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता। अव्यक्ता व्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी।।13।।
मातङ्गी मत्तमातङ्गी महादेवप्रिया सदा। दैत्यघ्नी चैव वाराही सर्वशस्त्रमयी शुभा।।14।।

।।इत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संनूर्णम्।।

भ्रमराम्बाष्टकम्

चाञ्चल्यारुणलोचनाञ्चितकृपाचन्द्रार्कचूडामणिम्, चारुस्मेरमुखां चराचरजगत् संरक्षणीं तत्पदाम्।
चञ्चच्चम्पकनासिकाग्रविलसन् मुक्तामणीरञ्जिताम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।1।।
कस्तूरीतिलकाञ्चितेन्दुविलसत् प्रोद्भासिफालस्थलीम्, कर्पूरद्रवभिश्चूर्णखदिरामोदोल्लसद्वीटिकाम्।
लोलापाङ्गतरङ्गितैरधिकृपासारैर्नतानन्दिनीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।2।।
राजन्मत्तमरालमन्दगमनां राजीवपत्रेक्षणाम्, राजीवप्रभवादिदेवमुकुटै राजत्पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायतेन्दुमण्डितकुचां राजाधिराजेश्वरीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।3।।
षट्तारां गणदीपिकां शिवसतीं षड्वैरिवर्गापहाम्, षट्चक्रान्तरसंस्थितां वरसुधां षड्योगिनीवेष्टिताम्।
षट्चक्राञ्चितपादुकाञ्चितपदां षड्भावगां षोडशीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।4।।
श्रीनाथादृतपालितत्रिभुवनां श्रीचक्रसंचारिणीम्, ज्ञानासक्तमनोजयौवनलसद्गन्धर्वकन्यादिताम्।
दीनानामतिवेलभाग्यजननीं दिव्याम्बरालङ्कृताम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।5।।
लावण्याधिकभूषितांगतिलकां लाक्षालसद्रागिणीम्, सेवायातसमस्तदेववनितां सीमान्तभूषान्विताम्।
भावोल्लासवशीकृतप्रियतां भण्डासुरच्छेदिनीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।6।।
धन्यां सोमविभावनीयचरितां धाराधरश्यामलाम्, मुन्याराधनमेधिनीं सुमहतां मुक्तिप्रदानव्रताम्।
कन्यापूजनसुप्रसन्नहृदयां काञ्चीलसन्मध्यमाम्, श्रीशैलस्थवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।7।।
कर्पूरागुरुकुङ्कुमाङ्किकतकुचां कर्पूरवर्णस्थिताम्, कृष्टोत्कृष्टसुकृष्टकर्मदहनां कामेश्वरीं कामिनीम्।

कामाक्षीं करुणारसार्द्रहृदयां कल्पान्तरस्थायिनीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।8।।
गायत्रीं गरुडध्वजां गगनगां गन्धर्वगानप्रियाम्, गम्भीरां गजगामिनीं गिरिसुतां गन्धाक्षतालङ्कृताम्।
गर्गगौतमशर्वसन्नुतपदां गां गौतमीं गोमतीम्, श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातरं भावये।।9।।

।।इति भ्रमराम्बाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्।।

3.4 (क) शिवपंचाक्षरीमंत्रप्रयोगविधिः-

फलम्- ज्ञानप्राप्तिः, आयुरारोग्यम्, सुखशान्तिश्च। अनुष्ठानम्-81 दिन में 125000। पुरश्चरण 5 लाख+दशांशादिः।

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, शिवो देवता, मं बीजं, यं शक्तिः, वां कीलकं, सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वकाखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :-

ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमहामंत्रस्य वामदेवर्षये नमः - शिरसि, **ॐ पंक्तिछन्दसे नमः** - मुखे,
ॐ शिवाय देवतायै नमः - हृदये, **ॐ मं बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ यं शक्तये नमः** - पादयोः,
ॐ वां कीलकाय नमः - नाभौ, **ॐ सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वकाखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः :-

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ नं नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ मं नमः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ शिं नमः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ वां नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ यं नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्:- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।
कैलासपीठासनमध्यसंस्थं भक्तैः सनन्दादिभिरर्च्यमानं।
भक्तार्तिदावानलहाप्रमेयं ध्यायेदुमालिंगितविश्वभूषणम्।।

शिवयन्त्रं स्थापयित्वा (पृष्ठ संख्या 437, चित्र संख्या 4 अथवा 5) पूजयेत्।

अथ जपः :- 'ॐ नमः शिवाय' अस्य मन्त्रस्य संकल्पानुसारेण यथाशक्तिर्वा जपं कुर्यात्।। तत इदं स्तोत्रं पठेत् -

अथ अष्टमूर्तिशिवाष्टकस्तोत्रं :-

त्वम्भाभिराभिरभिभूय तमःसमस्त, मस्तं नयस्यभिमतानि निशाचराणाम्।
देदीप्यसे दिवमणे गगने हिताय, लोकत्रयस्य जगदीश्वर तन्नमस्ते।।1।। (सूर्यतत्त्व)
लोकेऽतिवेलमतिवेलमहामहोदधि, निर्भासिकौचगगनेऽखिललोकनेत्रः।
विद्रावितखिलतमास्सुतमो हिमांशो, पीयूषपूरपरिपूरित तन्नमस्ते।।2।। (चन्द्रतत्त्व)
त्वं पावने पथि सदागतिरप्युपास्यः, कस्त्वां विना भुवनजीवन जीवतीह।
स्तब्धप्रभंजनविवर्धितसर्वजन्तो, संतोषिताहिकुल सर्वग वै नमस्ते।।3।। (पृथिवीतत्त्व)
पानीयरूप परमेश जगत्पवित्र, चित्रातिचित्रसुचरित्र करोषि नूनम्।
विश्वं पवित्रममलं किल विश्वनाथ, पानीयगाहनत एतदतो नतोऽस्मि।।4।। (जलतत्त्व)
विश्वम्भरात्मक बिभर्षि विभोऽत्र विश्वं, को विश्वनाथ भवतोऽन्यतमस्तमोऽरिः।
स त्वं विश्वनाथ तमो मम चाहिभूष, स्तव्यात्परः परस्परं प्रणतस्ततस्त्वां।।5।। (अग्नितत्त्व)
विश्वैकपावक न तावक पावकैक,-शक्ते ऋतेऽमृतवतामृतदिव्यकार्यम्।
प्राणिष्वदो जगदहो जगदान्तरात्मन्, स्त्वं पावकः प्रतिपदं शर्मदो नमस्ते।।6।। (वायुतत्त्व)
आकाशरूपबहिरन्तरुतावकाश, - दानादविकस्वरमिहेश्वर विश्वमेतत्।
त्वत्तस्सदा सदय संश्वसिति स्वभावात्संकोचमेति भवतोऽस्मि नतस्ततस्त्वां।।7।। (आकाशतत्त्व)

आत्मस्वरूप तव रूपपरम्पराभि, - राभिस्ततं हर चराचररूपमेतत्।
सर्वान्तरात्मनिलय प्रतिरूपरूप, नित्यं नतोऽस्मि परमात्मजनोऽष्टमूर्ते।।8।। (आत्मतत्त्व)
इत्यष्टमूर्तिभिरिमाभिरबन्धबन्धो, युक्तः करोषि खलु विश्वजनीनमर्ते।
एतत्ततं सूक्तितं प्रणतः प्रणीत, सर्वार्थसार्थपरमार्थ ततो नतोऽस्मि।।9।।

।। इत्यष्टमूर्तिशिवाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्।।

3.4 (ख) श्रीमत्पद्मपादाचार्यविरचितो मन्त्रराजप्रकाशः (पंचाक्षरीमन्त्रार्थः)

त्यागो हि नमसो वाच्य आनन्दः प्रकृतेस्तथा। फलं प्रत्ययवाच्यं स्यात् त्याज्यं पत्रफलादिकम्।।1।।
त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये। अथवा नमसो वाच्यः प्रणामो दैन्यलब्धये।।2।।
दैन्यं सेवा तथा ज्ञप्तिः सिद्धिः सर्वस्य वस्तुनः। नमामि देवदेवेशं सकामो सकाम एव वा।।3।।
नञ निषिध्यते भाव -विकृतिर्जगदात्मनः। मसनं देवदेवेश नेह नानाऽस्ति शब्दतः ।।4।।
अयेति गमयेत्यर्थे तस्माच्छुद्धोऽस्मि नित्यशः। प्रणामो देहगेहादे - रभिमानस्य नाशनम्।।5।।
शिवो ब्रह्मादिरूपस्स्याच्छक्तिभिस्तिसृभिस्सह। अथवा तुर्यमेव स्यान् निर्गुणम्ब्रह्मतत्परम्।।6।।
नमसो नमने शक्तिर्नमनं ध्यानमेव च। ङेऽन्तात्तादात्म्यसम्बन्धः कथ्यते प्रत्यगात्मनोः।।7।।
अहं शिवः शिवोऽहं च मन्ये वेदान्तनिष्ठया। इत्येवं नम इत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः।।8।।
अथवा दास एवाहं अहं दास इतीरणम्। इत्येव नम इत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः।।9।।

अथवेदमिदं सर्वं त्यजामि परमाप्तये। अर्थं धर्मं च कामं च वांछांश्च जगदीश्वरम् ।।10।।

एतन्मन्त्रार्थतत्त्वज्ञैः वेदवेदान्ततत्परैः । निर्णीतं तत्त्वगर्भं यद्विज्ञेयं मुक्तिलब्धये ।।11।।

अथवा मुक्तिलाभाय ध्येयं तत्त्वं विवेकतः। भिन्नं बुद्ध्वा हृदा देवं मन्त्रेणेशं जगद्गुरुम् ।।12।।

नमेरचि नमः प्रोक्तो जन्ता स्याज्जगदीश्वरे। तस्माद्दासोऽहमित्येवं मत्त्वा मां प्रापयात्मनि ।।13।।

अस्मिञ्छेते जगत्सर्वं तन्मयं शब्दगामि यत्। तद्वानाच्छिव इत्युक्तं कारणं ब्रह्म तत्पराः ।।14।।

न मा यस्यास्ति लक्ष्मीश सोऽहं देवो न संशयः। तस्मान्मे प्रापयेहैव लक्ष्मीं विद्यां सनातनीम्।।15।।

यस्मादानन्दरूपस्त्वं देवैर्वेदैर्निगद्यसे । तस्मान्मे देहि योगीश भद्रं ज्ञानं सुभावनम् ।।16।।

यस्मात्त्वं नेति नेतीति नञर्थं मासि वेदजम् । तस्मान्नमोऽसि भद्रं मे यतो जातो नमो नमः ।।17।।

शिवं शिवमथाप्राप्तः शिवायेति निगद्यसे। शिवाय मे तथा प्राप्त्या शिवायेति निगद्यसे ।।18।।

शिवां यातो महाभद्र नमोऽहं मायया ध्रुवं। ततो नमाय मह्यं मः शिवाय कुरु सर्वथा ।।19।।

शिवमेति यतो ज्ञप्त्या शिवायस्त्वं प्रपठ्यसे। न ते माया यतो ज्ञप्त्या नमो वेदैः प्रपठ्यते ।।20।।

नमोऽहं च शिवायोऽहं नमो मह्यं नमो नमः। नमो नमाय शुद्धाय मंगलाय नमो नमः ।।21।।

नमो नमसनं शम्भो निराकाराय ते नमः। निर्गुणं निष्क्रियं शान्तं इत्याद्याश्श्रुतयो जगुः ।।22।।

नमो ब्रह्म निराकारं शिवाय शिवः सर्वदा। अतोऽहं च न मा भद्र शिवायोऽहं न संशयः ।।23।।

।। इति श्रीमत्पद्मपादाचार्यविरचितो मन्त्रराजप्रकाशः(पंचाक्षीरहमन्त्रार्थः) ।।

3.5 श्री मृत्युंजयमन्त्रजपविधिः

फलम्– सर्वरोगनिवृत्तिः, अपघातादिकृतभयनिवृत्तिश्च। अनुष्ठान– 5 दिन में 21000, 11 दिन में 51000। विशेष स्थिति में 125000। प्रातः दैनिकसन्ध्यावन्दनादिपूजां समाप्य शिवसन्निधौ पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुखो वा भूत्वा स्वासन उपविश्य स्वसंप्रदायानुसारेण तिलकं कृत्वा रुद्राक्षधारणं कुर्यात्। ततः त्रिराचम्य प्राणानायम्य देशकालौ च संकीर्त्य संकल्पं कुर्यात्।

अथ संकल्पः :-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्मम सर्वपापनिवृत्तिपूर्वकायुरारोग्यैश्वर्यादिसिद्धये तथा आध्यात्मिकधिदैविकाधिभौतिकतापत्रय निवारणार्थ, भौम्यन्तरिक्षदिव्यमहोत्पातागामिसंचितसूचितदुष्टारिष्टदोषपरिहारार्थ, सर्वरोगपरिहारार्थ, विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैरन्यग्रामस्थैर्वा कृतक्रियमाणकारयिष्यमाणदुष्टयन्त्रमन्त्रतन्त्रविषशल्यौषधप्रतिमास्थापनाद्यभिचारकर्म घातफणिहवनश्येनयजनदुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादिक्षुद्रकर्मदोषपरिहारार्थ श्रीसदाशिवकृपाप्रसादसिद्ध्यर्थ मृत्युंजयमन्त्रस्य यथाशक्ति जपं ....गोत्रोत्पन्नः.........शर्माऽहं करिष्ये, तदंगत्वेन ऋष्यादिन्यासं च करिष्ये।।

अथ विनियोगः :-

ॐ अस्य श्रीत्र्यम्बकमहामन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, पार्वतीपतिर्देवता, त्र्यं बींज, बं शक्तिः, कं कीलकं, सर्वरोगनाश पूर्वकायुरारोग्यादिसिद्ध्यर्थे सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः।।

अथ ऋष्यदिन्यासः :-

ॐ श्रीवसिष्ठ ऋषये नमः – शिरसि, **ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः** – मुखे, **ॐ श्रीपार्वतीपतिदेवतायै नमः**– हृदये,
ॐ त्र्यं बीजाय नमः – गुह्ये, **ॐ बं शक्तये नमः** – पादयोः, **ॐ कं कीलकाय नमः** – नाभौ,
ॐ सर्वरोगनाशपूर्वकायुरारोग्यादिसिद्ध्यर्थे सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।।

अथ करादिन्यासा: :-

मन्त्रा:	अथ करन्यास:	अथ हृदयादिन्यास:
ॐ त्र्यम्बकं	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
ॐ यजामहे	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
ॐ उर्वारुकमिव बंधनात्	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुम्
ॐ मृत्योर्मुक्षीय	कनिष्ठिकाभ्यां नम:	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ माऽमृतात्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:	अस्त्राय फट्

अथ अक्षरन्यास: :-

ॐ त्र्यं नम: - पूर्वमुखे,
ॐ यं नम: - उत्तरमुखे,
ॐ हें नम: - मुखे,
ॐ न्धिं नम: - पृष्ठे,
ॐ वं नम: - गुदे,
ॐ उं नम: - दक्षिणोरुमध्ये,
ॐ कं नम: - वामजानुनि,
ॐ बं नम: - दक्षिणस्तने,
ॐ मृं नम: - वामपार्श्वे,
ॐ क्षीं नम: - दक्षिणकरे,
ॐ अमृं नम: - वामनासायां,
ॐ बं नम: - पश्चिममुखे,
ॐ जां नम: - उरसि,
ॐ सुं नम: - नाभौ,
ॐ पुं नम: - कुक्षौ,
ॐ र्धं नम: - दक्षिणोरुमूले,
ॐ र्वा नम: - वामोरुमध्ये,
ॐ मिं नम: - दक्षिणजानुवृत्ते,
ॐ न्धं नम: - वामस्तने,
ॐ त्यों नम: - दक्षिणपादे,
ॐ यं नम: - वामकरे,
ॐ तातं नम: - मूर्ध्नि।।
ॐ कं नम: - दक्षिणमुखे,
ॐ मं नम: - कण्ठे,
ॐ गं नम: - हृदि,
ॐ ष्टिं नम: - गुह्ये,
ॐ नं नम: - वामोरुमूले,
ॐ रुं नम: - दक्षिणजानुनि,
ॐ वं नम: - वामजानुवृत्ते,
ॐ नातं नम: - दक्षिणपार्श्वे,
ॐ र्मु नम: - वामपादे,
ॐ मां नम: - दक्षिणनासायां,

अथ पदन्यासः :-

ॐ त्र्यम्बकं	-	शिरसि,	ॐ यजामहे	-	भ्रुवोः,	ॐ सुगन्धिं	-	नेत्रयोः,
ॐ पुष्टिवर्धनं	-	मुखे,	ॐ उर्वारुकं	-	गण्डयोः,	ॐ इव	-	हृदये,
ॐ बंधनात्	-	जठरे,	ॐ मृत्योः	-	गुह्ये,	ॐ मुक्षीय	-	उर्वोः,
ॐ मा	-	जान्वोः,	ॐ अमृतात्	-	पादयोः।।			

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

सर्वतोभद्रमण्डलोपरि कलशं स्थापयेत्। तत्र च मृत्युञ्जययन्त्रं (पृष्ठ संख्या 437, 438, चित्र संख्या 6, 7, 8) स्थापयित्वा पूजयेत्।

अथ ध्यानम्:-

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो, द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परं।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं, स्वच्छाम्भो जगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

अथ पंचोपचारपूजाः-

ॐ लं पृथिवितत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय गन्धं समर्पयामि।
ॐ हं आकाशतत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय पुष्पं समर्पयामि।
ॐ यं वायुतत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तेजस्तत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृततत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सं सर्वतत्त्वात्मने मृत्युंजयाय सदाशिवाय सर्वोपचारार्थे अक्षतानि समर्पयामि।।

अथ मन्त्रः :-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

अथवा मन्त्रः-

'ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।
स्वर्भुवर्भूरोम् सः जूं हौं ॐ।।''

अस्य विनियोगः-

अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः, पंक्तिगायत्र्यनुष्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बींज, क्लीं कीलकम्, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः-

ॐ वामदेवकहोलवसिष्ठर्षिभ्यो नमः- शिरसि, ॐ पंक्तिगायत्र्यनुष्छन्दोभ्यो नमः- मुखे,
ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रेभ्यो नमः- हृदये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः- पादयोः, ॐ श्रीं बीजाय नमः- गुह्ये,
ॐ क्लीं कीलकाय नमः- नाभौ, ॐ सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः- सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यासः-

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-हृदयाय नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय - शिरसे स्वाहा,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा- शिखायै वषट्,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हों- कवचाय हुम्,

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय– नेत्रत्रयाय वौषट्,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्रायाग्निमित्राय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरास्त्राय– अस्त्राय फट्।

अथ करन्यासः-

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा– अंगुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय – तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा– मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हों– अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय– कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्रायाग्निमित्राय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरास्त्राय–
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

पूर्वोक्तवदेवाक्षरपदन्यासयोश्च कृत्वा ध्यान-पूजा-आदिं कुर्यात्।

भगवान् मृत्युञ्जय के स्वरूप का ध्यान कर, मानसोपचार से पूजन कर, उनके लिए विधिवत् अर्घ्य स्थापित कर पीठदेवताओं का पीठ के मध्य में इस प्रकार पूजन करना चाहिए-

ॐ आधारशक्त्यै नमः, ॐ प्रकृत्यै नमः, ॐ कूर्माय नमः ॐ शेषाय नमः,
ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ क्षीरसमुद्राय नमः, ॐ श्वेतद्वीपाय नमः, ॐ मणिमण्डपाय नमः,
ॐ कल्पवृक्षाय नमः, ॐ मणिवेदिकायै नमः, ॐ रत्नसिंहासनाय नमः,

फिर आग्नेयादि कोणों में धर्म आदि का तथा पूर्वादि दिशाओं में अधर्म आदि का पूजन करना चाहिए। यथा-

ॐ धर्माय नमः- आग्नेये, ॐ ज्ञानाय नमः- नैर्ऋत्ये, ॐ वैराग्याय नमः- वायव्ये,
ॐ ऐश्वर्याय नमः- ऐशान्ये, ॐ अधर्माय नमः- पूर्वे, ॐ अज्ञानाय नमः- दक्षिणे,
ॐ अवैराग्याय नमः- पश्चिमे, ॐ अनैश्वर्याय नमः- उत्तरे।

पुनः पीठ के मध्य में अनन्त आदि का इस प्रकार पूजन करना चाहिए।

ॐ अनन्ताय नमः, ॐ पद्मनाभाय नमः,
ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः, ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः,
ॐ रं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः,
ॐ तं तमसे नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

तत्पश्चात् केशरों में पूर्वादि ८ दिशाओं में तथा मध्य में वामादि शक्तियों की पूजा करनी चाहिए। यथा-

ॐ वामायै नमः- पूर्वे, ॐ ज्येष्ठायै नमः- आग्नेये, ॐ रौद्र्यै नमः- दक्षिणे,
ॐ काल्यै नमः- नैर्ऋत्ये, ॐ कलविकरण्यै नमः- पश्चिमे, ॐ बलविकरण्यै नमः- वायव्ये,
ॐ बलप्रमथिन्यै नमः- उत्तरे, ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः- पीठमध्ये,

फिर '**ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः**' इस मन्त्र से आसन देकर, मूल मन्त्र से मूर्ति का ध्यान कर, आवाहनादि उपचारों से पुष्पाञ्जलि समर्पण पर्यन्त महामृत्युञ्जय का पूजन कर, उनकी अनुज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारम्भ करनी चाहिए।

आवरण पूजा- सर्वप्रथम कर्णिका के ईशान कोण में '**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम्**' इस वैदिक मन्त्र से **प्रथम आवरण में** ईशान देव का पूजन करना चाहिए।

फिर पूर्व में- '**ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्**' इस वैदिक मन्त्र से तत्पुरुष का, इसके बाद दक्षिण दिशा में-'**अघोरेभ्यो अथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः**' इस वैदिक मन्त्र से अघोर का, तत्पश्चात् '**ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः बलाय नमः बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः**' इस वैदिक मन्त्र से उत्तर दिशा में वामदेव का, तदान्तर '**ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः**' इस वैदिक मन्त्र से सद्योजात का पश्चिम दिशा में पूजन करना चाहिए। फिर ईशानादि देवों के पास निवृत्ति आदि ५ कलाओं का निम्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिएण।

ॐ निवृत्त्यै नमः, ॐ प्रतिष्ठायै नमः, ॐ विद्यायै नमः,

ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्त्यतीतायै नमः।

इस प्रकार प्रथम आवरण का पूजन कर **द्वितीयवरण** में षडङ्ग न्यास के मन्त्रों से आग्नेयादि कोणो में, मध्य में तथा पूर्वादि दिशाओं में पजन करना चाहिए। - '**ॐ हौं जूं सः भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः, ॐ हौ जूं भूर्भुवः स्वः यजमाहे ॐ रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा, ॐ हौ जूं सः भूर्भुवःस्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्, ॐ हौं जूं सः भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हों कवचाय हुम्, ॐ हौं जूं सः भूर्भुवःस्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हौं जूं सः भूर्भुवःस्वः माऽमृतात् ॐ नमो भगवते रुद्रायाग्निमित्राय ज्वल मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्।**'

फिर **तृतीय आवरण** में अष्टपत्र में पूर्व आदि दिशाओं में नाम मन्त्रों से सूर्य आदि अष्टमूर्तियों का इस प्रकार पूजन करना चाहिए।

यथा–

ॐ सूर्यमूर्तये नमः, ॐ चन्द्रमूर्तये नमः, ॐ क्षितिमूर्तये नमः, ॐ जलमूर्तये नमः,

ॐ अग्निमूर्तये नमः, ॐ वायुमूर्तये नमः, ॐ आकाशमूर्तये नमः, ॐ यज्ञमूर्तये नमः,

चतुर्थ आवरण में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से श्वेत आभावाली रमा आदि का निम्न प्रकार से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ रमायै नमः ॐ राकायै नमः, ॐ प्रभायै नमः, ॐ ज्योत्स्नायै नमः,

ॐ पूर्णायै नमः, ॐ उषायै नमः, ॐ पूरण्यै नमः, ॐ सुधायै नमः,

पंञ्चम आवरण में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से श्याम वर्णवाली विश्वा आदि का निम्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ विश्वायै नमः, ॐ वन्द्यायै नमः, ॐ सितायै नमः, ॐ प्रह्वायै नमः

ॐ सारायै नमः, ॐ सन्ध्यायै नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ निशायै नमः

षष्ठ आवरण में पूर्वादि दिशाओं में अरुण आभावाली आर्या आदि का निम्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ आर्यायै नमः, ॐ प्रज्ञायै नमः, ॐ प्रभायै नमः, ॐ मेधायै नमः,

ॐ शान्त्यै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ धृत्यै नमः, ॐ मत्यै नमः

सप्तम आवरण में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से स्वर्ण जैसी आभावाली धरा आदि की इस प्रकार पूजा करनी चाहिए। यथा–

ॐ धरायै नमः, ॐ उमायै नमः, ॐ पावन्यै नमः, ॐ पद्मायै नमः,

ॐ शान्तायै नमः, ॐ अमोघायै नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ अमलायै नमः

अष्टम आवरण में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से अनन्त आदि अष्ट रुद्रों की निम्न मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए। यथा–

ॐ अनन्ताय नमः, ॐ सूक्ष्माय नमः, ॐ शिवोत्तमाय नमः, ॐ एकनेत्राय नमः,

ॐ एकरुद्राय नमः, **ॐ त्रिमूर्तये नमः,** **ॐ श्रीकण्ठाय नमः,** **ॐ शिखण्डिने नमः,**

नवम आवरण में उत्तर दिशा से विलोम क्रम द्वारा उमा आदि की निम्न मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए। यथा–

ॐ उमायै नमः– उत्तरे, **ॐ चण्डेश्वराय नमः**– वायव्ये, **ॐ नन्दिने नमः**– पश्चिमे, **ॐ महाकालाय नमः**–नैर्ऋत्ये,

ॐ गणेशाय नमः– दक्षिणे, **ॐ वृषभाय नमः**– आग्नेये, **ॐ भृङ्गिरिटिने नमः**– पूर्वे, **ॐ स्कन्दाय नमः**–ऐशान्ये

फिर **दशम आवरण** में पूर्व आदि दिशाओं में ब्राह्मी आदि मातृकाओं का निम्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ ब्राह्मयै नमः, **ॐ माहेश्वर्यै नमः,** **ॐ कौमार्यै नमः,** **ॐ वैष्णव्यै नमः,**

ॐ वाराह्यै नमः, **ॐ इन्द्राण्यै नमः,** **ॐ चामुण्डायै नमः,** **ॐ महालक्ष्म्यै नमः,।**

इसके बाद भूपुर में अपनी अपनी दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का निम्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ लं इन्द्राय नमः, **ॐ रं अग्नये नमः,** **ॐ मं यमाय नमः,** **ॐ क्षं निर्ऋतये नमः**

ॐ वं वरुणाय नमः, **ॐ यं वायवे नमः,** **ॐ सं सोमाय नमः,** **ॐ ईं ईशानाय नमः**

ॐ आं ब्रह्मणे नमः, **ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।**

फिर भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं में वज्रादि आयुधों की निम्न मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए। यथा–

ॐ वं वज्राय नमः, **ॐ शं शक्तये नमः,** **ॐ दं दण्डाय नमः,** **ॐ खं खड्गाय नमः,**

ॐ पां पाशय नमः **ॐ अं अंकुशाय नमः,** **ॐ गं गदायै नमः,** **ॐ शूं शूलाय नमः,**

ॐ चं चक्राय नमः, **ॐ पं पद्माय नमः,**

इस प्रकार आवरण पूजा करने के बाद धूप दीपादि उपचारों से विधिवत् भगवान् महामृत्युञ्जय का पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् यथासंकल्पं जपं कृत्वा मृत्युञ्जयस्तोत्रं पठेत् – (स्तोत्रखण्डे द्रष्टव्यः)।

3.6 अथ अमृत (मृत्) संजीवनी मन्त्रः :–

फलम्- मृत्युतुल्यकष्टस्थिति से निवृत्ति। अनुष्ठानम्-3 दिन में 11000, 5 दिन में 21000। विशेषस्थिति में 125000।

"मूलेन च न्यासं कुर्यात्, त्रि(1)चतुश(2)चैककं(3) पुनः। षट्(4)चतु(5)र्द्विकके(6)नैव षडंगानि समाचरेत्।।"

(अर्थात् 1 ह्रीं हंसः, 2 संजीवनी, 3 जूं, 4 जीवं प्राणग्रन्थिं = हंसः कुरु कुरु, 5 कुरु सौः सौः, 6 स्वाहा।)

विधिः –

अस्य मृत्संजीवनीमन्त्रस्य शुक्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, मृत्संजीवनीदेवी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हंसः कीलकं, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ शुक्र ऋषये नमः – शिरसि, **ॐ गायत्री छन्दसे नमः** – मुखे, **ॐ अमृत्संजीवनीदेवीदेवतायै नमः** – हृदये,
ॐ ह्रीं बीजाय नमः – गुह्ये, **ॐ स्वाहा शक्तये नमः** – पादयोः, **ॐ हंसः कीलकाय नमः** – नाभौ,
ॐ सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः – सर्वाङ्गे।।

अथ करन्यासः –

ॐ ह्रीं हंसः – अंगुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ संजीवनी** – तर्जनीभ्यां नमः, **ॐ जूं** – मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ हंसः कुरु कुरु – अनामिकाभ्यां नमः, **ॐ कुरु सौः सौः** – कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ स्वाहा – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

अथ हृदयादि न्यासः -

ॐ ह्रीं हंसः - हृदयाय नमः, **ॐ संजीवनी** - शिरसे स्वाहा, **ॐ जूं** - शिखायै वषट्,
ॐ हंसः कुरु कुरु - कवचाय हुम्, **ॐ कुरु सौः सौः** - नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ स्वाहा** - अस्त्राय फट्।।

।।ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् -

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितम्। मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।।
कोटीन्दुप्रस्खलत्सुधाप्लुततनुं हारातिभूषोज्ज्वलम्। कान्तं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्।।

अथ मन्त्रः -

'ॐ ह्रीं हंसः, संजीवनी, जूं , हंसः कुरु कुरु, कुरु सौः सौः, स्वाहा।'।1। अथवा

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनमुर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।'।2।

विशेष सूचना :- मन्त्र जप के अनन्तर मार्कण्डेयपुराणोक्त मृत्युञ्जयस्तोत्र का पाठ अवश्य करें (स्तोत्रखण्ड में देखें)। स्तोत्र पाठ के बाद इस मन्त्र का कम से कम एक माला जपें -

"नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय योगीनां पतये नमः।।" ।।शिवार्पणमस्तु।।

3.7 अथ भृग्वर्षिमन्त्रप्रयोगविधिः

फलम्- ज्योतिश्शास्त्रज्ञानं, फलादेशसामर्थ्यञ्च। अनुष्ठानम्- 17, 50 000 का पुरश्चरण 48 दिन में।

अथ संकल्पः :-

ॐ अस्य भृग्वर्षिमहामन्त्रस्य भरद्वाजर्षिः, त्रिष्टुप्छन्दः, भृगुर्देवता, भृं बीजं, ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम्, भृग्वर्षिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :-

ॐ श्रीभरद्वाजर्षये नमः - शिरसि। **ॐ श्रीभृग्वर्षिदेवतायै नमः** - हृदये। **ॐ श्रीत्रिष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे।
ॐ भृं बीजाय नमः - गुह्ये। **ॐ ह्रीं शक्तये नमः** - पादयोः। **ॐ क्लीं कीलकाय नमः** - नाभौ।
ॐ भृग्वर्षिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ अंगन्यासः
ॐ भ्रां नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ भ्रीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ भ्रूं नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ भ्रैं नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ भ्रौं नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ भ्रः नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्दः।

अथ ध्यानम् :- जटिलं चाक्षसूत्रं च वरदण्डं कमण्डलुम्। श्वेतवस्त्रोज्ज्वलं वन्दे सर्वमानवपूजितम्।।

अथ पंचोपचारपूजा :-

ॐ लं पृथिवीतत्त्वात्मने भृग्वर्षये गन्धं समर्पयामि।

ॐ हं आकाशतत्त्वात्मने भृग्वर्षये पुष्पमालां समर्पयामि।

ॐ यं वायुतत्त्वात्मने भृग्वर्षये धूपं समर्पयामि।

ॐ रं तेजस्तत्त्वात्मने भृग्वर्षये दीपं समर्पयामि।

ॐ वं अमृतात्मकजलतत्त्वात्मने भृग्वर्षये नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ सं सर्वतत्त्वात्मने भृग्वर्षये सर्वोपचारपूजार्थं पुष्पाक्षतानि समर्पयामि।

अथ मन्त्रजपः - ॐ भृं श्रीज्योतिःशास्त्रकर्त्रे भृग्वर्षये नमः।

यथाशक्ति/संकल्पानुसारेण वा मन्त्रजपं कृत्वा पुष्पांजलिप्रदक्षिणापूर्वकनमस्कारं कुर्यात्।।

।। इत्यों शम्।।

3.8 श्रीगायत्रीहनुमणराममन्त्रः

यह शाबर मन्त्र है, अतः इसका विनियोग, न्यास आदि नहीं हैं। फलम्- तन्त्र-मन्त्र-आभिचारिकमारण आदि दुष्कर्म प्रयोग का नाश। अनुष्ठानम्- प्रतिदिन 21 पाठ 21 दिन।

ॐ ऐं ह्रीं भूर्हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।1।

ॐ ऐं ह्रीं भुवर्हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं स्वर्हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं तत् तात त्वं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं सवितुः सरस्वत्यै हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं वरेण्यं प्रबल हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं भर्गो भार्गव रुद्रस्त्वं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं देवस्य देवतुल्यायै हनुमन्तायै कीर्तिमान् श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं धीमहि हनुमन्तायै धैर्यवान् श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं धियो यो नः हनुमन्तायै यौवने यशस्विनः श्रीरामदूतायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं प्रचोदयादिदिति हनुमन्तायै तात श्रीरामदूतायै नमः।
मम घोरसंकटघोरसंत्रासघोरकुटिलव्यूहविनाशमविलम्ब एव कुरु प्रभो।
शौर्यधैर्यसिद्धिनिधिविवेकविनम्रतादयाक्षमादृष्टिसम्मोहनवशीकरण -
बाजीकरणप्रभ्वनुरागमविलम्ब एव प्रदत्तं कुरु मे तात।
छिद्रान्वेषणसामर्थ्यं प्रदत्तं कुरु मे तात तुभ्यं शपथ रामजी की।
त्र्यम्बक्यै गौरी सहायक होवे मम प्रभो।
रुद्र प्यारा पीर हमारा भोले बाबा मेरा सहारा, देख मेरे दारुण हालत।
प्रभु मेरे इस कलियुग में कदम कदम घोखा है, रक्ष माम् रक्ष माम्।

।। हरिः ॐ तत्सत्।।

ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।2।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।3।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।4।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।5।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।6।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।7।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।8।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।9।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।10।
ॐ ऐं ह्रीं हनुमन्तायै श्रीरामदूतायै नमः।11।

3.9 (क) अथ सर्वप्रकारशत्रुविजयमंत्रः-

फलम्- सब प्रकार के शत्रुओं पर विजय, न्यायालय में विजय। अनुष्ठानम्- 48 दिन में 51000, 81 दिन में 125000।

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य श्री सर्वप्रकारविजयप्रदायकमहामंत्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री अर्जुनो देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, ग्रामपंचायतादारभ्य न्यायालयादिषु वाऽन्यत्र ये विवादाः सन्ति तेषु स्वपक्षस्य सर्वप्रकारविजयप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ श्री भगवते वेदव्यासाय ऋषये नमः - शिरसि। **ॐ श्री अनुष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे।

ॐ श्री कृष्णार्जुनदेवताभ्याम् नमः - हृदये। **ॐ ह्रीं बीजाय नमः** - गुह्ये।

ॐ श्रीं शक्तये नमः - पादयोः। **ॐ क्लीं कीलकाय नमः** - नाभौ।

ॐ ग्रामपंचायतादारभ्य न्यायालयादिषु वाऽन्यत्र ये विवादाः सन्ति तेषु स्वपक्षस्य सर्वप्रकारविजयप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगाय नमः -सर्वांगे।

अथ करादिन्यासाः :-

अथ मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ अंगन्यासः
ॐ ह्रां नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ ह्रीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ ह्रूं नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**

ॐ ह्रैं नमः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ह्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् :-

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।।

ॐ नमो नारायणाय श्रीसुदर्शनायास्त्रराजाय फट् (- जपार्थे, फट् स्थाने स्वाहा होमार्थे)।।

ततः संकल्पानुसारेण उपरि दर्शित नारायणाष्टाक्षरसुदर्शनास्त्रमन्त्रस्य/एकया मालया संपुटीकृत्येदं मन्त्रं जपेत्,

अथ मन्त्रः -

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरिटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुः विजयी पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः।।
कपिध्वजो गुड़ाकेशो गाण्डिवी कृष्णसारथिः।। अथवा
कौन्तेयार्जुन पुरुषर्षभ पार्थपरन्तपकुरुप्रवीर। पाण्डवानघ भरतर्षभ धनंजयभारतमहाबाहो।।

अन्ते च शिवार्पणं कुर्यात्। अनुष्ठानान्ते दशांशं होमं विध्यनुसारेण कुर्यात्।। हरिः ॐतत्सत्।।

3.9 (ख) पाशुपतास्त्रम्

फलम् - सर्वशत्रु, सर्वविघ्न, सर्वक्लेश, सर्वरोग, सर्वद:ख, सर्वबाधा आदि की आत्यन्तिक निवृत्ति। जपसंख्या - नित्य 1 पाठ अथवा कामना के अनुसार 100 या 1000 पाठ कर दशांश हवनादि करें। सर्वास्त्रधारितपंचमुखी पशुपति (दसहाथवाले) महादेव का ध्यान करें।

अथ विनियोग:-

ॐ अस्य श्रीपाशुपतास्त्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः, पशुपतिर्देवता, हुं बीजं, श्लीं शक्तिः, फट् कीलकं, सर्वोपद्रवशमनार्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यास:-

ॐ श्रीपाशुपतास्त्रमन्त्रस्य ब्रह्मर्षये नमः - शिरसि, **ॐ श्रीगायत्रीछन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ श्रीपशुपतिदेवताभ्यो नमः**- हृदये, **ॐ हुं बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ श्लीं शक्तये नमः** - पादयोः, **ॐ फट् कीलकाय नमः** - नाभौ, **ॐ सर्वोपद्रवशमनार्थे जपे विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यासाः :-

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ अंगन्यासः
ॐ हुं फट्	**अगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ श्लीं हुं फट्	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ पशु हुं फट्	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ हुं हु फट्	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ फट् हुं फट्	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्-

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलम्,
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाशमश्रूस्फुरन्मूर्धजम्।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिं दधानं विभुम्,
दंष्ट्राभीमचतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत्।।

अथ मन्त्रः:- (नित्य न्यूनतम 7 माला अथवा संकल्पानुसारेण)

।। ॐ श्लीं पशु हुं फट्।।

अथ पाशुपतास्त्रस्तवः :-

ॐ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय शमशानवेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तनरताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानुकम्पिनेऽसंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन्सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनीक्षोभजनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभञ्जनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णुकवचाय खड्गवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनागक्षयकारिणे ॐ कृष्णपिङ्गलाय फट्। हुंकारास्त्राय फट्। वज्रहस्ताय फट्। शक्तये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। पाशाय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्। त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट्। मुण्डास्त्राय फट्। कंकालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्।

गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्राय फट्। दक्षिणास्त्राय फट्। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। शाकिन्यस्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नभोऽस्त्राय फट्। शिवास्त्राय फट्। ईशानास्त्राय फट्। पुरुषस्त्राय फट्। अघोरास्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौं नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रास्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। पः फट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भूः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यम् फट्। सर्वलोकाय फट्। सर्वपतालाय फट्। सर्वतत्त्वाय फट्। सर्वप्राणाय फट्। सर्वनाड्यै फट्। सर्वकारणाय फट्। सर्वदेवाय फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकारास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गां गौः फट्। स्त्रौं फट्। हों हौं फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

एकेनैवास्य पाठेन सर्वविघ्नान्नरो ध्वंसेत्। शतावृत्त्या तु मनुष्यः सहस्रेण न संशयः।।1।।

सर्वोत्पातान्नरः नश्येद्युद्धादौ चैव विजयः। गुग्गुलाज्येन हूयेतासाध्यकार्यानपि सिद्धयेत्।।2।।

सर्वक्लेशा तथा नश्येत्पाठमात्रेण वै सदा। सर्वदुःखा निवर्तन्ते नास्त्यत्र संशयोऽपि वै।।3।।

।। आग्नेयपुराणे पाशुपतास्त्रं संपूर्णम्।।

3.10 श्री रक्षोघ्नमहामंत्रानुष्ठानम् (श्रीमद्भगवद्गीता अ0 11 श्लो 36)

फलम्- भूत-प्रेत पिशाचादि बाधानिवृत्तिः, सर्वारिष्टनिवृत्तिश्च। अनुष्ठानम्- प्रतिदिन 21 पाठ 21 दिन, 51 दिन में 1008 पाठ।

ॐ अस्य श्री रक्षोघ्नमहामंत्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः, उपजातिनामकत्रिष्टुप्छन्दः, श्रीकृष्णार्जुनौ परमात्मानौ देवते, ह्रीं बींजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः:-

ॐ श्री भगवते वेदव्यासाय ऋषये नमः - शिरसि।
ॐ श्री उपजातिनामकत्रिष्टुप्छन्दसे नमः - मुखे।
ॐ श्री कृष्णार्जुनाभ्यां देवताभ्यां नमः - हृदये।
ॐ ह्रीं बींजाय नमः - गुह्ये।
ॐ श्रीं शक्तये नमः - पादयोः।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः - नाभौ।
ॐ सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ करादिन्यासौ :-

मन्त्रा:	अथ करन्यास:	अथ अंगन्यास:
ॐ ह्रां नमः	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ ह्रीं नमः	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ ह्रूं नमः	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
ॐ ह्रैं नमः	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
ॐ ह्रौं नमः	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ ह्रः नमः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्।**

ॐ भूर्भुवःस्वरिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् :-

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।।

ततः संकल्पानुसारेण आदौ नारायणाष्टाक्षरसुदर्शनास्त्राभ्यां संपुटीकृत्य गीतायाः श्लोकं जपेत्, अन्ते च शिवार्पणं कुर्यात्। अनुष्ठानान्ते च दशांशं होमं विध्यनुसारेण कुर्यात्।

अथ मन्त्रः -

ॐ नमो नारायणाय, श्रीसुदर्शनायास्त्रराजाय फट् (जपार्थे), (फट् स्थाने **स्वाहा** होमार्थे)

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।

विशेषफलम्ः - भूत, प्रेत, रक्षस, बालग्रह, आभिचारिक तंत्र-मंत्र, फणिहवन इत्यादि बाधावशादुत्पन्नपीडादिनिवारणार्थम्।

।। इति रक्षोघ्नमहामंत्रविधिः संपूर्णम्।।

अथवा **ऋग्वेदीयं रक्षोघ्नसूक्तम्** संकल्पानुसारेण पाठं कृत्वा होमं कुर्यात्, तथाहि -

3.10 (क) ऋग्वेदीयं रक्षोघ्नसूक्तम् (4.4.01-15)

ॐ अस्य रक्षोघ्नसूक्तस्य गौतमो वामदेव ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, रक्षोहाग्निर्देवता, ॐ हं बीजं, ॐ रं शक्तिः, ॐ ईं कीलकम्, सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे विनियोगः।।

अथ ऋष्यादिन्यास :-

ॐ गौतमवामदेवतऋषये नमः- शिरसि, **ॐ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः**- मुखे, **ॐ रक्षोहाग्निदेवतायै नमः**-हृदये, **ॐ हं बीजाय नमः**- गुह्ये, **ॐ रं शक्तये नमः**- पादयोः, **ॐ ईं कीलकाय नमः**- नाभौ, **ॐ सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे विनियोगाय नमः**- सर्वाङ्गे।

मन्त्राः	करन्यासः	अंगन्यासः
ॐ हं नमः,	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
ॐ रं नमः,	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
ॐ ईं नमः,	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
ॐ हं नमः,	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुम्।**
ॐ रं नमः,	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
ॐ ईं नमः	**करतलकपृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बनधः।।

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन। तृष्वीमनुप्रसितिं द्रूणानोऽअस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।1।
तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः। तपूंष्यग्ने जुह्वा पतंगानसंदितो वि सृज विष्वगुल्काः।।2।
प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽस्याऽदब्धः। यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।3।
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनु व न्य1मित्राँ ओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।4।
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुधानां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्।।5।
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्। विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्।।6।

सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः। पिप्रीशति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः।।7।
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्सं ते वावाता जरतामियं गीः। स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जयेमाऽस्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्।।8।
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्। क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाऽभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्।।9।
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन। तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्।।10।
महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय। त्वं नो अस्य वचसश्चिक्लिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः।।11।
अस्वप्रजस्तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः। ते पायवः सध्र्यंचो निषद्याऽग्ने तव नः पान्त्वमूर।।12।
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्। ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः।।13।
त्वया वयं सधन्यऽस्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्याम वाजान्। उभा शंसा सूदय सत्यतातेऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण।।14।
अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय। दहाशसो रक्षसः पाह्य1ऽस्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्।।15।

अथवा

3.10 (ख) ऋग्वेदीयं रक्षोघ्नसूक्तम् (10.87.01–25)

ॐ अस्य रक्षोहसूक्तस्य भरद्वाजः पायुर्ऋषिः, रक्षोहाग्निर्देवता, प्रथमाद्येकविंशत्यृचां त्रिष्टुप्ततः समाप्तिपर्यन्तर्चां अनुष्टुप्छन्दसी रक्षोहाग्निर्देवता, अं बीजं, उं शक्तिः, मं कीलकम् सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः-

ॐ श्री भरद्वाजपायुऋषये नमः- शिरसि, **ॐ त्रिष्टुबनुप्टुष्छन्दोभ्यां नमः**- मुखे, **ॐ श्री रक्षोहाग्निदेवतायै नमः**- हृदये, **ॐ अं बीजाय नमः**- गुह्ये, **ॐ उं शक्तये नमः**- पादयोः, **ॐ मं कीलकाय नमः**- नाभौ, **ॐ सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे विनियोगाय नमः**-सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यासः

मन्त्राः	करन्यासः	अंगन्यासः
ॐ अं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ उं नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ मं नमः	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ अं नमः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
ॐ उं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ मं नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

।। ॐ भूर्भुस्वःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

ॐ रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुप यामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिशः पातु नक्तम्
।।1। अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः। आ जिह्वया मूरदेवान्रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन्।।2।
उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च। उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ्जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान्।।3। यज्ञैरिषूः
संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः। ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बाहून्प्रति भङ्ग्ध्येषाम्।।4। अग्ने त्वचं
यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम्। प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृष्णम्।।5। यत्रेदानीं
पश्यति जातवेदस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम्। यद्वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः।।6। उतालब्धं स्पृणुहि
जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात्। अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः।।7। इह प्र ब्रूहि यतमः

सो अग्ने यो यातुधानो य इदं कृणोति। तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम्। ।8। तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः। हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन्यातुधाना नृचक्षः। ।9। नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा। तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च। ।10। त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति। तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि वृङ्ग्धि। ।11। तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम्। अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष। ।12। यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः। मन्योर्मनसः शरव्याँ3 जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान्। ।13। परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि। परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपो अभि शोशुचानः। ।14। पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः। वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन् विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः। ।15। यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः। यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च। ।16। संवत्सरीणं पय उस्रियायास्तस्य माशीद्यातुधानो नृचक्षः। पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात्तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्। ।17। विषं गवां यातुधानाः पिबन्त्वा वृश्च्यन्तामदितये दुरेवाः। परैनान् द े व : सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम्। ।18। सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः। अनुदह समूरान्क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षम दैव्यायाः। ।19। त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात्। प्रति ते ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु। ।20। पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्कविः काव्येन परिपाहि राजन्। सखे सखायमजरो जरिम्णेऽग्ने मर्ताँ अमर्त्यस्त्वं नः। ।21। परि त्वग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि। धृषद्वर्णं दिवे दिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्। ।22। विषेण भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह। अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः। ।23। प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना। सं त्वा शिशामि जागृह्यदब्धं विप्र मन्मभिः। ।24। प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति। यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्। ।25।

3.11 श्रीदक्षिणामूर्तिमन्त्रप्रयोगः

फलम्– मेधाशक्ति, ग्रन्थधारणशक्ति, व्याख्यानशक्ति आदि युक्त ज्ञानप्राप्तिः। अनुष्ठानम्–48 दिन में 125000। पुरश्चरण 17 लाख+दशांशादि। श्रीदक्षिणामूर्तियन्त्र (पृ. सं. 438, चित्र संख्या 10) में श्रीदक्षिणामूर्ति भगवान् का स्थापना कर पूजा करें।

अथ विनियोगः :-

ॐ श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, देवता दक्षिणामूर्तिः, ॐ ब्रूं नमः बीजं, ॐ ऐं ह्रीं नमः शक्तिः, ॐ ज्ञानं देहि कीलकम्, सकलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :-

ॐ श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्माऋषये नमः – शिरसि, **ॐ श्री गायत्री छन्दसे नमः** – मुखे,

ॐ श्री दक्षिणामूर्तये नमः – हृदये, **ॐ ब्रूं नमः बीजाय नमः** – गुह्ये,

ॐ ऐं ह्रीं नमः शक्तये नमः – पादयोः, **ॐ ज्ञानं देहि कीलकाय नमः** – नाभौ,

ॐ सकलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।

मन्त्राः	अथ करन्यासः	अथ हृदयादिन्यासः
ॐ ब्रूं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ ज्ञानं देहि	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ब्रूं नमः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ज्ञानं देहि	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् :-

मुद्रां भद्रार्थदात्रीं सपरशुहरिणं बाहुभिर्बाहुमेकं, जान्वासक्तं दधानो भुजगविलसमाबद्धकक्ष्यो वटाधः।
आसीनश्चन्द्रखण्डप्रतिघटितजटाक्षीरगौरस्त्रिनेत्रो, दद्यादाद्यः शुक्राद्यैर्मुनिभिरभिवृतो भावशुद्धिं भवो नः।।1।।
विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरी तुल्यं निजान्तर्गतं, पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात्करोति प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं , तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।2।।

पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् यथाशक्ति

"ॐ ब्रूं नमः ऐं ह्रीं दक्षिणामूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा"

इस अष्टादशाक्षरीमन्त्र का जप करके दक्षिाणामूर्तिस्तोत्र का पाठ कर दक्षिणामूर्तिभगवान को समर्पित करे।

3.12 अथ चिन्तामणि विधानम्

फलम्–ज्ञानप्राप्तिसहित अनुभूतिः। अनुष्ठानम्– 11 दिन में 51000। 3.5 लाख+दशांशादि पुरश्चरण 2 माह में।

यह अनुष्ठान 2 महीने में किया जाता है। कुल 3.5 लाख जप करना पडेगा। किसी भी मास के कृष्ण पक्ष (आश्विन् कृष्ण पक्ष को छोड कर) के प्रतिपदा से शुरु करके उस मास की अपेक्षा से दूसरे मास की पूर्णिमा के दिन समाप्त किया जाता है। पूर्णिमा के दिन उपवास रखना होगा। सूर्यास्त से 2.5 घण्टे के अनन्तर रात्री में हवन करना है। हवनकुण्ड का निर्माण 36/72/108 ईटों से करना है। उसका आकार षट्कोण होगा। कुल 30,000 आहुतियाँ देनी हैं। उनमें से 15,000 आहुति खीर का होगा जो की 6 किलो दूध में 2 किलो चावल डालकर तैयार करना है। शेष 15,000 आहुति काला तिल में घी, हवन सामग्री आदि मिलाकर देना है।

पंचांगवेदी से अतिरिक्त भुवनेश्वरीदेवी, नवयोगिनी एवं सर्वतोभद्रमण्डल केलिये 3 पृथक् पीठों को तैयार करना है। हवनकुण्ड से अतिरिक्त माला संस्कार केलिये 1 स्थण्डिल का निर्माण करना होगा। नवयोगिनीपीठ और हवनकुण्ड का स्वरूप जानने के लिये पृष्ठ संख्या 226 देखें।

पूर्वदिनकृत्यं :–

चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादौ अनुष्ठानयोग्यभूमेः परिग्रहं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय शुद्धः सन् जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात्। ततो जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान्दशकीलान् **'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्'** इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतेनाभिमन्त्रितान्

'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।।1।।

मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।।2।।'

इति मन्त्रद्वयेन निखनेत्। ततस्तेषु **'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्'** इति मन्त्रेण प्रत्येकमन्त्रं संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूजयेत्। ततो जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालवास्तुपुरुषान् द्विजाश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालवास्तुगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलीन् दत्वा बाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तत्र मंत्रः –

'ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।।1।।

विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्।।2।।'

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु भूतेभ्यो बलिं दत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत्। ततो देवतोपास्तिं चिकीर्षुस्तत्रादौ रात्रौ शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत्। तद्यथा – स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं सुप्त्वा वृषध्वजं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्राः

'ॐ भगवन् देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत।।1।।

नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।।2।।

स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः।। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।3।।'

एभिर्मन्त्रैः शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्ततो निशि दृष्टं स्वप्नं प्रातर्गुरवे निवेदयेत् वा स्वयं विचारयेत्। ततो ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय प्रातः स्मरणं कृत्वा उषसि दन्तधावनपूर्वकं स्नात्वा सन्ध्यादिनित्यक्रियां प्रातः संपाद्य शरीरशुद्धये प्रायश्चित्तं कुर्यात्। तद्यथा – तत्रादौ नदीतडागादिकं गत्वा सुप्रक्षालिततीरे स्नानोपकरणानि स्थापयेत्। ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रं जलं गत्वा कुशपवित्रहस्तो बद्धशिखी आचम्य देशकालौ संकीर्त्य –

'ॐ मम ज्ञाताज्ञातसमस्तपापक्षयार्थं करिष्यमाणचिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरणाधिकारार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं तदर्थप्रायश्चित्तांग भूतकर्मण्यादौ भस्मादिभिरष्टौ स्नानानि करिष्ये'

इति संकल्प्य वामहस्ते यज्ञियभस्म गृहीत्वा पश्चादुदकमिश्रणानन्तरं दक्षिणहस्तेन संमर्द्याभिमंत्रयेत्। तत्र मन्त्राः :-

'ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वठं हवा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि' इत्यभिमन्त्र्य 'ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्व भूतानाम्। ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदा शिवोम् ।।1।। ॐ ईशानाय नमः' - इति शिरसि मर्दयेत्। 'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।2।। ॐ तत्पुरुषाय नमः' - इति मुखे मर्दयेत्। 'ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुदरूपेभ्यः।।3।। ॐ अघोराय नमः' - इति हृदये। 'ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।।4।। ॐ वामदेवाय नमः' - गुह्ये मर्दयेत्।। 'ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।5।। ॐ सद्योजाताय नमः' - पादयोः।। 'ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सर्ठसृज्य मातृभिष्ट्वं पुनरासदः।।6।।' इति मन्त्रेण प्रणवेन वा सर्वांगे च भस्म विलिम्पेत्। ततः स्नात्वाऽऽचम्य <u>गोमयस्नानं</u> कुर्यात् । तद्यथा - शुद्धगोमयमादाय प्रणवेन दिक्षु दक्षिणभागं तीर्थे चोत्तरभागं प्रक्षिप्य शेषम् - ॐ अग्रमग्रन्चरन्तीनामौषधीनां रसं वने। तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्। यन्मे रोगांश्च पापं मे हर गोमय 1। ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।2।। इत्यभिमन्त्र्य सूर्याय दर्शयित्वा।। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।1।। इति मन्त्रेण दक्षिणहस्तगृहीतेन गोमयेन शिरसो नाभ्यन्तं, वामहस्तगृहीतेन मन्त्रावृत्त्या नाभितः पादपर्यन्तं विलेपनमिति सर्वांगमालिप्य स्नात्वा त्रिराचामेत्।।

अथ <u>मृत्तिकास्नानम्</u> - शुद्धतीर्थमृत्तिकामादाय

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया कायसंचितम्।।1।।

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।2।।

त्वया हतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते। – इत्यभिमन्त्र्य

ॐ इदम्विष्णुर्विचक्रम त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।।

इति मन्त्रेण शिरःप्रभृत्यंगानि विलिम्पेत्। ततो त्रिराचम्य शुद्धोदकस्नानं कुर्यात्।।

'ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन।1। महेरणाय चक्षसे।।2।।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भ्राजयते ह नः।3। उशतीरिवमातरः।।4।।

तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ।5। आपो जनयथा च नः।6।।

इति स्नात्वा आचम्य पंचगव्यस्नानं कुर्यात्।

तत्र गायत्र्या गोमूत्रम्।	ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।1।।
ॐ गन्धद्वारेति गोमयम्।	ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।2।।
ॐ आप्यायस्वेति पयःस्नानम्।	ॐ आप्यायस्व स मे तु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।।3।।
ॐ दधिक्राव्णेति दधिस्नानम्।	ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्राणऽआयूꣳषि तारिषत्।।4।।
ॐ तेजो इत्याज्यस्नानम्।	ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ।।5।।
ॐ देवस्येति कुशोदकस्नानम्।	ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।।6।।

एवं पंचगव्यस्नानं कृत्वा शुद्धोदकेन स्नात्वा जले अघमर्षणम् कुर्यात्।

'ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।' इति च वारत्रयमावर्तयेत्। ततः स्नानांगतर्पणम्। सव्येन प्राङ्मुखः। 'ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् ।।1।। ॐ गौतमादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्।।1।। इति देवतीर्थेन एकैकमंजलिं जले क्षिपेत्। तत उदङ्मुखो यज्ञोपवीतं कण्ठीकृत्य - ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम्।।2।। इति प्रजापतितीर्थेन अंजलिद्वयं दद्यात्। ततोऽपसव्येन दक्षिणाभिमुखः कृष्णतिलोदकैः तर्पणं कुर्यात् -

ॐ कव्यवाडनलादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम्।।3।। ॐ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम्।।3।।

ॐ अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम्।।3।। ॐ अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहास्तृप्यन्ताम्।।3।।

ॐ अस्मन्मातामहीप्रमातामहीवृद्धप्रमातामह्यस्तृप्यन्ताम्।।3।। ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम्।।3।।

एवं तर्पणं कृत्वा - ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शरीरसम्भवैः। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम्।4। इति यक्ष्मणे जलं दद्यात्। ततस्तीरमागत्य - ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये येऽप्यदग्धाः कुले मम।। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।5। इति जलांजलिं तटे निःक्षिपेत् एवं स्नानांगतर्पणं कृत्वा सव्येनाचम्य सूर्यायार्घ्यं दद्यात्।

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते।।1।।

ततो जलाद्बहिर्निष्क्रम्य अहतं श्वेतं धौतं वस्त्रं परिधाय उपवस्त्रं गृहीत्वा त्रिराचम्य गृहं गच्छेत्। इति नद्यादिस्नाने प्रयोगः।।

अथ गृहे स्नानं करोति चेत् - उद्धृतोदकेन वा उष्णोदकेन वा स्नानं न तु पर्युषितशीतोदकेन। ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।1।।

ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्या सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।2।। इति तीर्थान्यावाह्य

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंन्नोरभिस्रवन्तु नः।।1।। आपः पुनंतु पृथिवीं पृथिवी पूत्वा पुनातु माम्। युद्धच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहश्स्वाहा ।।2।। द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो

मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।3।। तं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोऽर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।4।। आपो हि ष्ठा मयोभुवः। ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भ्राजयते ह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरंगमाम वः। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।5।।' इति पंचभिर्ऋग्भिरभिमन्त्र्य 'ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवं मद्याच मृडय।।1।। त्वामवस्युराचके।।2।।'
इत्यादिवारुणैर्मन्त्रैः स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मन्त्रैः कुशत्रयेण शिरसि जलं प्रक्षिपेत्। तत्र मन्त्राः –

ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुः शुक्रं प्रजापतेः। मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम्।।1।।
अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता। क्षालयन्ति निजस्पर्शादापो देव्यः पुनन्तु माम्।।2।।
यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्द्धनि। ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद् घ्नन्तु वो नमः।।3।।
आयुरारोग्यमैश्वर्य्यमरिपक्षक्षयः सुखम्। संतोषः क्षान्तिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः।।4।।

ततो हस्तयोरप आदाय नासिकायां संयोज्य

'ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोऽर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।' इत्यघमर्षणं जपेत्। एवं स्नात्वा उपवस्त्रेण जलापनयनं कृत्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासवस्त्रं परिधाय स्नानार्द्रवस्त्रं परिपीड्य आचम्य तिलकं कुर्यात्। **अथ तिलकविधिः**।। तत्रादौ भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकारः। वामहस्ते दक्षिणहस्तेन अग्निहोत्रोत्थितं भस्मादाय उदकमिश्रणानन्तरम् 'ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वठं हवा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि' इति भस्माभिमन्त्र्य। 'ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।। उर्वारुकमिव बन्धनान्

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ तत्पुरुषाय नमः।' इति मंत्रेण भाले त्रिपुण्ड्रं कुर्यात्।।1।। **'ॐ त्र्यम्बकं** (पठित्वा) **ॐ अघोराय नमः'** इति दक्षिणांसे।।2।। **'ॐ त्र्यम्बकं** (पठित्वा) **ॐ सद्योजाताय नमः'** इति वामांसे. ।।3।। **'ॐ त्र्यम्बकं** (पठित्वा) **ॐ वामदेवाय नमः'** इति जठरे।।4।। **'ॐ त्र्यम्बकं** (पठित्वा) **ॐ ईशानाय नमः'** इति वक्षसि च त्रिपुण्ड्रं कुर्यात्।। अथवा तत्पुरुषादिनामस्थले – **'ॐ तत्पुत्रुषाय विद्महे0।।1।। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो 0।।2।। ॐ सद्योजातम्0।।3।। ॐ वामदेवाय0।।4।। ॐ ईशानः सर्वविद्यानाम्0।।5।।'** इति पंचमन्त्रैस्त्रिपुण्ड्रकाणि विधेयानि। एवं भस्मधारणं कृत्वा रुद्राक्षधारणं कुर्यात्।। अथवा नामस्थले तत्पुरुषादिमन्त्रान् प्रयुञ्जीत– **'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।1।। ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्याः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।2।। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।3।। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमः शिवोऽम् ।।5।।'** इति पंचमन्त्रैस्त्रिपुण्ड्रकाणि विधेयानि। एवं भस्मधारणं कृत्वा रुद्राक्षधारणं कुर्यात्।

प्रायश्चित्तहोमः–

तत्रादौ शुद्धमृदा चतुरस्रं स्थण्डिलं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य **'अथ प्रायश्चित्तपूर्वांगतया विहितमाज्येन सह पंचगव्यहवनं करिष्ये। तदंगतया पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं च करिष्ये'** इति संकल्प्य पंचभूसंस्कारान् कृत्वा यथाविधि **विड्**नामाग्निं प्रतिष्ठाप्य पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा – **'अग्नेरुत्तरतः पलाशपत्रं यज्ञियकाष्ठं हरितानि सप्त कुशपत्राणि गोमूत्रादीनि पृथक्पृथक् पंचगव्यानि आज्यम्'** इत्यादिहवनद्रव्याणि निधाय दक्षिणत आज्याधिश्रपणानन्तरं पलाशपत्रपुटके ताम्रपात्रे वा गोमूत्रम् अष्टमाषं **'ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।'** इति गायत्रीमन्त्रेण आदाय, श्वेतगोर्गोमयं षोडशमाषं **'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।'** इति मन्त्रेण निक्षिप्य, पीतगोः क्षीरं द्वादशमाषम् **'ॐ आप्यायस्व स मे तु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।'** इति मन्त्रेण ग्राह्यं, कृष्णागोर्दधि षण्माषम् **'ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं**

जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्राणऽआयूंषि तारिषत्।' इति मन्त्रेण निक्षिप्य, कृष्णागोर्घृतम् अष्टमाषम् '**ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि।**' इति मन्त्रेण गृह्णीयात्। यथोक्तगोरभावे श्वेताया एव गोमूत्रादिकं ग्राह्यम्।। ततः '**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।**' इति मन्त्रेण कुशोदकं चतुर्माषं च प्रक्षिप्य प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य प्रणवेनाभिमन्त्रयेत्। ततः अग्निपर्युक्षणानन्तरमाज्येन आघारावाज्यभागं हुत्वा अन्वाधानं कुर्यात्। तद्यथा– '**अस्मिनन्वाहितेऽग्नावग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्येन प्रत्येकं व्यस्तसमस्तव्याहृत्या अष्टाविंशति संख्यया यक्ष्ये। पुनरत्र प्रधानं पृथिवीं विष्णुं रुद्रं ब्रह्माणमग्निं सोमं सवितारं प्रजापतिं परमात्मानं एता ब्रह्मकूर्चदेवताः मिलितपंचगव्यद्रव्येन एकैकयाऽऽहुत्या यक्ष्ये। शेषेण स्विष्टकृतं**' इत्यादिनान्वाधानसंकल्पं कृत्वा यजमानेन द्रव्यत्यागः पुरस्सरं अग्निपूजनपूर्वकवराहुतिहोमसाधिदेवताप्रत्यधिदेवता–नवग्रहहोमपंचलोकपालदशदिक्पालहोमं कृत्वा अथाज्येन प्रधानहोमः – '**ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम, ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम, ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम, ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।**' एभिश्चतुर्भिर्मन्त्रैः सप्तवारान् 4x7=28 कृत्वाष्टाविंशत्याहुतयो देयं। एवं सप्तविंशतिवारान् कृत्वाष्टोत्तरशताहुतयो वा देयं। ततः पंचगव्येन प्रति मन्त्रमेकैकाहुतिः। '**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथा : स्वाहा – इदं पृथिव्यै न मम।।1।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांध्सुरे स्वाहा – इदं विष्णवे न मम।।2।। ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्रभामिनोऽवधीर्हविष्मन्तस्सदमित्वा हवामहे स्वाहा – इदं रुद्राय न मम।।3।।** अथ उदकोपस्पर्शनम् '**ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विशीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा – इदं ब्रह्मणे न मम।।4।। ॐ अग्नये स्वाहा – इदमग्नये न ममः।।5।। ॐ सोमाय स्वाहा – इदं सोमाय न मम।।6।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा – इदं सवित्रे न मम।।7।। ॐ प्रजापतये स्वाहा – इदं प्रजापतये न मम।।8।। ॐ परमात्मने स्वाहा – इदं परमात्मने न मम।।9।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा – इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।।10।।**

ततो भूरादि प्रजापत्यन्ता नवाज्याहुतीर्हुत्वा संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात् ततो देशकालौ संकीर्त्य **'अद्य दिनमारभ्य चिन्तामणिमंत्रपुरश्चरणं करिष्ये'** इति द्विजान्पृष्ट्वा। **'कुरुष्व'** इत्यनुज्ञातः पंचगव्यप्राशनं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः - **'ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।1।।'** इति सर्वहुतशेषपंचगव्यं प्रणवेन पिबेत्। ततः संकल्पित प्रायश्चित्तद्रव्यं ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयित्वा कृतं कर्म ईश्वरार्पणं कुर्यात्। एवं प्रायश्चित्तं कृत्वा - **'मंत्रसिद्ध्यर्थं गायत्र्या अयुतजपमहं करिष्ये'** इति संकल्प्य स्वयं विप्रद्वारा वा कुर्यात्। एतानि मंत्राणि पठेत् - **'आपो हि ष्ठा0'** इत्यादित्र्यृचं। **'स्वस्ति न0'** इत्याद्याः स्वस्तिमतीः। **'पुनंतु मा0'** इत्याद्याः पावमानीश्च सर्वा जप्त्वा - **'ॐ गायत्र्यैककयाऽऽचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि, गायत्रीश्छन्दस्तर्पयामि, सवितारं देवतां तर्पयामि'** - इति तर्पणं कृत्वा **'ॐ कद्रुदाय'** इत्यादीनि रुद्रसूक्तानि सकृज्जपेत्। तद्दिने उपवासो हविष्यान्नेनैकभक्तत्वं वा तिष्ठेत्।

प्रथमदिनकर्म-

चन्द्रतारादिबलान्विते पूर्वोक्ते सुमुहूर्ते प्रातरुत्थाय तीर्थादौ यथाविधि स्नात्वा संध्यादिनित्यावश्यकं कर्म समाप्याचार्य जापकांश्चाहूय तेभ्य आसनार्घ्यादिकं दत्वा मंगलस्नानं कुर्यात्। तद्यथा-यजमानः शुद्धपीठे प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य त्रिराचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ब्राह्मणद्वारा स्वयं वा **'करिष्यमाणचिन्तामणिमंत्रपुरश्चरणकर्मांगतया मंगलस्नानमहं करिष्ये'** - इति संकल्पः। ततो यथाचारं मंगलवाद्यघोषपुरःसरं पुत्रवतीवृद्धसुवासिनीभिर्हस्तैः सुगन्धितैलाभ्यंजनं तिलामलकादीनां सर्वौषध्यादिसुगन्ध-चूर्णेनोद्वर्तनम्। उष्णोदकेन पत्न्या सह मंगलस्नानं कृत्वा नवं श्वेतं सदशं स्ववर्णेन सकृद्धौतं प्रागुदग्वा प्रसारितं नान्यधारितमहतं वस्त्रं नाभिपृष्ठकटिषु बद्धत्रिकच्छम्

'ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरसि। शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये।।1।।'

इति मन्त्रेण परिधाय। ततः

'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती। यशो भगश्च मा विधद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।1।।'

इति मन्त्रेणोत्तरीयं धृत्वा यथाविधि नूतनयज्ञोपवीतं च धारयेत्। पत्नी तु अहते क्षौमवस्त्रो श्वेतपीतरक्तरंजिते नीलरंजितं बिना अमन्त्रकं परि-धाय प्रतिवस्त्रं स्मार्तविधिना त्रिराचमनम्।। ततः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपवेश्य करद्वये अनामिकामध्यपर्वणि कुशपवित्रमथवा यथाशक्ति सुवर्णात्मकं पवित्रीद्वयं च धृत्वा कुङ्कुमकेसरान्यतममंगलद्रव्येण तिलकं यथाचारं कृत्वा त्रिराचम्य '**ॐ अपवित्रः....**' इत्यनेन स्वशरीरं पूजासामग्रीन् संशोध्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य '**भो दीप तेजोरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।**'- इत्यनेन दीपं प्रज्वाल्य शान्तिपाठं पठित्वा लक्ष्मीनारायणादिदेवान् प्रणमेत्।

अथ शान्तिपाठमन्त्राः-

'ॐ आ नो भद्राः क्रतवो जन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो जथा सदमिद्वृधेऽसत्रप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।1।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाठं रातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाठं सख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।2।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्जमणम्वरुणठं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।3।। तन्नो वातो मयो भुवा तु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या जुवम् ।।4।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथावेद सामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।5।। स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धाश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।6।। पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं जावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह।।7।। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाठंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देव-हितं यदायुः।।8।। शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्वचक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिष

तायुर्गन्तोः ।।9।। अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जात-मदितिर्जनित्त्वम्।।10।। तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः।।11।। आयुष्यं वर्चस्यꣳरायस्पोषमौद्भिदम्। इदꣳहिरण्यं वर्च्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्।।12।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।13।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।14।। सुशान्तिर्भवतु।। ॐ श्रीमहागणाधिपतये नमः।। ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। ॐ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः।। ॐ श्री वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। ॐ श्री शचीपुरन्दराभ्यां नमः।। ॐ श्री मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। ॐ श्री कुलदेवताभ्यो नमः।। ॐ श्री इष्टदेवताभ्यो नमः।। ॐ श्री ग्रामदेवताभ्यो नमः।। ॐ श्री स्थानदेवताभ्यो नमः।। ॐ श्री वास्तुदेवताभ्यो नमः।। ॐ श्री सर्वेभ्यो देवभ्यो नमः।। ॐ श्री सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः।। ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।। ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।2।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुभुर्जम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।4।। अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।5।। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।6।। सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गोरि नारायणि नमो स्तुते।।7।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः।।8।। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽघ्रियुगं स्मरामि।।9।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।। येषामिन्दीरवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।10।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।11।। अनन्याश्चिन्तयन्तो

मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।12।। स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिं।।13।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।14।। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवं। वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकां।।15।। विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।।16।।' इति प्रणम्य संकल्पं कुर्यात्।।

अथ संकल्पः-

तत्रादौ दक्षिणहस्ते कुशत्रययवगन्धपुष्पाक्षतजलान्यादाय संकल्पयेत्-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सद् ब्रह्म श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे एकपंचाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतावाराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पंचाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमण्डलान्तर्गतसप्तद्वीपमध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रादि नखखण्डानां मध्ये नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारते वर्षे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे..........प्रदेशे ....क्षेत्रे..............योर्मध्यदिग्भागे...............तटे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिविक्रमादित्यराज्याद्.......संख्यापरिमिते प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्ये.......नामसंवत्सरे......अयने......तौ......मासे......पक्षे.....तिथौ......वासरे....नक्षत्रे.....योगे...करणे.... राशिस्थिते चन्द्रे....राशिस्थिते सूर्य....राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणाविशेषणाविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ.....गोत्रोत्पन्नो....शर्माहमात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे जन्मराशे सकाशान्नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्गोचराद्वा ये केचिच्चतुर्थाष्टमद्वादशाघनिष्टस्थानस्थिताः क्रूरग्रहास्तै सूचितं सूचयिष्यमाणां च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादशशुभस्थानस्थितग्रहाणामुत्तमबलप्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशाप्रत्यन्र्दशासूक्ष्मान्तर्दशो-

पदशादिनदशाजनित पीडाऽल्पायुराधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकजनितक्लेशनिवृत्तिपूर्वकशरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थम् श्रीभुवनेश्वरीदेवता प्रसादसिद्ध्यर्थं चिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरणं स्वयं ब्राह्मणद्वारा वा करिष्ये इति तदंगत्वेन गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं च करिष्ये।।' इति संकल्प्य स्ववामे कर्मार्थजलपूरितकर्मपात्रार्चनं कुर्यात्।

'ॐ तत्त्वाजामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणो हवोध्युरुशर्ठसमानऽआयुः प्रमोषीः।।1।।' अस्मिन्कलशे **'ॐ वरुण इहागच्देह तिष्ठ'** इत्यावाह्य **'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः'** इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य **'कलशस्य मुखे विष्णु'** रित्यादिनाऽभिमन्त्र्य- **'गंगे च युमने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।1।।'** अस्मिन्कलशे **'सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि पूजयामि नमस्करोमि'** इति तीर्थान्यावाह्य प्रार्थयेत्। (कलशवरुणयोर्विस्तृतपूजनविधि पृष्ठ संख्या 63-74 में देखें।) ततो दूर्वाभिः कलशोदकेन संभारान् **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।1।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु।'** इति मन्त्रेण संप्रोक्ष्य सूर्यार्घ्यं दीपपूजनं कुर्यात् **'भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक। इमां मया कृतां पूजां गृहणंस्तेजः प्रवर्धय।।1।। ॐ दीपाय नमः।'** इति गन्धाक्षतपुष्पैः पूजयेत्।।

अथ गणपति पूजनम्। तत्रादौ ध्यानम्-

'श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम्।।
दोर्भिः पाशांकुशेष्टाभयधृतिविशदं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं, ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।1।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः ध्यायामि' इति ध्यानम्।।1।। पुष्पाण्यादाय-
'हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्षलक्षलाभपितुः पितः।।1।।

नागास्य नागहारत्वं गणराज चतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः ।।2।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां क्रतुं च रक्ष मे।।3।।'

'ॐ गणानान्त्वागणपतिर्ठहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि' इत्यावाह्य 'ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः' इति मंत्रेण पाद्यादिभिः षोडशोपचारैः संपूज्य विशेषार्घ्यं दद्यात्। (विस्तृत गणेशपूजनार्थ पृष्ठ सं 54-63 द्रष्टव्यः)।

'ॐ रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रजप्रभो। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।2।।
गृहाणार्घ्यमिदं देव सर्वदेवनमस्कृत। अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।।3।।
ॐ भू० सि०म० विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।। ततः प्रार्थना-
'विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।1।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।2।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।3।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।5।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति।

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।6।।' इति प्रार्थ्य

'अनया पूजया सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम् नमः।।'

अथ स्वस्तिपुण्याहवाचनम्-

तत्रादौ स्वाग्रे पूर्वोक्तकलशस्थापनविधिना अव्रणं ताम्रकलशं संस्थाप्य तत्र वरुणं संपूज्य प्रार्थयेत्।

'ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।1।।

पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव।।2।।'

इति प्रार्थ्य पुण्याहवाचनं कुर्यात्। अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अंजलिं शिरस्याधायानन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा **'दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च। ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।। तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विवति भवन्तो ब्रुवन्तु'** इति यजमानः, **'पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु'** इति द्विजाः।। एवं सर्वत्र यजमान वचनोत्तरं ब्राह्मणाः प्रतिवचनं दद्युः।। ब्राह्मणानां हस्ते – **'सुप्रोक्षितमस्तु ॐ शिवा आपः सन्तु'** इति जलं दद्यात्। **'सन्तु शिवा आपः'** इति प्रतिवाचनम्।। **'ॐ सौमनस्यमस्तु'** इति पुष्पम्। **'अस्तु सौमनस्यम्'**0।। **'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु'** इत्यक्षतान्।। **'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'**0।। **'ॐ गन्धाः पान्तु'** इति गन्धम्। **'सौमंगल्यं चास्तु'**0।। **'ॐ अक्षताः पान्तु'–'आयुष्यमस्तु'**0।। **'ॐ पुष्पाणि पान्तु'–'सौश्रियमस्तु'**0।। **'ॐ ताम्बूलानि पान्तु'–'ऐश्वर्यमस्तु'**0।। **'ॐ दक्षिणाः पान्तु'–'बहुधनमस्तु'**0।। **'पुनरत्रापः पान्तु'–'स्वर्चितमस्त्विति'** इति विप्रा ब्रूयुः।। यजमानः आचार्यादीन्प्रणम्य **'श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु'** इति वदेत्। ते च **'श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्त बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु'** इत्युक्त्वा **'दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्विति'** यजमानं मूर्ध्न्यभिषिंचेयुः।। **'यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा**

ऋग्यजुः सामाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये'। यजमानः 'ॐ वाच्यतां' इत्युक्त्वा ब्राह्मणानां हस्ते अक्षतान्दद्यात्ते चाशिषो दद्युः।

ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रुणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवार्ठं सस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः।।1।। देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानर्ठंरातिरभिनो निवर्ततताम्। देवानार्ठंसख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। 2।। न तद्रक्षासो न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठंह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणर्ठंहिरण्यर्ठं सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः।।3।। दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।4।। द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रियं सत्। द्रविणोदा वीरवती मिशन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः।।5।। सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतान्दीर्घमायुः।।6।। नवो नवो भवति जायमानो ऽह्नान्केतुरुषसामेत्यग्रम्। भागन्देवेभ्यो विदधात्ययं प्रचंद्रमास्ति रते दीर्घमायुः।।7।। उच्चा दिवि दक्षिणावन्तोऽअस्थुर्येऽअश्वदाः सहते सूर्येण। हिरण्यदाऽअमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः।।8।। इत्याशीर्वादः।। 'व्रतजपनियमतपःस्वाध्यायक्रतु दयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधियताम्' इति यजमानः।। 'समाहितमनसः स्मः' इति द्विजाः।। 'प्रसीदन्तु भवन्तः' इति यजमानो ब्रूयात्। 'प्रसन्नाः स्मः' इति द्विजाः। ततो यजमानः- 'ॐ शान्तिरस्तु' 'अस्त्वि'ति द्विजाः प्रतिवचनं सर्वत्र दद्युः। 'ॐ पुष्टिरस्तु ॐ तुष्टिरस्तु ॐ वृद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु ॐ आयुष्यमस्तु ॐ आरोग्यमस्तु ॐ शिवं कर्मास्तु ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॐ इष्टसंपदस्तु ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॐ उत्तरोत्तरा क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु।। (उदकसेकः) ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे साधिदेवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवा

प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवा प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः ॐ हताश्च परिपन्थिनः ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः शत्रव पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यंत्वीतयः। ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान्स्वामी महासेन प्रीयताम्। ॐ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये – इति यजमानः। ॐ वाच्यताम् – इति प्रतिवचनम्। ब्राह्मयं पुण्यं महद्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।1।। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य चिन्तामणिमंत्रपुरश्चरणाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु – इति यजमानः। ॐ पुण्याहम् – एवं प्रतिवचनं च त्रिः पठित्वा।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।1।।

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।2।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कल्याणम् । यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्म

राजन्याभ्यार्ठ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु।।1।। सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। संपूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ ऋद्ध्यताम् । ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम। दिवम्पृथिव्याऽअध्या -रुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः।।1।। स्वस्तिरस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणकर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ स्वस्ति । ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।1।। समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।2।। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्तु श्रीः। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।1।। अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। ॐ अस्तु परिपूर्ण - इति विप्राः।

अथाभिषेकः

अभिषेके पत्नी वामतः, एकस्मिन् कलशे वरुणोदकं गृहीत्वाऽविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणा दूर्वाम्रपल्लवैर्यजमानमभिषिंचेयुः। तत्र मन्त्राः-' ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।।1।। पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सरित्।।2।। वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्तम्भ सजनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि। वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।3।। पुनंतु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ।।4।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्व्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।5।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः

साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ।।6।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्भैषज्येन तेजसा ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिंचामि।।7।। सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायाऽन्नाद्यायाऽ भिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि ।।8।। विश्वानि देवसवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नऽआसुव।।9।। धामच्छादाग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे ।।10।। त्वं यविष्टदाशुषो नॄः पाहिश्रृणुधी गिरः रक्षा तोकमुतत्मना ।।11।। अन्नपतेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्प्रदातारन्तारिषऽउर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे शं चतुष्पदे ।।12।। ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।13।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयङ्कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ।।14।। अमृताभिषेकोऽस्तु शांतिः शांतिः शांतिः सुशांतिर्भवतु।।15।।' ततः पुत्रवतीभिर्वृद्धसुवासिनीभिर्नीराजनं कार्यम्।। 'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजामेदाः विधृतिरुपारिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्येऽओजोमेदा विश्वाभ्यो माना त्वा राष्ट्राभ्यस्पाहि मनारश्वोसि।।1।। अनेन पुण्याहवाचनेन चिन्तामणिमंत्रजपदेवता प्रीयताम् न मम।।'

अथ मातृकापूजनम्–

तत्र तावत् षड्विनायकपूजनम्। गोधूमादिधान्यपुंजेषु हरिद्रारंजितेषु षड्विनायकाः स्थाप्याः।।

तद्यथा– '**मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा। अविघ्नो विघ्नकर्ता च षडेते विघ्ननायकाः।।1।।**

ॐ मोदाय नमः, मोदमावाहयामि स्थापयामि। ॐ प्रमोदाय नमः, प्रमोदमावाहयामि स्थापयामि। ॐ सुमुखायनमः, सुमुखमावाहयामि स्थापयामि। ॐ दुर्मुखाय नमः, दुर्मुखमावाहयामि स्थापयामि। ॐ अविघ्नाय नमः, अविघ्नमावाहयामि स्थापयामि। ॐ विघ्नकर्त्रे नमः, विघ्नकर्तारमावाहयामि स्थापयामि'। इत्यावाह्य – '**मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।**' इति प्रतिष्ठाप्य '**ॐ मोदादिषड्**

विनायकेभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूजयेत्। **'अनया पूजया मोदादिषड्विनायकाः प्रीयन्ताम्, न मम'**। ततो **'गौर्यादिषोडशमातृका** अक्षतपुंजेषु पूगीफलेषु वा निवेश्याः। तत्रायं क्रमः- **'गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।1।। हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।। 2।। ॐ गणेशाय नमः, गणेशमावाहयामि स्थापयामि ।।1।। ॐ गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।।2।। ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।।3।। ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि ।।4।। ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि ।।5।। ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ।।6।। ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि ।।7।।, ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि ।।8।। ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ।।9।। ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि ।।10।। ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ।।11।। ॐ मातृभ्यो नमः, मातॄरावाहयामि स्थापयामि ।।12।। ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातॄरावाहयामि स्थापयामि।।13।। ॐ हृष्टये नमः, हृष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।14।। ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।15।। ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।16।। ॐ कुलदेवतायै नमः, कुलदेवतामावाहयामि ।।17।।'** इत्यावाह्य **''ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।'** इति प्रतिष्ठाप्य **ॐ गौर्य्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः'** नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः संपूजयेत्। **अथ घृतमातृकानामानि**- **'ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती। मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।1।। ॐ श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि ।।1।। ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।।2।। ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।।3।। ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।।4।। ॐ पुष्टयै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।।5।। ॐ श्रद्धायै नमः, श्रद्धामावाहयामि स्थापयामि ।।6।। ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ।7।** इत्यावाह्य। **'ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।'** इति प्रतिष्ठाप्य

'ॐ श्र्यादिघृतमातृकाभ्यो नमः' इति षोडशोपचारैः पूजयेत्। अथ स्थलमातरः- तत्रैव तण्डुलपुंजेषु- 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः।।1।। ॐ ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि ।।1।। ॐ माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ।2। ॐ कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।।3।। ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।।4।। ॐ वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।5।। ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।।6।। ॐ चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि।।7।। इत्यावाह्य। 'ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञठं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।' इति प्रतिष्ठाप्य 'ॐ ब्राह्म्यादिस्थल मातृकाभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत्।। ततः वसोर्धारापूजनं कुर्यात्। ततः कुड्ये पीठे वा आवाहित मातृणामुपरि घृतेन कुंकमाक्तेन दक्षिणोत्तराः सप्त/पंच/त्रिस्रो वा धारा दद्यात्। 'ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्य त्व सविता पुनातु। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।1।।'

<u>अथायुष्यमन्त्रजपः</u>:-

'ॐ आयुष्यं वर्चस्यठं रायस्पोषमौद्भिदम्। इदठं हिरण्यम्वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्।।1।। न तद्रक्षासो न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजठं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणठं हिरण्यठं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।। 2।। यदाबघ्नन्दाक्षायणा हिरण्यठं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआबध्ना मिशत शारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।3।।'

<u>अथ सांकल्पिकनान्दीश्राद्धप्रयोगः</u> -

तत्रादौ आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य 'अद्य चिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरण कर्मांगत्वेन सांकल्पिकविधिना ब्राह्मणयुग्म भोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूत यथाशक्ति हिरण्येन नान्दीश्राद्धं करिष्ये' - इति संकल्पः। ततः <u>पाद्यदानम्</u> - सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः

नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।।1।। अमुकगोत्रा मातृपितामहिप्रपितामह्यः नांदीमुख्यः भुर्भूवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। 2।। अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।3।। मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।4।। अथासनदानम् – सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नांदीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्।ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।।1।। अमुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामहीनां नान्दीमुखीनाम् ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।। 2।। अमुकगोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानां नान्दीमुखीनाम् ॐ भूर्भुवःस्वः इदं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः।।3।। द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानाम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदंमासनं सुखासनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः।। 4।। ततो गन्धादिदानम् – सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुख्येभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।1।। अमुकगोत्रेभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। 2।। अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नांदीमुखेभ्यः इदं गंधाद्यर्चनम् स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। 3।। द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। 4।। ततो भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम् – सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।1।। अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ब्राह्मण युग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।।2।। अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामह

प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।।3।। द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहीभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।।4।। ततः सक्षीरमुदकदानम् – सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमृखाः प्रीयन्ताम्। अमुकगोत्राः पितृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमृखाः प्रीयन्ताम्। अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमृखाः प्रीयन्ताम्। द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमृखाः प्रीयन्ताम्। अथाशिषो ग्रहणम्। गोत्रं नो वर्द्धताम्। (वर्द्धतां वो गोत्रम्) दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। (अभिवर्धन्तां वो दातारः) वेदाश्च नोऽभिवर्धन्ताम् (वर्धन्तां वो वेदाः) संततिर्नो वर्द्धताम् (वर्द्धतां वः संततिः) श्रद्धा च नो माव्यगमत् (माव्यगमद्वः श्रद्धा) बहु देयं च नोऽस्तु (अस्तु वा बह्वन्नम्) अतिथींश्च लभामहे (लभन्तां वोऽतिथयः) याचितारश्च नः सन्तु (सन्तु वो याचितारः) एता आशिषः सत्याः सन्तु (सन्त्वेताः सत्याशिषः)।। ततो दक्षिणादानम् – सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।।1। अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।।2।। अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।।3।। द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।।4।। किमनेन नान्दीश्राद्धं संपन्नं, निश्चितं सुसंपन्नमिति पठित्वा – ॐ वाजे वाजे कवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।

अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।। 1।। ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यो मे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात्।।2।। इति मन्त्रद्वयेन विसर्जयेत्।। **ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् न मम। मया आचरितेऽस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादात्सर्वः परिपूर्णाऽस्तु।। (अस्तु परिपूर्णः)।।**

<u>**द्वारपूजादिः-**</u>

तद्यथा – ताम्राद्यर्घ्यपात्रं गृहीत्वा '**ॐ ह्रीः द्वारार्घ्यं साधयामी**' त्युक्त्वा। '**ॐ फट्**' इति पात्रं प्रक्षाल्य। '**ॐ नमः**' इति जलेनापूर्य। '**ॐ गंगे च यमुने चैव गौदवरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ।।1।।**' इति तीर्थान्यावाह्य। '**ॐ**' इत्यनेन गन्धपुष्पे निक्षिप्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य। मूलमन्त्रेणाभिमन्त्रेयत्। एवं सामान्यार्घ्यं संपाद्य। '**ॐ अस्त्राय फट्**' इत्यभिमन्त्रितजलेन द्वारं संप्रोक्ष्य। ऊर्ध्वशाखायाम् – **ॐ गं गणपतये नमः**। तद्दक्षिणे भागे – **ॐ महालक्ष्म्यै नमः**। वामभागे – **ॐ सरस्वत्यै नमः**। दक्षिणशाखायाम्– **ॐ विघ्नेशाय नमः**। तद्दक्षिणे भागे – **ॐ गंगायै नमः**। वामभागे– **ॐ यमुनायै नमः**। वामशाखायाम्– **ॐ क्षेत्रपालाय नमः**। तद्दक्षिणे भागे – **ॐ सिन्धवे नमः**। वामभागे – **ॐ यमुनायै नमः**। पुनर्दक्षिणशाखायाम् – **ॐ धात्रे नमः**।।1।। वामशाखायाम्– **ॐ विधात्रे नमः**।।2।। पुनर्दक्षिणशाखायाम्– **ॐ शंखनिधये नमः** ।।1।। वामशाखायाम् – **ॐ अस्त्राय नमः** ।।1।। इति गन्धादिभिरभ्यर्च्य तत्तद्देवताद्वारपालान् पूजयेत्। अथ विष्णुद्वारपालान् पूजयेत् –**ॐ नन्दाय नमः**।।1।। **ॐ सुनन्दाय नमः** ।।2।। **ॐ चण्डाय नमः** ।।3।। **ॐ प्रचण्डाय नमः** ।।4।। **ॐ बलाय नमः** ।।5।। **ॐ प्रबलाय नमः** ।।6।। **ॐ भद्राय नमः** ।।7।। **ॐ सुभद्राय नमः** ।।8।। शिवद्वारपालान् पूजयेत्– **ॐ नन्दिने नमः** ।।1।। **ॐ महाकालाय नमः** ।।2।। **ॐ गणेशाय नमः** ।।3।। **ॐ वृषभाय नमः**।।4।। **ॐ भृंगिणे नमः** ।।5।। **ॐ रिटये नमः** ।।6।। **ॐ स्कन्दाय नमः** ।।7।। **ॐ चण्डेश्वराय नमः** ।।8।। गणेशद्वारपालान् पूजयेत्–

ॐ वक्रतुण्डाय नमः ।। **ॐ एकदंष्ट्राय नमः** ।।2।। **ॐ महोदराय नमः** ।।3।। **ॐ गजाननाय नमः** ।।4।। **ॐ लम्बोदराय नमः**।।5।। **ॐ विकटाय नमः** ।।6।। **ॐ विघ्नराजाय नमः** ।।7।। **ॐ धूम्रवर्णाय नमः** ।।8।। शक्तिद्वारपालान् पूजयेत् - **ॐ ब्राह्म्यै नमः** ।।1।। **ॐ माहेश्वर्यै नमः** ।।2।। **ॐ कौमार्यै नमः** ।।3।। **ॐ वैष्णव्यै नमः** ।।4।। **ॐ वाराह्यै नमः** ।।5।। **ॐ इन्द्रायै नमः** ।।6।। **ॐ चामुण्डायै नमः** ।।7।। **ॐ महालक्ष्म्यै नमः** ।।8।। ततः पूर्वादिदिग्देवताः क्रमेण पूजयेतः- पूर्वस्यां - **ॐ इन्द्राय नमः** ।।1।। आग्नेय्याम् - **ॐ अग्नये नमः** ।।2।। याम्याम् - **ॐ यमाय नमः** ।।3।। नैर्ऋत्याम् - **ॐ निर्ऋतये नमः** ।।4।। प्रतीच्याम् - **ॐ वरुणाय नमः** ।।5।। वायव्याम् - **ॐ वायवे नमः** ।।6।। उत्तरस्याम् - **ॐ कुबेराय नमः** ।।7।। ईशान्याम् - **ॐ ईशानाय नमः** ।।8।। एवं द्वारपूजां विधाय। आत्मानं शंकरं ध्यात्वा "**ॐ शिवाज्ञया इतोऽन्यत्र व्रजन्तु सर्व एव हि।**" इति मन्त्रं मूलमन्त्रं च पठन् दिव्यदृष्ट्यवलोकनेन दिव्यान्विघ्नान्निवार्य '**ॐ फट्**' इति मन्त्रेणाऽर्घ्यपानीयैः प्रोक्षणेनान्तरिक्षस्थानुत्सार्य तेनैव मन्त्रेण भूमौ वामपादपार्ष्णिघातेन धरागतान्विघ्नानुत्सारयेत्।। ततः '**ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया**।।1।। **अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे**।।2।।' मन्त्रद्वयेन सर्वान् विघ्नान् निवार्य्य नवयोगिनीं स्थापयेत्। (9 दीपकेष्वेव 9 योगिनीनां स्थापनं कृत्वा पंचोपचारैः सर्वत्र पूजा कार्या) तद्यथा- चित्रे पृ. 226 दर्शित 1, 2, आदि क्रमेण आवाहनादिपूर्वकं स्थाप्य पूजनीयं। '**ॐ आं प्रभायै नमः, प्रभामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ ईं मायायै नमः, मायामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ ऊं जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ एं सूक्ष्मायै नमः, सूक्ष्मामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ ऐं विशुद्धायै नमः, विशुद्धामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ ओं नन्दिन्यै नमः, नन्दिनीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ औं सुप्रभायै नमः, सुप्रभामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ अं विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ अः सर्वसिद्धिदायै नमः, सर्वसिद्धिदामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।**' ततः सिंह स्थापना - '**ॐ नमो भगवते वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः, सिंहमावाहयामि स्थापयामि। पूजयामि।**' एवमेव ब्रह्माविष्णुशिवाः स्थाप्याः ततः चिन्तामणियन्त्रम् (पृ.सं. 226) स्थापयेत्। तदनन्तरम्-

नवशक्ति पूजनम्-

'ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः।'

पीठपूजनम्

पीठस्याधोभागे-**ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ विचित्रदिव्यमण्डपाय नमः।** मण्डपपरितः-**ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ सुवर्णवेदिकायै नमः। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः।** सिंहासनपादेषु आग्नेयकोणे-**ॐ धर्माय नमः।** नैर्ऋत्यकोणे-**ॐ ज्ञानाय नमः।** वायव्यकोणे **ॐ वैराग्याय नमः।** ईशानकोणे-**ॐ ऐश्वर्याय नमः।** सिंहासनोपरि- **ॐ तत्प्राकारायानन्ताय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्णाकर्णिकायै नमः।** पद्मदलकेशरकर्णिकासु-**ॐ सं सत्त्वाय नमः।** कर्णिकासु-**ॐ मं तमसे नमः। ॐ अं द्वादशकलात्मनेऽर्कमण्डलाय नमः। ॐ उं षोडशकलात्मने सोमण्डलाय नमः। ॐ मं दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः। ॐ अं ब्रह्मणे नमः। ॐ विं विष्णवे नमः। ॐ मं महेश्वराय नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ जं ज्ञानात्मने नमः।** सर्वपद्मार्चनम् अथ पूर्वादिक्रमेण-**ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरण्यै नमः। ॐ बलविकरण्यै नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ मनोन्मनिन्यै नमः।** अथ कर्णिकायाम्। **ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः।** इति कर्णिकायां, ततः पुष्पाञ्जलिना पीठं संपूज्य- **'सत्यज्ञानानन्तानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठम्'** इति चिन्तयेत्। आचार्य **'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तमो३ँ प्रतिष्ठ।।'** इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा यजमान से **'पीठदेवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। आवाहितपीठदेवताभ्यो नमः।'** इसका उच्चारण करावें।

अग्न्युत्तारणम्

यजमान से निम्न संकल्प अग्न्युत्तारण के लिए आचार्य करावें-

'देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाण श्रीभुवनेश्वरीपूजनकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं अथवा अवघातादिदोषपरिहार्थं अमुक **गोत्रः** अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहे) **अस्याः सुवर्णमयश्रीभुवनेश्वरीप्रतिमायाः संशुद्ध्यर्थमग्न्युत्तारणं करिष्ये।'**

किसी पात्र में स्वर्ण की श्रीभुवनेश्वरी की प्रतिमा का पंचामृत लेपन कर पान के ऊपर रखकर इन बारह वैदिक मन्त्रों का उच्चारण आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करके यजमान से दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करावें-

'ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्म्भ्यर्ठ० शिवो भव।।1।। ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव।।२।। ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि। सेमं नो यज्ञं पावकवर्णठ० शिवं कृधि।।३।। ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव।।४।। ॐ अग्ने पावके रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च। ।।5।। ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२।। इहावह यज्ञर्ठ० हविश्च नः ।।६।। ॐ पावकया यश्चितयन्त्य कृपा क्षामनुच उषासो न भागुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणेन ततृषाणो अजरः।।७।। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्नांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव।।८।। ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे स्वर्विदे वेट्।।९।। ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणामुप भागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ।। १०।। ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु।।११।। ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव।।१२।।'

तद्यथा-स्वर्णमयीप्रधानप्रतिमां हस्तेन संस्पृश्य, बीजमन्त्रान् जपेत्। **'ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ प्राणाः इह**

प्राणाः। ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः। (पुनः) ओं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्र जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।'

प्राणप्रतिष्ठाप्रारम्भः

माता भुवनेश्वरी देवी की मूर्ति के सिर या हृदय का स्पर्श कर प्राणप्रतिष्ठा करें।

विनियोगः- **अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं श्रीभवुनेश्वरीदेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करें।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः-शिरसि। **ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमः**- मुखे। **ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः**-हृदि। **ॐ आं बीजाय नमः**- गुह्ये (लिङ्गगे)। **ॐ ह्रीं शक्तये नमः**-पादयोः। **ॐ क्रौं कीलकाय नमः** - सर्वाङ्गेषु।

करन्यासः-**ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं मं वचनादानविहरणोत्सर्गनन्दात्मने औं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यासः- **ॐ अं कं खं गं घं डं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। ॐ ओं पं फं बं भं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्राय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्।** एवमात्मनि मूर्तौ (देवे) च न्यासं कुर्यात्।

इस प्रकार आत्मा और देवता में उपरोक्त न्यासों को करके भुवनेश्वरी की मूर्ति का स्पर्श कर जप करें, पुनः भुवनेश्वरी की मूर्ति का हाथ से स्पर्श कर निम्न प्राणप्रतिष्ठा मंत्रों का उच्चारण करें।

'ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः श्रीभुवनेश्वरीप्रतिमायाः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः श्रीभुवनेश्वरीप्रतिमायाः जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः श्रीभुवनेश्वरीप्रतिमायाः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।'

प्राणप्रतिष्ठावैदिकमन्त्राः

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए प्रतिमा/यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करावें-

'ॐ मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्।।१।। ॐ ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र अङ्गे अङ्गे निधीतः। देव त्वष्टर्भूरि ते सᳬसमेतु सलक्ष्मा यद्विपुरुषं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु।।२।। ॐ वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि।।३।। ॐ अनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्तु आप्यायताᳬश्रोत्रं त आप्यायताम्। यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त आप्यायतां निष्ट्याप्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनᳬ हिᳬसीः।।४।। ॐ अपां पेरुरस्यापो देवी। स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः सं ते प्राणो वातेन गच्छताᳬ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा।।५।। ॐ सं ते मनो मनसा सं प्राणाः प्राणेन गच्छताम्। रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणा त्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रᳬह्या ऊष्मणो

व्यथिषत्प्रयुतं द्वेषः ।।६।। ॐ प्राणपा मे अपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे। वाचो मे विश्वभेषजो मनसोऽसि विलायकः।।७।। ॐ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च में श्रोत्रं च मे दक्षश्च में बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।८।। प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय। अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय।।९।। ॐ प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतुदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदाऽसौ वर्चसे पवेथाम्।।१०।। ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।११।। ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपाᳬशुरुपाᳬशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।१२।। ॐ अयं पश्चाद्विश्वयशस्तस्य चक्षुर्वैश्वयशसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः।।१३।। ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रᳬ सौवᳬ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविᳬशं एकविᳬशाद्वैराजं विश्वामित्रं ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः।।१४।। ॐ इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मत्या हेमन्तो वाच्यः पङ्क्तिर्हैमन्ती पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवत आग्रयणऽआग्रयणा त्रिणवस्त्रयस्त्रिᳬशौ त्रिणवस्त्रयस्त्रिᳬ शाभ्याᳬशाक्वररैवते विश्वकर्म ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकं ता इन्द्रम्।।१५।। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३ँ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्।।'

नेत्रोन्मीलनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए माता भुवनेश्वरी का नेत्रोन्मीलनकर्म यजमान से करवायें-

'ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्द्दाऽअसि चक्षुर्म्मे देहि।'

इसके पश्चात् प्रधान कलश के ऊपर स्थित सिंहासन पर भुवनेश्वरी की प्रतिमा स्थापित कर उसका षोडशोपचार से पूजन करें।

अथ मण्डपप्रवेशः

अवकाशप्रदानाय शनैः स्वांगं संकोचयन्वामशाखां स्पृशन् दक्षिणपादेन प्रविशेत्। एवं पूजामण्डपं प्रविश्य स्वेष्टदेवं संस्मृत्य घण्टानादं कृत्वा वाससा द्वारमाच्छाद्य पंचगव्यार्घतोयाभ्याम्- **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः।।'** इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य। ईशान्याम्-**'ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।।'** इति ब्रह्मवास्तुपुरुषक्षेत्रपालान् संपूज्य **'ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां देहि मे प्रभो।।'** इति भैरवं प्रार्थयेत्।। अथासनादिविधानम्- तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। तद्यथा- जपस्थानभूमिं कृत्वा पूर्वादिसप्तकोष्ठेषु क्रमेण कवर्ग-1, चवर्ग-2, टवर्ग-3, तवर्ग-4, पवर्ग-5, यवर्ग-6, शवर्गान्-7 लिखित्वा ईशान्यामष्टमे कोष्ठे 'ल' 'क्ष' इति द्वौ वर्णौ विलिख्य मध्यकोष्ठमपि नवधा विभज्य तत्र पूर्वादिषु अष्टदिक्षु अकारादिस्वरद्वयं क्रमेण लिखेत्। (चित्र देखें पृष्ठ संख्या 440) यत्र कोष्ठे क्षेत्रस्य वा ग्रामस्य साधकस्य वा नामादि वर्णो भवेत् तदेव कूर्ममुखं जपसिद्धिं भवति। तत्रैव दीपस्थापनम् कुर्यात्। यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव दीपस्थापनं कृत्वा जपं कुर्यात्। यत्र ब्राह्मणा जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् स्थानाभावश्चेत्। एवं कूर्मशोधनं दीपस्थापनशोधने च विधाय आसनाद्यर्थं जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र **'ॐ कूर्माय नमः, ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः।'** इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपर्यनुद्विघ्नकरं कुशासनम्, तदुपरि मृगजिनम्, तदुपरि कम्बलाद्यासनम् चास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण **'ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः। ॐ**

पद्मासनाय नमः।' इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् (काष्ठदिनिषिद्धासनानि वर्जयेत्) एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य स्वस्तिकासनपद्मासन- वीरासनेष्वन्यतममासनं कुर्यात्।। तत्रासनमन्त्रं- '**पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।1।।**' ततो मूलमन्त्रेण शिखां बद्ध्वा आचम्य ततः पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कस्नानार्थं पंचपात्राणि पुष्पादींश्च दक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य जलपात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च वामे स्थापयेत्। ततः करद्वये अनामिकामूलयोः कुशपवित्रद्वयं स्वर्णपवित्रद्वयं वा परिधाय स्मार्तविधिना त्रिराचम्य। प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य '**ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ**ममुक**कामनासिद्ध्यर्थम् भुवनेश्वरीदेवताप्रीतये चिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरणान्तर्गतचिन्तामणिमंत्र जपं करिष्ये तदंगत्वेन भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाऽन्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासांश्च करिष्ये**' इति संकल्प। ऋत्विग्भिस्तु देशकालसंकीर्तनान्ते '**यजमानेन वृतोऽहंकरिष्यामि**' इति प्रत्येकं संकल्पः। ततः कृतांजलिपुटः भूतशुद्ध्यादिकर्म कुर्यात्। तद्यथा- '**ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्या भूतानि पंच च। एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो मम साक्षिणः।।1।। भो देव प्राकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम।। तन्निस्सारय चित्तान्मे पापं तेऽस्तु नमो नमः।।2।।**' इति प्रार्थ्य वामभागे '**ॐ गुरुभ्यो नमः।**' दक्षिणे '**ॐ गणेशाय नमः।**' इति नत्वा करयोः '**ॐ अस्त्राय फट्**' इत्यस्त्रं न्यस्य तदुपरि तालत्रयं कृत्वा अंगुष्ठतर्जनीभ्यां शब्दं कुर्वन् '**ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्रराजाय फट्**' इति मन्त्रेण दिग्बन्धनं कृत्वा वह्निप्रकारत्रयं विभाव्य मूलेनाचम्य प्राणानायम्य भूतशुद्धिं कुर्यात्।

अथ **<u>भूतशुद्धिप्रकार</u>**ः- कुम्भकप्राणायामेन मूलाधारात् ब्रह्मरंध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीपकलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा '**ॐ हंसः सोऽहमिति**' मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत्। ततः पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं वज्रलांछितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमण्डलम् '**लँ**' इति भूबीजाढ्यं स्मरेत्।।1।। जान्वादि नाभिपर्यन्तमर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयांकितं श्वेतवर्णमपां स्थानं सोममण्डलम् '**वं**' इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत्।।2।। नाभ्यादि हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमग्निमण्डलं '**रं**' इति वह्निबीजाढ्यं स्मरेत्।।3।। हृदयादिभ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड् बिन्दुलांछितं धूम्राभं वायुमण्डलम् '**यं**' वायुबीजाढ्यं स्मरेत्।।4।। भ्रूमध्यादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रान्तं वृत्तं स्वच्छं मनोहरमाकाशमण्डलं '**हं**' व्योमबीजाढ्यं स्मरेत्।।5।।

मातृकान्यासादिः-

तत्र तावदन्तर्मातृकान्यासः- **ॐ अस्य श्रयन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः, गायत्री छन्दः, सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलफलाप्तये न्यासे विनियोगः।** अथ ऋष्यादिन्यासः- **ॐ अं प्रजापतिऋषये नमः आं** - शिरसि। **ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं** - मुखे। **ॐ उं सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं** - हृदये। **ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं** - गुह्ये। **ॐ ओं स्वरशक्तिभ्यो नमः औं** - पादयोः। **ॐ अं क्षं अः कीलकाय नमः** - नाभौ। **ॐ अखिलफलाप्तये न्यासे विनियोगाय नमः-** सर्वांगेषु। अथ करन्यासः- **ॐ अं कँ खँ गँ घँ ङँ आं अगुंष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चँ छँ जँ झँ ञँ ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तँ थँ दँ धँ नँ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पँ फँ बँ भँ मँ औं कनिष्ठाकाभ्यां नमः। ॐ अं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।** अथ हृदयादिषडंगन्यासः- **ॐ अं कँ खँ गँ घँ ङँ आं हृदयाय नमः। ॐ इं चँ छँ जँ झँ ञँ ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं तँ थँ धँ दँ धँ नँ ऐं कवचाय हुम ॐ ओं पँ फँ बँ भँ मँ औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।**

ततः पूरकप्राणायामे कण्ठस्थषोडशदलपद्मे - **ॐ अं नमः, आं नमः, इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋं नमः, ॠं नमः, लृं नमः, लॄं नमः, एं नमः, ऐं नमः, ओं नमः, औं नमः, अं नमः, अः नमः-** इति षोडशस्वरान्न्यसेत्।। ततः कुम्भकप्राणायामे हृदयस्थे द्वादशदलपद्मे - **ॐ कँ नमः, खँ नमः, गँ नमः, घँ नमः, ङँ नमः, चँ नमः, छँ नमः, जँ नमः, झँ नमः, ञँ नमः, टँ नमः, ठँ नमः।** इति द्वादशवर्णान्न्यसेत्।। नाभौ दशदलपद्मे - **ॐ डँ नमः, ढँ नमः, णँ नमः, तँ नमः, थँ नमः, दँ नमः, धँ नमः, नँ नमः, पँ नमः, फँ नमः।** इति दशवर्णान्न्यसेत्।। तथाधो लिंगे षड्दलपद्मे - **ॐ बँ नमः, भँ नमः, मँ नमः, यँ नमः, रँ नमः, लँ नमः।** इति षड्वर्णान्न्यसेत्। आधारे गुदे चतुर्दलपद्मे। **ॐ वँ नमः, शँ नमः, षँ नमः, सँ नमः।** इति चतुर्वर्णान्न्यसेत्। ततः रेचके भ्रूमध्ये द्विदलपद्मे - **हँ नमः, क्षँ नमः।** इति द्वौ वर्णौ विन्यसेत्।।

अथ ध्यानम्:-

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदये, तालुमूले ललाटे। द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले, द्वादशार्द्धे चतुष्के। वासान्ते वालमध्ये डफकठ सहिते, कण्ठदेशे स्वराणां। हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं, वर्णरूपं नमामि।।1।।

यजमान पूजनस्थल पर अपने आसन पर प्राङ्मुख बैठे तथा उसकी पत्नी दाहिनी ओर पीछे, इसके उपरान्त यजमान निम्न न्यासों को करे-

अथ बहिर्मातृकान्यासः-

ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासस्य शक्तिः ऋषिर्गायत्रीछन्दः भुवनेश्वरी देवता हं बीजं ईं शक्तिः रं कीलकम् सर्वाभीष्टासिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ शक्तिऋषये नमः**- शिरसि। **ॐ गायत्रीच्छंदसे नमः**- मुखे। **ॐ भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः**- हृदि। **ॐ हं बीजाय नमः**- गुह्ये। **ॐ ईं शक्तये नमः**- पादयोः। **ॐ रं कीलकाय नमः**- नाभौ। **ॐ सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगाय नमः**- सर्वाङ्गे।

करन्यासः- **ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिषडङ्गन्यासः- **ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्पराम्बिकाम्।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, श्रीभुवनेश्वरीं ध्यायामि।

अथ बहिर्मातृकान्यासः-

ॐ अं नमः शिरसि। **ॐ आं नमः** मुखे। **ॐ इं नमः** दक्षिणनेत्रे। **ॐ ईं नमः** वामनेत्रे। **ॐ उं नमः** दक्षिणकर्णे। **ॐ ऊं नमः** वामकर्णे। **ॐ ऋं नमः** दक्षिणनासापुटे। **ॐ ॠं नमः** वामनासापुटे। **ॐ लृँ नमः** दक्षिणकपोले। **ॐ लॄं नमः** वामकपोले। **ॐ एं नमः** ऊर्ध्वोष्ठे। **ॐ ऐं नमः** अधरोष्ठे। **ॐ ओं नमः** ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। **ॐ औं नमः** अधोदन्तपंक्तौ। **ॐ अं नमः** मूर्ध्नि। **ॐ अः नमः** मुखवृत्ते। **ॐ कं नमः** दक्षिणबाहुमूले। **ॐ खं नमः** दक्षिणकूर्परि। **ॐ गं नमः** दक्षिणमणिबन्धे। **ॐ घं नमः** दक्षिणांगुलिमूले। **ॐ ङं नमः** दक्षिणांगुल्यग्रे। **ॐ चं नमः** वामबाहुमूले। **ॐ छं नमः** वामकूर्परि। **ॐ जं नमः** वाममणिबन्धे। **ॐ झं नमः** वामांगुलिमूले। **ॐ ञं नमः** वामांगुल्यग्रे। **ॐ टं नमः** दक्षिणपादमूले। **ॐ ठं नमः** दक्षिणजानुनि। **ॐ डं नमः** दक्षिणगुल्फे। **ॐ ढं नमः** दक्षपदांगुलिमूले। **ॐ णं नमः** दक्षपादांगुल्यग्रे। **ॐ तं नमः** वामपदमूले। **ॐ थं नमः** वामजानुनि। **ॐ दं नमः** वामगुल्फे। **ॐ धं नमः** वामपदांगुलिमूले। **ॐ नं नमः** वामपादांगुल्यग्रे। **ॐ पं नमः** दक्षपार्श्वे। **ॐ फं नमः** वामपर्श्वे। **ॐ बं नमः** पृष्ठे। **ॐ भं नमः** नाभौ। **ॐ मं नमः** उदरे। **ॐ यं त्वगात्मने नमः** हृदये। **ॐ रं असृगात्मने नमः** दक्षांसे। **ॐ लं मांसात्मने नमः** ककुदि। **ॐ वं मेदात्मने नमः** वामांसे। **ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः** हृदयादिदक्षहस्तान्तम्। **ॐ षं मज्जात्मने नमः** हृदयादिवामहस्तान्तम्। **ॐ सं शुक्रात्मने नमः** हृदयादिदक्षपादान्तम्। **ॐ हं सर्वात्मने नमः** हृदयादिवामपादान्तम्। **ॐ ळं जीवात्मने नमः** जठरे। **ॐ क्षं परमात्मने नमः** मुखे। एवं बहिर्मातृकान्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

'पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोर्हृत्पद्मवक्षःस्थलां, भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलमापीनतुंगस्तनीम्।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै, बिंभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये।।1।।'

एवं बहिर्मातृकान्यासं कृत्वा तत्तद्देवताकलान्यासं कुर्यात्। तत्र आदौ शारदामातृकान्यासः- विनियोगः- **अस्य शारदाकलामातृकान्यासस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीमातृकाशारदादेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः चिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरणांगत्वेन कलामातृकान्यासे विनियोगः।** ऋष्यादिन्यासः- **ॐ प्रजापतिऋषये नमः** -शिरसि। **ॐ गायत्रीछन्दसे नमः** - मुखे। **ॐ शारदादेवतायै नमः** - हृदये।

ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः - गुह्ये। ॐ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः - पादयोः। ॐ चिन्तामणिमन्त्रपुरश्चरणांगत्वेन शारदा कलामातृकान्यासे विनियोगाय नमः - सर्वांगे। अथ करादिन्यासः- ॐ अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ इं ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं ॐ औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अथ हृदयादिन्यासः- ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः। ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुम्। ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट्। अथ ध्यानम्-

ॐ शंखचक्राब्जपरशुकपालानक्षमालिका:। पुस्तकावमृतकुम्भौ त्रिशूलं दधतीं करैः।
सितपीतासितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः। पंचास्यसंयुतां चन्द्रसकांतिं शारदां भजे।।

इति ध्यात्वा शारदाकलामातृकां न्यसेत्। तद्यथा- ॐ ह्रीं अं निवृत्त्यै नमः - ललाटे। ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै नमः - मुखवृत्ते। ॐ ह्रीं इं विधायै नमः - दक्षनेत्रे। ॐ ह्रीं ईं शान्तायै नमः - वामनेत्रे। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै नमः - दक्षकर्णे। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै नमः - वाम कर्णे। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः - दक्षनासापुटे। ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः - वामनासापुटे। ॐ ह्रीं लृं परायै नमः - दक्षकपोले। ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै नमः - वामकपोले। ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः - ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः - अधरोष्ठे। ॐ ह्रीं ओं आप्यायन्यै नमः - ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः - अधोदंतपंक्तौ। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै नमः - जिह्वायाम्। ॐ ह्रीं अः अनंतायै नमः - कण्ठे। ॐ ह्रीं कं सुदृढायै नमः - दक्षबाहूमूले। ॐ ह्रीं खं नह्यै नमः - दक्षकूर्परे। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः - दक्ष मणिबंधे। ॐ ह्रीं घं मेधायै नमः - दक्षहस्तांगुलिमूले। ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै नमः - दक्षहस्तांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः - वामबाहु मूले। ॐ ह्रीं छं घुत्त्यै नमः - वामकूपरे। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः - वाममणिबंधे। ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः - वामहस्तांगुलिमूले। ॐ ह्रीं ञँ सिद्ध्यै नमः - वामहस्तांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं टं जरायै नमः - दक्षिणपादमूले। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः - दक्षजानुनि। ॐ ह्रीं डं क्षांत्यै नमः - दक्षगुल्फे। ॐ ह्रीं ढं ईश्वर्यै नमः - दक्षपादांगुलिमूले। ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः- दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ ह्रीं तं कामिकायै

नमः। - वामपादमूले। **ॐ ह्रीं थं वरदायै नमः** - वामजानुनि। **ॐ ह्रीं दं आह्लादिन्यै नमः** - वामगुल्फे। **ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः** - वामपादांगुलिमूले। **ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः** - वामपादांगुल्यग्रे। **ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः** - वामपार्श्वे। **ॐ ह्रीं बं भयायै नमः** - पृष्ठे। **ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः** - नाभौ। **ॐ ह्रीं मं तंद्रिकायै नमः** - जठरे। **ॐ ह्रीं यं क्षुधायै नमः** - हृदये। **ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः** - दक्षांसे। **ॐ ह्रीं लं क्रियायै नमः** - ककुदि। **ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै नमः** - वामांसे। **ॐ ह्रीं शं मृत्युकायै नमः** - हृदयादिदक्षहस्तांतम्। **ॐ ह्रीं षं पीतायै नमः** - हृदयादिवामहस्तांतम्। **ॐ ह्रीं सं श्वैतायै नमः** - हृदयादिक्षपादांतम्। **ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः** - हृदयादि वामपादान्तम्। **ॐ ह्रीं ळं असितायै नमः** - मूर्द्धादिपादांतम्। **ॐ ह्रीं क्षं अनंतायै नमः** - पादादिमूर्द्धान्तम्। (शंभुभक्तश्चेत् श्रीकण्ठादि मातृकाकलान्यासं वैष्णवस्तु केशवादिन्यासं गणेशभक्तो विघ्नेशादिकलान्यासं शाक्तश्चेत् निवृत्त्यादिकलान्यासं च कुर्यात्। तत्तत्कलान्यासस्तु स्वस्वप्रयोगे स्पष्टो भविष्यति) एवं तत्तद्देवाताकलान्यासं कृत्वा प्राणानायम्य स्वमूलमन्त्रस्य कल्पोदितान् ऋषिच्छन्दोदैवतादिन्यासान् तत्तदंगेषु न्यस्य करन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पीठन्यासं कुर्यात्।

अथ पीठन्यास :- स्वदेहं पीठमयं विचिन्त्य न्यसेत्। तद्यथा- आधारे-**ॐ मं मण्डूकाय नमः।** लिंगे- **ॐ कां कालाग्नये रुद्राय नमः।** नाभौ - **ॐ कूं कूर्माय नमः।** हृदये - **ॐ आं आधारशक्तये नमः । ॐ अं अनंताय नमः। ॐ धं धरायै नमः। ॐ सु सुधासिंधवे नमः। ॐ शं श्वेतद्वीपाय नमः। ॐ सुं सुरांघ्रिपाय नमः। ॐ मं मणिहर्म्याय नमः। ॐ हें हेमपीठाय नमः।** दक्षांसे - **ॐ धं धर्माय नमः।** वामांसे - **ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः।** वामोरौ - **ॐ वैं वैराग्याय नमः।** दक्षोरौ - **ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।** मुखे - **ॐ अं अधर्माय नमः।** वामपार्श्वे - **ॐ अं अज्ञानाय नमः।** नाभौ - **ॐ अं अवैराग्याय नमः।** दक्षपार्श्वे - **ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।** पुनर्हृदये - **ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ तं तत्त्वपक्षाय नमः। ॐ आं आनन्दमयकन्दाय नमः। ॐ सं संविन्नालाय नमः। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ प्रं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः। ॐ पं पंचाशद्वर्णकर्णिकायै नमः।** कर्णिकायाम् - **ॐ सूं सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ इं इन्दुमण्डलाय नमः। ॐ पां पावकमण्डलाय नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने**

नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः। ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। ॐ कं कलातत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ पं परतत्त्वाय नमः। मानसोपचारैः पंचोपचारैर्वा संपूज्य तत्रैव तत्तत्कल्पोक्तपीठशक्तिर्विन्यस्य संपूज्य दिगरक्षणार्थं रक्षोघ्नसूक्तं पठेत्। तत मंत्राः-

ॐ रक्षोहणम्वलगहनम्वैष्णवीमिदमहन्तम्वलगमुत्किरामि यन्मे निष्ठ्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तम्वलगमुत्किरामि यन्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यन्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तम्वलगमुत्किरामि यन्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यांगिरामि ।।1।। रक्षोहणौ वौ वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवाण्रक्षोहणौ वौ वलगहनो वनयामि वैष्णवाण्रक्षोहणो वो वलगहनो वस्तृणातमि वैष्णवाण्रक्षोहणो वा वलगहनोऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनी पूर्यहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ।।2।। रक्षसाम्भागोकसि निरस्तर्ठं रक्षऽइदमहर्ठं रक्षोभिस्तिष्ठामीदमहर्ठं रक्षोऽवबाधऽइदमहर्ठं रक्षो धमन्तमो नयामि धृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेत्तु स्वाहाकृते। ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छताम्।।3।। रक्षोहा विश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते द्रोणासधस्थमासादत।।4।। अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकार्तरस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।1।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभे।।2।। यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभे।।3।। यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्ता तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।4।। भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्।।5।। भूतानि राक्षसा वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम्।।6।।

अथ षोडशोपचारपूजनं

चतुष्षष्ठीयोगिनी, वास्तुमण्डलं (पृ.सं. 440, चि. सं. 20 से 23), क्षेत्रपालमण्डलं, नवग्रहमण्डलञ्च स्थापयित्वा भुवनेश्वरीयन्त्र(पृ.सं. 437, चि. यं. 3)/मूर्तिस्थापनम्-सिंहासनोपरि कलशोपरि वा भुवनेश्वरीयन्त्रं/मूर्तिं संस्थापयेत् पूजयेत्।

आवाहनम्

ॐ अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानांपतये स्वाहा।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

आगच्छ वरदे सौम्ये। देत्यदर्पनिषूदिनि। पूजां गृहाण हे देवि! नमस्ते शंकरप्रिये।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वरि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारमार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ, रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।।

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने।।

ॐ भुवनेश्वर्य्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

आचमनम्

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

जातीलवङ्गकङ्कोलकर्पूरादिसुवासितम्। गृहाण देवदेवेशि एतदाचमनीयकम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु यान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

मन्दाकिन्याः समानीते हेमाम्भोरुहवासितैः। स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सरित्।।

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धस्नानम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्। चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नानम्

ॐ अꣳशुनाते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

कदलीजलस्नानम्

ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यतऽ आदित्येभ्यस्त्वा।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, कदलीजलस्नानं समर्पयामि।

पुष्करतीर्थजलस्नानम्

ॐ अपां पृष्ठामसि योनिरग्ने समुद्रमभितः पिन्वमानम्। वर्धमानो महाँ2ऽआ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, पुष्करतीर्थजलस्नानं समर्पयामि।

तीर्थजलस्नानम्

ॐ सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय केवर्तं तीर्थेभ्य आन्दं

विषमेभ्यो मैनालर्ठ. स्वनेभ्य: पर्णकं गुहाभ्य: किरातर्ठं. सानुभ्यो जम्भक पवर्तेभ्य: किंपूरूषम्।।
तीर्थान्तरसमानीतं जलं सौखविवर्धनम्। स्नानार्थं गृह्यतां देवि! प्रसीद भुवनेश्वरि!।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नम:, तीर्थजलस्नानं समर्पयामि।

सुवर्णजलस्नानम्

ॐ प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा अपित्र चोदना वां मिमाना होतारा ज्योति: प्रदिशा दिशन्ताम्।।
सुवर्णवर्णसम्मिश्रं सौवर्णं गुणसंयुतम्। मया निवेदितं भक्त्या स्नानं कुरु भुवनेश्वरि!।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नम:, सुवर्णजलं स्नानं सपर्मयामि।

महाभिषेकस्नानम्

आचार्य भुवनेश्वरी देवी का महाभिषेक स्नान श्रीसूक्त के मन्त्रों द्वारा यजमान से करावें।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।1।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्।।3।। कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्दां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।4।। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व:। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मी:।।6।। उपैतु मां देवसख: कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।8।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां

तामिहोपह्वये श्रियम्।।9।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।10।। कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।13।। आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।14।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगमिनीम्। यस्यां हिरण्यं च प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।15।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।16।। ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा या मा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्। मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, वस्त्रद्वयं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

रमणीयपटवस्त्रम्

ॐ औषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे। सनेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, रमणीयपटवस्त्रं समर्पयामि।

उत्तरीयवस्त्रम्

ॐ पयसो रेत आभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तरां समाम्। त्विषः संवृक् क्रत्वे दक्षस्य ते सुषुम्णस्यते सुष्मणाग्निहुतः। इन्द्रपीतस्य प्रजापतिभक्षितस्य मधुमत उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, उत्तरीयवस्त्रं समर्पयामि।

रमणीयवस्त्रम्

ॐ यदश्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै। संदानमर्वन्तं पड्वीशं प्रियो देवेष्वायामयन्ति।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, रमणीयवस्त्रं समर्पयामि।

शीतकालीनवस्त्रम्

ॐ ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरौ भारं हरन्निव। अथास्य मध्यमेजतु शीते वाते पुनन्निव।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, शीतकालीनवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।
स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सौभाग्यसूत्रम्

सौभाग्यसूत्रं वरदे! सुवर्णमणिसंयुतम्। कंठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ॐ भुवनैश्वर्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी।।

अक्षतान्निर्मलान् दिव्यान् कुङ्कुमाक्तान् सुशोभनान्। गृहाणेमान् महादेवि प्रसीद परमेश्वरि।।

ॐ भुवनैश्वर्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

चन्दनम्

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं समुनोहरम्। विलेपनं च देवेशि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

हरिद्राचूर्णम्

हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनी। तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि।

कुङ्कुमम्

ॐ उस्त्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामश्रू ऽअवीरहणौ ब्रह्मचौदनौ। स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम्।

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्। कुङ्कुमेनार्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, कुङ्कुमं समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः प्रतयन्ति यह्वाः घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्। पूजिताऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।
ॐ भुवनैश्वर्यैः, सिन्दूरं समर्पयामि।

कज्जलम्

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकदंश्चक्षुर्द्दा असि चक्षुर्म्मे देहि।।
चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्। कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, कज्जलं समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
दूर्वादले श्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये। दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्विने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय च हनन्याय च।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, बिल्पपत्राणि समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाणा सर्वलोकम्म इषाण।।
पद्म-शङ्खज-पुष्पादिशतपत्रैर्विचित्रताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण भुवनेश्वरि।।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

पारिजातपुष्पमालाम्

ॐ पथस्पथः परिमतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानडकर्म् स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियं धियठं० सीषधाति प्रपूषा।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, पारिजातपुष्पमालां समर्पयामि।

मन्दारपुष्पमालाम्

ॐ तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः। अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे।।

मन्दारपुष्पमालां त्वां प्रयच्छामि भुवनेश्वरि!। गृहाण सुमुखीभूय प्रसन्न भव सर्वदा।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, मन्दारपुष्पमालां समर्पयामि।

करजापुष्पमालाम्

ॐ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणठं० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।

महादेवि! महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणि! करजां पुष्पमालां त्वं गृहाण भुवनेश्वरि!।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, करजापुष्पमालां समर्पयामि।

करवीरपुष्पमालाम्

ॐ ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः। अयं वो गर्भ ऋत्वियः प्रत्नठं० सधस्थमासदत।।

करवीरकृतां मालां शुद्धां च पुण्यकारिणीम्। भक्त्या निवेदितं देवि! प्रसन्ना वरदा भव।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, करवीरपुष्पमालां समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्याणि

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्मालिनीम्।।

हरिद्रा कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्। सौभाग्यद्रव्यमेतद्वै गृहाण परमेश्वरि।

ॐ भुवनेश्वर्भै नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

शृङ्गारपेटिकाम्

ॐ वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन् यो धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौरऽएतत्।।

सौन्दर्यान्वितसंसारे शृङ्गारस्य सुसाधनाम्। शृङ्गारपेटिकां देवि! गृहीत्वा रक्ष सर्वदा।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, शृङ्गारपेटिकां सपर्मयामि।

कण्ठसूत्रम्

ॐ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्र दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्नान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पश्र्व्यं

महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।

नाना आभूषणानि

स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे।। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, नानाआभूषणानि समर्पयामि।।

सौभाग्यपेटिकाम्

सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तां पेटिकां हे भुवनेश्वरि!। गृहाण त्वं मया दत्तां सौभाग्यं सर्वदा कुरु।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

चन्दनागरुपूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा। कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अंगपूजनम्

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गे समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूपꣳशतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः।।

पुनः **ॐ ब्राह्म्यै नमः**-भाले। **ॐ माहेश्वर्यै नमः**-वामांसे। **ॐ कौमार्यै नमः**-वामपार्श्वे। **ॐ वैष्णव्यै नमः**-जठरे। **ॐ वाराह्यै नमः**-दक्षिणपार्श्वे। **ॐ इन्द्राण्यै नमः**-दक्षिणांसे। **ॐ चामुण्डायै नमः**-कण्ठे। **ॐ महालक्ष्म्यै नमः**-हृदि। तदनन्तर भुवनेश्वरी स्तुति (पृ.सं. 88) और भ्रमराम्बाटकस्तोत्र का पाठ करें, (पृष्ठ संख्या 92) में देखें।

अथ चिन्तामणिप्रयोगः :-

ॐ अस्य श्रीचिन्तामण्याख्यभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो भुवनेश्वरी देवता, हकारो बीजम्, ईकारः शक्तिः, रेफः कीलकं, मम चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः- **ॐ अस्य श्रीचिन्तामण्याख्यभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिऋषये नमः** - शिरसि। **ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः** - मुखे। **ॐ श्रीभुवनेश्वरीदेवतायै नमः** - हृदये। **ॐ हकारबीजाय नमः** - गुह्ये। **ॐ ईकारशक्तये नमः** - पादयोः। **ॐ रकारकीलकाय नमः** - नाभौ। **ॐ मम चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करादिन्यास :-

मन्त्राः	हृदयादिन्यासः	करन्यासः
ॐ ह्रां नमः –	**हृदयाय नमः।**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रीं नमः –	**शिरसे स्वाहा।**	**तर्जनीभ्यां नमः।**
ॐ ह्रूं नमः –	**शिखायै वषट्।**	**मध्यमाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रैं नमः –	**कवचाय हुम्।**	**अनामिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रौं नमः –	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रः नमः –	**अस्त्राय फट्।**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

अथ ध्यानं :-

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

तदनन्तरं – **'ॐ ह्रीं ॐ'** इति त्र्यक्षरीचिन्तामण्याख्यभुवनेश्वरीमन्त्रस्य जपं कुर्यात्।।

तदनन्तर भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनमास्तोत्र का पाठ करें, पृष्ठ संख्या 91 में देखें।

अत्रावधेयं :-

1. कृष्णपक्षत्रयोदश्यां रात्रौ ताम्रपत्रे भोजपत्रे वा मूलमंत्रं विलिख्य सप्तशतीं पठित्वा पायसं (खीर) नैवेद्ये समर्प्य साष्टांगप्रणामं कुर्यात्
2. कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां चतुर्दश्यां च प्रातःकाले सर्वस्वार्पणं तदर्थप्रार्थनां च कर्तव्यं, नान्यत्किंचित्कर्तव्यं भवति।
3. नित्यपूजायां फलं, गुडं, घृतं, मधु, अश्मशर्करा (मिश्री), शर्करा वा नैवेद्ये देया।
4. पूर्वाभिमुखो उत्तराभिमुखो वा उपविश्य निश्चितासने देशे काले च जपं कर्तव्यं।

चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनपद्धतिः

यजमान अपनी पत्नी के साथ हवनकुण्ड के समीप अथवा स्थण्डिल के समीप आकर आसन पर बैठे और कुशा के द्वारा जल लेकर अपने और हवन सामग्री के ऊपर प्रोक्षण करे, तदुपरान्त ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करें और यजमान से हवनकर्म के लिए निम्न संकल्प करावें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिथिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगौत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य श्रीचिन्तामणि (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशादिदेवानां लब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् गणेशादिदेवताओं की यथोपचारों से पूजा करवा के पुण्याहवाचन करें, इसके उपरान्त आचार्य एवं ब्राह्मणों को यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके एकतन्त्र से वरण करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमये कलियुगे कलिप्रथमचरणे सम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतु, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकरास्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहणुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं

(वर्मा, गुप्तः) अस्मिन् चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानागोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अथाग्निस्थापनम्

आचार्य आवाहित देवताओं का यजमान से पूजन करवा के कुण्ड में सुवर्णखण्ड छोड़वा दें और कुण्ड को एक वस्त्र से ढक दें, पुनः आचार्य यजमान को अरणी देते हुए यह वाक्य कहें–

'अग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा।'

पुनः ब्रह्मा कहें– **'इदं चात्र, इदमोवलीं इदं नेत्रम्, इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण।'**

यजमान उपरोक्त पात्रों को ब्रह्मा से लेकर इनमें से अधर अरणी अपनी पत्नी को दें, यजमान पत्नी अधर अरणी को अपनी गोद में रखें, फिर यजमान व उसकी धर्मपत्नी इन अरणियों का पूजन करें। यजमान प्राङ्मुख होकर आसन पर बैठे, आचमन एवं प्राणायाम करें, तदुपरान्त आचार्य यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत एवं द्रव्य रखवाकर निम्न संकल्प करावें–

देशकालौ संकीर्त्य– **'सपत्नीकोऽहं अस्मिन् सनवग्रहमखे चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणि पंचभूसंस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये।'**

आचार्य यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी से अग्निदेवता का ध्यान करावें। तदुपरान्त अधरा अरणी को कंबल व मृगचर्म पर रखकर ओवली में रस्सी को लपेटकर यजमान की धर्मपत्नी उसे चलावें और यजमान ऊपर से जोर देकर मंथा को दबायें रहें। जब तक अग्नि प्रज्जवलित न हो तब तक अग्निमंथन करते रहें। यदि यजमान व उसकी पत्नी थक जायें और अग्नि प्रज्ज्वलित न हो उस अवस्था में हवनस्थल में उपस्थित पवित्र ब्राह्मण के द्वारा अग्निमंथनकर्म को करावें। यह क्रम तब तक होता रहेगा, जब तक कि पूर्णरूप से अग्नि प्रज्ज्वलित न हो जाये। अग्न्मिंथन के प्रारम्भ होते ही आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजुर्वेदसंहिता के तीसरे अध्याय और अन्य अग्निस्तुतिपरक मन्त्रों का उच्चारण करते रहें।

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन।।1।। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।।2।। तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय।।3।। उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्व समिधो मम।।4।। भूर्भूवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ना-दमन्नाद्यायादधे।।5।। आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।6।। अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्।।7।। त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरह द्युभिः।।8।। अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।9।। सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा। सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुशसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।10।। उपप्रयन्तोऽअध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते।।11।। अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति।।12।। उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै। उभा दाताराविषाꣳ रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्।।13।। अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम्।।14।। अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः। यजप्रवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं। विशे विशे।।15।। अस्य प्रत्नामनु द्युतꣳ शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पय सहस्त्रसामृषिम्।।16।। तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।।17।। इन्धानास्त्वा शतꣳ हिमा द्युमन्तꣳ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतꣳ सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।18।। सं त्वमग्ने सूर्यस्त वर्चसागथाः समृषीणाꣳ स्तुतेन। सं प्रियेण धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया

सर्ठ० रायस्पोषेण ग्मिषीय।।19।। अन्धस्थान्धो वो भक्षीय महस्थ महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्जं वो भक्षीय रायस्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय।।20।। रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिँल्लोकेऽस्मिन्क्षये। इहैव स्त मापगात।।21।। सश्ठहितासि विश्वरूप्यूर्जामाविश गौपत्येन। उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नभो भरन्त एमसि।।22।। राजन्तमध्यवराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानर्ठ० स्वे दमे।।23।। स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।24।। अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमर्ठ० रयिं दाः।।25।। तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः। स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो अघायतः समस्मात्।।26।। इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः कामधारणं भूयात्।।27।। सोमानर्ठ० स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः।।28।। यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः।।29।। मा नः शश्ठसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ्नर्त्यस्य। रक्षा णो ब्रह्मणस्पते।।30।। महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य।।31।। नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु। ईशे रिपुरधशश्ठसः।।32।। ते हि पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्त्रम्।।33।। कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते।।34।। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।35।। परि ते दूडभो रथोऽस्माँ2 अश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः।।36।। भूर्भुवःस्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्यार्ठ० सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः। नर्य प्रजां मे पाहि शर्ठ० स्य पशून्मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि।।37।। आगन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम्। अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व।।38।। अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः। अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व।।39।। अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान्पुष्टिवर्धनः। अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमाभि सह आयच्छस्व।।40।। गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि। ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः।।41।। येषामध्येति

प्रवसन्येषु सौमनसो बहुः। गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः।।42।। उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः। अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवर्ठ० शग्मर्ठ० शंयोः शंयोः।।43।। प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः। करम्भेण सजोषसः।।44।। यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्चकृमा वयमिदं तदव यजामहे स्वाहा।।45।। मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः। महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः।।46।। अक्रन्कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा। देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः।।47।। अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः। अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि।।48।। पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो।।49।। देहि मे ददामि ते नि मे देहि नि ते दधे। निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।।50।। अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी।।51।। सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ2अनु योजा न्विन्द्र ते हरी।।52।। मनो न्वाह्वामहे नाराशर्ठ०सेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः।।53।। आ न एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक्च सूर्यं दृशे।।54।। पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातर्ठ० सचेमहि।।55।। वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचमेहि।।56।। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः।।57।। अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।।58।। भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै।।59।। त्र्यम्बकं यजमाहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।60।। एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवतत धन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहिर्ठ०सन्नः शिवोऽतीहि।।61।। त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।।62।। शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।।63।।

ब्रह्मा द्वारा कुण्ड में पंचभूसंस्कार किये जाने के बाद यजमान व उसकी धर्मपत्नी कुण्ड के पश्चिम भाग में पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे, फिर कुण्ड का पूजन निम्न क्रम से करना प्रारम्भ करें। सबसे पहले कुण्ड के ऊपर वाली मेखला में अक्षतपुंज पर सुपारी रखवाकर निम्न वैदिक मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें–

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पाठ॰सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवस्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

मध्य मेखला में–

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भुर्भूवःस्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

अधो मेखला में–

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

योनि में–

ॐ अम्बे अम्बिकेऽबालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।।

कण्ठ में–

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ॰ रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ॰ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

ॐ भुर्भूवःस्वः कण्ठाय नमः, कण्ठमावाहयामि स्थापयामि।

नाभि में-

ॐ नार्भिमे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भयां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।। ॐ नाभ्यै नमः, नाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

आचार्य-

'ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।

इस मन्त्र का उच्चारण करके कुण्ड में विश्वकर्मा जी का आवाहन यजमान से करावें। अरणि मन्थन से प्रकट अग्निदेवता को एक थाली में रखवाकर नारियल की जटा, रूई व कपूर से प्रज्वलित कराके उनका जयघोष करते हुए विशेष रूप से उस अग्नि को दीप्त कर लें। फिर कुण्ड में गोहरी (गोस्से = कण्डे) एवं लकड़ी के छिलकों में उस अग्नि का निम्न मंत्र का उच्चारण करके स्थापित करें-

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।। देवाँ2 आसादयादिह।

अग्नि को स्थापित करने के पश्चात् यजमान संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गोदानपूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा दें।

ईशान्यां नवग्रहस्थापनम्

आचार्य ईशानकोण की ओर एक पीठ (पीढ़े) पर सफेद वस्त्र बिछाकर नवग्रह मण्डल का निर्माण कराके सूर्यादिनवग्रह देवताओं के निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों के द्वारा उनका आवाहन व स्थापन यजमान से करावें-

जपा-कुसुम-सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरि सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्य येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छेह तिष्ठ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि सथापयामि।।1।।

दधि-शङ्ख-तुषाराभ क्षीरोदार्णवसम्भवम ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावहयाम्यहम्।

ॐ इमं देवा असपत्नॅं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाॅं राजा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छेह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।2।।

धारणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्!। अपाॅं रेताॅंसि जिन्वति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छेह तिष्ठ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि।।3।।

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सॅंसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि।।4।।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हो द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पति! इहागच्छेह तिष्ठ बृहस्पते नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।5।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमः प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानॅं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र। इहागच्छेह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।6।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छेह तिष्ठ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।।7।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छेह तिष्ठ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि।।8।।

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो! इहागच्छेह तिष्ठ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि।।9।।

अधिदेवतास्थापनम्

सूर्यादि ग्रहों के आवाहन व स्थापन के पश्चात् आचार्य ग्रहों के दायीं ओर निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए अधिदेवताओं का स्थापन यजमान से करायें-

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्। आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्।।

ॐ त्र्यम्बकं यजमाहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वरेहागच्छेह तिष्ठ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।।1।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाणा सर्वलोकम्म इषाण।।

ॐ भूर्भुवःस्वः उमेहागच्छेह तिष्ठ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि।।2।।
रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्। षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्।।
ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्देहागच्देह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।।3।।
देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्। चतुर्भजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवोऽसि विष्णवे त्वा।।
ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।4।।
कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्। वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।
ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथी जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः
साप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो पच्यन्तां योगक्षेमौ नः कल्पताम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।5।।
देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्। वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंर्ठ2 रप मृधो नृदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रोहागच्छेहतिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।6।।
धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्। रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।।
ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।
ॐ भूर्भुवःस्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।7।।

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमान दिने दिने। कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कालेहागच्छेह तिष्ठ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि।।8।।

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम्। आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्।।

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्तेहागच्छेह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।9।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

आचार्य ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें-

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्। वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ2 आसादयादिह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।1।।

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः। औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम्।।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अप इहाऽगच्छतेह तिष्ठत अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि।।2।।

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्। सर्वसस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वी इहागच्छेह तिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।।3।।

खड्गचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्। किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं०सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।4।।

ऐरावतगजारूढं सहस्त्राक्षं शचीपतिम्। वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिण यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।5।।

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्। नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।।6।।

आवाहयाम्यहं देव देवेशं च प्रजापतिम्। अनेकव्रतयजन्तं सर्वेषां च पितामहम्।

ॐ प्रजापति न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पिताऽसावस्य पिता वयर्ठ०स्याम पतयो रयीणाम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।।7।।

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्। आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पा इहागच्छतेह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि।।8।।

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्। आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुचो वेन आवः। स बुध्ना उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमासतश्च विवः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।9।।

पंचलोकपालादिस्थापनम्

प्रत्यधिदेवताओं के स्थापन के पश्चात् आचार्य विनायक आदि पंचलोकपाल, वास्तपोष्पति तथा क्षेत्रपाल का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्। आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।
ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।।1।।
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे। नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।
ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।।2।।
आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्। सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्।।
ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागाहि। नियुत्वान्सोमपीतये।
ॐ भूर्भुवःस्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।3।।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्। आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ घृतं घृतपावानं पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आकाश इहागच्छेह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।।4।।

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारी भिषग्वरौ। आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनौ इहागच्छतामिह तिष्ठातां अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।।5।।

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम्। आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्।।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवाभवो नमः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्। आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नमः।।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छेह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।।

दशदिक्पालस्थापनम्

आचार्य ग्रहमण्डल के बाहर पूर्वदिशा से प्रदक्षिण क्रम द्वारा दशदिक्पालों का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से करावें–

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्। आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ०स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्र इहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।1।।
त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्। षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।
ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्श्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।2।।
महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्। यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।
ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।
ॐ भूर्भुवःस्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।3।।
सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्। आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।
ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्यां नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।
ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।4।।
शुद्धस्फटिकसङ्काषं जलेशं यादसां पतिम्। आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।
ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्यरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।5।।
मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्। यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयामि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।6।।

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्। महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।
ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।
ॐ भूर्भुवःस्वः सोमेहागच्छेह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।7।।
सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्। आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।
ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानेहागच्छेह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।8।।
पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्। आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे।।
ॐ अस्मे रुद्रा मे हना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳसते सतुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ2 अवन्तु देवाः।।
पूर्वेशानयोर्मध्ये-ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।9।।
अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्। जगतां शान्तिंयजन्त मण्डले स्थापयाम्यहम्।।
ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरोवेशानि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।
निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये-ॐ भूर्भुस्वःस्वः अनन्तेहागच्छेह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।।10।।
आचार्य निम्न श्लोक और 'ॐ मनो जूतिर्जुष०' इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें-
ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३ँ प्रतिष्ठ।।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

असङ्ख्यातरुद्रध्यानं स्थापनम् च

आचार्य ग्रहमण्डल के ईशान कोण में पूर्व में बताई गई कलश स्थापन विधि के द्वारा असङ्ख्यात रुद्र के कलश की स्थापना करवायें

तदुपरान्त निम्न श्लोक, वैदिक मन्त्र एवं वाक्य का क्रम से उच्चारण करते हुए असङ्ख्यात रुद्र का यजमान से ध्यान एवं स्थापन करवायें-

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्। आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्।।

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असङ्ख्यातरुद्रा इहागच्छतेह तिष्ठत असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, असङ्ख्यातरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।।

कुशकण्डिकाप्रारम्भः

अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनं- **"यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव।।"**, **'भवामीति'** ब्रह्मा वदेत्। ब्रह्मणानुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा आपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।। तत ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्।। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्।।

पात्रासादनम्

विधिः-

पश्चादुत्तरतो वा स्यात्। पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्। पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पंच। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुक् स्रुवः। आज्यम्। पयः। तण्डुलाः। तण्डुलपूरितपूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ। त्रिस्त्याज्यः। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीमासिच्य। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकागुंष्ठाभ्यां गृहीत पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणहस्तेनानामिकांगुष्ठेन गृहीतपवित्रेण त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन यथासादितवस्तुसेचनम्। अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षर्णी निधाय। आज्यस्थाल्यामज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलान्पयश्च प्रक्षिपेत्। ततो ब्रह्मा अग्नेर्दक्षिणतः

(आज्यमधिश्रयति। चरुं स्वयं आज्यस्योत्तरतः श्रपयेत्। "ततो विराडजायते" ति आज्याधिश्रयणम् तेनैव मन्त्रेण वा पुरुषसूक्तेन स्वयं चरोरधिश्रयणमाज्यस्योत्तरतः) ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धाश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। संमार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य तैरेव कुशैः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य। संमार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। स्रुवं पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निधाय। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्ये सति तन्निरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय तिष्ठन् दक्षिणहस्ते समिधोऽभ्याधाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्तसममिधास्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत् सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेनेशानादारभ्येशानपर्यन्तमग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य। पवित्रयोः प्रणीतासु। संस्रवपात्रं संस्थाप्य। (कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्ध समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्याहुतीर्जुहुयात्। स्रुवेणाज्यहोमः अग्नेरुत्तरभागे) मनसा। "**ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।**" इति मनसा प्रोक्षणीपात्रे त्यागः। "**ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।**" इत्याघारौ। "**ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।।**" इत्याज्यभागौ। इत्याज्यभागान्तं त्यागः। ततः सूर्यादिग्रहाणां अधिदेवताप्रत्यधि-देवतापंचलोकपालदशदिक्पालदेवतानां च प्रत्येकं समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्।।

अथ प्रयोगः-

अपने दायें हाथ में जल, अक्षत लेकर यजमान निम्न वाक्य कहें-

संकल्पः-

'अस्मिन् चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानाङ्गत्वेनावाहितदेवताभ्योऽन्येभ्यश्च हवनमहं करिष्ये।'

आघारावाज्यहवनम्

कुण्ड पूजन के उपरान्त निम्न क्रम से आघाराज्यहवन यजमान से करावें-

'ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापते न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।' इत्याघारौ।

'ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।' इत्याज्यभागौ।

संपूर्णहवनीयद्रव्यत्यागसंकल्पः-

'मया सम्पादितानि यथालाभोपपन्नानि समिच्चरुतिलाज्यादीनि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम।। यथा दैवतानि सन्तु।।'

गणेशाम्बिकाहोमः

निम्न दो मन्त्रों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से गणेश व अम्बा का हवन करावें-

गणेश- **ॐ गणानां त्वा गणपतिᳫं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳫं हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिᳫं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा।।**

गौरी- **ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा।।**

केवल नामाऽनुक्रमेण आवाहितदेवतानां हवनम्

'ॐ सूर्याय स्वाहा, ॐ सोमाय स्वाहा, ॐ भौमाय स्वाहा, ॐ बुधाय स्वाहा, ॐ बृहस्पते स्वाहा, ॐ शुक्राय स्वाहा, ॐ शनैश्चराय स्वाहा, ॐ राहवे स्वाहा, ॐ केतुवे स्वाहा, ॐ ईश्वराय स्वाहा, ॐ उमायै स्वाहा, ॐ स्कन्दाय स्वाहा, ॐ विष्णवे स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ यमाय स्वाहा, ॐ कालाय स्वाहा, ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा, ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ अद्भ्यो स्वाहा, ॐ पृथिव्यै स्वाहा, ॐ विष्णवे स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ॐ प्रजापतये स्वाहा, ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ गणपतये स्वाहा, ॐ दुर्गायै स्वाहा, ॐ वायवे स्वाहा, ॐ आकाशाय स्वाहा, ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा, ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा, ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ

यमाय स्वाहा, ॐ निर्ऋतये स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ वायवे स्वाहा, ॐ सोमाय स्वाहा, ॐ ईशानाय स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ अनन्ताय स्वाहा।'

अथ हवनमुत्तरकृत्यं च :-

हवने विशेष :- विध्यनुसारेण आज्याघरादिहोमानां कृत्वा चिन्तामणिमंत्रस्य हवनात्पूर्वं केवलाज्येन एते आहुतयो देया-

'ॐ श्रीप्रजापतये स्वाहा, ॐ श्रीन्द्राय स्वाहा, ॐ श्रीयमाय स्वाहा, ॐ श्रीनिर्ऋतये स्वाहा, ॐ श्रीवरुणाय, ॐ श्रीवायवे स्वाहा, ॐ श्रीसोमाय स्वाहा, ॐ श्रीशानाय स्वाहा, ॐ श्रीब्रह्मण्यै स्वाहा, ॐ श्रीमाहेश्वर्यै स्वाहा, ॐ श्रीकौमार्यै स्वाहा, ॐ श्रीवैष्णव्यै स्वाहा, ॐ श्रीवाराह्यै स्वाहा, ॐ श्रीइन्द्राण्यै स्वाहा, ॐ श्रीचामुण्डायै स्वाहा, ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै स्वाहा, ॐ श्री भुवनेश्वर्यै स्वाहा।'

प्रधानहवनम्

चिन्तामणिमन्त्र से पामस (खीर) और आज्य (घी) से दशांश/सामर्थ्यानुसार हवन करायें। तत्पश्चात्

आचार्य श्री भुवनेश्वरी देवी की प्रधान आहुति उन्हीं के निम्न मन्त्र के द्वारा यजमान से 1008/108 बार हवनकुण्ड में प्रदान करावें-

'ॐ अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोस्यूर्णग्रदसं त्व स्तृणामि स्वासस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाह भूतानांपतये स्वाहा।।'

भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामावल्याः हवनविधिः

आचार्य भुवनेश्वरी के एक सौ आठ नामों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुय यजमान से प्रत्येक नाम मन्त्र के द्वारा कुण्ड में घृत की आहुति प्रदान करावें-

1. ॐ महामायायै स्वाहा 2. ॐ महाविद्यायै स्वाहा 3. ॐ महायोगायै स्वाहा

4. ॐ महोत्कटायै स्वाहा
5. ॐ महेश्वर्यै स्वाहा
6. ॐ कुमार्यै स्वाहा
7. ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा
8. ॐ ब्रह्मरूपिण्यै स्वाहा
9. ॐ वागीश्वर्यै स्वाहा
10. ॐ योगरूपायै स्वाहा
11. ॐ योग्न्यै स्वाहा
12. ॐ कोटिसेवितायै स्वाहा
13. ॐ जयायै स्वाहा
14. ॐ विजयायै स्वाहा
15. ॐ कौमार्यै स्वाहा
16. ॐ सर्वमङ्गलायै स्वाहा
17. ॐ हिङ्गुलायै स्वाहा
18. ॐ विरासस्यै स्वाहा
19. ॐ ज्वालिन्यै स्वाहा
20. ॐ ज्वालरूपिण्यै स्वाहा
21. ॐ ईश्वर्यै स्वाहा
22. ॐ क्रूरसंहार्यै स्वाहा
23. ॐ कुलमार्गप्रदायिन्यै स्वाहा
24. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा
25. ॐ सुभगाकरायै स्वाहा
26. ॐ सुकुल्यायै स्वाहा
27. ॐ कुलपूजितायै स्वाहा
28. ॐ वामाङ्गायै स्वाहा
29. ॐ वामाचारायै स्वाहा
30. ॐ वामदेवप्रियायै स्वाहा
31. ॐ डाकिन्यै स्वाहा
32. ॐ योगिनीरूपायै स्वाहा
33. ॐ भूतेश्यै स्वाहा
34. ॐ भूतनायिकायै स्वाहा
35. ॐ पद्मावत्यै स्वाहा
36. ॐ पद्मनेत्रायै स्वाहा
37. ॐ प्रबुद्धायै स्वाहा
38. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा
39. ॐ भूचर्यै स्वाहा
40. ॐ खेचर्यै स्वाहा
41. ॐ मायायै स्वाहा
42. ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा
43. ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा
44. ॐ कान्तायै स्वाहा
45. ॐ पतिव्रतायै स्वाहा
46. ॐ साक्ष्यै स्वाहा
47. ॐ सुचक्षुषे स्वाहा
48. ॐ कुण्डवासिन्यै स्वाहा
49. ॐ उमायै स्वाहा
50. ॐ कुमार्यै स्वाहा
51. ॐ लोकेश्यै स्वाहा
52. ॐ सुकेश्यै स्वाहा
53. ॐ पद्मरागिण्यै स्वाहा
54. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा

55. ॐ ब्रह्मचाण्डाल्यै स्वाहा
56. ॐ चण्डिकायै स्वाहा
57. ॐ वायुवल्लभायै स्वाहा
58. ॐ सर्वधातुमयीमूर्त्यै स्वाहा
59. ॐ जलरूपायै स्वाहा
60. ॐ जलोदर्यै स्वाहा
61. ॐ आकाश्यै स्वाहा
62. ॐ रणगायै स्वाहा
63. ॐ नृकपालविभूषणायै स्वाहा
64. ॐ नर्म्मदायै स्वाहा
65. ॐ मोक्षदायै स्वाहा
66. ॐ कामधर्मार्थदायिन्यै स्वाहा
67. ॐ गौर्यै स्वाहा
68. ॐ सावित्र्यै स्वाहा
69. ॐ त्रिसन्ध्यायै स्वाहा
70. ॐ तीर्थगामिन्यै स्वाहा
71. ॐ अष्टम्यै स्वाहा
72. ॐ नवम्यै स्वाहा
73. ॐ दशम्यै स्वाहा
74. ॐ एकादश्यै स्वाहा
75. ॐ पौर्णमास्यै स्वाहा
76. ॐ कुहूरूपायै स्वाहा
77. ॐ तिथिमूर्तिस्वरूपिण्यै स्वाहा
78. ॐ सुरारिनाशकार्यै स्वाहा
79. ॐ उग्ररूपायै स्वाहा
80. ॐ वत्सलायै स्वाहा
81. ॐ अनलायै स्वाहा
82. ॐ अर्द्धमात्रायै स्वाहा
83. ॐ अरुणायै स्वाहा
84. ॐ पीतलोचनायै स्वाहा
85. ॐ लज्जायै स्वाहा
86. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा
87. ॐ विद्यायै स्वाहा
88. ॐ भवान्यै स्वाहा
89. ॐ पापनाशिन्यै स्वाहा
90. ॐ नागपाशधरायै स्वाहा
91. ॐ मर्त्यै स्वाहा
92. ॐ अगाधायै स्वाहा
93. ॐ धृतकुण्डलायै स्वाहा
94. ॐ क्षयरूपायै स्वाहा
95. ॐ क्षयकर्य्यै स्वाहा
96. ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा
97. ॐ शचिस्मितायै स्वाहा
98. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा
99. ॐ व्यक्तलोकायै स्वाहा
100. ॐ शम्भुरूपायै स्वाहा
101. ॐ मनस्विन्यै स्वाहा
102. ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा
103. ॐ मत्तमातङ्ग्यै स्वाहा
104. ॐ महादेवप्रियायै स्वाहा
105. ॐ दैत्यघ्न्यै स्वाहा
106. ॐ वाराह्यै स्वाहा
107. ॐ सर्वशास्त्रमय्यै स्वाहा
108. ॐ शुभायै स्वाहा

अग्निपूजनम्

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता का पूजन करावें-

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

आचार्य निम्न वाक्य का उच्चारणध करके यजमान से अग्नि देवता का गन्ध तथा पुष्पादि से पूजन करायें-

ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहास्वधायुताय मृडाग्नये वैश्वानराय नमः।

स्विष्टकृद्धोमः

आचार्य बचे हुए शेष हविर्द्रव्य को प्रोक्षणी पात्र में ग्रहण कर अन्वारब्ध होकर यजमान से स्विष्टकृत होम करावें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा- इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

यह कहकर बचे हुए हविर्द्रव्य का प्रक्षेप प्रज्वलित अग्नि कुण्ड में करें।

भूरादिनवाहुतिभिर्होमः

आचार्य भूरादिनवाहुतिहोम के लिये निम्न क्रम से यजमान से होम करावें-

ॐ भूः स्वाहा-इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाह- इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा- इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनिभशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ० स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्त:। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न् मम।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादितय व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणादित्यदितिभ्यो न मम।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।। (मनसा)

दशदिक्पालबलय:

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चारण करते हुए दशदिक्पाल को यजमान से बलि प्रदान करावें-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति मघवा धात्विन्द्र:।।

इसके पश्चात् आचार्य पुष्प, अक्षत् और जल यजमान के दाऐं हाथ में देकर यह उच्चारण करवायें-

ॐ इन्द्राय नम:, इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, वरदो भव। अनेन बलिदानेन इन्द्र: प्रीयताम्।

पूर्वाभिमुख होकर आचार्य निम्न मन्त्रों व वाक्यों का उच्चारण करते हुए पुष्प, अक्षत और जल यजमान से भूमि पर छुड़वाये-

आग्नेय्यायम्-ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता लोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ अग्नये नम:, अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य आयु:कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्नि: प्रीयताम्।

दक्षिणे- ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः, यमाय साङ्गय परिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो यम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।

नैऋत्याम्- ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ निऋतये नमः, निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शांतिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

पश्चिमे-ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान आयुः प्रमोषीः।। ॐ वरुणाय नमः, वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

वायव्याम्-ॐ आ नो निशुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० हस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पातं स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायवे नमः, वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।

उत्तरे- ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्त सचेमहि।। ॐ सोमाय नमः, सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सोम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।

ईशान्याम्-ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्‌वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ ईशानाय नमः, ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं सपर्मयामि। भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये- ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोषाः। यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ2 अवन्तु देवाः।। ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिाकय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्।

निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये- ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशिनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ अनन्ताय नमः, अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अनन्त प्रीयताम्। अथवा दशादिक्पालानामेकतन्त्रेण बलयः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चारण करते हुए दशदिक्पालों को एक तन्त्र से बलि प्रदान करावें-

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा। ॐ इन्द्रादिदशादिक्पालेभ्यो नमः, इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपदधि भाषभक्तबलीन् सपर्मयामि। भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः। स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तार, तुष्टिकर्तारः, वरदा भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

गणपतिबलयः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चारण करते हुए गणपति को यजमान से बलि प्रदान करावें-

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्व प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

तदुपरान्त निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान गणपति देवता को बलि प्रदान करें-

गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो गणपते! स्वां दिशं रक्ष बलि भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रीयताम्।

वरुणबलयः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चारण करते हुए वरुण देवता को बलि प्रदान करावें-

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा नऽआयुः प्रमोषीः।।

तदुपरान्त निम्न वाक्य का उच्चारण करके वरुण देवता को यजमान बलि देवें-

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बरस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

षोडशमातृकाबलयः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र वाक्यों का उच्चारण करते हुए षोडशमातृकाओं को बलि यजमान से प्रदान करावें-

ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विन्देय तव देवि सन्दृशि।।

तदुपरान्त निम्न वाक्य का उच्चारण करके षोडशमातृका को बलि यजमान समर्पित करें-

गौर्यादिषोडशमातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् सपर्मयामि। भो गौर्यादिषोडशमातरः। स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः, क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः, तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्।

श्र्यादिसप्तघृतमातृकाबलयः

आचार्यसहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चरण करते हुए श्र्यादिसप्तघृतमातृकाओं को बलि प्रदान करावें-

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

तदुपरान्त निम्न वाक्यों का उच्चारण करके सप्तघृतमातृकाओं को बलि यजमान समर्पित करे-

श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो भो श्र्यादिसप्तघृतमातरः। स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुभस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः, क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः, तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन श्र्यादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्।

नवग्रहबलयः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र व वाक्यों का उच्चारण करते हुए नवग्रह की बलि यजमान से प्रदान करावें-

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। ॐ सूर्याय

नमः, सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम्।।1।।

ॐ इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवर्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएव वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणनार्ठ० राजा। ॐ सोमाय नमः, सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाआपोरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सोम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।।2।।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति।। ॐ भौमाय नमः, भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन भौमः प्रीयताम्।।3।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सर्ठ०सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ॐ बुधाय नमः, बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सदीप-माषभक्तबलिं समर्पयामि। भो बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बुधः प्रीयताम्।।4।।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हां द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतम्प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ बृहस्पते नमः, बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो बृहस्पते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम्।।5।।

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। ॐ शुक्राय नमः, शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्य धिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेत्रकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन शुक्रः प्रीयताम्।।6।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।। ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि।। भो शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन शनैश्चरः प्रीयताम्।।7।।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवटूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। ॐ राहवे नमः, राहवे साङ्गाय परिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो राहो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन राहुः प्रीयताम्।।8।।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।। ॐ केतवे नमः, केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाचय सशक्तिकाय चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो केतो! इमं बलिं

गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन केतुः प्रीयताम्।।9।।

अथवा एकतन्त्रेण नवग्रहबलयः

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान से नवग्रह बलि प्रदान करावें-

ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूजꣳसमग्रमुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। ग्रहपीठस्थेभ्यः सूर्यादिनवग्रहेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितेभ्यो देवेभ्यो नमः। सूर्यादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्यादयो नवग्रहा इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सांगाः सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम्।।

पञ्चलोकपालबलयः

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न क्रमानुसार पंचलोकपालों को यजमान से बलि प्रदान करावें-

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ गणपतये नमः। गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि। भो गणपते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन गणपतिदेवता प्रीयताम्।।1।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गायै

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो दुर्गे! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री, क्षेमकर्त्री, शान्तिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, तुष्टिकर्त्री वरदा भव। अनेन बलिदानेन दुर्गादेवी प्रीयताम्।।2।।

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये।। ॐ वायवे नमः, वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं सपर्मयामि। भो वायो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुदेवता प्रीयताम्।।3।।

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ आकाशाय नमः, आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन आकाशदेवता प्रीयताम्।।4।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्श्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अश्विनौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारौ, क्षेमकर्तारौ, पुष्टिकर्तारौ, तुष्टिकर्तारौ वरदौ भवतः। अनेन बलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम्।।5।।

वास्तोष्पतिबलयः

आचार्य व ब्राह्मण निम्न क्रम से वास्तोष्पति को यजमान से बलि प्रदान करावें–

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय शक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वास्तोष्पते!

इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम्।।

वास्तुबलयः (एकतन्त्रेण)

आचार्य एवं ब्रह्माण निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान से वास्तुबलि प्रदान करावें-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तं नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ शिख्यादिवास्तुदेवताभ्यो नमः, शिख्यादिसहितवास्तोष्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इदं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।। भो शिख्यादिसहितवास्तोष्पते! इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारास्य, आयुःकर्तारः, क्षेमकर्ताः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन शिख्यादिसहितवास्तोष्पतिदेवता प्रीयन्ताम्।।

योगिनीबलयः (एकतन्त्रेण)

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न क्रमानुसार योगिनी बलि को यजमान से प्रदान करावें-

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।। ॐ गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहित-गजाननाद्यावाहितचतुःषष्टियोगिनीभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहिचतुःषष्टियोगिन्यः! इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः, क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः, तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितगजाननाद्यावाहिचतुःषष्टियायोगिन्यः प्रीयन्ताम्।

असंख्यातरुद्रबलसः

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न क्रमानुसार असंख्यातरुद्र को यजमान से बलि प्रदान करावें-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः, रुद्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो रुद्रा इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदा भवत। अनेन बलिदानेन असंख्यातरुद्राः प्रीयन्ताम्।

विष्णुबलयः

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न क्रमानुसार विष्णु भगवान को यजमान से बलि प्रदान करावें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निधदे पदम्। समूढमस्य पाठ॰सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः, विष्णवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो विष्णो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारास्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन विष्णुः प्रीयताम्।

प्रधानदेवताश्रीभुवनेश्वरीबलयः

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से श्री भुवनेश्वरी देवी के लिये प्रधान बलि प्रदान करावें-

ॐ अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासंस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानांपतये स्वाहा।

अथवा

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, भुवनेश्वर्यै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो भुवनेश्वरि! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री, क्षेमकर्त्री, शान्तिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, तुष्टिकर्त्री वरदा भव। अनेन बलिदानेन श्रीभुवनेश्वरी प्रीयताम्।

क्षेत्रपालबलयः (एकतन्त्रेण)

यजमान से निम्न संकल्प करवाकर आचार्य हवनकुण्ड के चारों ओर क्षेत्रपाल की बलि यजमान से प्रदान करावें–

यजमानः– देशकालौ संकीर्त्य–**अस्य चिन्तामणिमन्त्र (श्रीभुवनेश्वरी) अनुष्ठानहोमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूतप्रेतपिशाचादिनिवृत्त्यर्थं च सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।**

उपरोक्त कर्म के पश्चात् शुद्ध भूमि में सूर्यादि देवताओं को महाबलि (सार्वभौतिक बलिदान) निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करके करें–

ॐ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः। सपत्नीपरिवारश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्।।1।।

ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः। भीमानाम महादंष्ट्रः स च गृह्णतु मे बलिम्।।2।।

ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः। तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।3।।

आचार्य निम्न मन्त्र एवं वाक्यों का उच्चारण करके वैतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्त परिवार के लिये यजमान द्वारा इस बलि को समर्पित करावें–

ॐ नहिन्नस्पशमविदन्यमस्माद्वैश्वनरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः, वेतालादिपरिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूतप्रेतपिशाचराक्षस–शाकिनी डाकिनीसहितेभ्य इमं बलिं समर्पयामि। भो! भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य

सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत, अनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

ॐ बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा। मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।।1।।

असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः। शाकिन्यो यज्ञवेताला योगिन्यः पूतना शिवा।।2।।

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरा नगाः। दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।3।।

जगतः शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। मा विघ्ना मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।

सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।।4।।

भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।5।।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें और शूद्र/दुर्ब्राह्मण द्वारा यजमान के सिर पर से इस बलि को घुमाकर नैर्ऋत्यकोण में पड़ने वाले चौराहे पर जाकर इस बलि को रख दे किन्तु पीछे मुड़कर कदापि न देखे। वापस आकर अपने हाथ और पैरों को शुद्ध जल से धो लें-

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सर्ठ्हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।

आचार्य बलि की समाप्ति के पश्चात् यजमान के मस्तक पर जल छिड़कें

पूर्णाहुतिः

यजमान के दाहिने हाथ में जल, अक्षत और यथाशक्ति द्रव्य रखवाकर आचार्य पूर्णाहुति केलिये निम्न संकल्प करावें-

देशकालौ संकीर्त्य-अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम्(वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (श्रीभुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।

पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ2 उदारदुपार्ठ०शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः।।1।।
वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्।।2।।
चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या2 आविवेश।।3।।
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एकर्ठ० सूर्यं एकं जजान वेनादेकर्ठ० स्वधया निष्टतक्षुः।।4।।
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रता रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।5।।
सम्यक् स्त्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते हर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः।।6।।
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।7।।
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदा।।8।।
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते।।9।।
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।10।।
धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रियमन्तःसमुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिधे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्।।11।।
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।12।।
सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।13।।

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमुत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।14।।
पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो। स्वाहा।।5।।

वसोर्धाराहवनमन्त्राः

दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुम्बर की सीधी मनोहरा बाहुमात्रप्रमाण की वसोर्धरा को यजमान प्रागग्र रख, उसके ऊपर श्रृंखला से धारित घृत से परिपूर्ण ताम्र आदि धातु के पात्र (जिसके नीचे यवमात्र छिद्र हो) से आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर वसोर्धारा गिरावें। उसके मुख में स्वर्ण जिह्वा बाँधे, स्रुचि पात्र के नाली से अग्नि में घृत की धारा छोड़े। इसी समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें-

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।1।।
शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यᳬद्राः।।2।।
ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् मितश्च संमितश्च संभराः।।3।।
ऋषश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः।।4।।
ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गणः।।5।।
ईदृक्षास एतादृक्षसऽऊषणुः। सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो अस्मिन्।।6।।
स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।7।।
इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्।

एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु।।8।।
इमर्ठ० स्तनमर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने शरीरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व।।9।।
घृतं मितिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।10।।
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।1।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।
कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशायाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।8।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।9।।
मनसः काममाकृतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।10।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय ये कुले मातरं पद्मालिनीम्।।11।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्मालिनीम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।13।।

आर्द्रां य करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरमण्यीं लक्ष्मीं जातवेदो मा आ वह।।14।।

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।15।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।16।।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।। 'इदमग्नये वैश्वानराय न मम'

कुण्डाग्नेः प्रदक्षिणा

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करावें-

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुयानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम्।।

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

आचार्य निम्न नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमानके द्वारा हवनकुण्ड से भस्म को निकलवाकर उसके शरीर के अंगों में लगवाएं और प्रोक्षणीपात्र में बचे हुए घृत का आघ्राण कर पुनः आचमन क्रिया करें-

ॐ त्र्यायुषं् जमदग्नेः- ललाटे। **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्**-ग्रीवायाम्। **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्**-दक्षिण बाहुमूले। **ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्**-हृदि। संस्त्रवप्राशनम्। आचनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्। पूर्णपात्रग्रहणानन्तरं **'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु'** इति ब्रह्मा वदेत्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। पश्चादग्नेः पश्चिमे प्रणीताविमोकः।

'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।'

उपरोक्त कर्म के पश्चात् यजमान प्रणीतापात्र के जल से मार्जन करे, पुनः अग्नि में पवित्री को छोड़ देवें।

अवभृथस्नानम्

यजमान पूर्णाहुति आदि कर्मों के पश्चात् प्रधान वेदी के ऊपर स्थापित प्रधानकलश के पास स्रुव-स्रुचादि यज्ञपात्र व पूजन सामग्री को लेकर वेदमन्त्रों व भगवान् का कीर्तन व वाद्य घोष के साथ आचार्य और ब्राह्मणों तथा बन्धु-बान्धव व नगरवासियों के साथ नदी के किनारे जायें। आधे मार्ग पर क्षेत्रपाल का पूजन कर क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें और नदी व जलाशय के किनारे जाने पर आचार्य एवं ऋत्विक् स्वस्तिवाचन करना प्रारम्भ करें, उसके पश्चात् आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें-

विष्णुर्विष्णर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुव-स्वारोचिषोत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषेति षण्मनूनामतिक्रमणे सम्प्रति सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशातितमस्य कलियुगस्य प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे निखिलजनपावने आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे अमुक-**स्थाने** अमुक**नद्याः** अमुक **तटे विक्रमशके बौद्धावतारे** अमुक**नाम्नि संवत्सरे** अमुक**ायने** अमुक**ऋतौ** अमुक**मासे** अमुक**पक्षे** अमुक**तिथौ** अमुक**वासरे** अमुक**नक्षत्रे** अमुक**योगे** अमुक**करणे** अमुक**राशिस्थिते चन्द्र** अमुक**राशिस्थिते सूर्ये** अमुक**राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ** अमुकगोत्रः अमुक**शर्माहं (वर्माहं, गुप्तोऽहं) मम सर्वेषां परिवाराणां तथाऽन्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशये वा मांगलिक अवभृथस्नानं समस्तसमुपस्थितजनैः सहाहं करिष्ये।**

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणामावाहनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा-**ॐ भूर्भुवःस्वः मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भूवःस्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ**

भूर्भुवःस्वः दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः मकर्यै नमः, मकरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः जलूक्यै नमः, जलूकीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि। ततो वरुणदेवतामावाहयेत्–

'आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते। तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।'

इत्यावाह्य सम्पूज्य च–**'श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः। गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते।।'**

इति विशेषार्घ्यं दद्यात्– ततः–

'ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके।।1।। ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समानऽआयुः प्रमोषीः।।2।। ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणाय विद्वान् देवस्य हेडोऽ-अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमर्ठ० शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।3।। ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोती नेदिष्ठोऽ-अस्याऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि।।4।। ॐ आपो मौषधीर्हिर्ठ० सीर्द्धाम्नो धाम्ना राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च।।5।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम।।6।। ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादूत। अथो यमस्य पड्वीशात् सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्।।7।। ॐ अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः। अव देवैर्द्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्त्यैर्मर्त्त्यकृतं पुरुषान्णो देवरिषस्पाहि।।8।।'

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्त्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात्।

'तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।'

इति रज्ज्वादिना परितश्चतुरस्त्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत्। ततः–

‘ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।’
इति मन्त्रेण गङ्गां नदी जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना जीवमातृणां बलिं दद्यात् तद्यथा– ‘ॐ भूर्भुवःस्वः कुमार्यै नमः। ॐ
भूर्भुवःस्वः धनदायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः नन्दायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः विमलायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः मङ्गलायै नमः। ॐ
भूर्भुवःस्वः अचलायै नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः पद्मायै नमः।’
पश्चाद् चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः–श्रीसूक्तेन च जले अभिषेकः कार्यः। ततो होमावसरे हवनकुण्डाद् बहिः पतितं
हवनीयद्रव्यं नद्यां जलाशये वा तूष्णीं प्रक्षिपेत्।
ततो जले– “वाडवाग्निरूपायाग्नये नमः” इतिमन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतीन् जुहुयात्। तद्यथा– 1.
ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम। 2. ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम। 3. ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम।।
4. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम।। 5. ॐ स्त्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्त्रवन्तीभ्यो न मम। 6. ॐ स्यन्दमानाभ्यः
स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम।। 7. ॐ कृप्याभ्यः स्वाहा, इदं कृप्याभ्यो न मम।। 8. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न
मम।। 9. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम।। 10. ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम।। 11. ॐ समुद्राय
स्वाहा, इदं समुद्राय न मम।। 12. ॐ सलिलाय स्वाहा, इदं सलिलाय न मम।।
ततो यजमान सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन– 1. ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। 2. ॐ तत्त्वा
यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुशर्ठ० स मा नऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा। 3.
त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।। यजिष्ठो वह्नितमः शौशुचानो विश्श्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।
4. ॐ स त्वं नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकः सुहवो नऽएधि।।
5. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम।।

तदुपरान्त यजमान वारुण मन्त्रों से स्नान करे और प्रधान कलश के अन्दर से कुशा एवं दूर्वा के द्वारा जल निकालकर अन्य लोगों के ऊपर छोड़े, इसके उपरान्त कर्ता हवनकुण्ड से भस्म स्रुचि के द्वारा निकालकर अपने शरीर पर उसका लेपन करें और नदी अथवा जलाशय में जाकर स्नान कर, नूतन वस्त्र धारण कर अपने मस्तक पर तिलक लगावें। ततो यजमानः-

'ॐ हर्ठ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।'

इति मन्त्रेण सूर्योपस्थानं कृत्वा तीर्थदेवतां सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

'ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्। देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्।।1।। ईमान्तासः सिलिकमध्यमासः सर्ठ०शूरणासो दिव्यासो अत्याः। हर्ठ०सा इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः।।2।। तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं इव ध्रजीमान्। तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरनित।।3।।'

तदुपरान्त यजमान आचार्य व ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा प्रदान करें फिर प्रधानकलश व पूजा सामग्री को लेकर भगवान् का कीर्तन व भजन करें। आचार्य एवं ऋत्विकों के साथ सपत्नीक यजमान यज्ञस्थल पर आकर हाथ व पैर धोकर यज्ञमण्डप की प्रदक्षिणा करके यज्ञमण्डप के पूर्वद्वार से अन्दर प्रवेश करें। उपरान्त प्रधानकलश को प्रधान वेदी पर यजमान स्थापित करें। इसके उपरान्त आचार्य यज्ञ के अवशिष्ट कर्मों को पुनः प्रारम्भ करवायें।

गोदानसंकल्पं

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः (अमुक**शर्माऽहम्** अमुक**वर्माऽहम्**, अमुक**गुप्तोऽहम्**) **कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यम**मुकगोत्रायामुक**शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

इसके पश्चात् ब्रह्मा आदि ऋत्विजों को क्रमशः वृष-अश्व, रथ और पालकी देवें तथा इसके अनन्तर आचार्य एवं ऋत्विजों को स्वर्ण प्रदान करें।

दक्षिणासंकल्पः

देशकालौ संकीर्त्य, **अद्य कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो सहर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्यो मन्त्रजापकेभ्यो हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

मण्डपप्रधानपीठादिदानसंकल्पः

आचार्य को मण्डप एवं प्रधान पीठ के दान हेतु यजमान निम्न संकल्प करें-

देशकालौ संकीर्त्य, **कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

यजमान इस प्रकार से संकल्प करके प्रधानपीठादि आचार्य को प्रदान कर दें।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः

यजमान हाथ में जल, अक्षत लेकर ब्राह्मण भोजन के लिये निम्न संकल्प करें-

देशकालौ संकीर्त्य, **कृतस्य चिन्तामणि (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलाप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। (भोजयिष्यामि)।**

भूयसीदक्षिणासंकल्पः

यजमान अपने दायें हाथ में जल, अक्षत लेकर भूयसीदक्षिणा का संकल्प निम्न प्रकार से करें-

देशकालौ संकीर्त्यं, **कृतेऽस्मिन् चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमृत्सृजे।**

छायापात्रदानम्

यजमान एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घृत लेकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को प्रदान करें। पश्चात् निम्न वैदिक मंत्र का उच्चारण आचार्य व ब्राह्मण करें-

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः।।

छाया पात्र में मुख देखने के पश्चात् यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दें-

संकल्प-**अद्येत्याद्युच्चार्य ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडाशान्तिशरीरोत्थार्तिनाशाय प्रसादवाञ्छाऽऽयुरारोग्या-दिपूरितकांस्यपात्रं ससुवर्णं सदक्षिणाकं श्रीविष्णुदैवतममुकगोत्राय** अमुक**शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।**

श्रेयोदानकृत्यम्

आचार्य और यजमान दोनों श्रेयोदान निम्न क्रम से करें। प्रथम आचार्य करें-

कृतस्य चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च श्रेयोदानं करिष्ये। इति संङ्कल्प्य '**शिवा आपः सन्तु**' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। '**सौमनस्यमस्तु**' इति पुष्पं दद्यात् '**अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' इति अक्षतान् दद्यात्। तत आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय '**भवन्नियोगेन मया अस्मिन् चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्रह्माद्यृत्विग्गणयुक्तगाणपत्यसदस्योपद्रष्टृजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं पूजाजपहवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान् भव।**'

यह कहकर यजमान को फल आदि दे और यजमान '**भवामि**' इस वाक्य का उच्चारण कर उसे ग्रहण करें।

उत्तरपूजनम्

ततो यजमानः प्रधानपीठादीनां विशेषतः श्रीभगवत्याः भुवनेश्वर्याः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।
अर्थात् यजमान आचमन और प्राणायाम करके '**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स**
बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।। इस श्लोक का उच्चारण करके अपने
ऊपर जल छिड़कें। इसके उपरान्त कूष्माण्डबलिदान के लिए निम्न संकल्प करें–

कूष्माण्डबलिदानम्

देशकालौ संकीर्त्य, 'अमुकगोत्रः अमुक**शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकं**
सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं च श्रीभुवनेश्वरीदेवीप्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये।'

संकल्प के पश्चात् कूष्माण्डबलि की गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजा करें। इसके उपरान्त ही आचार्य माता भुवनेश्वरी को कूष्माण्डबलि
यजमान से प्रदान करावें।

अभिषेककृत्यम्

हवनस्थल पर प्रधानवेदी के उत्तर की ओर यजमान एवं उसकी धमपत्नी के अभिषेक के लिये भद्रासन बिछावें। उस आसन पर यजमान पूर्व
की ओर मुख करके बैठे और उसकी धमर्पत्नी उसके वामभाग में बैठे। उस समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के
जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा–थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से निम्न वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुये अभिषेक करें–

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।1।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः
साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।2।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे

ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।।3।। शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतर्ठ० सम्राट चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।4।। जिह्वा में भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्र में सहः।।5।। बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।6।। पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमर्ठ०सौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः।।7।। नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भयां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।8।। प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतितिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रतितिष्ठाम्यात्मन्प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे।।9।। त्रयो देवा एकादश त्रयस्त्रिर्ठ०शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।10। प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भियजूर्ठ०षि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान् समर्धयन्तु भूः स्वाहा।।11।। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।।12।। त्वं यविष्ठ दाशुषो नृँः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना।।13।। आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।14।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भ्राजयतेह नः। उशातीरिव मातरः।।15।। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।16।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि।।17।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।18। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।19।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य संगथे।।20।। पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतमः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।21।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।।22।।

देवविसर्जनम्

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न तीन मन्त्रों व पाँच श्लोकों का उच्चारण करके देवविसर्जन करवायें-

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। आवाहितदेवताः स्वस्थाने गच्छत।

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन!।।1।।,

गच्छ देवि! निजस्थानं मह्यं दत्वा वरान् बहून्। गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं भुवनेश्वरि।।2।।

भुवनेश्वरि! जगन्मातः! स्वस्थानं गच्छ पूजिताः। संवत्सरव्यतीते तु पुनरागमनाय वै।।3।।

इमां पूजां मया देवि! यथाशक्त्युपपादिताम्। रथार्थं तत्र समागच्छ व्रज स्वस्थानमुत्तमम्।।4।।

मया यत्कृतं यथाकालं यथाऽऽदेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति चिन्तामणिमन्त्र (भुवनेश्वरी) अनुष्ठानहवनाख्यं कर्म तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।

मया यत्कृतं भुवनेश्वरीअनुष्ठानहवनाख्यं कर्म तत् कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं
सकुशजलं भूमौ क्षिपेत्, करौ सम्पुटीकृत्य। '**परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।**' ततः '**अस्तु परिपूर्णम्**'
भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीसूर्याद्यावाहितदेवताप्रसादात् सर्वविधेः
इति ब्राह्मणाः वदेयुः।

क्षमा-प्रार्थनाः

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।1।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।2।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।3।।
अनायासेन मरणं विना दैन्येन जीवनम्। देहि मे कृपया देवि त्वयि भक्तिमचञ्चलाम्।।4।।
मत्समो नास्ति पापिष्ठः त्वत्समो नास्ति पापहा। इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छसि तथा कुरु।।5।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।6।।
प्रामादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।7।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।8।।

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथाऽऽसम्।।

भावार्थ – प्रसन्न होते हुए दाक्षायणों ने जो हिरण्याभरण शतानीक को बाँधा था, उसे ही मैं स्वयं भी पूरे सौ साल वाले आयुष्य के निमित्त बाँधता हूँ। जिस प्रकार कि मैं आयुष्मान् एवं वृद्ध शरीर वाला हो सकूँ।

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः।।

भावार्थ–हे सुप्रज्ञ ऋत्विजो! पुण्य के द्वारा प्राप्त होने वाले स्थान एवं इस प्रकाशमान द्युलोक के भी स्थल स्वर्ग को स्वीकार करते हुए हम अपने भाई, पुत्र, धन व पत्नियों के साथ उस अग्नि की ही परिचर्या करें।

यजमानायाशीर्वादमन्त्राः

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।1।।

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।2।।

ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा रचनाम्यहम्।। अथा त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।3।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।1।।

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।2।।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।3।।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।4।।

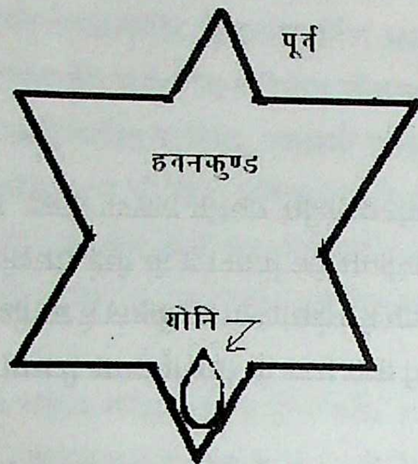
यजमानपत्न्या आशीर्वादमन्त्राः

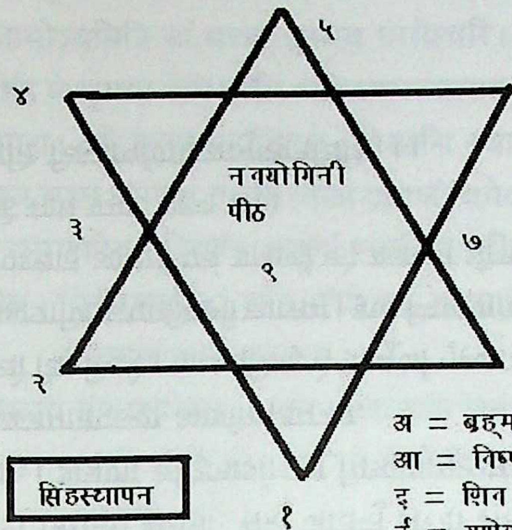
ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्।।1।।

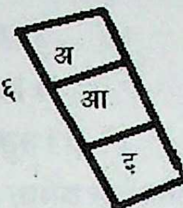
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।2।।

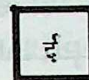
माता भुवनेश्वरी देवी के हवनकर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य एवं ब्राह्मणों को यजमान भोजन करावे और उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा प्रदान करे, इसके पश्चात् परिवार सहित इष्टमित्रों के साथ प्रसाद ग्रहण करें।

।। इति चिन्तामणिमन्त्रानुष्ठानविधिः।।









अ = ब्रह्मा स्थापन
आ = विष्णु स्थापन
इ = शिव स्थापन
ई = गणेश स्थापन

3.13 कालसर्पयोगशान्तिविधिः

फलम्- समस्त प्रकार के कालसर्पयोगदोषजन्य पीड़ाओं की निवृत्ति।

अनुष्ठानम्- 7 दिन में राहुग्रह के वैदिकमन्त्र का 92000 जप तथा सर्पसूक्त का 108 पाठ।

स्थानविचारः - "शान्तिरत्न" नामकग्रन्थ में कहा है कि कालसर्पयोगशान्ति को नदी के तट पर स्थित अथवा श्मशानस्थ अथवा किसी भी शिवमन्दिर में ही करना चाहिये। पण्डितजी अपने घर में, यजमान के घर में अथवा अन्यत्र (शिवमन्दिर से भिन्न देवीमन्दिर आदि) कहीं भी करते कराते हैं तो वह उचित नहीं है।

मुहूर्तविचारः - "शान्तिमयूख" नामकग्रन्थ में कहा है कि **'राहुदोषं बुधो हन्यात्'** - अतः बुधवार का दिन, वह भी कृष्णपक्षीय हो तो श्रेष्ठ है। अतः कृष्णपक्षीय प्रथम बुधवार को राहुग्रह के वैदिकमंत्र का बयान्बे हजार (92000) जप करने हेतु संकल्प दें। तत्पश्चात् कृष्णपक्षीय दूसरे बुधवार के दिन इन 16 नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो तो शान्ति पूजा-होम करायें। वे नक्षत्र इस प्रकार हैं - अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, मूल, ज्येष्ठा, पुष्य, आश्लेषा, मघा, दोनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा। त्याज्य नक्षत्र - द्विपुष्करयोगयुक्त, पंचकयुक्त और त्रिपादीय। सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण काल श्रेष्ठ है। बुधवासरीय अमावास्या आश्लेषा युक्त हो तो सर्वश्रेष्ठ है। यजमान के घात नक्षत्र और राशि पर जरूर विचार कर लें। रिक्ता तिथि वर्ज्य है।

उक्त मुहूर्त में यदि किसी कारणवश यजमान सपत्नीक उपस्थित न हो सके, तो यजमान के घात रहित उक्त समुचित नक्षत्र एवं तिथि से युक्त सोमवार अथवा शनिवार के दिन में भी किया जा सकता है।

सामग्री - रोलि 100ग्रा, मोलि 1गोला, सुपारी 1कि, लौंग 25ग्रा, इलायची छोटि 50ग्रा, पानपत्ते 50नग, फल 5दर्जन, फूल खुले 1कि, फूलमाला 5, गुलाल 100ग्रा, इत्र 1 छोटिशीशी, धूप 100ग्रा, घी 2कि, दहि 1कि, शक्कर 1कि, चावल 1कि, आटा 250ग्रा, हल्दि 100ग्रा,

पीली सरसों 100ग्रा, साबूत उड़द 500ग्रा, नारियल कच्चा 2, नारियल का गोला 1, पंचमेवा 1कि, रुई 100ग्रा, यज्ञोपवीत 24, पंचरत्न 2पैकेट, सर्वौषधी 100ग्रा, बडा दीपक 1, छोटे दीपक 24, चहुमुखी दीपक 1, तांबे के सर्प 9, चांदी का सर्प (सोने का टीका से आंखें बनायें) 18, कलशपात्र (तांबे का ढक्कन सहित) 5, कांसे का कटोरा (मध्यम साईज) 9, सोने का टुकडा 2, पूर्णपात्र 1, आज्य स्थाली (कांसे का)1, लालवस्त्र 1मी, सफेद वस्त्र 2मी, कालावस्त्र 1मी, पीलावस्त्र 1मी, साडी (ब्लौज पीस सहित) 1, धोती (कुर्ता पीस सहित) 1, आंवले का मुरब्बा 12नग, अदरक 250ग्रा, मुनक्का 100ग्रा, मिठाई 3कि, दोने 100नग, पत्तल 25, दूर्वा थोडा, कुशा थोडा, चौराहे का मिट्टि थोडा, काला तिल 3कि, जौ 1कि, गुग्गुल 100ग्रा, अगरबत्ति का पैकेट 6, गंगाजी की रेत (अथवा कोई भी पवित्र मिट्टि) 1बाल्टि, पंच पल्लव - आम, पीपल, वट, गूलर और जामून (प्रत्येक थोडा), हवन सामग्री पैकेट 2कि, हवन की समिधा - दूर्वा, कुशा, आक, ढाक, खैर, गूलर, अपामार्ग, पीपल और शमी (यथाशक्ति प्रत्येक), आम की लकडी 80कि, काले/नीले पुष्प 50ग्रा, काला रंग 50ग्रा, चन्दन चूर्ण 100ग्रा, कपूर 100ग्रा, बिल्वपत्र थोडा, गुड 1कि, कम्बल 1नग, पंचगव्य थोडा, साबूत मूंग 1कि, मसूर की दाल 1कि, अष्टगन्ध 1पैकेट और छूटी रेजगारी। नान्दी श्राद्ध हेतु पृथक् सामग्री तैयार कर लें। (यदि यजमान के घर में लगातार मृत्यु हो रहे हों तो त्रिपिण्डी श्राद्ध भी साथ में करें तथा यदि दोषवशात् पुत्र प्राप्त न हो रहा हो तो नाग-नारायण बलि भी साथ में करें। उनकी सामग्री अलग तैयार कर लें।)

विधिः- सपत्नीकयजमान आचार्यादयश्च स्नात्वा अहत (धौत=शुद्ध) वाससा परिधाय शुद्धासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविश्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य आचमनं, प्राणायामः, शरीरसाम्ग्रयोः शुद्धिः, आसनशुद्धिः, भूशुद्धिः, दीप पूजनम्।, घण्टापूजनपूर्वकघण्टानादः, शंखपूजनं, शान्तिसूक्तपाठः । ततः *संकल्पः* - **ॐ विष्णुः ....**(अन्ते अर्चकस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं तृतीयान्तेन नामकथनपूर्वकं यजमानस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं प्रथमान्तेन नाम उक्त्वा) **मम जन्मकुण्डल्यां राहुकेतुसंज्ञकक्रूरग्रहयोः स्थितिवशादुत्पन्न ..... नामककालसर्पयोगदोषेण कुले, शरीरे, व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनार्थं, मम आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकतापत्रयनिवारणार्थं**

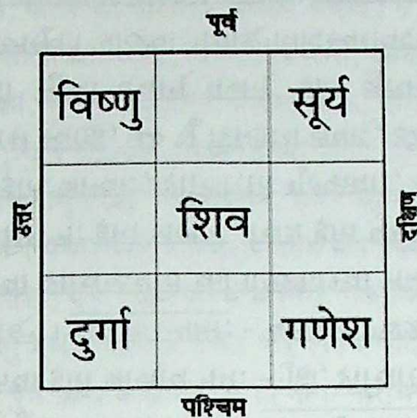
भौम्यान्तरिक्षदिव्यमहोत्पातागामी-संचित-सूचितदुष्टानिष्टदोषपरिहारार्थं सर्वरोगनिवारणार्थं, विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैः अन्यैर्वा कृतक्रियमाणकारयिष्यमाणदुष्टयंत्रमंत्रतंत्रविषशल्यौषधप्रतिमास्थापनादिसर्वाभिचारकर्म-घातकर्म फणिहवनश्येनयजनदुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादिक्षुद्रकर्मजन्यदोषपरिहारार्थं, अलक्ष्मीपरिहारार्थं, पुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वकसौख्यार्थं (अपुत्रश्चेत्पुत्रप्राप्त्यर्थ), मनोकामनापूर्त्यर्थं सग्रहमखां कालसर्पयोगशान्त्यर्थं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नवग्रहपूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यवरणादिकार्ये आदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

विशेषसंकल्पः -ॐ कया नश्चित्र इति मंत्रस्य वामदेवऋषिः, गायत्रीछन्दः, राहुदेवता, कयान इति बीजं, शचिरिति शक्तिः, सर्पकालादिसहितसाङ्गराहुदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने च विनियोगः। अथ ऋष्यादिन्यासः - वामदेव ऋषये नमः -शिरसि, गायत्री च्छन्दसे नमः -मुखे, राहुदेवतायै नमः -हृदये, कया इति बीजाय नमः -गुह्ये, शचिरिति शक्तये नमः -पादयोः, सर्पकालादिसहित साङ्गराहुदेवताप्रीत्यर्थे विनियोगाय नमः -सर्वाङ्गे। अथ करन्यासः - कया नश्चित्र इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः, आभुवदूतीति तर्जनीभ्यां नमः, सदा वृधः सखेति मध्यमाभ्यां नमः, कया शचिष्टयेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः, वृता इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। अथ पदन्यासः - कया इति शिरसि, नः इति ललाटे, चित्र इति मुखे, आभुवदिति हृदये, ऊतीति नाभौ, सदा इति जठरे, वृध इति कट्यां, सखा इत्यूर्वोः, कया इति जान्वोः, शचिरिति गुल्फयोः, तया इति पार्श्वयोः, वृता इति पादयोः। अथ बीजन्यासः - ॐ भ्रां हृदयाय नमः, ॐ भ्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ भ्रूं शिखायै वषट्, ॐ भ्रैं कवचाय हुम्, ॐ भ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भ्रः अस्त्राय फट्। इति पंचन्यासैः 'देवो भूत्वा देवान् यजेत्' इति श्रुत्यनुसारेण स्वस्मिन् राहुदेवताभावं कल्पयित्वा गणेशाम्बिकापूजनपूर्वककलशस्थापनं कृत्वा रक्षोघ्नसूक्तं पठित्वा पंचाङ्गवेदिस्थसर्वदेवादीनां पूजयित्वा अर्थात् ॐ, श्रीं, स्वस्तिकं, सप्तघृतमातृकां, षोडशमातृकां, नवग्रहं, वास्तुं च पूजयित्वा नान्दीश्राद्धं कुर्यात्। तत्पश्चात् शिवपंचायतनं पूजयेत् (न शिवपरिवारं)। यदि शिवपंचायतनोपेतमंदिरं नास्ति चेत् तर्हि पंचांगवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा एकस्मिन् पीठे शिवलिंगादिमूर्तीन् स्थापयेत् पूगीफले वा आवाहयेत्।

1. पंचांगवेदी



2. शिवपंचायतनम्



3. राहुकालसर्पायतनम्

काल स्थापना वेदी	नवग्रह सहित राहु स्थापना वेदी	नवनाग स्थापना वेदी

1. गणेशम्बिका स्थापनम्, 2. षोडशमतृका स्थापनम्, 3. सप्तघृतमातृका सहित स्थलमातृका स्थापनम्।

अथ पंचदेवपूजां कृत्वा राहु-काल-सर्पदेवतानां पंचांगवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा पृथक्-पृथक् स्थापयेत्। (राहु, काल और सर्प के पूजन में नीले/काले रंग के फूल, नीले/काले अक्षत, लाक्षाधूप, घृतदीप, माषनैवेद्य, अगरु, चन्दन, कुंकुम और काले वस्त्र का ही प्रयोग करें)। तत्र पूगीफले प्रतिमायां वा राहुं स्थापयेत्। तत्र प्रथमं राहुध्यानं – **'नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली। चतुर्भुजः**

शक्तियुतश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोऽस्तु मह्यं।। बर्बरदेशोत्पन्नाय कायवर्जिताय सिंहासनाय वरप्रदाय पौर्णमासीदिने भरणीनक्षत्रसंजाताय शूद्रवर्णाय हुताग्निरूपिणे करालवदनाय श्रेष्ठकापालरूपाय अंजनप्रभाय पैठिनसगोत्राय रोदनवदनाय कालसर्पाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे नमः। अथ राहुस्थापनं- ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृता।। ॐ भूर्भुवःस्वः भो राहो इह आगच्छ, सुप्रतिष्ठितो भव, सुप्रसन्नो भव, सम्मुखो भव, वरदो भव।। अथ पूगीफले प्रतिमायां वा राहोरुत्तरदिग्भागे कालं स्थापयेत्।

अथ काल ध्यानं - 'एह्येहि दंडायुध धर्मराज कालांजनाभास विशालनेत्र। विशालवक्षस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।1। चित्रगुप्तादिसंयुक्तदण्डमुद्गरधारक। आगच्छ भगवन् काल पूजार्थं सन्निधो भव।2। कालाय कालरूपाय कालांजनसमप्रभो। दक्षिणस्यां कृतावास कालदेव नमोऽस्तुते।3। अथ काल स्थापनं - ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरगमत् समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भूर्भुवःस्वः भो काल इह आगच्छ, सुप्रतिष्ठितो भव, सुप्रसन्नो भव, सम्मुखो भव, वरदो भव।।

अथ सर्वेषां सर्पाणां राहोर्दक्षिणदिग्भागे सामान्येनावाहनं - तत्र सर्वसर्पध्यानं - 'एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म। नानाफणामंडलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।1। आशी विषसमोपेत नागकन्या विराजित। आगच्छ नागराजेन्द्रात्र देशे सन्निधो भव।2।' अथ सर्वसर्प आवाहनं- 'नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः भो सर्पा इह आगच्छन्तु, सुप्रतिष्ठिता भवन्तु, सुप्रसन्ना भवन्तु, सम्मुखा भवन्तु, वरदा भवन्तु।।

आहूतानां राहुकालसर्पाणां पुष्पार्चनं कुर्यात्। तत्रादौ राहोः पुष्पार्चनं- ॐ विधुन्तुदाय नमः, ॐ सदाकालाय नमः, ॐ कालाय नमः, ॐ करालवदनाय नमः, ॐ अंतताय नमः, ॐ राहवे नमः। अथ कालस्य पुष्पार्चनं- ॐ यमाय नमः, ॐ धर्मराजाय नमः, ॐ मृत्यवे नमः, ॐ अन्तकाय नमः, ॐ वैवस्वताय नमः, ॐ कालाय नमः, ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः, ॐ औदुम्बराय नमः, ॐ

दघ्नाय नमः, ॐ नीलाय नमः, ॐ परमेष्ठिने नमः, ॐ वृकोदराय नमः, ॐ चित्राय नमः, ॐ चित्रगुप्ताय नमः। अथ सर्वसर्पाणां पुष्पार्चनं- **ॐ अनन्ताय नमः, ॐ शेषनागाय नमः, ॐ वासुकये नमः, ॐ शंखाय नमः, ॐ पद्माय नमः, ॐ कम्बलाय नमः, ॐ कर्कोटकाय नमः, ॐ अश्वतराय नमः, ॐ धृतराष्ट्राय नमः, ॐ शंखपालाय नमः, ॐ तक्षकाय नमः, ॐ कालियाय नमः, ॐ कपिलाय नमः, ॐ कुलिकाय नमः, ॐ महापद्माय नमः, ॐ शंखचूडाय नमः, ॐ घातकाय नमः, ॐ विषधराय नमः।** ततः तेषां सर्पाणां विशेषरूपेण शिवपंचायतनवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा नवनागवेद्यां पृथक्-पृथक् स्थापयेत्।

अथ नवनागवेदी/पीठपूजाः- **ॐ आधारशक्त्यै नमः, ॐ मूलप्रकृत्यै नमः, ॐ आदिकूर्माय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः** (पुष्पार्चनं कुर्यात्)। पीठपादमूलपूजा- **ॐ धर्माय नमः** -पूर्वे, **ॐ अधर्माय नमः** -आग्नेये, **ॐ ज्ञानाय नमः** -दक्षिणे, **ॐ अज्ञानाय नमः** -नैऋत्ये, **ॐ वैराग्याय नमः** -पश्चिमे, **ॐ अवैराग्याय नमः** -वायव्ये, **ॐ ऐश्वर्याय नमः** -उत्तरे, **ॐ अनैश्वर्याय नमः** -ऐशान्ये-(पूर्ववत् पुष्पार्चनं कुर्यात्, एवमग्रेऽपि)। अथ प्रथमावरणपूजाः- (प्रत्येक आवरण में उक्त क्रम से पूर्वादि दिशा में पुष्पार्पण द्वारा तत्तद्देवतादि का आवाहन करें) **ॐ सनत्कुमाराय नमः, ॐ स्कन्धाय नमः, ॐ बाणाय नमः, ॐ हेमचूडाय नमः, ॐ भद्रसेनाय नमः, ॐ भवपुत्राय नमः, ॐ देवसेनाय नमः, ॐ देवयानाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं प्रथमावरणार्चनं, प्रथमावरणदेवताः प्रीयतां नमः।** अथ द्वितीयावरणपूजाः- **ॐ आदिकालाय नमः, ॐ महाकालाय नमः, ॐ गौरकालाय नमः, ॐ शक्तिकालाय नमः, ॐ कालाय नमः, ॐ कालदुर्दराय नमः, ॐ कालभैमाय नमः, ॐ कालाधिष्ठात्रे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं द्वितीयावरणार्चनं, द्वितीयावरणदेवताः प्रीयतां नमः।** अथ तृतीयावरणपूजाः- **ॐ इन्द्राय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ निर्ऋतये नमः, ॐ वरुणाय नमः, ॐ वायवे नमः, ॐ कुबेराय नमः, ॐ ईशानाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं तृतीयावरणार्चनं, तृतीयावरणदेवताः प्रीयतां नमः।** अथ चतुर्थावरणपूजाः- **ॐ वज्रायुधाय नमः, ॐ शक्त्यायुधाय नमः, ॐ दण्डायुधाय नमः, ॐ खड्गायुधाय नमः, ॐ पाशायुधाय नमः, ॐ अंकुशायुधाय नमः, ॐ पद्मायुधाय नमः, ॐ**

त्रिशूलायुधाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं चतुर्थावरणार्चनं, चतुर्थावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ पंचमावरणपूजाः- ॐ धरणीधराय नमः, ॐ फणधराय नमः, ॐ जलधराय नमः, ॐ वक्रगतिने नमः, ॐ रौद्राय नमः, ॐ श्रीधरधारिणे नमः, ॐ मुख्यफलहारिणे नमः, ॐ कालनेत्राय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं पंचमावरणार्चनं, पंचमावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ षष्ठावरणपूजाः- ॐ वीरभद्राय नमः, ॐ सहजाय नमः, ॐ सावित्र्याय नमः, ॐ वारुणकुमाराय नमः, ॐ क्षेत्राय नमः, ॐ कपिलाय नमः, ॐ भैरवाय नमः, ॐ मुद्रिकाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं षष्ठावरणार्चनं, षष्ठावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ सप्तमावरणपूजाः- ॐ सुविघ्ननिवारणाय नमः, ॐ रूपकालाय नमः, ॐ सूर्यकालाय नमः, ॐ क्षयकालाय नमः, ॐ अन्तकाय नमः, ॐ नीलकण्ठाय नमः, ॐ काश्यपाय नमः, ॐ तार्क्ष्यशत्रवे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं सप्तमावरणार्चनं, सप्तमावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ अष्टमावरणपूजाः- ॐ दिव्यायै नमः, ॐ सुष्मायै नमः, ॐ रुजायै नमः, ॐ रुद्राण्यै नमः, ॐ खेचरायै नमः, ॐ खेमलायै नमः, ॐ भद्रायै नमः, ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं अष्टमावरणार्चनं, अष्टमावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ नवमावरणपूजाः- ॐ गुरवे नमः, ॐ परमगुरवे नमः, ॐ परात्परगुरवे नमः, ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः, ॐ हारकेश्वराय नमः, ॐ दयाब्धये नमः, ॐ अब्धिनिवासिने नमः, ॐ क्षीरसागरक्षोभिणे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं नवमावरणार्चनं, नवमावरणदेवताः प्रीयतां नमः। अथ अष्टद्वारपालपूजाः- ॐ वीरसेनाय नमः, ॐ महासेनाय नमः, ॐ सुषेणाय नमः, ॐ भद्रसेनाय नमः, ॐ चारुसेनाय नमः, ॐ बलसेनाय नमः, ॐ पूर्णसेनाय नमः, ॐ चित्रसेनाय नमः। अथ सर्पाणां स्थापनं- तत्र मध्ये कलशस्थापनं कृत्वा कलशोपरि कृष्णाक्षतैः संपूरितताम्रतस्तरीं संस्थाप्य तन्मध्ये ताम्रसर्पमेकं स्थाप्य तदुपरि कांस्यपात्रे रजतसर्पद्वयं स्थापनीयं, तयोः रजतसर्पद्वयोः सपत्नीकप्रधाननागदेवतावाहनं कुर्यात् - '**अनन्तं विप्रवर्गं च तथा कुंकुमवर्णकम्। फणसहस्रसंयुक्तं तं देवं प्रणमाम्यहम्।। ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**' (पूर्वादिष्वष्टसु दिक्षु कलशं विना वेद्यामेव कृष्णाक्षतेषूपरि ताम्रसर्पान्स्थापयित्वा, तदुपरि कांस्यपात्रे रजतसर्पद्वयं स्थापनीयं) पूर्वे- '**क्षत्रवर्गं पीतवर्णं फणैः**

सप्तशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च वासुकिं प्रणमाम्यहम्।। ॐ वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।' आग्नेय्यां- 'शूद्रवर्गं श्वेतवर्णं शतत्रयफणायुतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च कर्कोटं च नमाम्यहम्।। ॐ कर्कोटमा० स्था० पू०।' दक्षिणे- 'वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च तक्षकं प्रणमाम्यहम्।। ॐ तक्षकाय नमः, तक्षकमा० स्था० पू०।' नैर्ऋत्यां- 'शंखपालं क्षत्रियं च पीतं सप्तशतैः फणैः। युक्तमुत्तुंगकायं च शिरसा प्रणमाम्यहम्।। ॐ शंखपालाय नमः, शंखपालमा० स्था० पू०।' पश्चिमे- 'वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च महापद्मं नमाम्यहम्।। ॐ महापद्माय नमः, महापद्ममा० स्था० पू०।' वायव्यां- 'वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च तन्नीलं प्रणमाम्यहम्।। ॐ नीलाय नमः, नीलमा० स्था० पू०।' उत्तरे- 'कम्बलं शूद्रवर्गं च शतत्रयफणैर्युतम्। आवाहयामि नागेशं प्रणमामि पुनः पुनः।। ॐ कम्बलाय नमः, कम्बलमा० स्था० पू०।' ऐशान्यां- 'विप्रवर्गं श्वेतवर्णं सहस्रफणसंयुतम्। आवाहयाम्यहं देवं शेषं वै विश्वरूपिणम्।। ॐ शेषाय नमः, शेषमा० स्था० पू०।' अथ मूलमंत्रेणावाहनादिसिद्ध्यर्थं मूलमंत्रस्य जपं कुर्यात् - 'ॐ अस्य सर्पमूलमंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, नागराजो देवता, सां बीजं, सीं कीलकं, सौः शक्तिः, सर्पदेवताप्रीत्यर्थे विनियोगः। अथ <u>करन्यासः</u>- ॐ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भ्रं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वें अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ मं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयाद्यंगन्यासं कुर्यात्। ततः 'ॐ वचभ्रुवे नमः' इति मंत्रस्य अष्टोत्तरशतं जपेत्। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तादिनवनागदेवताः संप्रतिष्ठिता भवन्तु, सुप्रसन्ना भवन्तु, सम्मुखा भवन्तु, वरदा भवन्तु नमः। अथ राहु-कालयोः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारपूजनं कृत्वा नवनागानां षोडशोपचारपूजनं कुर्यात्। तदित्थं - तत्रादौ

<u>*आवाहनं*</u>- भजेऽहं दोषशान्त्यर्थं पूजये कार्यसाधकं। आगच्छ नागराजाख्यं दोषं मम निवारय।। एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म। नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यमावाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनं- नमोऽस्तु कालरूपाय सर्परूप नमोऽस्तु ते। सर्वपापहरो देव आसनं प्रतिगृह्यताम्।। नवकुलाधिपं शेषं शुभ्रकच्छपवाहनं। नानारत्नसमायुक्तं आसनं प्रति गृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यं- नागायानन्तरूपाय शेषरूप नमोऽस्तु ते। सर्वपापहरो देव पाद्यं त्वं प्रतिगृह्यताम्।। अनन्तप्रियशेषं च जगदाधारविग्रह। पाद्यं गृहाण भक्त्या त्वं काद्रवेय नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं- नमोऽस्तु सर्पराजाय सर्परूप नमोऽस्तु ते। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं अक्षयमुपतिष्ठतु।। काश्यपेयं महाघोरं मुनिभिर्वन्दित प्रभो। अर्घ्यं गृहाण सर्वज्ञ भक्त्या मां फलदायक।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं- कर्कोटक महाभाग कालकूटविषप्रभो। कार्दमेय गृहाणेदं शुभमाचमनीयकं।। सहस्रफणरूपेण वसुधाधारक प्रभो। गृहाणाचमनं दिव्यं पावनं च सुशीतलं।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यमाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानं- अनन्त शेष सर्वेषां नाथस्त्वं परमो मतः। स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाण पापनाशन।। पंचामृतं गृहाणेदं पावनं स्वाभिषेचनं। बलभद्रावतारेश क्षेमं कुरु मम प्रभो।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं- शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतं। समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभं। तदिदं कल्पितं शेष स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं शुद्धोदकस्नानार्थे जलाभिषेकं समर्पयामि।

वस्त्रं- सहस्रशिरसे तुभ्यमादिशेषाय ते नमः। वस्त्रं गृहाण नागानामधिपाय नमोऽस्तु ते।। कौशेययुग्मं देवेश प्रीत्या तुभ्यं समर्पितं। पन्नगाधीश नागेन्द्र तार्क्ष्यशत्रो नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं वस्त्रोपवस्त्रार्थे वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं- ईशयज्ञोपवीताय तक्षकाय महात्मने। उपवीतं प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे।। सुवर्णनिर्मितं सूत्रं पीतं कण्ठोपहारकं। अनेकरत्नसंयुक्तं सर्पराज नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं शालीनतार्थे यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धं- महापद्म महानाग शंखपाल महीधर। गन्धांश्च कुंकुमोपेतान् गृहाण त्वं तु वासुकि।। कस्तूरीकर्पूरकेसराढ्यं गोरोचनं चागरुरक्तचन्दनं। श्रीचन्दनाढ्यं च दिव्यं गन्धं गृहाण वासुके।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं सुवासार्थे गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः- कपिलाय नमस्तुभ्यं कपिलाचलवासिने। अक्षतांस्तुभ्यं दास्यामि अक्षतां चास्तु मे सदा।। काश्मीरपंकजयुतान् शालेयानक्षतान् शुभान्। पातालाधिपते तुभ्यं प्रदत्तांस्त्वं गृहाण प्रभो।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं अक्षतार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पं पुष्पमालां च- कालियाय नमस्तेऽस्तु मणिनागाय ते नमः। पुष्पाणि च सुगन्धीनि पूजार्थं त्वं प्रतिगृह्यतां।। केतकीपाटलजातीचम्पकैर्वकुलादिभिः। मोगरैः कृतमालया पूजितो वरदो भव।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं अलंकारार्थे पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।

अथ *अंगपूजा* – ॐ विष्णुपादाश्रयाय सहस्रफणधारिणे नमः- पादौ पूजयामि, आदिशेषाय अनन्ताय नमः- गुल्फौ पू0, विषदन्ताय तक्षकाय नमः-जंघौ पू0, मन्दगतयेऽजगराय नमः-जानुनी पू0, वासुकये महीधराय नमः- ऊरू पू0, कृष्णाय कर्कोटकाय नमः- कटिं पू0, पित्रे शंखपालाय नमः- नाभिं पू0, श्वेताय पद्माय नमः- उदरं पू0, नारायणवाहनाय पद्मनाभाय नमः- हृदयं पू0, गुलिकाय कालियाय नमः- भुजौ पू0, कालकण्ठाय जम्बूकण्ठाय नमः- कण्ठं पू0, अनेकमुखाय द्विजिह्वाय नमः- मुखं पू0, मणिभूषणाय महाविषाय नमः- ललाटं पू0, रक्तनेत्राय महाभागाय नमः- नेत्रे पू0, अनन्तशिरसे शेषाय नमः- शिरसं पू0, अनन्ताय सर्पराजाय नमः- सर्वांगानि पूजयामि।

अथावशिष्टोपचाराः- धूपं- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं धूपमाघ्रापयामि।

दीपं- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण नागेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनाग देवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं- क्षीराज्यगुडसंयुक्तं रंभादिफलमिश्रितं। नैवेद्यं गृह्यतां दिव्यं अनन्ताय नमो नमः।। नैवेद्यं गृह्यतां देव क्षीराज्यदधिमिश्रितं। नानापक्वान्नसंयुक्तं पायसं शर्करायुतं।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं नैवेद्यं निवेदयामि।

फलं- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं फलं निवेदयामि।

ताम्बूलं- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतं। एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

द्रव्यदक्षिणा- हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदां अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। न्यूनातिरिक्तपूजायां संपूर्ण फलहेतवे। दक्षिणां कांचनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं कृताया पूजाया साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनं- कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं। आरार्तिक्यमहं कुर्वे गृहाण वरदो भव।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पांजलिः- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त ...., नाना सुगन्धि पुष्पाणि ....।। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।।

अथ राहु-काल-सर्पाणां विशेषप्रार्थनाकवचस्तोत्रादिपाठं कुर्यात्।।

तत्रादौ राहुप्रार्थना - **कायहीनो महाशक्तिर्ग्रसते शशिभास्करौ। सिंहिकेयो महावीर्यो राहुः प्रीतो भवेन्मम।1। महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।2। किरीटिनं करालवदनं खड्गचर्मशूलधरं सिंहासनस्थं पूर्वदेशजं आंगीरसमार्षं अनुष्टुप्छन्दसं कृष्णाम्बरधरं कृष्णाभरणभूषितं कृष्णगन्धानुलेपनं कृष्णध्वजछत्रपताकिनं मुकुटकेयूरमणिशोभितं आरुह्य रथं दिव्यं मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वाणं ग्रहमण्डले प्रविष्टमधिदेवताकालसहितं प्रत्यधिदेवतासर्पसहितं दक्षिणाभिमुखं राहुं सदा नमाम्यहम्।**

अथ राहुकवचं - **अस्य श्रीराहुकवचस्तोत्रमहामंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, राहुर्देवता, राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः। ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः** - इति करन्यासः। एवं हृदयादिन्यासः कर्तव्यः। **ॐ भूर्भुवस्स्वरोमिति दिग्बन्धः। प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनं। सैंहिकेयं करालास्यं भक्तानां अभयप्रदं।1। राहुं चतुर्भुजं चर्मखड्गशूलवरांकितम्। कृष्णमाल्यांबरधरं कृष्णगन्धानुलेपिनम्।2। गोमेधकविभूषं च विचित्रमुकुटोज्वलम्। कृष्णसिंहस्थं यान्तं मेरुं चैव प्रदक्षिणम्।3। नीलाम्बरो शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः। चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान्।4। नासिकां मे करालास्यः शूलपाणिर्मुखं मम। जिह्वां मे सिंहिकासूनुः कंठं मे कष्टनाशनः।5। भुजंगेशो भुजौ पातु नीलमाल्यः करौ मम। पातु वक्षः तपोमूर्तिः पातु कुक्षिं विधुंतुदः ।6। कटिं मे विकटः पायादूरू मे सुरपूजितः। स्वर्भानुर्जानुनी पातु जंघे मे पातु जाड्यहा।7। गुल्फौ ग्रहाधिपः पातु नील चन्दनभूषितः। पादौ नीलांबरः पातु सर्वांगं सिंहिकासुतः।8। प्रातः भुजंगमः पातु संगवे सिंहिकासुतः। मध्याह्ने पातु मां राहुः सायं सप्ताश्वमर्दनः।9। प्रदोषे पन्नगः पायादर्धरात्रेऽर्धविग्रहः। सुरारिः सर्वदा पायाद्दुर्गान्मां दानवोऽवतु।10। राहोरिदं**

कवचमीप्सितदायकं यः, भक्त्या पठेदनुदिनं नियतान्तरात्मा। प्राप्नोति कीर्तिममलं समृद्धिमिष्टाम्, आरोग्यमायुरतुलं विरुजं शरीरं।11। इति श्रीपद्मपुराणस्थराहुकवचं संपूर्ण।

अथ राहुस्तोत्रं – **राहुर्दानवमंत्री च सिंहिकाचित्तनंदनः। अर्धकायः सदा क्रोधी चंद्रातीत्यमर्दनः।1। रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः। ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः।2। कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकंठहृदयाश्रयः। विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः।3। ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः। पंचविंशति नामानि स्मृत्या राहुं सदा नरः।4। यः पठेत् महती पीडा तस्य नश्यति निश्चितं। आरोग्यं पुत्रमतुलं श्रियं धान्यं पशून्तथा ।5। ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्। सततं पठितं यस्तु जीवेत् वर्षशतं नरः।6।** इति स्कन्दपुराणस्थराहुस्तोत्रं संपूर्ण। अथ पुष्पार्चनं – **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः ॐ भूर्भुवःस्वः । ॐ कया नश्चित्र कया भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृता। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्रां ॐ नमः।1। ॐ ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनं। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहं।2। ॐ राहवे नमः।3।** इति मंत्रत्रयेण पुष्पाणि समर्पयित्वा विशेषार्घ्यं दद्यात् – **राहुग्रहः सदाक्रूरः सोमसूर्यस्य पीडकः। शान्त्यर्थं तु मया दत्तोऽर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्।।**

कालप्रार्थना – **यमो निहन्ता पिता धर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः। प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतांत एतद् दशभिर्जपन्तः।1। धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिप ते नमः। रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय।2।** अथ पुष्पार्चनं– **ॐ श्री यमाय नमः, ॐ श्री निहन्त्रे नमः, ॐ श्री पित्रे नमः, ॐ श्री धर्मराजाय नमः, ॐ श्री वैवस्वताय नमः, ॐ श्री दंडधराय नमः, ॐ श्री कालाय नमः, ॐ श्री प्रेताधिपाय नमः, ॐ श्री दत्तकृपानुसारिणे नमः, ॐ श्रीकृतान्ताय नमः।**

अथ सर्पप्रार्थना – (इसमें जहाँ– जहाँ 'कालिय' शब्द है वहाँ–वहाँ यजमान के जन्मकुण्डलि में विद्यमान कालसर्प योग के नाम को जोड़कर प्रार्थना करें।) '*कालियो* **नाम नागोऽसौ कृष्णस्य पादपांशुना। रक्षा ताक्ष्र्येण संप्राप्तः सोऽभयं ददातु नः।1।** *कालियो* **नाम नागोऽसौ विषरूपो भयंकरः। नारायणेन संपुष्टो सदा शं विदधातु नः।2।** *कालियो* **नाम नागोऽयं ज्ञातो सर्वैर्महाबली।**

अभयं प्राप्तं कृष्णेन निर्भयो विचरत्यहि।3। सो *कालिय* स्वदोषाच्च निर्भयं कुरु मां सदा। अनेन पूजनेनाथ प्रीतो सुखकरो भवेत् ।4। बलिं प्राप्य स्वकीयां हि चाभिलाषं प्रयच्छतु। कालसर्पस्य दोषोऽयं शान्तो भवतु सर्वथा।5। तृप्तो नागः प्रयच्छ मे धन धान्यादिसम्पदः। जले विहर त्वं नाग मां हि शान्तिप्रदो भव।6। अथ सर्पसूक्तम्- ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।1। विष्णुलोके ये सर्पाः वासुकीप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु0 ।2। रुद्रलोके च ये सर्पाः तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोऽस्तु0 ।3। खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोऽस्तु0 ।4। सर्पसत्रे च ये सर्पाः आस्तिकेन रक्षिताः। नमोऽस्तु0 ।5। प्रलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु0 ।6। धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोऽस्तु0 ।7। ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोऽस्तु0 ।8। ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये ये सर्पाः प्रसरन्ति हि। नमोऽस्तु0 ।9। पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः । नमोऽस्तु0 ।10। रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोऽस्तु0 ।11।

अथ नवनागनामस्तोत्रम् – अनंतं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलं। शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।1। एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनां। सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।2। तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।3। अथ पुष्पार्चनं – ॐ श्री अनन्ताय नमः, ॐ श्री वासुकये नमः, ॐ श्री शेषाय नमः, ॐ श्री पद्मनाभाय नमः, ॐ श्री कम्बलाय नमः, ॐ श्री शंखपालाय नमः, ॐ श्री धार्तराष्ट्राय नमः, ॐ श्री तक्षकाय नमः, ॐ श्रीकालियाय नमः। ॐ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि। तन्नः सर्पः प्रचोदयात्।। पुष्पाणि समर्प्य कृतपूजां समर्पयेत् – एतैत सर्पाः शिवकण्ठभूषा लोकोपकाराय भुवं वहन्तः। भूतैः समेता मणिभूषितांगाः गृह्णीत पूजां परमां नमो वः।1। कल्याणरूपं फणिराजमग्र्यं नानाफणामण्डलराजमानम्। भक्त्यैक गम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलाभिवृद्ध्यै।2। अनया पूजया अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित राहुः प्रीयताम् न मम।।

ततः होमः कर्तव्यः। (पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं कृत्वा बलवर्धननामाग्निं संपूज्य कुशकंडिका आघाराज्यभागौ च हुत्वा अग्न्यर्चनपूर्वकवराहुतिं दत्त्वा आवाहितदेवतानां चतुर्थ्यन्तनाम्ना स्वाहान्तेन जुहुयात्। (तत्र षोडशमातृकानां 17आहुतयः, सप्तघृतमातृकानां 7आ, पंचॐकाराः 5आ, ग्रहहोम 9आ, ग्रहाणामधिदेवतानां 9आ, ग्रहाणां प्रत्यधिदेवतानां 9आ, क्षेत्रपालानां 51आ, नक्षत्राणां 28आ,

योगानां 27आ, पंचलोकपालानां 7आ, दशदिक्पालानां 10आ, इत्यादयः) । ततः प्रधानहोमः - राहोः वैदिकमंत्रेणाष्टोत्तरशतमाहुतिं हुत्वाधि देवतायाः प्रत्यधिदेवतायाश्चाहुतयो दत्त्वा कालस्य दशनामप्रकृतिकैः चतुर्थ्यन्तैः स्वाहाशिरस्कैः दश आहुतिं दत्त्वा '**ॐ ह्रीं तत्कारिणी विषहारिणी विषरूपिणी विषं हन इन्द्रस्य वज्रेण नमः स्वाहा**' इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतं जुहुयात्। ततः सर्पनामभिः, सर्पगायत्र्या (यथाशक्ति), सर्पसूक्तेन च होमं कृत्वा ततो व्याहृतिहोमः, प्रायश्चित्तहोमः, स्विष्टकृच्च कुर्यात्। ततो घृतपात्रतिलपात्रयोर्दानम्, नागेभ्यः क्षीरबलिदानम्, आरार्तिक्यं, मंत्रपुष्पांजलिं च कृत्वा *प्रदक्षिणां* कुर्यात्-ण **ये तीर्थानि...। यानि कानि....। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं प्रदक्षिणां समर्पयामि।** *नमस्कारः*- **नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं नमस्कारान् समर्पयामि।** *क्षमायाचना*- **अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर।1। ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि कृतसर्पवधो मया। पूर्वजन्मनि वाऽस्मिन् च तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि।2। मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनमहीश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।3। करचरणकृतं वाक्कायजं.....।4। आवाहनं न जानामि.....।5। यदक्षरं पदं भ्रष्टं ....।6। ॐ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं क्षमायाचनापूर्वकं साष्टांगप्रणिपातं समर्पयामि।।** ततो देवताविसर्जनम्, अग्न्युद्वासश्चान्ते कृत्वा कर्मसंपूर्णतावाचनम् कुर्यात्। कलशजलेन प्रोक्षणं दक्षिणादानं चेत्याद्युत्तरतंत्रं (उत्तरांगभूतकर्म) कृत्वा शान्तिकर्मणा समापयेत्।। **कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुकृतस्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणेति समर्पये तत्।1। प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।2। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।3।**

<u>विशेषसूचना</u> :- 1. पृष्ठ सं. 230 में नवनागवेदी के चित्र के अनुसार एक पीठ पर आटा आदि से वेदी को बनायें।

2. इस कालसर्पयोग शान्ति कर्म में प्रयुक्त समस्त तांबे और चांदि के नागों को ''सर्पप्रार्थना'' खण्ड में जो 11 मंत्र ऊपर लिखें है उनका उच्चारण करते हुए बहते पानी में प्रवाहित करें। नहाकर शुभ्रवस्त्र पहनें।

3.14 वेदव्यासमन्त्रप्रयोगविधिः –

फलम्– कवित्वसिद्धिः, ग्रन्थलेखनसिद्धिः, ज्ञानप्राप्तिश्च। अनुष्ठानम्–48 दिन में 125000। पुरश्चरण 14 लाख + दशांशादि।

"**ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ**" – मूलमन्त्रः।

अथास्य वेदव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, सत्यवतीसुतो देवता, व्यां बीजं, नमः शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :–

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः – शिरसि, **ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः** – मुखे, **ॐ सत्यवतीसुतदेवतायै नमः** – हृदि, **ॐ व्यां बीजाय नमः** – गुह्ये, **ॐ नमः शक्तये नमः** – पादयोः, **ॐ ॐ कीलकाय नमः** – नाभौ, **ॐ ममाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** – सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः :–

अथ बीजं	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ व्यां	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ व्यीं	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां नमः।**
ॐ व्यूं	**शिखायै वषट्**	**मध्यमाभ्यां नमः।**
ॐ व्यैं	**कवचाय हुम्**	**अनामिकाभ्यां नमः।**
ॐ व्यौं	**नेत्रत्रयाय वौषट्**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
ॐ व्यः	**अस्त्राय फट्**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

<u>अथ ध्यानम्</u> :-

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं, वामे जानुतले दधानमपरं हस्तेषु विद्यानिधिं।
विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहांगद्युतिं, पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये।।

(इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः सर्वतोभद्रमण्डले धर्मादिपीठदेवताः संस्थाप्य) -

"**ॐ धर्मादिपीठदेवताभ्यो नमः**" – (इत्यनेन मन्त्रेण पूजयेत्)।

(ततः यंत्रं पृ.सं. 238/मूर्तिं वा ताम्रपात्रोपरि निधाय घृतेनाभ्यंज्य दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात्)

'ॐ ह्रीं आं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः यन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः सन्तु। ॐ ह्रीं आं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः यन्त्रस्य जीव इह स्थितो भवतु। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणाः इहैवागत्यासीरन् यन्त्रे सुखं चिरं च तिष्ठन्तु स्वाहा।'

(इत्यनेन प्रकारेण प्रतिष्ठां कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेना आवाहनासनपाद्यार्घ्याचमनस्नानवस्त्राभूषणगन्धपुष्पान्तोपचारैः संपूज्य षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु चावरणपूजां कुर्यात्। ततः षडंगानि पूजयेत्)

ॐ व्यां हृदयाय नमः, ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा, ॐ व्यूं शिखायै वषट्, ॐ व्यैं कवचाय हुम्, ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ व्यः अस्त्राय फट्। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य –

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनं।।' (इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा) **'पूजितास्तर्पिताः सन्तु'** – इति प्रथमावरणं ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षिणावर्तेन प्राच्यादिचतुर्दिक्षु – **ॐ शल्याय नमः, शल्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।1।**

ॐ वैशम्पायनाय नमः, वैशम्पायनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।2।

ॐ जैमिनये नमः, जैमिनिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।3।

ॐ सुमन्ताय नमः, सुमन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।4। (ततः आग्नेयादिचतुष्कोणेषु)

ॐ श्रीशुकाय नमः, शुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।5।

ॐ उग्रश्रवसे नमः, उग्रश्रवःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।6।

ॐ समन्याय नमः, समन्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।7।

ॐ चिमनाय नमः, चिमनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।8।

पूजयित्वा पूर्ववत्पुष्पांजलिं दद्यात्, इति द्वितीयावरणं। ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपदीपनैवेद्याचमनताम्बूलस्तवपाठनीराजनपुष्पांजलिप्रदक्षिणानमस्कारान्तोपचारैः संपूज्य क्षमायाचनां च कृत्वा जपं कुर्यात्। तत्र धूपादिषु विशेषः -

धूपं - **वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यतां।**

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय धूपं समर्पयामि।

दीपं - **स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां।**

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं - **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा** - इत्यनेन जलं दत्त्वा प्राणाहुतीन् दद्यात् ततः

ॐ व्यां वेदव्यासाय नमः अस्त्राय फट् - इति मन्त्रेण प्रोक्षयित्वा

ॐ जूं सः वौषट् - इति 7 वारं जप्त्वा अर्थमननं च कृत्वा जलेन प्रोक्षयित्वा

ॐ आं यं श्रौषट् - इत्यनेन मन्त्रेण 7 वारमधोमुखवामहस्तेन तालिकां कृत्वा

ॐ इं वं स्वाहा – इत्यनेन मन्त्रेण धेनुमुद्रां प्रदर्शयित्वा मूलमन्त्रं 7 वारं जप्त्वाऽर्थमननं कुर्यात् ततः अर्घ्यादित्रयं दद्यात्

ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा – पुनः जलं दद्यात्।

ॐ व्यां सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय वेदव्यासाय नैवेद्यं निवेदयामि।

कृतपूजाया साद्गुण्यार्थे दक्षिणामपि दद्यात्। **हरिः ॐ तत्सत् । ब्रह्मार्पणमस्तु।**

अत्र ध्येयं :- अस्य पुरश्चरण वाऽष्टसहस्रं वा जपः कृत्वा पायसान्नेन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान्साधयेत्। तथाहि –

' जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत् । एवं सिद्धमनुर्मन्त्री कवित्वं शोभनाः प्रजाः।।
व्याख्यानशक्तिं कीर्तिं च लभते संपदां च यः। मृत्युंजयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत्।।
सर्वोपद्रवसंत्यक्तो लभते वांछितं फलं । मृत्युंजयस्य मन्त्रोऽयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः।।
जप्तोऽयं केवलो नृणामिष्टसिद्धिं प्रयच्छति । किं पुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः।।' इत्यों शम् ।।

3.15 माहेश्वरसूत्रानुष्ठानविधिः –

फलम्– व्याकरणज्ञान से ब्रह्मज्ञानपर्यन्तसर्वज्ञानप्राप्तिः, मोक्षश्च।

अनुष्ठानम्– प्रतिदिन चतुर्दशसूत्रों का 11 आवृत्ति (न्यूनतम) से शिवाभिषेक 48 दिन। यावत्फलप्राप्तिरनुष्ठानस्यावृत्तिः कर्तव्या।

संकल्पं च कृत्वा हस्ते पुष्पाक्षतजलं गृहीत्वा) –

ॐ श्री अक्षरसमाम्नायस्य पाणिनि ऋषिः। परब्रह्मसदाशिवो देवता। अनुष्टुप्छन्दः। ऐं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थेऽभिषेककर्मणि विनियोगः।। (जलं विसृज्यताम् , ततो न्यासं कुर्यात्)

अथ ऋष्यादि न्यासः –

ॐ श्री अक्षरसमाम्नायस्य पाणिनि ऋषये नमः – शिरसि। **ॐ श्री अनुष्टुप्छन्दसे नमः** – मुखे। **ॐ श्री परब्रह्मसदाशिवदेवतायै नमः** –हृदये। **ॐ ऐं बीजाय नमः** –गुह्ये। **ॐ ह्रीं शक्तये नमः** –पादयोः। **ॐ क्लीं कीलकाय नमः** –नाभौ। **ॐ श्रीपरब्रह्मसदाशिवप्रीत्यर्थेऽभिषेककर्मणि विनियोगाय नमः** –सर्वांगे।।

अथ हृदयादिन्यासः

मन्त्राः		अथ अंग न्यासः –		अथ कर न्यासः
अइउण् ऋलृक्	–	**हृदये नमः।**	–	**अंगुष्ठाभ्यां नमः ।**
एओङ् ऐऔच्	–	**शिरसे स्वाहा।**	–	**तर्जनीभ्यां नमः ।**
हयवरट् लण्	–	**शिखायै वषट्।**	–	**मध्यमाभ्यां नमः ।**
ञम -- धष्	–	**कवचाय हुम् ।**	–	**अनामिकाभ्यां नमः।**
जब -- कपय्	–	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**	–	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
शषसर् हल्	–	**अस्त्राय फट्।**	–	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

(पुनः जलं गृहीत्वा) – **श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थेऽभिषेककर्मणि विनियोगः**।। (जलं विसृज्यताम्, ततः)

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

(इत्युक्त्वा दक्षिणहस्तस्य तर्जनीमध्यमाभ्यां वामहस्ते ताडनं कुर्यात्) (इति न्यासं कृत्वा) – **'वृद्धिरादैच्'** – (इति सूत्रं त्रिरुच्चारयन् एकैकशः त्रीन् बिल्वपत्रान् शिवोपरि स्थापयित्वा अक्षरसमाम्नायेन यथाशक्तिः, न्यूनतमसंख्या चेदेकादशवारं) **शिवाभिषेकं** (कुर्यात्।। अन्ते च पुनः –) **'वृद्धिरादैच्'** (– इति सूत्रं त्रिरुच्चारयन् एकैकशः त्रीन् बिल्वपत्रान् शिवोपरि स्थापयित्वा जलेन शिवार्पणं कुर्यात्)।।

3.16 चाक्षुषोपनिषद् प्रयोगविधिः

फलम्- चक्षुः सम्बन्धी सर्वरोग निवृत्तिः। अनुष्ठानम्- 48 दिन में 6000। यावत्फलप्राप्तिरावृत्तिः कर्तव्या।

दाहिने हाथ में जल लेकर सबसे पहले विनियोगः- **ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छंदः, सूर्यो देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, हंसः कीलकम्, चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।**

अथ ऋष्यादि न्यासः-

ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषये नमः - शिरसि, **ॐ गायत्रीछन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ सूर्यदेवतायै नमः** - हृदये, **ॐ ॐ बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ ह्रीं शक्तये नमः, ॐ हंसः कीलकाय नमः** - नाभौ, **ॐ चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यासः :-

अथ बीजं	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ ॐ नमः	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रीं नमः	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां नमः।**
ॐ हंसाय नमः	**शिखायै वषट्**	**मध्यमाभ्यां नमः।**
ॐ ॐ नमः	**कवचाय हुम्**	**अनामिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रीं नमः	**नेत्रत्रयाय वौषट्**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
ॐ हंसाय नमः	**अस्त्राय फट्**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

।।ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु-कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः ★करुणाकराय अमृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्याय अक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिर प्रतिरूपः। य इमां ★★चाक्षुष्मतिविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा। ॐ विश्वरूपिणं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं। तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः।।

पाठभेदः – ★ कल्याणकराय । ★★ चाक्षुष्मतीं।

विधिः –

1. कलशस्थापना करके उस पर अनार की शाखा की कलम से हल्दी के घोल से निम्न बत्तीसी यन्त्र को कांसे के थाली पर लिखें।
2. उक्त यन्त्र पर तांबे की कटोरी में चतुर्मुखी बत्ती का दीपक जलाकर गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजा करें।
3. पूर्वाभिमुख बैठकर हल्दी के गांठ की माला से 1 माला निम्न मन्त्र का जप करें –

   '**ॐ मम** (यजमानस्य वा) **चक्षूरोगाञ्शमय शमय**।'
4. तत्पश्चात् निम्न बीज मन्त्र का 6 माला जप करें – '**ॐ ह्रीं हंसः**।'
5. अब चाक्षुषोपनिषद् का कम से कम 12 बार पाठ करें। अथवा 48 दिन के अनुष्ठान के अनुसार नित्य 125 पाठ करें।

6. अब पुनः उक्त बीज मन्त्र का 6 माला जप करें।

7. पाठ करने के उपरान्त सूर्यदेवता को गंध से युक्त जल से अर्घ्य दें और उसे कलशस्थ जल में मिलाके जल को आँखों पर लगाना चाहिए।

बत्तीसी यन्त्र-

8	15	2	7
6	3	12	11
14	9	8	1
4	5	10	13

सूर्यगायत्रीमन्त्रः ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नो भानुः प्रचोदयात्।।

अथवा ॐ ह्रीं घृणिः सूर्याय आदित्याय श्रीं ॐ।

अथवा ॐ मम नेत्रज्योती जागर जागर ॐ शान्तिः।

अथवा (ऋग्वेद 10.158)

चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः।

चक्षुर्नो देहि चक्षुषे। चक्षुर्विरूपे तनूच्यः। संचेदं विच पश्येम।। ।।हरिः ॐ तत्सत्।।

3.17 बवासीर का मंत्र

फलम्- सब प्रकार के गुदा सम्बन्धी रोग, विशेषत: सब प्रकार के बवासीर रोग की निवृत्तिः। अनुष्ठानम्- यावत्फलप्राप्तिः।

"आकोल आकोल आकरेता, जो न आवे आकरेता, जाके रहे न गुदा रेशा। इरंची विरंची यह मंत्र जपत जाय, शौच करत जाय, खूनी बादी दोनों जाय। इतने पर भी न जाय तो अगस्त मुनि ब्राह्मणो न भवति।"

विशेष सूचना :-

शौच करते समय गुदा में अंगुली डालकर घुमाते हुए उपरोक्त मंत्र पढता जाय, केवल एक बार। शौच जाते समय में सात बार मानस जप करें।

3.18 वैदिकगायत्रीमंत्राः

फलम्- जिस गायत्री का जो देवता है उस देवता की कृपा से उस देवता के अधिकारान्तर्गत फल मिलेगा। अनुष्ठान् विधि:- सर्वसाधारण गायन्त्रीमन्त्र के समान। श्रीगायत्रीयन्त्र (पृष्ठ संख्या 438, चित्र संख्या 9) में गायत्री देवता का स्थापना आदि करें। तत्पश्चात्-

गणेशगायत्री :- **तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।** अथवा
एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।1।

रुद्रगायत्री :- **पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।** अथवा
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।2।

नन्दिगायत्री :- **तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।3।**

कार्तिकेयगायत्री :- **तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्।4।**

सावित्री गायत्री :- **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ सुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।**

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
ओमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।5।

सूर्यगायत्री :- आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्। अथवा
भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि। तन्न आदित्यः प्रचोदयात्।6।

लक्ष्मीगायत्री :- महालक्ष्मीश्च विद्महे सर्वसिद्धिश्च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। अथवा
ॐ भूर्लक्ष्मी भुवर्लक्ष्मीः स्वर्लक्ष्मीः कालकर्णी तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदयात्।7।

विष्णुगायत्री :- नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।8।

गरुडगायत्री :- तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयात्।9।

नरसिंहगायत्री :- वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नरसिंहः प्रचोदयात्। अथवा
नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्नः सिंहः प्रचोदयात्।10।

ब्रह्मगायत्री :- वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।11।

अग्निगायत्री :- वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।12।

दुर्गागायत्री :- कात्यायनी च विद्महे कन्याकुमारि च धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्।13।

शक्ति गायत्री :- सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।।14।।

सरस्वती गायत्री :- वाग्देव्यै च विद्महे कामराज्ञ्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।15।।

राम गायत्री :- दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।।16।

गोपाल गायत्री :- कृष्णाय च विद्महे दामोदराय च धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।17।। ।। हरिः ॐ तत्सत्।।

3.19 हंसगायत्री (केवल संन्यासियों केलिये)

फलम्- ब्रह्मज्ञान प्राप्तिपूर्वक मोक्षः। अनुष्ठान- नित्य न्यूनतम ग्यारह (11) माला।

अस्य श्री हंसगायत्रीमन्त्रस्याव्यक्तपरब्रह्म ऋषिः, अव्यक्तगायत्री छन्दः, परमहंसो देवता, हं सां बीजं, हं सों शक्तिः, हं सूं कीलकम्, परमहंसप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ श्री अव्यक्तपरब्रह्मर्षये नमः - शिरसि, **ॐ अव्यक्तगायत्रीछन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ परमहंसदेवतायै नमः** - हृदये, **ॐ हं सां बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ हं सों शक्तये नमः** - पादयोः, **ॐ हं सूं कीलकाय नमः** - नाभौ, **ॐ परमहंसप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यासः -

मन्त्राः	हृदयादिन्यासः	करन्यासः
ॐ हं सां	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**
ॐ हं सीं	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां नमः**
ॐ हं सूं	**शिखायै वषट्**	**मध्यमाभ्यां नमः**
ॐ हं सैं	**कवचाय हुम्**	**अनामिकाभ्यां नमः**
ॐ हं सौं	**नेत्रत्रयाय वौषट्**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**
ॐ हं सः	**अस्त्राय फट्**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

ॐभूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम् -

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्।।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यम् सोऽहंभावेन पूजयेत्।।

अथ हंसगायत्रीमन्त्रः -

ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।।

3.20 शुकरहस्योपनिषदि महावाक्यजपविधिः (केवल संन्यासियों केलिये)

फलम्- सद्योमुक्तिः। अनुष्ठान- नित्य प्रत्येकश्वास के साथ अथवा न्यूनतम 21 माला।

'ॐ अहं ब्रह्मास्मि' इत्यस्य श्रीमहावाक्यमहामंत्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्तगायत्री छन्दः, परमहंसो देवता, हं बीजम्, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकम्, मम परमहंसप्रीत्यर्थे महावाक्यजपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः :-

ॐ अहं ब्रह्मास्मि' इत्यस्य श्रीमहावाक्यमहामंत्रस्य हंसर्षये नमः - शिरसि, **अव्यक्तगायत्रीछन्दसे नमः** - मुखे, **परमहंसदेवतायै नमः** - हृदि, **हं बीजाय नमः** - गुह्ये, **सः शक्तये नमः** - पादयोः, **सोऽहं कीलकाय नमः** - नाभौ, **मम परमहंसप्रीत्यर्थे महावाक्यजपे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करादिषडंगन्यासः :-

अथ मन्त्राः	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेति	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**
ॐ नित्यानन्दो ब्रह्मेति	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**

ॐ नित्यानन्दमयो ब्रह्मेति	शिखायै वषट्	मध्यमाभ्यां वषट्
ॐ यो वै भूमेति	कवचाय हुम्	अनामिकाभ्यां हुम्
ॐ यो वै भूमाधिपतिरिति	नेत्रत्रयाय वौषट्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
ॐ एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति	अस्त्राय फट्।	करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्

ॐ भूर्भुवःसुवरोमिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्: नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं, *विश्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

* द्वन्द्वातीतं - इति पाठभेदः

ततः यथाशक्ति महावाक्यस्य जपं कुर्यात्। ततः तेजोबिन्दूपनिषत्स्थमिदं स्तोत्रं पठेत् :-

अहं ब्रह्मास्मि मंत्रोऽयं दृश्यपापं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमन्यमंत्रं विनाशयेत्।।1।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं देहदोषं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं जन्मपापं विनाशयेत्।।2।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं मृत्युपाशं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं द्वैतदुःखं विनाशयेत्।।3।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं भेदबुद्धिं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चिंतादुःखं विनाशयेत्।।4।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं बुद्धिव्याधिं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तबंधं विनाशयेत्।।5।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कामादीन्नाशयेत्क्षणात्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वशोकं विनाशयेत्।।6।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वव्याधीन्विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं क्रोधशक्तिं विनाशयेत्।।7।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तवृत्तिं विनाशयेत्। अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं संकल्पादीन्विनाशयेत्।।8।।

अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कोटिदोषं विनाशयेत्।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्माज्ञानं विनाशयेत्।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमप्रतर्क्यसुखप्रदः ।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं ज्ञानानन्दं प्रयच्छति ।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमनात्माख्यासुरान्हरेत् ।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमनात्मासुरमर्दनः ।
सर्वमंत्रान्समुत्सृज्य एतं मंत्रं समभ्यसेत् ।

अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वतंत्रं विनाशयेत्।।9।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वांस्तान्मोक्षयिष्यति ।।10।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्मलोकजयप्रदः।।11।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमजडत्वं प्रयच्छति।।12।।
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमनात्माख्यगिरीन्हरेत्।।13।।
सप्तकोटिमहामंत्रं जन्मकोटिशतप्रदं ।।14।।
सद्यो मोक्षमवाप्नोति नात्र संदेहमण्वपि ।।15।।

अन्ते चेत्थं समर्पयेत् :- ज्ञानवैराग्यसिद्धिपूर्वकं मुक्त्यर्थं ब्रह्मार्पणमस्तु। हरिः ॐ तत्सत्।।

3.21 ॐकारस्य रहस्यं मननार्थमुपासनार्थं वा -

फलम्- संल्पानुसारेण सर्वफलदायकम्। अनुष्ठानम्- आसुप्तेरामृतेः कालम्।

क्रमांक	तत्त्व	सगुणसाकार स्थूल	सगुणसाकार सूक्ष्म	सगुणनिराकार	निर्गुणनिराकार
1	मात्रा	अकार	उकार	मकार	ॐ
2	व्यष्टि	विश्व	तैजस	प्राज्ञ	तुरीय
3	समष्टि	विराट् /वैश्वानर	हिरण्यगर्भ	ईश्वर	ब्रह्म
4	शरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	अपूर्वमनपरम्
5	अवस्था	जाग्रत्	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरीय

6	गुण	तमः	रजः	सत्त्व	गुणातीत
7	कार्य	सृष्टि	स्थिति	प्रलय	अकार्य
8	ऋषिः	अग्नि	सूर्य	वायु	सप्तर्षि
9	वेद	ऋक्	यजुः	साम	वेदातीत
10	देव	ब्रह्मा	विष्णु / सोम	महेश	देवातीत
11	स्थान	भूः	भुवः	स्वः	लोकातीत
12	भोग	स्थूलभुक्	सूक्ष्मभुक्	आनन्दभुक्	आनन्दरूप
13	लोक	पृथिवी	द्यौ	वायु	आकाश
14	कालः	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	कालातीत
15	अधिज्यौतिष	अग्नि	आदित्य	विद्युत	जल
16	अधिविद्य	आचार्य	शिष्य	प्रवचन	विद्या
17	अधिप्रजं	माता	पिता	प्रजनन	प्रजा
18	अध्यात्म	अधराहनुः	उत्तराहनुः	जिह्वा	वाक्
19	अधिप्राण	प्राण	अपान	व्यान	अन
20	ज्ञान	अल्पज्ञ	अन्तर्यामि	सर्वज्ञ	पूर्णज्ञ
21	प्रज्ञा	बहिष्प्रज्ञ	अन्तःप्रज्ञ	अप्रज्ञ	पूर्णप्रज्ञ
22	अंग	सप्तांग	सप्तांग	एकीभूत	अंगातीत

23	मुख	21	21	चेतोमुख	चिद्रूप
24	स्वरूप	विषयमय	वासनामय	आनन्दमय	चिन्मय
25	शब्द	वैखरी	मध्यमा	पश्यन्ती	परा
26	ध्वनि	कला	बिन्दु	नाद	त्रयातीत
27	वैष्णव	अनिरुद्ध	प्रद्युम्न	संकर्षण	वासुदेव
28	शैव	ईश्वर	सदाशिव	साम्बशिव	परमशिव

अथवा -

क्रमांक	त्रिकनाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	आद्या ॐ	अ	उ	म्
1	आद्या देवी	अ	क	थ
2	मण्डल	अग्नि	सूर्य	चन्द्र
3	लिंग	स्वयंभू	बाण	इतर
3	लिंग	पुरुष	स्त्री	नपुंसक
4	प्रभा	श्वेत	रक्त	मिश्र
5	पद	युष्मद्	अस्मद्	तत्
6	काल	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
7	लोक	भूः	भुवः	स्वः

8	निगम (वेद)	ऋक्	यजुः	साम
9	अवस्था	बाल्य	युवा	वार्धक्य
9	अवस्था	सुप्त	मूर्छित	समाधि
9	अवस्था	जाग्रत्	स्वप्न	सुषुप्ति
10	देव	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र
11	शक्ति	इच्छा	ज्ञान	क्रिया
12	पीठ	जालन्धर	काम	उड्डीयान
13	शरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण
14	समष्टि	विराट्	हिरण्यगर्भ	ईश्वर
15	व्यष्टि	विश्व	तैजस	प्राज्ञ
16	कर्मसाधनं	काय	वाक्	मनः
17	आनन्द	विषय	वासना	ब्रह्म
18	कर्मफल	सामान्य	मध्यम	उत्कृष्ट
19	कर्म शाक्तमते	पुण्य	पाप	मिश्र
19	कर्म सर्वमते	संचित	प्रारब्ध	आगामी
20	प्रारब्धकर्म	स्वेच्छाकृत	परेच्छाकृत	अनिच्छाकृत
21	ज्ञानप्रतिबन्ध	संशय	भ्रम	असंभावना

22	पुनस्प्रतिबन्ध	भूत	वर्तमान	भावी
23	सम्बन्ध	विषयविषयी	कार्यकारण	आधाराधेय
24	कारणवाद	आरम्भ	परिणाम	विवर्त
25	दुःख	आध्यात्मिक	आधिभौतिक	आधिदैविक
26	गुण	तमः	रजः	सत्त्वं
27	वासना	शरीर	लोक	शास्त्र
28	प्रपंच	स्थूल	सूक्ष्म	कारण
29	ज्ञानसाधन	श्रवण	मनन	निदिध्यासन
30	यौगिक बन्ध	मूल	उड्डीयान	जालन्धर
31	प्राणायाम	रेचक	पूरक	कुम्भक
32	वैराग्यकारणं	दोषदृष्टि	जिहासा	अदीनता
33	ज्ञानकारणं	वैराग्य	उपरम	श्रद्धा
34	अहंकार	कर्मज	भ्रान्तिज	सहज
35	अहंतादात्म्य	शरीर	चिच्छाया	साक्षी
36	एषणा	पुत्र	वित्त	लोक
37	आत्मा शैवमते	ज्ञानात्मा	महानात्मा	शान्तात्मा
38	स्वर्गस्थ तापाः	क्षय	अतिशय	साहसपतन

39	शब्दवृत्ति	अभिधा	लक्षणा	व्यंजना
40	लक्षणा	जहत्	अजहत्	भागत्याग
41	सत्ता	व्यावहारिक	प्रातिभासिक	पारमार्थिक
42	परिच्छेद	वस्तु	देश	काल
43	भेद	सजातीय	विजातीय	स्वगत
44	ध्वनि	कला	बिन्दु	नाद
45	मंगलाचरण	नमस्कार	वस्तुनिर्देश	आशीर्वाद
46	अर्थवाद	गुणवाद	अनुवाद	भूतार्थवाद
47	विधि:	अपूर्व	नियम	परिसंख्या
48	अग्नि	दक्षिण	गार्हपत्य	आहवनीय
49	जीव	अवच्छेद	प्रतिबिम्ब	आभास
50	काण्ड	कर्म	भक्ति	ज्ञान
51	दोष	मल	विक्षेप	आवरण
52	योग	कर्म	भक्ति	ज्ञान
53	स्नान	जल	व्रत	मन्त्र
54	मार्ग	अधोगति	दक्षिणायन	उत्तरायण
55	पुण्यकर्म	इष्ट	पूर्त	दत्त
56	जप	वैखरी	उपांशु	मानस

।। हरिॐ तत्सत् ।।

3.22 श्रीमहाभैरवमन्त्रानुष्ठानम्

फलम्- सर्वभयनिवृत्तिः, भूतप्रेतपिशाचादिबाधानिवृत्तिश्च। अनुष्ठानम्- 48 दिन में 51000 हजार (पुरश्चरण-28 लाख+दशांशादि।) श्रीभैरवयन्त्र (पृष्ठ संख्या 439, चित्र संख्या 13 अथवा 14) को स्थापित कर आवाहानादि कर्म कर लें। तत्पश्चात्-

श्री भैरव गायत्री मन्त्रः-

ॐ कालकालाय विद्महे कालातीताय धीमहि। तन्नः कालः प्रचोदयात्।। एवं

श्री महाकालभैरव मन्त्रः -

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीमहाकालभैरवमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, मधुमती छन्दः, महाकालो देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकम्, सशत्रुसर्वानिष्टनिवृत्तये विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ अस्य श्रीमहाकालभैरवमन्त्रस्य सदाशिवर्षये नमः - शिरसि, **मधुमतीछन्दसे नमः** - मुखे, **महाकालदेवतायै नमः** - हृदये, **ॐ ॐ बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ ह्रीं शक्तये नमः** - पादयोः, **ॐ क्रों कीलकाय नमः** - नाभौ, **ॐसशत्रुसर्वानिष्ट-निवृत्तये विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यास: -

अथ मन्त्रा:	अथ हृदयादिन्यास:	अथ करन्यास:
ॐ ॐ नम:	**हृदयाय नम:,**	**अंगुष्ठाभ्यां नम:,**
ॐ ह्रीं नम:	**शिरसे स्वाहा,**	**तर्जनीभ्यां नम:,**
ॐ क्रों नम:	**शिखायै वषट्,**	**मध्यमाभ्यां नम:,**
ॐ ॐ नम:	**कवचाय हुम्,**	**अनामिकाभ्यां नम:**
ॐ ह्रीं नम:	**नेत्रत्रयाय वौषट्,**	**कनिष्ठिकाभ्यां नम:,**
ॐ क्रों नम:	**अस्त्राय फट्,**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:**

।। ॐ भूर्भुव:स्वरोमिति दिग्बन्ध:।।

अथ मन्त्र: - (मधुमती छन्द का उच्चारण 3, 4 पर तोड़/रुक कर करें। जगण, सगण और गुरु।)

ॐ हूं खौं, जं रं लं बं; क्रों ऐं ह्रीं, महाकाल। भैरव, सर्वविघ्न; नाशय, ह्रीं फट् स्वाहा।।

3.23 श्रीमद्भगवद्गीता से लौकिकफलप्राप्ति केलिये अनुष्ठान :-

सूचना:- 3.23 और 3.24 में बताये गये श्लोकों का निर्दिष्ट फल प्राप्ति के लिये 3.10 में (पृ. 117) में दर्शाये गये विनियोग एवं न्यासादि का ही प्रयोग करें। केवल विनियोग एवं ऋष्यादिन्यास में **'सर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थे'** के स्थान पर अपने अभीष्टफल को कहें अथवा **'ममाशीष्टफलसिद्ध्यर्थे'** ऐसे पाठ करें।

1. कार्यसिद्धिः :-

(क) धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।1.1।।
जप संख्या 25,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।।3.43।।
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।9.27।।
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(घ) ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते। अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।।13.12।।
जप संख्या 5,00,000; 151 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ङ) सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।13.13।।
जप संख्या 25,000; 25 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(च) सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।18.66।।
जप संख्या 25,000; 25 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

2. रोगनाशः :-

(क) कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।2.2।।
जप संख्या 25,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।7.7।।**
जप संख्या 1,25,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

3. स्वप्नसिद्धिः –

(क) **कार्पण्यदेषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।**
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।2.7।।
जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।।3.2।।**
जप संख्या 11,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

4. विपत्तिनाशः –

(क) **लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ। ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।।3.3।।**
जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।।5.29।।**
जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

5. पूर्वजन्मज्ञानम् –

(क) **अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।।4.4।।**
जप संख्या 5,00,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।।4.5।।**
जप संख्या 6,00,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

6. धनप्राप्तिः –

(क) **यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।5.5।।**
जप संख्या 48,000; 27 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।।10.16।।**
जप संख्या 28,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।**
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यमि विश्वेश्वर विश्वरूप।। 11.16।।
जप संख्या 25,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(घ) **यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।**
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।।11.42।।

अथवा – **अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।**
तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।।11.45।।

अथवा – **मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ् ममेदम्।**
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।।11.49।।

अथवा – **इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।**
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।।11.50।।

अथवा – **दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।।11.51।।**

अथवा – **सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः।।11.52।।**

अथवा – **नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा।।11.53।।**

इन में से किसी भी एक को जपें। जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

7. दारिद्र्यनाशः –

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।।11.40।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

8. शत्रुनाशपूर्वकविजयप्राप्तिः –

(क) **बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मनैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्।।6.6।।**
जप संख्या 21,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया। आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।।6.25।।**
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।6.26।।
इन दोनों को एक साथ जपें। जप संख्या 21,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

9. सर्वप्रियता –

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।6.20।।

जप संख्या 5,25,000; 151 दिन में, गोपालकृष्ण का ध्यान करें।

10. ऋणमुक्तिः –

(क) **सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते।।6.31।।**

जप संख्या 5,25,000; 151 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।।12.7।।**

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

11. शत्रुबाधाविमुक्तिः –

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।।8.8।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

12. सन्तानप्राप्तिः –

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु।।9.9।।

जप संख्या 1,90,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

13. योगक्षेमप्राप्तिः –

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।9.22।।

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

14. सुखप्राप्तिः -

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।9.26।।

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

15. भयनाशः -

(क) **मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।9.32।।**

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते।।17.17।।**

जप संख्या 75,000; 15 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

16. सिद्धिप्राप्तिः -

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।9.34।।

जप संख्या 2,11,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

17. दुःखनाशः -

(क) **यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्। असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।10.3।।**

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।10.10।।**

जप संख्या 27,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।12.12।।**
जप संख्या 15,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

18. विघ्ननाशः –
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।11.11।।
जप संख्या 15,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

19. प्रेमवृद्धिः –
(क) **त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।**
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।।11.38।।
जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना। करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः।।18.18।।**
जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

20. भूतप्रेतबाधानिवारणम् –
(क) **स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।**
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।11.36।।
जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।**

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।11.39।।

जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

21. प्रसन्नताप्राप्तिः –

(क) **पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।**
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।।11.43।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

22. येन केनापि क्षमाप्राप्तिसाधनम् –

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।।11.44।।

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

23. मृत्युकालज्ञानम् –

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं यान्ति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते।।14.14।।

जप संख्या 1,08,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

24. उदररोगनाशः –

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।15.14।।

जप संख्या 1,25,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

25. दोशनाशपूर्वकक्रोधशमनम् –

(क) **सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च। वेदैश्च सवैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।।15.15।।**

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।16.16।।**

जप संख्या 11,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।16.21।।**

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

26. वैभवप्राप्तिः –

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।।15.20।।

जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

3.24 श्रीमद्भगवद्गीता से पारमार्थिकफलप्राप्ति केलिये अनुष्ठान :-

1. अन्तःकरणशुद्धिः –

(क) **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।1.1।।**

जप संख्या 25,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।।3.2।।**

जप संख्या 11,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।13.13।।**

जप संख्या 25,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

2. मानसतापशमनम् –

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।2.2।।

जप संख्या 25,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

3. कामादिशत्रुविजयप्राप्तिः –

(क) **एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।।3.43।।**

जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।।8.8।।**

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।16.21।।**

जप संख्या 1,25,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(घ) **श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते।।17.17।।**

जप संख्या 81,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

4. भक्तेः दृढता प्राप्त्यर्थम् -

(क) **बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।।4.5।।**
जप संख्या 6,00,000; 51/90 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।6.20।।**
जप संख्या 5,10,000; 150 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते। अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।।13.12।।**
जप संख्या 5,25,000; 150 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(घ) **यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।।15.19।।**
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

5. चित्तचाञ्चल्यनाशार्थम् -

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ। ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।।3.3।।
जप संख्या 1,25,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

6. साधनविघ्ननाशार्थम् -

(क) **भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।।5.29।।**
जप संख्या 48,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।11.11।।**

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

7. मनोजयार्थम् –

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया। आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।।6.25।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

8. ध्यानयोग्यताप्राप्त्यर्थम् –

(क) **यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।6.26।।**

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।**
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।11.39।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।**
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।11.36।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

9. शरणागतियोग्यताप्राप्त्यर्थम् –

(क) **कार्पण्यदेषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।**

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। 2.7।।

जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।9.32।।**

जप संख्या 51,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।9.34।।**

जप संख्या 1,25,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

10. विश्वासदृढताप्राप्त्यर्थम् –

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवत्सतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।।4.4।।

जप संख्या 5,00,000; 148 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

11. सांख्यनिष्ठाप्राप्त्यर्थम् –

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।5.5।।

जप संख्या 48,000; 27 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

12. ज्ञानपरिपक्वताप्राप्त्यर्थम् -

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते।।6.31।।

जप संख्या 5,25,000; 151 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

13. द्वेषभावनाशार्थम् -

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मनैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्।।6.6।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

14. सर्वत्रभगवद्दर्शनार्थम् -

(क) **मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।7.7।।**

जप संख्या 1,25,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।9.26।।**

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

15. कर्मयोगपरिपक्वताप्राप्त्यर्थम् -

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु।।9.9।।

जप संख्या 1,90,000; 151 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

16. योगक्षेमप्राप्त्यर्थम् –

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।9.22।।

जप संख्या 1,25,000; 81 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

17. भगवत्कृपाप्राप्त्यर्थम् –

(क) यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।9.27।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।।10.16।।

जप संख्या 48,000; 27 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

18. भगवत्प्रसन्नताप्राप्त्यर्थम् –

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।।11.43।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

19. भगवत्क्षमाप्राप्त्यर्थम् –

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।।11.44।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

20. भगवद्दर्शनप्राप्त्यर्थम् -

(क) **अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।।11.45।।**
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ् ममेदम्।**
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।।11.49।।
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।**
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।।11.50।।
जप संख्या 1,00,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(घ) **दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।।11.51।।**
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ङ) **सुदुर्दशमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः।।11.52।।**
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(च) **नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा।।11.53।।**
जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

21. पापनाशार्थम् -

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्। असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।10.03।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

22. सर्वदोषनाशार्थम् -

(क) श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।12.12।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।16.16।।

जप संख्या 11,000; 7 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

23. विवेकप्राप्त्यर्थम् -

(क) अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।।11.16।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।।11.42।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ग) **अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।15.14।।**

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

24. भगवत्प्रेमवृद्ध्यर्थम् –

(क) **त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।**
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।।11.38।।

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) **ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना। करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः।।18.18।।**

जप संख्या 21,000; 11 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

25. योगयुक्तताप्राप्त्यर्थम् –

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।10.10।।

जप संख्या 48,000; 21 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

26. मोहनाशार्थम् –

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।।11.40।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

27. भगवत्प्राप्तियोग्यताप्राप्त्यर्थम् –

(क) तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।।12.7।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

(ख) सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।18.66।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

28. अन्तकाले भगवत्स्मरणार्थम् –

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं यान्ति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते।।14.14।।

जप संख्या 1,00,000; 48 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

29. क्रोधादिविशेषदोषशमनार्थम् –

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।।15.15।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

30. सर्वविघ्ननाशार्थम् –

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।11.11।।

जप संख्या 1,25,000; 51 दिन में, पार्थसारथी का ध्यान करें।

।।हरिः ॐ तत्सत्।।

3.25 कार्यसिद्धिहेतु सत्संकल्प या प्रार्थना का विधि -

जीवन और जगत में यथाशीघ्र समझने व स्वीकार करने योग्य सर्वसुख व शान्ति प्राप्त करने का एक मात्र अद्भुत रहस्यपूर्ण साधन यह है कि नित्य ही '**सत्संकल्प या प्रार्थना**' करना। प्रतिदिन दो बार कम से कम 20 मिनट (यदि समस्या गम्भीर हो तो एक घण्टा व तीन बार) निम्न बताये गये विधि से करना है। इसमें प्रमाद न करें, इसकी उपेक्षा न करें क्योंकि यह अनिवार्य और अपरिहार्य (अत्यन्त आवश्यक) है। केवल दैनिक कार्य ही नहीं बल्कि किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले सर्वत्र सर्वदा सभी परिस्थितियों में अवश्य करना ही चाहिये। सकल समस्याओं केलिये यह अन्यतम व सर्वोत्तम अमोघ उपाय है।

सत्संकल्प या प्रार्थना -

1. **हे प्राज्ञ परमात्मा! मुझ प्रकाशक की बुद्धि भ्रान्तियों से मुक्त रहे और मन सद्भाव से युक्त रहे।**
2. **हे निरामय! सुषुप्ति, संयम और भूख विज्ञान के द्वारा यह शरीर सदा स्वस्थ रहे और बाहरी परिवेश अनुकूल रहे।**
3. **हे ज्ञानानन्दस्वरूप! आनन्दमयकोश के अतिक्रमणपूर्वक अपनी तथा जगत् की वास्तविकता का संपूर्ण अनुभव व्यक्त हो जाय।**
4. **सब जगह, सब समय, सबरूपों में नित्य उपस्थित हे महान् पुरुष! अनन्त, अद्वय, अविलुप्त जाग्रतिरूप चेतना के ध्यान से मेरे जीवन में सर्वात्मभाव अभिव्यक्त रहे।**
5. **हे सच्चिदानन्द सिद्धसंकल्प! सुखाभास तथा समस्या की आहट पाते ही मैं प्रार्थना, तदीक्षण** (परमात्म चिन्तन) **और परमानन्द के ध्यान में लग जाऊँ।**
6. **हे सर्वशक्तिमान्! विवेक से प्राप्त समझ का सर्वथा समादर करूँ। मेरे सत्य पर आधारित व धर्म अविरुद्ध स्व, पर व सर्व हितकारी संकल्प शीघ्र ही सिद्ध हो जाये।**

7. **हे अनन्त आनन्दस्वरूप! श्रद्धा-विजिज्ञासा-संयम तथा स्मृति-मेधा-प्रतिभा पूर्वक शिक्षा में पूर्ण योग्यता प्राप्त करूँ।**

8. **हे हितैषी अमृतकल्पवृक्ष! संपूर्णविश्व में सर्वशिक्षा यथाशीघ्र अध्यात्मोन्मुखी हो जाय और सद्भावी योग्य व्यक्ति ही सर्वत्र अबाध प्रशासक होवें।**

9. **हे सर्वसमाधानस्वरूप सर्वयोगक्षेम प्रदाता! मेरा और सबका जीवन सब प्रकार से संपन्न हो।**

10 **हे आकाश प्रकाशरूप सर्वात्मा! मैं निरहंकारपूर्वक आपके शरण में हूँ। मेरी प्रबल सद्भावना है कि यह 'सत्संकल्प या प्रार्थना' मेरा स्वभाव बन जायें।**

विधि: -

इन दस वाक्यों को अच्छी तरह से याद कर लें। मधुर व गम्भीर वाणी से धीरे-धीरे प्रत्येक वाक्य को बोलना है अर्थात् प्रत्येक वाक्य के प्रत्येक शब्द को बोलने के बाद 10/15 सेकेण्ड शान्त रहना है और प्रत्येक वाक्य के बाद भी 20/30/45/60 सेकेण्ड शान्त रहते हुये गहरी निद्रा में जिस शान्ति या सुख का आपने प्रतिदिन अनुभव किया है उसका स्मरण करना है। तदनन्तर कम से कम 20 मिनट श्वास लेते हुये व छोड़ते हुये अपने गुरु मन्त्र अथवा इष्टदेवता का मन्त्र अथवा शास्त्र में समस्या के समाधान केलिये विहित मन्त्र का जप करें। विश्वास और श्रद्धा से किया गया सत्संकल्प या प्रार्थना में इतनी ताकत है कि नामुमकिन को मुमकिन बना देता है। अतिशीघ्र कार्यसिद्ध होता है। अत: जब-जब समय मिले समस्या हो या न हो अवश्य करें ताकि कभी भी कोई भी समस्या ही न आवे। विशेषत: उठने के बाद व सोने से पहले अवश्य करें। जितना करेंगे उतना लाभ अवश्य होगा।

3.26 योग्यवरप्राप्त्यर्थम् :-

फल- सुयोग्य वर के साथ विवाह के लिये कन्या स्वयं जपे और ब्राह्मण से 125000 जप करायें 21 दिन में।

अथ विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीवरप्राप्तिकरमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः, वासुदेवो देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वोपद्रवशमनपूर्वकसर्वबाधानिवृत्तिसहितयोग्यवरप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः-

ॐ श्रीवरप्राप्तिकरमन्त्रस्य ब्रह्मर्षये नमः- शिरसि, ॐ श्रीगायत्रीछन्दसे नमः- मुखे, ॐ श्रीवासुदेवदेवताभ्यो नमः- हृदये, ॐ ॐ बीजाय नमः- गुह्ये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः- पादयोः, ॐ क्लीं कीलकाय नमः - नाभौ, ॐ स्वयोग्यवरप्राप्तये जपे विनियोगाय नमः- सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यासः-

अथ मन्त्राः	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ ॐ	**हृदयाय नमः,**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः,**
ॐ ह्रीं	**शिरसे स्वाहा,**	**तर्जनीभ्यां नमः,**
ॐ क्लीं	**शिखायै वषट्,**	**मध्यमाभ्यां नमः,**
ॐ ॐ	**कवचाय हुम्,**	**अनामिकाभ्यां नमः**
ॐ ह्रीं	**नेत्रत्रयाय वौषट्,**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः,**
ॐ क्लीं	**अस्त्राय फट्,**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् -

‘वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम्।।’

अथ मन्त्रः - (नित्य न्यूनतम 16 माला अथवा संकल्पानुसारेण)

‘देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे सुवरं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।’

4 स्तोत्रखण्डः

4.1 गणेशकवचम् (ऋणमोचनार्थम्) :-

अथ विनियोगः :-

ॐ अस्य श्री गणेशकवचमहामन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवता, अनुष्टुप्छन्दः, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवचपाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ श्रीकश्यपर्षये नमः - शिरसि। **ॐ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवतायै नमः** - हृदये। **ॐ गं बीजाय नमः** - गुह्ये। **ॐ ह्रीं शक्तये नमः**- पादयोः। **ॐ क्लीं कीलकाय नमः** - नाभौ। **ॐ श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थे गणेशकवचपाठे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः -

मन्त्राः	अथ अंगन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ गां नमः	**हृदयाय नमः**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**
ॐ गीं नमः	**शिरसे स्वाहा**	**तर्जनीभ्यां नमः**
ॐ गूं नमः	**शिखायै वषट्**	**मध्यमाभ्यां नमः**
ॐ गैं नमः	**कवचाय हुम्**	**अनामिकाभ्यां नमः**
ॐ गौं नमः	**नेत्रत्रयाय वौषट्**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**
ॐ गः नमः	**अस्त्राय फट्**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्दः।

अथ ध्यानम् :-

वन्दे सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे, त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदं।
द्वापरे तु गजाननं युगभुजं रक्तांगरागं विभुं, तिष्ये तु द्विभुजं सितसंगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा।।1।।

अथ कवचम् :-

विनायकश्शिखां पातु परमात्मा परात्परः। अतिसुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमदोत्कटः।।1।।
ललाटं काश्यपः पातु भ्रूयुग्मं तु महोदरः। नयने फालचन्द्रस्तु गजास्यश्चोष्ठपल्लवौ।।2।।
जिह्वां पातु गणक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः। वाचं विनायकः पातु दन्तान् रक्षतु दुर्मुखः।।3।।
श्रवणौ पाशपाणिस्तु नासिकां चिन्तितार्थदः। गणेशस्तु मुखं कण्ठं पातु देवो गणंजयः।।4।।
स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्नविनाशनः। हृदयं गणनाथस्तु हेरम्बो जठरं महान्।।5।।
धराधरः पातु पार्श्वं पृष्ठं विघ्नहरश्शुभः। लिंगं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः।।6।।
गणक्रीडो जानुजंघे ऊरू मंगलमूर्तिमान्। एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदावतु।।7।।
क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः। अंगुलीश्च नखान्पादं हस्तौ पात्वरिनाशनः।।8।।
सर्वांगानि मयूरेशो विश्वव्यापी सदाऽवतु। अनुक्तमपि यत्स्थानं धूमकेतुस्सदाऽवतु।।9।।
आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु। प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेय्यां सिद्धिदायकः।।10।।
दक्षिणस्यामुमापुत्रः नैर्ऋत्यां तु गणेश्वरः। प्रतीच्यां विघ्नकर्ताऽव्यात् वायव्यां गजकर्णकः।।11।।
कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः। दिवाऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ सन्ध्यासु विघ्नहृत्।।12।।
राक्षसासुर-वेताल-ग्रह-भूतपिशाचतः। पाशाङ्कुशधरः पातु रजस्सत्त्वं तमस्स्मृतिम्।।13।।

ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च लज्जां कीर्तिं दयां कुलं। वपुर्धनं च धान्यं गृहान्दारान्सखीन्सुतान्।।14।।
सर्वायुधधरः पौत्रान्मयूरेशोऽवतात्सदा। कपिलोऽजाविकं पातु गवाश्वं विकटोऽवतु।।15।।
त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसारतनुर्भवेत्। यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत्।।16।।
एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि च। कारागृहगतं सद्यो राज्ञा बद्धं च मोचयेत्।।17।।
राजदर्शनवेलायां पठेद्यस्तु त्रिवारतः। स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतीश्च सभां जयेत्।।18।।
इदं गणेशकवचं कश्यपेन समीरितम्। सर्वरक्षाकरं चैव सर्वकामप्रपूरकम्।।19।।

।। इति श्रीमन्महागणाधिपतिदेवताप्रीत्यर्थं समर्पणमस्तु।।

4.2 अथ सरस्वतीक्षमायाचनास्तोत्रम्

।। ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।।

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेव हतचेतसम्। गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम्।।1।।
ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां विद्याधिदेवते। प्रतिष्ठां कवितां देहि शक्तिं शिष्यप्रबोधिकाम्।।2।।
ग्रन्थकर्तृकशक्तिं च सच्छिष्यं सुप्रतिष्ठितम्। प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम्।।3।।
लुप्तं सर्वं दैववशात् तान्विभूतं पुनः कुरु। तथाऽघभस्मं च यथा करोति देवता पुनः।।4।।
ब्रह्मास्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी। सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः।।5।।
यया विना जगत्सर्वं शश्वद् जीवन्मृतं सदा। ज्ञानाभिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः।।6।।
यया विना जगत्सर्वं मूकमुन्मत्तवत्सदा। वागाधिष्ठातृदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः।।7।।

हिमचन्दनकुन्देन्दु कुमुदाम्भोजसन्निभाम्। वर्णाधिदेवी या तस्यै चाक्षरायै नमो नमः।।8।।
विसर्गबिन्दुमात्रासु यदधिष्ठानमेव च। तदधिष्ठात्री या देवी भारत्यै ते नमो नमः।।9।।
यया विनात्र संख्याकृत्संख्यां कर्तुं न शक्यते। कालसंख्यास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः।।10।।
व्याख्यास्वरूपा या देवी व्याख्याधिष्ठातृदेवता। भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः।।11।।
प्रज्ञाज्ञानस्मृतिमेधा प्रतिभाकल्पनाधृतिः। विवेकस्फूर्तिशक्तिर्या तस्यै देव्यै नमो नमः।।12।।
सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै। बभूव जडवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः।।13।।
तदा जगाम भगवान् आत्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः। उवाच सततं स्तोत्रं पाणिरिति प्रजापतिम्।।14।।
स च तुष्टाव त्वां ब्रह्मा चाज्ञया परमात्मनः। चकार त्वत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम्।।15।।
यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा। बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः।।16।।
तदा त्वां च स तुष्टाव संत्रस्तः कश्यपाज्ञया। ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभंजनम्।।17।।
व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मिकं यदा। मौनीभूतः स सस्मार त्वामेव जगदम्बिकाम्।।18।।
तदा चकार सिद्धान्तं लद्वरेण मुनीश्वरः। संप्राप निर्मलं ज्ञानं प्रमादध्वंसकारणम्।।19।।
पुराणसूत्रं श्रुत्वा स व्यासः कृष्णकुलोद्भवः। त्वां सिषेव दध्यौ च शतवर्षं च पुष्करे।।20।।
तदा त्वत्तः परं प्राप्य स कवीन्द्रो बभूव ह। तदा वेदविभागं च पुराणानि चकार सः।।21।।
यदा महेन्द्रो पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं शिवाशिवम्। क्षणं त्वामेव संचिन्त्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभुः।।22।।
पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम्। दिव्यं वर्षसहस्रं च सः त्वां दध्यौ च पुष्करे।।23।।
तदा त्वत्तो परं प्राप्य दिव्यं वर्षसहस्रकम्। उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम्।।24।।

अद्यापि ये शिष्यानध्यापयन्ति च मुनीश्वराः। ते च त्वां परिसंचिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरी।।25।।
त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रमनुमानवैः। दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः।।26।।
जडीभूतः सहस्राक्षः पंचवक्त्रश्चतुर्मुखः। यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्यै नमो नमः।।27।।

।। ॐ ऐं महासरस्वतीप्रीत्यर्थं सरस्वतीक्षमायाचनास्तोत्रं समर्पयामि।।

4.3 " श्रीसद्गुरुपादस्तवम् "

श्रीशमंचितमव्ययं परमप्रकाशमगोचरं, भेदवर्जितमप्रमेयमनन्तमाद्यमकल्मषम्।
निर्मलं निगमान्तमद्वयमप्रतर्क्यमबोधकं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 1।।
नादबिन्दुकलात्मकं दशनादभेदविनोदकं, मन्त्रराजविराजितं निजमण्डलान्तर्विशोभितं।
पंचवर्णमखण्डमद्भुतमादिकारणमच्युतम्, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 2।।
व्योमवद्बहिरन्तरस्थितमक्षरं निखिलात्मकं, केवलं परिशुद्धमेकमजन्म हि प्रतिरूपकम्।
ब्रह्मतत्त्वविनिश्चयं निरतानुमोक्षसुबोधकम्, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 3।।
बुद्धिरूपमबुद्धिकं त्रितयैककोटिनिवासिनम्, निश्चलं निरतप्रकाशनिर्मलं निजमूलकम्।
पश्चिमान्तरखेलनं निजशुद्धसम्यमिगोचरं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 4।।
हृद्गतं विमलं मनोघ्नविभाषितं परमाणुकं, नीलमध्यसुनीलसन्निभमादिबिन्दुनिजां सुखम्।
सूक्ष्मकर्णिकमध्यमस्थितविद्युदादिविभाषितं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 5।।

पंचपंचहृषीकदेहमनश्चतुष्कपरस्परम्, पंचभूतसकामषट्कसमीरशब्दमुखेतरं।
पंचकोशगुणत्रयादिसमस्तधर्मविलक्षणं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 6।।
पंचमुद्रसुलक्षदर्शनभावमात्रनिरूपणं, विद्युदादिदधद्धगिद्रुचिरविनोदविवर्तनं।
चिन्मुखान्तरवर्तिनं विलसद्विलासममायकं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 7।।
पंचवर्णसुचिर्विचित्रविशुद्धतत्त्वविचारणं, चन्द्रसूर्यचिदग्निमण्डलमण्डितं घनचिन्मयं।
चित्कलापरिपूर्णमन्तरचित्समाधिनिरीक्षणं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 8।।
हंसचारमखण्डनादमनेकवर्णमरूपकम्, शब्दजालमयम्चराचरजन्तुदेहनिवासिनं।
चक्रराजमनाहतोद्भवमेघवर्णमतः परम्, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 9।।
जन्मकर्मविलीनकारणहेतुभूतमभूतकं, जन्मकर्मनिवारकं रुचिपूरकं भवतारकं।
नामरूपविवर्जितं निजनायकं शुभदायकं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 10।।
तप्तकांचनदीप्यमानमहाणुमात्रमरूपकं, चन्द्रिकान्तरतारकैरेवमुज्ज्वलं परमास्पदं।
नीलनीरदमध्यमस्थितविद्युदादिविभाषितं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 11।।
स्थूलसूक्ष्मसकारणोत्तरखेलनं परिपालनं, विश्वतैजसप्राज्ञचेतसमन्तरात्मनिजां सुखं।
सर्वकारणमीश्वरं नटरान्तरालविहारकं, प्रातरेव हि मानसन्तर्भावये गुरुपादुकां।। 12।।

।। श्रीमद्जगद्गुर्वाद्यशंकराचार्यविरचितं श्रीसद्गुरुपादस्तवं।।

4.4 गुर्वष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

1ॐ श्रीसद्गुरवे नमः	2ॐ अज्ञाननाशकाय नमः	3ॐ अदम्भिने नमः
4ॐ अद्वैतप्रकाशकाय नमः	5ॐ अनपेक्षाय नमः	6ॐ अनसूयवे नमः
7ॐ अनुपमाय नमः	8ॐ अभयप्रदात्रे नमः	9ॐ अमानिने नमः
10ॐ अहिंसामूर्तये नमः	11ॐ अहेतुकदयासिंधवे नमः	12ॐ अहंकारनाशकाय नमः
13ॐ अहंकारवर्जिताय नमः	14ॐ आचार्येन्द्राय नमः	15ॐ आत्मसंतुष्टाय नमः
16ॐ आनन्दमूर्तये नमः	17ॐ आर्जवयुक्ताय नमः	18ॐ उचितवाचे नमः
19ॐ उत्साहिने नमः	20ॐ उदासीनाय नमः	21ॐ उपरताय नमः
22ॐ ऐश्वर्ययुक्ताय नमः	23ॐ कृतकृत्याय नमः	24ॐ क्षामवते नमः
25ॐ गुणातीताय नमः	26ॐ चारुवाग्विलासाय नमः	27ॐ चारुहासाय नमः
28ॐ छिन्नसंशयाय नमः	29ॐ ज्ञानदात्रे नमः	30ॐ ज्ञानयज्ञतत्पराय नमः
31ॐ तत्त्वदर्शिने नमः	32ॐ तपस्विने नमः	33ॐ तापहाराय नमः
34ॐ तुल्यनिन्दास्तुतये नमः	35ॐ तुल्यप्रियाप्रियाय नमः	36ॐ तुल्यमानापमानाय नमः
37ॐ तेजस्विने नमः	38ॐ त्यक्तसर्वपरिग्रहाय नमः	39ॐ त्यागिने नमः
40ॐ दक्षाय नमः	41ॐ दान्ताय नमः	42ॐ दृढव्रताय नमः
43ॐ दोषवर्जिताय नमः	44ॐ द्वन्द्वातीताय नमः	45ॐ धीमते नमः
46ॐ धीराय नमः	47ॐ नित्यसंतुष्टाय नमः	48ॐ निरहंकाराय नमः

49ॐ निराश्रयाय नमः
50ॐ निर्भयाय नमः
51ॐ निर्मदाय नमः
52ॐ निर्ममाय नमः
53ॐ निर्मलाय नमः
54ॐ निर्मोहाय नमः
55ॐ निर्योगक्षेमाय नमः
56ॐ निर्लोभाय नमः
57ॐ निष्कामाय नमः
58ॐ निष्क्रोधाय नमः
59ॐ निस्संगाय नमः
60ॐ परमसुखदाय नमः
61ॐ पंडिताय नमः
62ॐ पूर्णाय नमः
63ॐ प्रमाणप्रवर्तकाय नमः
64ॐ प्रियभाषिणे नमः
65ॐ ब्रह्मकर्मसमाधये नमः
66ॐ ब्रह्मात्मनिष्ठाय नमः
67ॐ ब्रह्मात्मविदे नमः
68ॐ भक्ताय नमः
69ॐ भवरोगहराय नमः
70ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदात्रे नमः
71ॐ मंगलकर्त्रे नमः
72ॐ मधुरभाषिणे नमः
73ॐ महात्मने नमः
74ॐ महावाक्योपदेशकर्त्रे नमः
75ॐ मितभाषिणे नमः
76ॐ मुक्ताय नमः
77ॐ मौनिने नमः
78ॐ यतचित्ताय नमः
79ॐ यतये नमः
80ॐ यदृच्छालाभसंतुष्टाय नमः
81ॐ युक्ताय नमः
82ॐ रागद्वेषवर्जिताय नमः
83ॐ विदिताखिलशास्त्राय नमः
84ॐ विद्याविनयसंपन्नाय नमः
85ॐ विमत्सराय नमः
86ॐ विवेकिने नमः
87ॐ विशालहृदयाय नमः
88ॐ व्यवसायिने नमः
89ॐ शरणागतवत्सलाय नमः
90ॐ शान्ताय नमः
91ॐ शुद्धमानसाय नमः
92ॐ शिष्यप्रियाय नमः
93ॐ श्रद्धावते नमः
94ॐ श्रोत्रियाय नमः
95ॐ सत्यवाचे नमः
96ॐ सदामुदितवदनाय नमः
97ॐ समचित्ताय नमः
98ॐ समानाधिकवर्जिताय नमः
99ॐ समाहितचित्ताय नमः

100ॐ सर्वभूतहिताय नमः 101ॐ सिद्धाय नमः 102ॐ सुलभाय नमः
103ॐ सुशीलाय नमः 104ॐ सुहृदे नमः 105ॐ सूक्ष्मबुद्धये नमः
106ॐ संकल्पवर्जिताय नमः 107ॐ संप्रदायविदे नमः 108ॐ स्वतन्त्राय नमः।

4.5 सूर्यनमस्कारः -

1. ॐ मित्राय नमः 2. ॐ रवये नमः 3. ॐ सूर्याय नमः 4. ॐ भानवे नमः
5. ॐ खगाय नमः 6. ॐ पूष्णे नमः 7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः 8. ॐ मरीचये नमः
9. ॐ आदित्याय नमः 10. ॐ सवित्रे नमः 11. ॐ अर्काय नमः 12. ॐ भास्कराय नमः।

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने, आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं तेजस्तेषां च जायते।
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्, सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम्।।

4.6 सप्तश्लोकी दुर्गा -

शिव उवाच - देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनि, कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः।
देव्युवाच - शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् , मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ।।

अथ विनियोगः :-

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रस्य नारायणर्षये नमः -शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः -मुखे, ॐ श्रीमहाकालीमहा - लक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः - हृदये, ॐ ऐं बीजाय नमः -गुह्ये, ॐ क्लीं कीलकाय नमः - नाभौ, ॐ सौः शक्तये नमः - पादयोः, ॐ श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थे सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ करादिन्यासः -

मन्त्राः	अथ अंगन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ ऐं नमः	हृदयाय नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ क्लीं नमः	शिरसे स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः
ॐ सौः नमः	शिखायै वषट्	मध्यमाभ्यां नमः
ॐ ऐं नमः	कवचाय हुम्	अनामिकाभ्यां नमः
ॐ क्लीं नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ सौः नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

।। ॐ भूर्भुःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।। 1 ।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।। 2 ।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणी नमोऽस्तु ते ।। 3 ।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे,सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते ।। 4 ।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।। 5 ।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।6।।
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि, एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।। 7 ।।

।। इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ।।

4.7 दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला –

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी। दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।1।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा। दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।2।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी। दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।3।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी। दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।4।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी। दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।5।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी। नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।।6।।

4.8 दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् -

जगदधीश्वरी	देवि	ज्योतिरूपिणी	।	जनविमोहिनी	देवि	जन्ममोचिनी	।1।
आशुतोषिणी	देवि	आमयापहा	।	आर्तिनाशिनी	देवि	अद्भुतप्रभा	।2।
अन्तरार्चिता	देवि	अक्ष्यगोचरा	।	अक्षमालिनी	देवि	अक्षयप्रभा	।3।
कामरूपिणी	देवि	कामितार्थदा	।	कान्तिविग्रहा	देवि	कामपूजिता	।4।
काशिकेश्वरी	देवि	कल्मषापहा	।	कूटरूपिणी	देवि	कुंकुमार्चिता	।5।
कंजलोचना	देवि	कम्रविग्रहा	।	काव्यलोलुपा	देवि	कामकोटिका	।6।
कचजिताम्बुदा	देवि	कादिरूपिणी	।	कौलसेविता	देवि	कौलिनीपरा	।7।
चंचलेक्षणा	देवि	चारुविग्रहा	।	चक्रधारिणी	देवि	चक्रवासिनी	।8।
चण्डिकेश्वरी	देवि	चित्कलानिधे	।	चण्डमुण्डहा	देवि	चण्डविग्रहा	।9।
तन्त्ररूपिणी	देवि	तापहारिणी	।	तारकेश्वरी	देवि	तारकक्षमा	।10।
त्रिपुरमालिनी	देवि	त्रिपुरतापिनी	।	त्रिपुरसुन्दरी	देवि	त्रिपुरवासिनी	।11।
त्र्यम्बकेश्वरी	देवि	त्रिगुणरूपिणी	।	त्र्यक्षरीपरा	देवि	त्राहि त्राहि माम्	।12।।
दक्षकन्यका	देवि	दक्षिणार्चिता	।	दाडिमोपमा	देवि	दिव्यविग्रहा	।13।

पीठरूपिणी	देवि	पापनाशिनी	।	प्राणरूपिणी	देवि	पन्नगेश्वरी	।14।
भूमरूपिणी	देवि	फाललोचना	।	भण्डदैत्यहा	देवि	भीमविक्रमा	।15।
भार्गवार्चिता	देवि	भास्करप्रभा	।	भोगदायिनी	देवि	भोगिनीपरा	।16।
मूलकारिणी	देवि	मूलवासिनी	।	मुक्तिदायिनी	देवि	मुक्तिरूपिणी	।17।
मोहनाशिनी	देवि	मोक्षमार्गदा	।	मांगलाकृति -	देवि	मंजुलप्रभा	।18।
वर्णरूपिणी	देवि	वागधीश्वरी	।	वामकेश्वरी	देवि	वांछितार्थदा	।19।
वेदरूपिणी	देवि	वेद्यवर्जिता	।	विश्वसाक्षिणी	देवि	विश्वधारिणी	।20।
सर्वरूपिणी	देवि	सर्ववर्जिता	।	शर्मदायिनी	देवि	शम्भुमोहिनी	।21।
सत्यचित्सुखा	देवि	सान्द्रविग्रहा	।	संचितापहा	देवि	सद्गतिप्रदा	।22।
साक्षिरूपिणी	देवि	साक्षिवर्जिता	।	शिष्टपूजिता	देवि	इष्टरूपिणी	।23।
सिंहवाहिनी	देवि	सिंहविक्रमा	।	सिद्धपूजिता	देवि	सिद्धिदायिनी	।24।
हरिहरार्चिता	देवि	हेममालिनी	।	हंसरूपिणी	देवि	हंससेविता	।25।
ह्रींपदाभिदा	देवि	ह्रींपदप्रिया	।	ह्रींनिवासिनी	देवि	ह्रींपरायणा	।26।
विश्वतोमुखी	देवि	वीरपूजिता	।	विष्णुरूपिणी	देवि	वैष्णवीपरा	।27।
सत्वरं हर	मम	शोकसंभ्रमं	।	सन्मुखे भव	देवि	सन्ततं मम	।28।

4.9 दुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्रम् –

श्रीदेव्युवाच –

मम नामसहस्रं च शिवपूर्वविनिर्मितम्। तत्पठ्यताम् विधानेन तदा सर्वं भविष्यति।।1।।

इत्युक्त्वा पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान्। तदेव नाम साहस्रं दकारादि वरानन।।2।।

रोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखविनाशकम्। सर्वासां पूजितं नाम श्रीदुर्गादेवता मता।।3।।

निजबीजं भवेद् बीजं मन्त्रं कीलकमुच्यते। सर्वाशापूरणे देवि विनियोगः प्रकीर्तितः।।4।।

अथ विनियोगः –

ॐ अस्य श्रीदुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीदुर्गादेवता, दुं बीजं, चामुण्डायै विच्चे कीलकम्, ऐं क्लीं सौः शक्तिः, सर्वाशापूरणे पाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ अस्य श्रीदुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्रस्य शिव ऋषये नमः – शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः – मुखे, ॐ श्रीदुर्गा देवतायै नमः – हृदये, ॐ दुं बीजाय नमः –गुह्ये, ॐ श्रीचामुण्डायै विच्चे कीलकाय नमः – नाभौ, ॐ ऐं क्लीं सौः शक्तये नमः – पादयोः, ॐ सर्वाशापूरणे पाठे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

मन्त्राः	अथ अंगन्यासः	अथ करन्यासः
ॐ ऐं नमः	हृदयाय नमः।	अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ क्लीं नमः	शिरसे स्वाहा।	तर्जनीभ्यां नमः
ॐ सौः नमः	शिखायै वषट्।	मध्यमाभ्यां नमः
ॐ ऐं नमः	कवचाय हुम्।	अनामिकाभ्यां नमः
ॐ क्लीं नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ सौः नमः	अस्त्राय फट्।	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ स्तोत्रपाठः -

दुं दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलनिवासिनी।।5।।

दुर्गमार्गप्रविष्टा च दुर्गमार्गप्रवेशिनी। दुर्गमार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया।।6।।

दुर्गमार्गगृहीतार्चा दुर्गमार्गस्थितात्मिका। दुर्गमार्गस्तुतिपरा दुर्गमार्गस्मृतिपरा।।7।।

दुर्गमार्गसदास्थली दुर्गमार्गरतिप्रिया। दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी।।8।।

दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा दुर्गमार्गप्रवर्तिनी। दुर्गासुरनिहन्त्री च दुर्गासुरनिषूदिनी।।9।।

दुर्गासुरहरादूती दुर्गासुरविनाशिनी। दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सुका।।10।।

दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता। दुर्गासुरवधप्रेप्सु दुर्गासुरमखान्तकृत्।।11।।
दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी। दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्राविणी सदा।।12।।
दुर्गविक्षोभनकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तनी। दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तनी।।13।।
दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी। दुर्गदैत्यहरत्राता दुर्गदैत्यासृगुन्मदा।।14।।
दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता। दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशारदा।।15।।
दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमर्दिनी। दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धाट्टहासिनी।।16।।
दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी। दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी।।17।।
दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी। दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया।।18।।
दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यानसाधना। दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी।।19।।
दुर्गमागमसन्धाना दुर्गमागमसंस्तुता। दुर्गमागमदुर्ज्ञेया दुर्गमस्तुतिसम्मता।।20।।
दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता। दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा।।21।।
दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता। दुर्गमाचारसन्तुष्टा दुर्गमाचारतोषिता।।22।।
दुर्गमाचारनिर्वृत्ता दुर्गमाचारपूजिता। दुर्गमाचारकसिता दुर्गमस्थानदायिनी।।23।।
दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा। दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी।।24।।
दुर्गनाडीमार्गगती दुर्गनाडीप्रचारिणी। दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता।।25।।
दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा। दुर्गनाडीरतरता दुर्गनाडीशसंस्तुता।।26।।

दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता। दुर्गनाडीशक्रोडस्था दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका।।27।।
दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडीशनिषेविता। दरीस्थाना दरीस्थानवासिनी दनुजान्तकृत्।।28।।
दरीकृततपस्या च दरीकृतहरार्चना। दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरतिक्रिया।।29।।
दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडितपुत्रिका। दरीसन्दर्शनरता दरीरोपितवृश्चिका।।30।।
दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा। दनुजान्तकरी दीना दनुजसन्तानदारिणी।।31।।
दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी। दानवध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी।।32।।
दानवीदानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा। दानवेन्द्रनिहन्त्री दानवद्वेषिणी सती।।33।।
दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता। दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा।।34।।
दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया। दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा।।35।।
दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिरता। दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी।।36।।
दानवारिधृतप्रेमा दुःखशोकविमोचिनी। दुःखहन्त्री दुःखदात्री दुःखनिर्मूलकारिणी।।37।।
दुःखनिर्मूलनकरी दुःखदारिद्र्यनाशिनी। दुःखहरा दुःखनाशा दुःखग्रामा दुरासदा।।38।।
दुःखहीना दुःखधारा द्रविणाचारदायिनी। द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टा द्रविणत्यागतोषिका।।39।।
द्रविणस्पर्शसन्तुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा। द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा।।40।।
द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा। द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिता।।41।।
द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका। द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी।।42।।

द्रविणाकर्षणकरी द्रविणौघविसर्जनी। द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी।।43।।
दीनमाता दीनबन्धु दीनविघ्नविनाशिनी। दीनसेव्या दीनसिद्धा दीनसाध्या दिगम्बरी।।44।।
दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी। दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी।।45।।
दीनमानवचेतःस्था दीनमानवहर्षदा। दीनदैन्यनिघातेच्छु दीनद्रविणदायिनी।।46।।
दीनसाधनसन्तुष्टा दीनदर्शनदायिनी। दीनपुत्रादिदात्रि च दीनसम्पद्विधायिनी।।47।।
दत्तात्रेयध्यानरता दत्तात्रेयप्रपूजिता। दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धा दत्तात्रेयविभाविता।।48।।
दत्तात्रेयकृतार्हा दत्तात्रेयप्रसाधिता। दत्तात्रेयर्षिदात्री दत्तात्रेयसुखप्रदा।।49।।
दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा। दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता।।50।।
दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी।।51।।
दत्तात्रेयकृतानन्दा दत्तात्रेयांशसम्भवा। दत्तात्रेयविभूतिस्था दत्तात्रेयानुसारिणी।।52।।
दत्तात्रेयगीतिरता दत्तात्रेयधनप्रदा। दत्तात्रेयदुःखहरा दत्तात्रेयवरप्रदा।।53।।
दत्तात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा। देवकन्या देवमान्या देवदुःखविनाशिनी।।54।।
देवसिद्धा देवपूज्या देवेज्या देववन्दिता। देवमान्या देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी।।55।।
देवरम्या देवरता देवकौतुकतत्परा। देवक्रीडा देवव्रीडा देववैरिविनाशिनी।।56।।
देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी। देवदेवप्रिया देवी देवदानववन्दिता।।57।।
देवदेवरतानन्दा देवदेववरोत्सुका। देवदेवप्रेमरता देवदेवप्रियंवदा।।58।।

देवदेवप्राणतुल्या देवदेवनितम्बिनी। देवदेवहृतमना देवदेवसुखावहा।।59।।
देवदेवक्रोडरता देवदेवसुखप्रदा। देवदेवमहानन्दा देवदेवप्रचुम्बिता।।60।।
देवदेवोपभुक्ता च देवदेवानुसेविता। देवदेवगतप्राणा देवदेवगतात्मिका।।61।।
देवदेवहर्षदात्री देवदेवसुखप्रदा। देवदेवमहानन्दा देवदेवविलासिनी।।62।।
देवदेवधर्मपत्नी देवदेवमनोगता। देवदेववधूर्देवी देवदेवार्चनप्रिया।।63।।
देवदेवाङ्गनिलया देवदेवाङ्गशायिनी। देवदेवाङ्गसुखिनी देवदेवाङ्गवासिनी।।64।।
देवदेवाङ्गभूषा च देवदेवाङ्गभूषणा। देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रियान्तकृत्।।65।।
देवदेवप्रियप्राणा देवदेवप्रियात्मिका। देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया।।66।।
देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकाश्रया। देवदेवार्चकाविघ्ना देवदेवप्रसूरपि।।67।।
देवदेवस्य जननी देवदेवविधायिनी। देवदेवस्य रमणी देवदेवहृदाश्रया।।68।।
देवदेवेष्टदेवा च देवतापसपातिनी। देवताभावसन्तुष्टा देवताभावतोषिता।।69।।
देवताभाववरदा देवताभावसिद्धिदा। देवताभावसंसिद्धा देवताभावसम्भवा।।70।।
देवताभावसुखिनी देवताभाववन्दिता। देवताभावसुप्रीता देवताभावहर्षदा।।71।।
देवताविघ्नहन्त्री च देवताद्विष्टनाशिनी। देवतापूजितपदा देवताप्रेमतोषिता।।72।।
देवतागारनिलया देवतासौख्यदायिनी। देवतानिजभावा च देवताहृतमानसा।।73।।
देवताकृतपादार्चा देवताहृतभक्तिका। देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतादनुः।।74।।

दुँ दुर्गायै नमो नाम्नी दुँ फट् मन्त्रस्वरूपिणी। दुँ नमो मन्त्ररूपा च दुँ नमो मूर्तिकात्मिका।।75।।
दूरदर्शिप्रिया दुष्टादुष्टभूतनिषेविता। दूरदर्शिप्रेमरता दूरदर्शिप्रियंवदा।।76।।
दूरदर्शिसिद्धिदात्री दूरदर्शिप्रतोषिता। दूरदर्शिकण्ठसंस्था दूरदर्शिप्रहर्षिता।।77।।
दूरदर्शिगृहीतार्चा दूरदर्शिप्रतर्पिता। दूरदर्शिप्राणतुल्या दूरदर्शिसुखप्रदा।।78।।
दूरदर्शिभ्रान्तिहरा दूरदर्शिहृदास्पदा। दूरदर्श्यरिविद्भावा दीर्घदर्शिप्रमोदिनी।।79।।
दीर्घदर्शिप्राणतुल्या दीर्घदर्शिवरप्रदा। दीर्घदर्शिदर्शदात्री दीर्घदर्शिप्रहर्षिता।।80।।
दीर्घदर्शिमहानन्दा दीर्घदर्शिगृहालया। दीर्घदर्शिगृहीतार्चा दीर्घदर्शिहृतार्हणा।।81।।
दयादानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला। दयार्द्रा च दयाशीला दयाढ्या दयात्मिका।।82।।
दयाम्बुधिर्दयासारा दयासागरपारगा। दयासिन्धुर्दयाभारा दयादानरता सदा।।।83।।
दयावद्वत्सला देवी दयावत्करुणाकरी। दयावत्भक्तिसुखिनी दयावत्परितोषिता।।84।।
दयावत्स्नेहनिरता दयावत्प्रतिपादिका। दयावत्त्राणकर्त्री च दयावन्मुक्तिदायिनी।।85।।
दयावद्भावसन्तुष्टा दयावत्परिबोधिता। दयावत्तारणपरा दयावत्सिद्धिदायिनी।।86।।
दयावत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्ररूपिणी। दयावद्देहनिलया दयाबन्धु दयाश्रया।।87।।
दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी। दयालुशरणासक्ता दयालुदेहमन्दिरा।।88।।
दयालुभक्तिभावस्था दयालुप्राणरूपिणी। दयालुसुखदादम्भा दयालुप्रेमवर्षिणी।।89।।
दयालुवशगा दीर्घा दीर्घाङ्गी दीर्घलोचना। दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षु दीर्घबाहुलतात्मिका।।90।।

दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दारुणा। दारुणासुरहन्त्री च दारुणासुरदारिणी।।91।।
दारुणाहवकत्री च दारुणाहवहर्षिता। दारुणाहवहोमाढ्या दारुणाचलनाशिनी।।92।।
दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता। दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी।।93।।
दारुणेक्षणसंयुक्ता दोश्चतुष्कविराजिता। दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता।।94।।
दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यातविक्रमा। दशरथार्चितपदा दाशरथिप्रिया सदा।।95।।
दाशरथिप्रेमतुष्टा दाशरथिरतिप्रिया। दाशरथिप्रियकरी दाशरथिरप्रियंवदा ।।96।।
दाशरथीष्टसन्दात्री दाशरथीष्टदेवता। दाशरथिद्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूल्यदा।।97।।
दाशरथिप्रियतमा दाशरथिप्रपूजिता। दशाननारिसम्पूज्या दशाननारिदेवता।।98।।
दशाननारिप्रमदा दशाननारिजन्मभूः। दशाननारिरतिदा दशाननारिसेविता।।99।।
दशाननारिसुखदा दशाननारिवैरिहृत्। दशाननारीष्टदेवी दशग्रीवारिवन्दिता।।100।।
दशग्रीवारिजननी दशग्रीवारिभाविनी। दशग्रीवारिसहिता दशग्रीवसभाजिता।।101।।
दशग्रीवारिरमणी दशग्रीववधूरपि। दशग्रीवनाशकर्त्री दशग्रीववरप्रदा।।102।।
दशग्रीवपुरस्था च दशग्रीववधोत्सुका। दशग्रीवप्रीतिदात्री दशग्रीवविनाशिनी।।103।।
दशग्रीवहवकरी दशग्रीवानपायिनी। दशग्रीवप्रियावन्द्या दशग्रीवाहृता तथा।।104।।
दशग्रीवाहितकरी दशग्रीवेश्वरप्रिया। दशग्रीवेश्वरप्राणा दशग्रीववरप्रदा।।105।।
दशग्रीवेश्वररता दशवर्षीयकन्यका। दशवर्षीयबाला च दशवर्षीयवासिनी।।106।।

दशपापहरा दम्या दशहस्तविभूषिता। दशशस्त्रलसद्दोष्का दशदिक्पालवन्दिता।।107।।
दशावताररूपा च दशावताररूपिणी। दशविद्याभिन्नदेवी दशप्राणस्वरूपिणी।।108।।
दशविद्यास्वरूपा च दशविद्यामयी तथा। दृक्स्वरूपा दृक्प्रदात्री दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी।।109।।
दिगन्तरा दिगन्तरस्था दिगम्बरविलासिनी। दिगम्बरसमाजस्था दिगम्बरप्रपूजिता।।110।।
दिगम्बरसहचरी दिगम्बरकृतास्पदा। दिगम्बरहृताचित्ता दिगम्बरकथाप्रिया।।111।।
दिगम्बरगुणरता दिगम्बरस्वरूपिणी। दिगम्बरशिरोधार्या दिगम्बरहृताश्रया।।112।।
दिगम्बरप्रेमरता दिगम्बररतातुरा। दिगम्बरीस्वरूपा च दिगम्बरीगणार्चिता।।113।।
दिगम्बरीगणप्राणा दिगम्बरीगणप्रिया। दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरी।।114।।
दिगम्बरगणस्पर्शमदिरापानविह्वला। दिगम्बरीकोटिवृता दिगम्बरीगणावृता।।115।।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा। दुरन्तदानवद्वेष्टी दुरन्तदनुजान्तकृत्।।116।।
दुरन्तपापहन्त्री दस्रनिस्तारकारिणी। दस्रमानससंस्थाना दस्रज्ञानविवर्धिनी।।117।।
दस्रसम्भोगजननी दस्रसम्भोगदायिनी। दस्रसम्भोगभवना दस्रविद्याविधायिनी।।118।।
दस्रोद्वेगहरा दस्रजननी दस्रसुन्दरी। दस्रभक्तविधाज्ञाना दस्रद्विष्टविनाशिनी।।119।।
दस्रापकारदमनी दस्रसिद्धिविधायिनी। दस्रताराराधिता च दस्रमातृप्रपूजिता।।120।।
दस्रदैन्यहरा चैव दस्रतातनिषेविता। दस्रपितृशतज्योति दस्रकौशलदायिनी।।121।।
दशशीर्षारिसहिता दशशीर्षारिकामिनी। दशशीर्षपुरीदेवी दशशीर्षसभाजिता।।122।।

दशशीर्षारिसुप्रीता दशशीर्षवधूप्रिया। दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी।।123।।
दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्षहरात्मिका। दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षारिवन्दिता।।124।।
दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी। दशशीर्षज्ञानदात्री दशशीर्षारिदेहिता।।125।।
दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्ररूपता। दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारिणी।।126।।
दशशीर्षभ्रातृतुष्टा दशशीर्षवधूप्रिया। दशशीर्षवधूप्राणा दशशीर्षवधूरता।।127।।
दैत्यगुरुरतासाध्वी दैत्यगुरुप्रपूजिता। दैत्यगुरूपदेष्ट्री च दैत्यगुरुनिषेविता।।128।।
दैत्यगुरुगतप्राणा दैत्यगुर्तापनाशिनी। दुरन्तदुःखशमनी दुरन्तदमनीतमी।।129।।
दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिनी। दुरन्तवैरिदमनी दुरन्तदैत्यनाशिनी।।130।।
दुरन्तकलुषघ्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी। दराशया दराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी।।131।।
दर्शनीया च दृश्या च अदृश्या च दृष्टिगोचरा। दूतीयागप्रिया दूती दूतीयागकरप्रिया।।132।।
दूतीयागकरानन्दा दूतीयागसुखप्रदा। दूतीयागकरायाता दूतीयागप्रमोदिनी।।133।।
दुर्वासःपूजिता दुर्वासोमुनिभाविता। दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमुनिहृत्पदा।।134।।
दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता। दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनिसिद्धिदा।।135।।
दुर्वासोमुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता। दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता।।136।।
दुर्वासोमुनिसंचारा दुर्वासोहृदयंगमा। दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा।।137।।
दुर्वासस्तापसाराध्या दुर्वासस्तापसाश्रया। दुर्वासस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी।।138।।

दुर्वासोमुनिकन्या च दुर्वासोद्धूतसिद्धिदा। दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा।।139।।
दरघ्नी दरहन्त्री च दरयुक्ता दराश्रया।।140।।
दरस्मेरा दरापांगी दयादात्री दयाश्रमा। दस्रपूज्या दस्रमाता दस्रदेवी दुरोन्मदा।।141।।
दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रातापविमोचिनी। दस्रक्षोभहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका।।142।।
दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या दैत्यगुर्वङ्गनाप्रिया। दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धा दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुका।।143।।
दैत्यगुरुप्रियतमा दैत्यगुरुनिषेविता। दैत्यगुरुप्रसूरूपा दैत्यगुरुकृतार्हणा।।144।।
देवगुरुप्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता। देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा।।145।।
देवगुरुज्ञानदात्री देवगुरुप्रमोदिनी। दैत्यस्त्रीगणसंपूज्या दैत्यस्त्रीगणप्रपूजिता।।146।।
दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी। दैत्यस्त्रीगणपूज्या च दैत्यस्त्रीगणवन्दिता।।147।।
दैत्यस्त्रीगणचित्तस्था दैत्यस्त्रीगणभूषिता। दैत्यस्त्रीगणसंसिद्धा दैत्यस्त्रीगणतोषिता।।148।।
दैत्यस्त्रीगणहस्तस्थचारुचामरवीजिता। दैत्यस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपिता।।149।।
देवाङ्गनाधृतादर्शदृष्ट्यत्यर्थमुखचन्द्रमा। देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका।।150।।
देवस्त्रीगणहस्तस्थदीपमालाविलेचना। देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी।।151।।
देवनारीकरगतवासकासवपायिनी। देवनारीकङ्कतिककृत्तकेशनिमार्जना।।152।।
देवनारीरुष्ट्यगात्रा देवनारीकृतोत्सुका। देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजिता।।153।।
देवनारीविचित्राङ्गी देवस्त्रीदत्तभोजना। देवस्त्रीगणगीता च देवस्त्रीगीतनोत्सुका।।154।।

देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यप्रदर्शिनी। देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादुपदाम्बुजा।।155।।
देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्पनिषेदुषी। देवनारीचारुकराकलिताङ्घ्र्यादिदेहिका।।156।।
देवनारीकरव्यग्रतालवृत्तमरुत्सुखा। देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा।।157।।
देवकोटिस्तुतिनुता देवकोटिकृतार्हणा। देवकोटिगीतगुणा देवकोटिकृतस्तुतिः।।158।।
दन्तदृष्ट्योद्वेगफला देवकोलाहलाकुला। द्वेषरागपरित्यक्ता देवस्त्रीद्वेषरागविवर्जिता।।159।।
दामपूज्या दामभूषा दामोदरविलासिनी। दामोदरप्रेमरता दामोदरभगिन्यपि।।160।।
दामोदरप्रसूर्दामोदरपत्नीपतिव्रता। दामोदराभिन्नदेहा दामोदररतिप्रिया।।161।।
दामोदराभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा। दामोदरकृतप्राणा दामोदरगतात्मिका।।162।।
दामोदरकौतुकाढ्या दामोदरकलाकला। दामोदरालिङ्गिताङ्गी दामोदरकुतूहला।।163।।
दामोदरकृताह्लादा दामोदरसुचुम्बिता। दामोदरसुताकृष्टा दामोदरसुखप्रदा।।164।।
दामोदरसहाढ्या च दामोदरसहायिनी। दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा।।165।।
दामोदरानुकूला च दामोदरनितम्बिनी। दामोदरजलक्रीडाकुशलादर्शनप्रिया।।166।।
दामोदराबलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदा। दामोदरलसद्रासकेलीकौतुकिनी तथा।।167।।
दामोदरभ्रातृका च दामोदरपरायणा। दामोदरधरा दामोदरवैरिविनाशिनी।।168।।
दामोदरोपजाया च दामोदरनिमन्त्रिता। दामोदरपराभूता दामोदरपराजिता।।169।।
दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा। दामोदरोत्सवरता दामोदरोत्सवावहा।।170।।

दामोदरस्तन्यदात्री दामोदरगवेषिता। दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयन्तीप्रसाधिता।।171।।
दमयन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्वरूपिणी। दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिविभाविता।।172।।
दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी। दमनर्षिस्वरूपा च दम्भपूरितविग्रहा।।173।।
दम्भहन्त्री दम्भदात्री दम्भलोकविमोहिनी। दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमर्दिनी।।174।।
दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसन्तानदारिणी। दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तरोग्याथ दाम्भिका।।175।।
दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्तहारा च दारिका। दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना।।176।।
दत्तमति दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका। दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्र्यनाशिनी।।177।।
दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गा च दासदा। दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा।।178।।
दाररूपा दारवासा दारवासिहृदास्पदा। दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया।।179।।
दारवासिविनिर्नीता दारवासिसमर्चिता। दारवास्याहृतप्राणा दारवास्यारिनाशिनी।।180।।
दारवासिविघ्नहरा दारवासिविमुक्तिदा। दाराग्निरूपिणी दारा दारकार्यविनाशिनी।।181।।
दम्पती दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणरूपिका। दम्पतिस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनप्रिया।।182।।
दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी। दाम्पत्याचारनिरता दाम्पत्यामोदमोदिता।।183।।
दाम्पत्यामोदसुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी। दम्पतीष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी।।184।।
दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी। दाडिमीफलसन्तुष्टा दाडिमीफलमानसा।।185।।
दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी। दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी।।186।।

दाडिमीफलसाम्योरुपयोधरविवर्जिता। दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी।।187।।
दक्षकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः। दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी।।188।।
दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी। दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी।।189।।
दक्षात्मजा दक्षसूनुर्दक्षजा दक्षजातिका। दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा।।190।।
दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी दक्षकन्यका। दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा।।191।।
दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता। दक्षिणाचारसुखिनी दक्षिणाचारसाधिता।।192।।
दक्षिणाचारमोक्षाप्ति दक्षिणाचारवन्दिता। दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता।।193।।
द्वारपालप्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता। द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी।।194।।
द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता। दोषकरा दोषहरा दोषराशिविनाशिनी।।195।।
दोषाकरविभूषाढ्या दोषाकरपालिनी। दोषाकरसहस्राभा दोषाकरसमानना।।196।।
दोषाकरमुखीदिव्या दोषाकरकराग्रजा। दोषाकरसमज्योति दोषाकरसुशीतला।।197।।
दोषाकरश्रेणी दोषसदृशापाङ्गवीक्षणा। दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता।।198।।
दोशाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका। दोषाकरलसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी।।199।।
दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया। दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूर्मता।।200।।
दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरपि। दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी।।201।।
दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा। दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी।।202।।

दोषापूजकवात्सल्यकारिणिजगदम्बिका। दोषापूजकवैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत्।।203।।
दोषापूजकसन्तुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा। दमप्रसूनसम्पूज्या दमपुष्पप्रिया सदा।।204।।
दुर्योधनपूज्या च दुःशासनसमर्चिता। दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधिः।।205।।
दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता। दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा।।206।।
दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोहरा। दण्डपाणिहृतप्राणा दण्डपाणिसुसिद्धिदा।।207।।
दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता। दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता।।208।।
दण्डपाणिप्राप्तचर्चा दण्डपाण्युन्मुखी सदा। दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखा।।209।।
दण्डहस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत्। दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा।।210।।
दण्डविद्या दण्डमाता दण्डिखण्डकनाशिनी। दण्डिप्रिया दण्डिपूज्या दण्डिसन्तोषदायिनी।।211।।
दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी। दस्युवर्गकृतार्हा च दस्युवर्गविनाशिनी।।212।।
दस्युनिर्नाशिनी दस्युकुलनिर्नाशिनी तथा। दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा।।213।।
दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा। दुष्टवर्गनिग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी।।214।।
दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी। दूषकद्वेषणकरी दाहिका दहनात्मिका।।215।।
दारुकारिनिहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता। दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता।।216।।
दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता। दर्भमयी दर्भतनुर्दर्भसर्वस्वरूपिणी।।217।।
दर्भकर्माचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा। दर्भानुकूला दर्भार्या दर्वीपात्रानुदामिनी।।218।।

दमघोषप्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा। दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी तथा।।219।।
दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्नाशितमहाबला। दन्तदंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका।।220।।
दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तनिर्नाशितासुरा। दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी।।221।।
दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी। दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी।।222।।
दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता। दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी।।223।।
दधीचिकुलसम्भूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा। दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता।।224।।
दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता। दधीचिसुखदात्री च दधीचिदीनहारिणी।।225।।
दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी। दधीचिकुलसम्भूता दधीचिकुलपालिनी।।226।।
दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी। दधीचिदानसन्तुष्टा दधीचिदानदेवता।।227।।
दधीचिजयसम्प्रीता दधीचिजपमानसा। दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका।।228।।
दधीचिजपसन्तुष्टा दधीचिजपतोषिणी। दधीचितापसाराध्या दधीचिशुभदायिनी।।229।।
दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलयमद्युति। नाम्नां सहस्रं दुर्गाया दादीनामिति कीर्तितम्।।230।।

अथ फलश्रुतिः :-

यः पठेत्साधकाधीशः सर्वसिद्धिर्लभेत्तु सः। प्रातर्मध्याह्नकाले च सन्ध्यायां नियतः शुचिः।।231।।
तथाऽर्धरात्रसमये स महेश इवाऽपरः। शक्तियुक्तो महारात्रौ महावीरः प्रपूजयेत्।।232।।

महादेवीं मकाराद्यैर्पंचभिर्द्रव्यसत्तमैः। तत्पठेत्स्तुतिमिमां यः स च सिद्धिस्वरूपधृक्।।233।।
देवालये श्मशाने च गङ्गातीरे निजे गृहे। वाराङ्गनागृहे चैव श्रीगुरोः सन्निधावपि।।234।।
पर्वते प्रान्तरे घोरे स्तोत्रमेतत्सदा पठेत्। दुर्गानामसहस्रं हि दुर्गां पश्यति चक्षुषा।।235।।
शतावर्तनमेतस्य पुरश्चरणमुच्यते। स्तुतिसारो निगदितः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।236।।

।। इति श्रीकुलार्णवे महारहस्ये दकारादिदुर्गासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

4.10 देव्यपराधक्षमायाचनास्तोत्रम् -

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।1।।
विधेरज्ञानेन द्रविण - विरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पंचाशीतेरधिकमुपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणं।।5।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ।।6।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदं ।।7।।
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववांछापि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतत्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं, न हि माता समुपेक्षते सुतं।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।।। श्रीदुर्गार्पणमस्तु।।

4.11 सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् -

ॐ अस्य श्रीसिद्धकुञ्जिकास्तोत्रस्य शिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो, दुर्गा देवता, ऐं ह्रीं क्लीं बीजम्, चामुण्डायै शक्तिः, विच्चे कीलकं, मम चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

ॐ अस्य श्रीसिद्धकुञ्जिकास्तोत्रस्य शिवर्षये नमः - शिरसि। **ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे। **ॐ श्रीदुर्गादेवतायै नमः** - हृदये। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बीजाय नमः** - गुह्ये। **ॐ चामुण्डायै शक्तये नमः** - पादयोः। **ॐ विच्चे कीलकाय नमः** - नाभौ। **ॐ मम चतुर्वर्गफलसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ मन्त्राः	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यास
ॐ ह्रां नमः -	**हृदयाय नमः।**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रीं नमः -	**शिरसे स्वाहा।**	**तर्जनीभ्यां नमः।**
ॐ ह्रूं नमः -	**शिखायै वषट्।**	**मध्यमाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रैं नमः -	**कवचाय हुम्।**	**अनामिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रौं नमः -	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रः नमः -	**अस्त्राय फट्।**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

श्री शिव उवाच -

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्। येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।।1।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्। न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्।।2।।
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्। अति गुह्यतरं देवि देवनामपि दुर्लभम्।।3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति। मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत्कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।।4।।

अथ मन्त्र: :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं स: ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

अथ स्तोत्रम् :-

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनी। नम: कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनी।।1।।
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनी।।2।।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे। ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।।3।।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तुते। चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।4।।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणी।।5।।
धां धीं धूं धूर्जटे: पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी। क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।।6।।
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नम:।।7।।
अं कं चं टं तं पं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं। धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।
पां पीं पूं पार्वति पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।।8।। सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।।9।।
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे। अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।10।।
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्। न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।11।।

।। इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

4.12 खड्गमालास्तोत्रम् :-

अथ विनियोग: :-

ॐ अस्य श्रीशुद्धशक्तिसंबुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिवरुणादित्य ऋषि:, देवीगायत्रीछन्द:, सात्त्विक-ककारभट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलया महाकामेश्वरी श्रीललिताभट्टारिकादेवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्ति:, सौ: कीलकं, मम खड्गसिद्ध्यर्थे सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोग:।

अथ ऋष्यादिन्यास: :-

ॐ अस्य श्रीशुद्धशक्तिसंबुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिवरुणादित्यर्षये नम: -शिरसि, **ॐ श्रीदेवीगायत्री छन्दसे नम:** - मुखे, **सात्त्विकककारभट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलया महाकामेश्वरी श्रीललिताभट्टारिका देवतायै नम:** - हृदये, **ॐ ऐं बीजाय नम:** - गुह्ये, **ॐ क्लीं शक्तये नम:** - पादयो:, **ॐ सौ: कीलकाय नम:** - नाभौ, **मम खड्गसिद्ध्यर्थे सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोगाय नम:** - सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यास: :-

अथ मन्त्रा:		अथ हृदयादिन्यास:	अथ करन्यास
ॐ कएईलह्रीं सर्वशक्तिधन्विने नम:	-	**हृदयाय नम:।**	**अंगुष्ठाभ्यां नम:।**
ॐ हसकहलह्रीं नित्यशक्तिधन्विने नम:	-	**शिरसे स्वाहा।**	**तर्जनीभ्यां नम:।**
ॐ सकलह्रीं आनन्दबोधशक्त्यै नम:	-	**शिखायै वषट्।**	**मध्यमाभ्यां नम:।**
ॐ कएईलह्रीं नित्यशक्तिधन्विने नम:	-	**कवचाय हुम्।**	**अनामिकाभ्यां नम:।**
ॐ हसकहलह्रीं आनन्दबोधितायै नम:	-	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**	**कनिष्ठिकाभ्यां नम:।**
ॐ सकलह्रीं नित्यशक्तिधाम्ने नम:	-	**अस्त्राय फट्।**	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।**

अथवा –

अथ मन्त्राः	अथ हृदयादिन्यासः	अथ करन्यास
ॐ ह्रां नमः –	हृदयाय नमः।	अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं नमः –	शिरसे स्वाहा।	तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं नमः –	शिखायै वषट्।	मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं नमः –	कवचाय हुम्।	अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं नमः –	नेत्रत्रयाय वौषट्।	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः नमः –	अस्त्राय फट्।	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् –

ह्रींकारासनगर्भितानलशिखां सौः क्लीं कलाबिभ्रतीं, सौवर्णाम्बरधारिणीं वरसुधाधौतां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम्।
वन्दे पुस्तकपाशांकुशधरां स्रग्भूषितामुज्ज्वलां, त्वां गौरीं त्रिपुरां परात्परकलां श्रीचक्रसंचारिणीम्।।1।।
आरक्ताभां त्रिनेत्रामरुणिमवसनां रत्नताटंकरम्यां, हस्ताम्भोजैस्पाशांकुशमदनसायकैर्विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुंगवक्षोरुहपरिविलुठत्तारहारोज्ज्वलांगीं, ध्यायेदंभोरुहहस्तामरुणिमवसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।2।।
छन्दःपादयुगां निरुक्तिः सुभगां शिक्षां च जंघायुगां, ऋग्वेदो युगां यजुस्तु जघनां सामवेदोऽथर्वोदराम्।
तर्कन्यायकुचां श्रुतिस्मृतिकरां काव्यादि ते श्रावणां, वेदान्तामृतलोचनां भगवतीं श्रीराजराजेश्वरीम्।।3।।
सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्, तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।

पाणिभ्याम‌लिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं, सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।4।।

तादृशां खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै। अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति।।5।।

पंचोपचारपूजा :-

ॐ लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै गन्धं समर्पयामि।

ॐ हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै पुष्पं समर्पयामि।

ॐ यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै धूपं समर्पयामि।

ॐ रं वह्नितत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै दीपं समर्पयामि।

ॐ वं अमृततत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीललितादेव्यै सर्वोपचारार्थे सर्वोपचारान्परिकल्पयामि समर्पयामि।।

अथ मूलमन्त्रं जपेत् (यथाशक्तिः 108 वा) :- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः।

अथ खड्गमालापाठः :-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमस्त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमंगले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचारमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे (गरिमासिद्धे) महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे

इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकाम्य (काम) सिद्धे ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशंकरि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहन चक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहंकाराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गांकुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि सर्वसंक्षोभिणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसंमोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशंकरि सर्वरंजिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसंपत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसंपत्प्रदे सर्वप्रियंकरि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्यूपशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णसंयोगिनि सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिनि निगर्भयोगिनि वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि बाणिनि चापिनि पाशिन्यंकुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्य योगिनि श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्री त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्बे महात्रिपुरसुन्दरि महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसाराज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमो नमः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

अथ फलस्तुतिः -

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रतः। अग्निवातमहाक्षोभे राज्ञो राष्ट्रस्य विप्लवे।।1।।
लुण्ठने तस्करभये संग्रामे सलिलप्लवे। समुद्रयानविक्षोभे भूतप्रेतादिके भये।।2।।
अपस्मारज्वरव्याधिमृत्युक्षामाधिजे भये। शाकिनीपूतनायक्षरक्षकूष्माण्डजे भये।।3।।
मित्रभेदे गृहभये व्यसनेष्वाभिचारिके। अन्येष्वपि च दोषेषु मालामन्त्रं स्मरेन्नरः।।4।।
सर्वोपद्रव निर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत्। आपत्काले नित्यपूजां विस्तारात्कर्तुमारभेत्।।5।।
एकवारं जपध्यानं सर्वपूजाफलं लभेत्। नवावरणदेवीनां ललिताया महौजसः।।6।।
एकत्र गणनारूपो वेदवेदांगगोचरः। सर्वागमरहस्यार्थः स्मरणात्पापनाशिनी।।7।।
ललिताया महेशान्या मालाविद्या महीयसी। नरवश्यं नरेन्द्राणां वश्यं नारीवशंकरम्।।8।।
अणिमादिगुणैश्वर्यं रंजनं पापभंजनम्। तत्तदावरणस्थायि देवतावृन्दमन्त्रकम्।।9।।
मालामन्त्रं परं गुह्यं परं धाम प्रकीर्तितम्। गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।।10।।
शक्तिमालापंचधा स्याच्छिवमाला च तादृशी। तस्माद्गोप्यतराद्गोप्यं रहस्यं भुक्तिमुक्तिदम्।।11।।

।। इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे देवीखड्गमालास्तोत्रं संपूर्ण।।

4.13 श्रीबगलामुख्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

बगलामुखल यन्त्र (पृष्ठ संख्या 439, चित्र संख्या 15) की स्थापना कर सर्वाधि पूजा करके स्तोत्र और कवच दोनों का पाठ करें।

ॐ श्रीगणेशाय नमः।

श्रीनारद उवाच -

भगवन्देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक। शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना।।

श्री भगवानुवाच –

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। पीताम्बर्या महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम्।।

यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात्। रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

अथ विनियोगः –

ॐ अस्य श्रीपीताम्बराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य नारद (सदाशिव) ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः, स्वाहा कीलकम्, श्रीपीताम्बराप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ अस्य श्रीपीताम्बराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य नारद (सदाशिव) ऋषये नमः – शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः – मुखे, श्रीपीताम्बरा देवतायै नमः – हृदये, ॐ बीजाय नमः – गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः – पदयोः, स्वाहा कीलकाय नमः – नाभौ, श्रीपीताम्बराप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः – सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यासः –

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ वाचं मुखं पादं स्तम्भय कवचाय हुम्, ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ करन्यासः –

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वाचं मुखं पादं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् –

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्, हेमाभाङ्गरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।।

हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनां संबिभ्रतीं भूषणै – र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।1।।

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्याम्, सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीम्, देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।2।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीं। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बरां तां द्विभुजां नमामि।।3।।

ततः पंचोपचार/षोडशोपचार पूजा करें। तत्पश्चात् 108 आवृत्तेर्निम्नमन्त्रस्य जपेत् –

अथ मन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पादं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

अथ स्तोत्रपाठः –

बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकरभामिनी। बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि।।1।।

महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी। नारसिंहप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी।।2।।

जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामपूजिता। कृष्णा कपर्दिनी कूल्या कलहा कलकारिणी।।3।।

बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी। कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी।।4।।

कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी। केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी।।5।।

केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता। रुद्ररूपा रुद्रमूर्ति रुद्राणी रुद्रदेवता।।6।।
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता। नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता।।7।।
नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता। नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा।।8।।
नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता। नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी।।9।।
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी। सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा।।10।।
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी। भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा।।11।।
रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी। यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी।।12।।
लङ्कापतिध्वंसकरी लङ्केशी रिपुवन्दिता। लङ्कानाथकुलहरा महारावणहारिणी।।13।।
देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी। पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी।।14।।
वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा। वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता।।15।।
वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना। बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता।।16।।
पीतपुष्पप्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी। इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।17।।
यः पठेत्पाठयेद्वापि श्रृणुयाद्वा समाहितः। तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति नैवात्र संशयः।।18।।
प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत्सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम्।
द्रुतं भवेत्तस्य समस्तबुद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः।।19।।

।। इति श्रीविष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्रीबगलाष्टोत्तरशतनामस्तेत्रं संपूर्णम्।।

4.14 श्रीबगलामुखीस्तोत्रम्

ॐ श्रीगणेशाय नमः।

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थली, लसत्कनकचम्पवद् द्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम्।
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वाञ्चलां, स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्स्तम्भिनीम्।।1।।
पीयूषोदधिमध्यगेऽथ विलसद्रक्तोत्पले मण्डले, सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।
स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीं, इत्थं ध्यायति यान्ति तस्य सहसा सद्यः सर्वसंपदः।2।
देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पांजलीन्, भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्।
पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद्बीजं स्मरेत्पार्थिवं, तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात्।।3।
वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति, क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः, श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः।।4।
मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते, यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते।
मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे, त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखे स्तम्भो भवेद्वादिनाम्।।5।।
दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं, भूभृत्सन्दमनं चलन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम्।
सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णेक्षणं, मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।।6।।
मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय, ब्राह्मीं मुद्रया दैत्यदेवधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।
शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराङ्गि पीताम्बरे, विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे।।7।।

मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये, श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे।
मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे, दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम्।।8।।
संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये, विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायां।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा, गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः।9।।
त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंछेदिनी, योषित्कर्षणकारिणी जनमनःसंमोहसंदायिनी।
स्तम्भोत्सारणकारिणी पशुमनःसंमोहसंदायिनी, जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा।।10।।
विद्या लक्ष्मीर्नित्यसौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः।
मानो भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं, प्राप्तं तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण।।11।।
त्वङ्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि। दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तुते।।12।।
पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोमलाम्। शिलामुद्गरहस्तां च तां स्मरे बगलामुखीम्।।13।।
ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।14।।
नित्यं स्तोत्रमिदं देव्याः पवित्रमिह यो पठत्यादराद्, धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।
राजानोऽप्यरयो मदान्धकारिणः सर्पामृगेन्द्रादिकास, ते वै यान्तिविमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सिद्धयः।15।

।। इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीबगलामुखीस्तोत्रं संपूर्णम्।।

4.15 श्रीबगलामुखीकवचम् -

ॐ श्रीगणेशाय नमः। अथ विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीकवचमहामन्त्रस्य श्रीपरमेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः, स्वाहा कीलकम्, बगलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीकवचमहामन्त्रस्य श्रीपरमेश्वरर्षये नमः - शिरसि, **अनुष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः** - हृदये, **ॐ बीजाय नमः** - गुह्ये, **ॐ ह्लीं शक्तये नमः** - पादयोः, **ॐ स्वाहा कीलकाय नमः** - नाभौ, **बगलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यासः -

अथ मन्त्राः	करन्यासः	हृदयादिन्यासः
ॐ ॐ	**अंगुष्ठाभ्यां नमः,**	**हृदयाय नमः,**
ॐ ह्लीं	**तर्जनीभ्यां नमः,**	**शिरसे स्वाहा,**
ॐ स्वाहा	**मध्यमाभ्यां नमः,**	**शिखायै वषट्,**
ॐ ॐ	**अनामिकाभ्यां नमः,**	**कवचाय हुम्,**
ॐ ह्लीं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः,**	**नेत्रत्रयाय वौषट्,**
ॐ स्वाहा	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।**	**अस्त्राय फट्।**

ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् –

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बरां तां द्विभुजां नमामि।।

अथ कवचपाठः –

प्रणवो मे शिरः पातु ललाटे ह्लीं सदाऽवतु। बकारो भ्रूयुगं पातु गकारः पातु लोचनम्।।1।।
लाकारः पातु मे जिह्वां मुकारः पातु मे श्रुतिं। खीकारः पातु मे तालु सर्कारश्चिबुकं तथा।।2।।
वकारस्पातु मे कण्ठं स्कन्धौ पातु दुकारकः। बाहू ष्टाकारकः पातु करौ पातु नांकारकः।।3।।
स्तनौ वाकारकः पातु चंकारो हृदयं मम। मुकारः पातु मे नाभौ खंकारो जठरं मम।।4।।
कुक्षिं पाकारकः पातु दंकारः पातु मे कटिं। स्तकारो जघनं पातु म्भकारः पातु मे गुदं।।5।।
गुह्यं यकारकः पातु जिकारोऽवतु जानुनी। ऊरू ह्वांकारकः पातु गुल्फौ पातु कीकारकः।।6।।
पादौ लकारकः पातु यकारोऽंगुल्यः सर्वदा। बुकारः पातु रोमाणि द्धिंकारस्तु त्वचं तथा।।7।।
विकारः पातु सर्वाङ्गे नाकारः पातु सर्वदा। प्राच्यां शकारकः पातु दक्षिणायां यकारकः।।8।।
वारुणीं ह्लीं सदा पातु कौबेर्यां प्रणवेन तु। भूमौ स्वाकारकः पातु हाकारोर्ध्वं सदाऽवतु।।9।।
ब्रह्मास्त्रदेवता पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु। इति ते कथितं देवि दिव्यमङ्गपंजरकम्।।10।।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थे महदैश्वर्यदायकम्। लिखित्वा ताडपत्रे तु कण्ठे बाहौ च धारयेत्।।11।।
देवासुरपिशाचेभ्यो भयं तस्य नहि क्वचित्। कर्मणानेन सन्दर्शो त्रिषु लोकेषु सिद्ध्यते।।12।।
महाभये राजे च यः शतवारं पठेत्तस्य। गृहे रणे विवादे च सर्वापत्तिर्विमुच्यते।।13।।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो ब्रह्मास्त्रमुपासते। न तस्य सिद्ध्यते मन्त्रः कल्पकोटिशतैरपि।।14।।

।। इति श्रीपार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचं संपूर्णम्।।

4.16 महाविद्यास्तोत्रम् सप्रयोग:

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्। उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरीम्।।

संकल्प: –

ॐ तत्सदद्य .....मासे .....पक्षे .....तिथौ .....वासरे .....गोत्रोत्पन्नः .....शर्माऽहं मम गृहे उत्पन्नभूत प्रेत पिशाच ग्रहादि सकलदोषशमनार्थं झटित्यारोग्यताप्राप्त्यर्थं च सकलबाधानिवृत्तिपूर्वकस्ववांछितफलप्राप्त्यर्थं लक्ष्यसिद्ध्यर्थं च महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये।

विनियोग: –

ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमहामन्त्रस्यऽर्यमा ऋषिः, गायत्री छन्दः, कालिका देवता, हुँ श्रीं ह्रीं बीजं, वज्रवैरोचनीये शक्तिः, हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकम्, श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोगः।

अथ ऋष्यदिन्यास: –

ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमहामन्त्रस्यऽर्यमर्षये नमः – शिरसि, **ॐ गायत्रीछन्दसे नमः** – मुखे, **ॐ कालिकादेवतायै नमः** –हृदये, **ॐ हुँ श्रीं ह्रीं बीजाय नमः** –गुह्ये, **ॐ वज्रवैरोचनीये शक्तये नमः** – पादयोः, **ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकाय नमः** – नाभौ, **ॐ श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोगाय नमः** – सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यास: –

ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः –हृदयाय नमः, **ॐ वज्रवैरोचनीये नमः** –शिरसे स्वाहा, **ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः** –शिखायै वषट्, **ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः** –कवचाय हुम्, **ॐ वज्रवैरोचनीये नमः** – नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः** –सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः -

ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः -अंगुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ वज्रवैरोचनीये नमः** -तर्जनीभ्यां नमः, **ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः** -मध्यमाभ्यां नमः, **ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः** -अनामिकाभ्यां नमः, **ॐ वज्रवैरोचनीये नमः** - कनिष्ठिकाभ्यां नमः, **ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः** - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ ध्यानम् -

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां, वीणानागेन्द्रशंखायुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं, वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्।।

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीं उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्रपौत्राभिवर्धिनीं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशंकरीं सर्वराजवशंकरीं सर्वयन्त्रमन्त्रप्रभेदिनीं ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुराह्निकं पांचाह्निकं षाडाह्निकं साप्ताहिकं अर्धमासिकं मासिकं षाणमासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-शुल्काविषिक्षयकरीं विस्फोटकादिविनाशनाय स्वाहा। बेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वर-अग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर-आभिचारिकज्वर-वष्टिज्वर- स्मरादिज्वर प्रयोगादिविनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। अक्षिशूल-कुक्षिशूल- कर्णशूल-घ्राणशूलोदरशूल- गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादार्धशूलादिविनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटक-सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा परमात्मरक्षा मित्ररक्षा अग्निरक्षा प्रत्यग्निरक्षा परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्।

ॐ विश्रामय ज्वरज्वरेश्वरकुमारदण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणीशूलिनी गारुडीरक्षा स्वाहा।। गंगादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे। रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी।। ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललोहपिंगिलि कटिमपुरी किलि किलि किलि महादण्ड कुमारदण्ड नृत्य नृत्य विष्णुवन्दित हंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा।

अथ बीज मन्त्राः - ॐ ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रूं ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा। ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां स्वाहा। ॐ क्रां क्रां स्वाहा। ॐ क्रीं स्वाहा। ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा। ॐ क्रूं स्वाहा। ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा। ॐ क्रें स्वाहा। ॐ क्रें क्रें स्वाहा। ॐ क्रैं स्वाहा। ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा। ॐ क्रों स्वाहा। ॐ क्रों क्रों स्वाहा। ॐ क्रौं स्वाहा। ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा। ॐ क्रं स्वाहा। ॐ क्रं क्रं स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा। ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा। ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा। ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा। ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ

स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ लेषाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभयादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ शिं शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा । ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ मं मंगलाय स्वाहा। ॐ बुं बुधाय स्वाहा। ॐ बृं बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय स्वाहा। ॐ शं शनैश्चराय स्वाहा। ॐ रां राहवे स्वाहा। ॐ कें केतवे स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस- सर्ववेतालवृश्चिकभयादिविनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंहशार्दूलगजेन्द्रग्राहव्याघ्रादिमृगाान् बध्नामि स्वाहा। ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आशां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वजन्तुं बध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध, मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

अथ दिग्बन्धनम् -

ॐ माहेन्द्रदिशायामैरावतारूढं वज्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।1।।

ॐ अग्निदिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।2।।

ॐ दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं यममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।3।।

ॐ नैर्ऋत्यदिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।4।।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।5।।

ॐ वायव्यदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।6।।

ॐ उत्तरदिशायां नरारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।7।।

ॐ ईशानदिशायां वृषभारूढं शूलहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमीशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ईशानमण्डलं

बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।8।।

ॐ अन्तरदिशायां लोष्टनागारूढं चक्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।9।।

ॐ ब्रह्मदिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्माण्डमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्माण्डमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।10।।

ॐ विष्णुदिशायां गरुडारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।।11।।

ॐ अग्निदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभयादिविनाशनाय स्वाहा।।12।।

ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।1।।

ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याग्निज्वालस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।2।।

ॐ दक्षिणदिशायामेकपिंगलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिंगलिकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।3।।

ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचको नाम राक्षसस्तस्य मरीचकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।4।।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।5।।

ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।6।।

ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।7।।

ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।8।।

ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभयादिविनाशनाय स्वाहा।।9।।

(इसके अनन्तर कवच पढ़ें।) अथ कवचं -

ॐ शिखां मे रक्षतु क्लीं ब्रह्माणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।1।।

ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।2।।

ॐ भुजौ मे रक्षतु सौः शर्वाणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।3।।

ॐ उदरम्मे रक्षतु रुद्राणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।4।।

ॐ जंघे मे रक्षतु नारसिंही। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।5।।

ॐ सर्वांगाणि मे रक्षतु सुन्दरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।6।।

परिणामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ। एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्।।

स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्म समाचरेत्। दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्।।

सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात्प्रेतशान्तिर्विशेषतः। अष्टोत्तरशतेनाभिमन्त्र्य च पाययेज्जलम्।।

सर्वमन्त्रकीलनस्तोत्रमन्त्रः (इदं मन्त्रं 108 वारं जपेत्)

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

अथ महाविद्यास्तोत्रम्

ॐ हुं श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ऐं।। (108 बार जपें)

महाविद्याध्यानम् -

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्। महाभीमां करालास्यां सिद्धिविद्याधरैर्युताम्।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्। एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये।।

शिव उवाच -

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्। मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यम् दुर्लभं शवसाधनम्।।1।।
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्। क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्।।2।।
तव प्रसादाद्देवेशि सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः। नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।।3।।
नमस्ते कालिके कालि महाभयविनाशिनी। शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।।4।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्। जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।।5।।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्। हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।।6।।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकारभूषिताम्। हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।।7।।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्। मंत्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्।।8।।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्। उग्रामुग्रमयीमुग्र-तारामुग्रगणैर्युताम्।।9।।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्। श्यामांगीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।।10।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्। विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।।11।।

विद्यामाद्यां गुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्। श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।।12।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्। त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।।13।।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्। सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।।14।।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।।15।।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्। दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।16।।
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्। प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।।17।।
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्। भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।।18।।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्। त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।।19।।
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्। कमलां छिन्नभालां च मातंगीं सुरसुन्दरीम्।।20।।
षोडषीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्। सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामंत्रविशोधिनीम्।।21।।
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये। इत्येवं च वरारोहां स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।।22।।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि। कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।।23।।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्। त्रिपक्षे मंत्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि।24।।
चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा। निशामुखे पठेत्स्तोत्रं मंत्रसिद्धिमवाप्नुयात्।।25।।
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मंत्रसिद्धिरनुत्तमा। जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी।।26।।

।। इति श्रीमुण्डमालातन्त्रान्तर्गतमहाविद्यास्तोत्रं संपूर्णम्।।

अथ महाविद्याकवचम्

विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीमहाविद्याकवचमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, महाविद्या देवता, हुं श्रीं ह्रीं बीजं, वज्रवैरोचनीये शक्तिः, हुं हुं फट् स्वाहा ऐं कीलकम्, धर्मार्थकाम-मोक्ष-सिद्ध्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोगः।

ऋष्यदिन्यासः -

ॐ अस्य श्रीमहाविद्याकवचमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषये नमः - शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः - मुखे, ॐ महाविद्यादेवतायै नमः - हृदये, ॐ हुं श्रीं ह्रीं बीजाय नमः - गुह्ये, ॐ वज्रवैरोचनीये शक्तये नमः - पादयोः, ॐ हुं हुं फट् स्वाहा ऐं कीलकाय नमः - नाभौ, ॐ श्रीधर्मार्थकाममोक्षसिद्ध्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे पाठे च विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे।

भैरव उवाच -

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्। आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्टफलप्रदम्।।1।।
कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः। छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने।।2।।
ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि। रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।।3।।
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः। भगमाला सर्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी।।4।।
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा। उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु।।5।।
माहेश्वरी चाग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा। वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु।।6।।

इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्। न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि।।7।।

।। इति रुद्रयामलान्तर्गतमहाविद्याकवचं संपूर्णम्।।

4.17 श्री राजराजेश्वर्यष्टकं

अम्बा शाम्भवी चन्द्रमौलिरबलाऽपर्णा ह्युमापार्वती, काली हैमवती शिवा त्रिनयनी कात्यायनी भैरवी।
सावित्री नवयौवना शुभकरी साम्राज्यलक्ष्मीप्रदा, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 1।।
अम्बा मोहिनी देवता त्रिभुवनी ह्यानन्दसंदायिनी, वाणी पल्लवपाणी वेणुमुरलीगानप्रियालोलिनी।
कल्याणी ह्युडुराजबिम्बवदना धूम्राक्षसंहारिणी, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 2।।
अम्बा नूपुररत्नकंकणधरी केयूरहारान्विता, जाजीचंपकवैजयन्तिलहरी ग्रैवेयकै राजिता।
वीणावेणुनिनादमंडितकरा वीरासने संस्थिता, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 3।।
अम्बा रौद्रिणी भद्रकाली बगला ज्वालामुखी वैष्णवी, ब्रह्माणी त्रिपुरान्तकी सुरनुता देदीप्यमानोज्ज्वला।
चामुण्डाश्रितरक्षपोषजननी दाक्षायणी पल्लवी, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 4।।
अम्बा शूलधनुःकुशांकुशधरी ह्यर्धेन्दुबिम्बाधरी, वाराही मधुकैटभप्रशमनी वाणीरमासेविता।
मल्लाद्यासुरमूकदैत्यदमनी माहेश्वरी ह्यम्बिका, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 5।।
अम्बा सृष्टिविनाशपालनकरी ह्यार्यादिसंसेविता, गायत्री प्रणवाक्षरामृतरस - पूर्णानुसंधीकृता।
ॐकारी विनतासुतार्चितपदा ह्युद्दण्डदैत्यापहा, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 6।।
अम्बा शाश्वती चागमादिविनुता ह्याद्या महादेवता, या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजननी या वै जगन्मोहिनी।
या पंचप्रणवादिरेफजननी या चित्कलामालिनी, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 7।।

अम्बा पालितभक्तराजरचितं ह्यम्बाष्टकं यः पठेत्, अम्बा लोककटाक्षवीक्षललिता चैश्वर्यमव्याहता।
अम्बा पावनमन्त्रराजपठनादन्ते च मोक्षप्रदा, चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।। 8।।

।।इति श्री राजराजेश्वर्यष्टकं संपूर्णम्।।

4.18 अथ श्रीसौभाग्यविद्याकवचम्

(पंचदशीमन्त्रः- श्रीचक्रबीजमंत्रसूचककवचम्)

अथ विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीसौभाग्यविद्याकवचस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमाहात्रिपुरासुन्दरी देवता, कएईलह्रीं बीजं, हसकहलह्रीं शक्तिः, सकलह्रीं कीलकम्, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीसौभाग्यविद्याकवचपाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः

अस्य श्रीसौभाग्यविद्याकवचस्य दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः-शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः- मुखे, ॐ श्रीमहात्रिपुरासुन्दरीदेवतायै नमः- हृदये, ॐ कएईलह्रीं बीजाय नमः- गुहये, ॐ हसकलह्रीं शक्तये नमः-पादयोः, ॐ सकलह्रीं कीलकाय नमः- नाभौ, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीसौभाग्यविद्याकवचपाठे विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गेः।

अथ करादिन्यासः -

अथ मन्त्राः	हृदयादिन्यासः	करन्यासः
ॐ कएईलह्रीं	**हृदयाय नमः,**	**अंगुष्ठाभ्यां नमः,**
ॐ हसकहलह्रीं	**शिरसे स्वाहा,**	**तर्जनीभ्यां नमः,**
ॐ सकलह्रीं	**शिखायै वषट्,**	**मध्यमाभ्यां नमः,**

ॐ कएईलह्रीं कवचाय हुम्, अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ हसकहलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ सकलह्रीं अस्त्राय फट्। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम्:-

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्, तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीम्, सौम्यां रत्नधटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

ईश्वर उवाच -

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्रविग्रहं। सर्वार्थसाधकं देवि सर्वसंपत्प्रदायकम्।।1।।
ऋषिस्स्याद्दक्षिणामूर्तिश्छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तिताः। देवता सुंदरी प्रोक्ता विनियोगः प्रकीर्तितः।।2।।
ककारः पातु शीर्ष मे एकारः पातु फालकं। ईकारः पातु वक्त्रं मे लकारः पातु कर्णयोः।।3।।
ह्रींकारः पातु हृदयं वाग्भवं च सदावतु। हकारः पातु जठरं सकारो नाभिदेशकम्।।4।।
ककारोऽव्यादस्थिभागं हकारः पातु लिंगकं। लकारो जानुनी पातु ह्रींकारो जंघयुग्मकम्।।5।।
कामराजं सदा पातु जठरादिप्रदेशकं। सकारः पातु कंठं मे ककारः पातु पृष्ठके।।6।।
लकारोऽव्यान्नितम्बं मे ह्रींकारः पातु मूलके। शक्तिबीजं सदा पातु मूलविद्या सदाऽवतु ।।7।।
त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा। त्रिपुराम्बा सदा पातु पातु त्रिपुरभैरवी।। 8।।
अणिमाद्यास्तथा पातु ब्राह्माद्या पातु मां सदा। नवमुद्रास्तथा पातु कामाकर्षिणिपूर्विका:।।9।।

पातु मां षोडशारे तु ह्यनङ्गकुसुमादिकाः। पातु मामष्टपत्रेषु सर्वसंक्षोभणादिकाः।।10।।
पातु मां तत्त्रिकोणेषु मध्यदिक्कोणके तथा। सर्वज्ञाद्यास्तथा पातु सर्वाभीष्टप्रदायिकाः।।11।।
वशिन्याद्यास्तथा पातु वसुपत्रैश्च देवताः। त्रिकोणस्यान्तरालेषु पातु मामायुधानि च ।।12।।
कामेश्वर्यादिकाः पातु त्रिकोणे कोणसंस्थिताः। बिंदुचक्रे सदा पातु श्रीमत्त्रिपुरसुंदरी।। 13।।
इतीदं कवचं देवि कवचं मन्त्रसूचकं। यस्मै तस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन।। 14।।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि लक्ष्मीस्तस्य प्रजायते। अष्टम्यां चतुर्दश्यां यः पठेत्त्रितयः सदा।
प्रसन्ना सुन्दरी तस्य सर्वसौभाग्यदयिनी।। 15।।

।। इति श्रीचक्रत्रिपुरसुंदरीदेवताप्रीत्यर्थे सौभाग्यविद्याकवचं समर्पयामि।।

4.19 अथ मृत्युञ्जयस्तोत्रम्

अथ विनियोगः -

ॐ अस्य मृत्युञ्जयस्तोत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, मृत्युञ्जयो देवता, हौं बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकं, सर्वरोगनिवृत्तिपूर्वकारोग्यप्राप्त्यर्थे सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे च पाठे विनियोगः।।

अथ ऋष्यादि न्यासः -

ॐ मार्कण्डेय ऋषये नमः - शिरसि, **ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ मृत्युञ्जयदेवताभ्यो नमः** - हृदये, **ॐ हौं बीजाय नमः**- गुह्ये, **ॐ जूं शक्तये नमः**- पादयोः, **ॐ सः कीलकाय नमः**- नाभौ, **ॐ सर्वरोगनिवृत्तिपूर्वकारोग्यप्राप्त्यर्थे सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।।

अथ करादिन्यासः –

अथ मन्त्राः	हृदादिन्यासः	करन्यासः
ॐ हौं –	हृदयाय नमः,	अंगुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ जूं –	शिरसे स्वाहा,	तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ सः –	शिखायै वषट्,	मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ हौं –	कवचाय हुम्,	अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ जूं –	नेत्रत्रयाय वौषट्,	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ सः –	अस्त्राय फट्।।	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम् –

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तस्थितम्। मुद्रपाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।।
कोटीन्दुप्रस्खलत्सुधाप्लुततनुं हारातिभूषोज्ज्वलम्। कान्तं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्।।

अथ स्तोत्रम् –

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।1।।
नीलकण्ठं कलामूर्तिं कालघ्नं कलनाशनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।2।।
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं विमनप्रदम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।3।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।4।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।5।।

त्र्यक्षं चतुर्भुजं सन्तं जटामुकुटधारणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।6।।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं नागाभरणभूषितम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।7।।
अनाथमव्ययं सन्तं अक्षमालाधरं हरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।8।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदध्यायिनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।9।।
अर्धनारीश्वरं देवं पार्वतीप्राणनायकम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।10।।
प्रलयस्थितिकर्तारं आदिकर्तारमीश्वरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।11।।
व्योमकेशं विरूपाक्षं चन्द्रार्धकृतशेखरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।12।।
गंगाधरं शशिधरं शंकरं शूलपाणिनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।13।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।14।।
कल्पायुर्देहि मे पुण्यं यावदायुररोगताम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।15।।
शिवेशानं महादेवं वामदेवं सदाशिवम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।16।।
उत्पत्तिस्थितिसंहार-कर्तारमीश्वरं गुरुम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।17।।
मार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ। तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचोरभयं क्वचित्।18।।
शतावृत्तिं प्रकर्तव्यं संकटे कष्टनाशनम्। शुचिर्भूत्वा पठेत्स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।19।।
मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।20।।
तावकत्वाद् गतप्राणः तव चित्तोऽहं सदा मृड। इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यम्बकाख्यं जपेदिदम्।।21।।

स्तोत्र पाठ के बाद इस मन्त्र का कम से कम एक माला जपे –

"नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय योगीनां पतये नमः।।"

।। इति मार्कण्डेयपुराणोक्तं मृत्युञ्जयस्तोत्रं संपूर्णम्।।।। शिवार्पणमस्तु।।

4.20 सरस्वतीवन्दना

वर दे ! वीणावादिनी वर दे।। टेक।।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव, भारत में भर दे।।1।।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर।

कलुषभेद तम हर प्रकाश भर, जग मग जग कर दे ।।2।।

नव गति नव लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ भव जलद मन्द्र रव।

नव नभ के नव विहग वृन्द को, नव पर नव स्वर दे।।3।। हरिः ओम् तत्सत्।।

4.21 अथ स्कन्दब्रह्माण्डपुराणयोरन्तर्गतशनिस्तोत्राणि :-

1. अथ शनिषोडशनामस्तोत्रम् :-

कोणः शनैश्चरो मन्दः छायाहृदयनन्दनः, मार्तण्डजः सुधासौरिर्नीलवस्त्रांजनद्युतिः।

अब्राह्मणः क्रूरः क्रूरकर्मातंकीग्रहनायकः, कृष्णो धर्मानुजः शान्तः शुष्को दारावरप्रदः।।

2. अथ शनिदशनामस्तोत्रम् :-

कोणस्थः पिंगलो बभ्रूः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।

3. अथ दशरथकृतशनिस्तोत्रम् :-

ॐ अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजं, नं शक्तिः, मं कीलकम्, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः -

ॐ श्री दशरथर्षये नमः- शिरसि, ॐ श्री त्रिष्टुप्छन्दसे नमः- मुखे, ॐ श्री शनैश्चरदेवतायै नमः- हृदये, ॐ शं बीजाय नमः- गुह्ये, ॐ नं शक्तये नमः- पादयोः, ॐ मं कीलकाय नमः- नाभौ, ॐ श्री शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः- सर्वाङ्गे।

अथ करादिन्यासः -

अथ मन्त्राः	करन्यासः	हृदादिन्यासः
ॐ शनैश्चराय नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
ॐ मन्दगतये नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
ॐ अधोक्षजाय नमः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
ॐ सौरये नमः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
ॐ अभयंकराय नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,	नेत्रत्रयाय वौषट्,
ॐ ऊर्ध्वरोम्णे नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।।

।। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।।

अथ ध्यानम्:-

'चापासनो गृध्ररथस्तु नीलः, प्रत्यङ्मुख काश्यपगोत्रजातः। सशूलचापेषुगदाधरोऽव्यात्सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरिः।।1।।
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी, गृध्रासनस्थो विकृताननश्च। केयूरहारदिविभूषिताङ्गः, सदाऽवतु मे मन्दगतिः प्रसन्नः।।2।।

अथ स्तोत्रम्:-

कोणोऽन्तको रौद्रो यमोऽथ बभ्रूः, कृष्णः शनिः पिंगलो मन्दः सौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां, तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 1।।
सुरासुरकिंपुरुषोरगेन्द्राः गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 2।।
नरा नरेन्द्रा पशवो मृगेंन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 3।।
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानि वेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 4।।
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानै र्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 5।।
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायां।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 6।।
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टास्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 7।।
स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।। 8।।

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते।।9।।
कोणस्थः पिंगलो बभ्रूः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।। 10।।
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। शनैश्चरकृतपीडा न कदाचिद्भविष्यति।। 11।।

4. अथ पद्मपुराणान्तर्गतदशरथकृतशनिस्तोत्रम् :-
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकं। राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाकरोत्।। 1।।
नमो नीलमुखाब्जाय नीलोत्पलनिभाय च। नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च।। 2।।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदर भयानक। नमः परुषनेत्राय स्थूलरोमाय वै नमः।। 3।।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय नित्यातृप्ताय वै नमः। नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्राय ते नमः।।4।।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्तक नमोऽस्तु ते। नमस्ते कोटरक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।।5।।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालिने। नमस्ते सर्वभक्ष्याय वालीमुख नमोऽस्तु ते।।6।।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्कराभयदायिने। अधोदृष्टे नमस्तुभ्यं वपुःश्यामा नमोऽस्तु ते।।7।।
नमो मन्दगतये ते निष्प्रभाय नमो नमः। नमो दुःसहदेहाय नित्यं योगरताय च।।8।।
नमस्ते ज्ञाननेत्राय कश्यपात्मजसूनवे। तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।9।।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु कृष्णांगाय च वै नमः। देवासुरमनुष्याश्च पशुपक्षीसरीसृपाः।।10।।
त्वयाऽवलोकिताः सौरि दैन्यमाशु व्रजन्ति ते। ब्रह्मा शक्रो यमश्चैव ऋषयः सप्तसागरः।11।।
राज्यभ्रष्टाश्च ते सर्वे तव दृष्ट्यावलोकिताः। देशाश्च नगरग्रामा द्वीपाश्चैवाद्रयस्तथा।।12।।

सरितास्सामरास्सर्वे सिद्धविद्याधरोरगाः। रौद्रदृष्ट्या तु ये दृष्टाः क्षयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।।13।।
सौरे क्षमस्वापराधं सर्वभूतहिताय च। प्रसादं कुरु मे सौरे वरार्थेऽहं तवाश्रितः।।14।।
एवं स्तुतस्तदा सौरि ग्रहराजो महाबलः। अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा स भास्करिः।।15।।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र स्तोत्रेणानेन सुव्रत। एवं वरं दास्यामि यत्ते मनसि वर्तते।।16।।
गोचरे जन्मलग्ने वा दशास्वन्तर्दशासु च। यः पठेद् द्वित्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः।। 17।।
रक्षामि सततं तस्य पीडास्वन्यग्रहस्य च। अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत्।।8।।

4.22 अथ सर्पसूक्तम् (नवनागस्तोत्रम्)

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।1।
विष्णुलोके ये सर्पाः वासुकीप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।2।
रुद्रलोके च ये सर्पाः तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।3।
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।4।
सर्पसत्रे च ये सर्पाः आस्तिकेन रक्षिताः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।5।
प्रलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।6।
धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।7।
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।8।
ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये ये सर्पाः प्रसरन्ति हि। नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा।9।

पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिता:। नमोऽस्तु तेभ्य: सुप्रीता: प्रसन्ना: सन्तु मे सदा।10।

रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबला:। नमोऽस्तु तेभ्य: सुप्रीता: प्रसन्ना: सन्तु मे सदा।11।

अथ नवनागनामस्तोत्रम् -

अनंतं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलं। शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।1।

एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनां। सायंकाले पठेन्नित्यं प्रात:काले विशेषत:।2।

तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।3।

4.23 ध्रुवस्तुति:(भागवतमहापुराणं 4.9.6-17)

योऽन्त: प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां, संजीवयत्यखिलशक्तिधर: स्वधाम्ना।
अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन्, प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्।।1।।
एकस्त्वमेव भगवन्निदमात्मशक्त्या, मायाख्ययोरुगुणया महदाद्यशेषम्।
सृष्ट्वानुविश्य पुरुषस्तदसद्गुणेषु, नानेव दारुषु विभावसुवद्विभासि।।2।।
त्वद्दत्तया वयुनेदमचष्ट विश्वं, सुप्तप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्न:।
तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं, विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबन्धो।।3।।
नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते, ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतो:।
अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभोग्य-, मिच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम्।।4।।
या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्म, ध्यानाद्भवज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात्।

सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत्, किं त्वन्तकासिलुलितात्पततां विमानात्।।5।।
भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसंगो, भूयादनन्त महताममलाशयानाम्।
येनांजसोल्बणमुरुव्यसनं भवाब्धिं, ते ये भवद्गुणकथामृतपानमत्तः।।6।।
ते न स्मरन्त्यतितरां प्रियमीश मर्त्यं, ये चान्वदः सुतसुहृद्गृहवित्तदाराः।
ये त्वब्जनाभ भवदीयपदारविन्द-, सौगन्ध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रसंगाः।।7।।
तिर्यङ्नगद्विजसरीसृपदेवदैत्य-, मर्त्यादिभिः परिचितं सदसद्विशेषं।
रूपं स्थविष्ठमज ते महदाद्यनेकं, नातः परं परम वेद्मि न यत्र वादः।।8।।
कल्पान्त एतदखिलं जठरेण गृह्णन्, शेते पुमान् स्वदृगनन्तसखस्तदंके।
यन्नाभिसिन्धुरुहकांचनलोकपद्म-, गर्भे द्युमान्भगवते प्रणतोऽस्मि तस्मै।।9।।
त्वं नित्यमुक्तपरिशुद्धविबुद्ध आत्मा, कूटस्थ आदिपुरुषो भगवांस्त्र्यधीशः।
यद्बुद्ध्यवस्थितिमखण्डितया स्वदृष्ट्या, द्रष्टा स्थितावधिमखो व्यतिरिक्त आस्से।।10।।
यस्मिन् विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति, विद्यादयो विविधशक्तय आनुपूर्व्यात्।
तद्ब्रह्म विश्वभवमेकमनन्तमाद्य-, मानन्दमात्रमविकारमहं प्रपद्ये।।11।।
सत्याशिषो हि भगवंस्तव पादपद्म-, माशीस्तथानुभजतः पुरुषार्थमूर्तेः।
अप्येवमर्य भगवान् परिपाति दीनान्, वाश्रेव वत्सकमनुग्रहकातरोऽस्मान्।।12।।

।। इति श्रीमद्भागवतमहापुराणान्तर्गतध्रुवस्तुतिः सम्पूर्णम्।।

4.24 अथ प्रातः स्मरणस्तोत्रम्ः-

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं, सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयं।
यः स्वप्नजागरसुषुप्तमवैति नित्यं, तद्ब्रह्मनिष्कलमहं न च भूतसंघः।।1।।
प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यं, वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यं नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचंस्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्रयम्।।2।।
प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं, पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ, रज्ज्वां भुजंगम इव प्रतिभासितं वै।।3।।
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्। प्रातः काले पठेद्यस्तु सो गच्छेत्परमं पदं।।4।।

।। हरिः ॐ तत्सत्।। ।।ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

5. अग्नि (हवन) खण्डः

हवन की सर्वसामान्यविधिः (सकल कर्म व अनुष्ठान केलिये)

5.1 अथ कुण्ड विचारः -

'योनिकुण्डे भगाकारे वर्तुले वा अर्द्धचन्द्रके। नवत्रिकोणकुण्डे वा चतुरस्रेऽष्टपत्रके।।
योनिकुण्डे भवेद्वाग्मी भगे चाकृष्टिरुत्तमा। वर्तुले तु भवेल्लक्ष्मीरर्धचन्द्रे त्रयम्भवेत्।।
नवत्रिकोणकुण्डे तु खेचरत्त्वम्प्रजायते। चतुरस्रे भवेच्छान्तिर्लक्ष्मीः पुष्टिररोगता।।
पद्माभे सर्वसंपत्तिरचिरादेव जायते। अष्टकोणे तु सुभगे समीहितफलम्भवेत्।।'

अर्थात् योनि, भग, गोल, अर्धचन्द्र, नौ त्रिकोण, चतुर्भुज (चतुरस्र), कमल अथवा अष्टकोण के आकार में कुण्ड बनाकर हवन करें। प्रत्येक का फल अलग-अलग है - योनि कुण्ड में हवन करने से वाक्सिद्धि फल कहा गया है । तथा भगाकार कुण्ड - श्रेष्ठ आकर्षण, गोल कुण्ड - लक्ष्मी, अर्धचन्द्र कुण्ड - पूर्वोक्त तीनों यानि वाक्सिद्धि सहित श्रेष्ठ आकर्षण और लक्ष्मी, नौ त्रिकोण कुण्ड- आकाशगामित्व, चतुर्भुज (चतुरस्र) कुण्ड - शान्ति सहित पुष्टि व लक्ष्मी और नीरोगता, कमलाकार कुण्ड - शीघ्र सर्व सम्पत्ति प्राप्ति और अष्टकोण कुण्ड में वांछित सम्यक्फल प्राप्त होता है।

5.1-1 अथ कुण्डपूजनम् :-

निर्मित कुण्ड में अष्टदल के अन्दर अग्नि की सप्तजिह्वा को बनाकर हवनकर्ता आसन की कुशाओं के अग्रभाग को पूर्व या उत्तर की ओर करके बिछाकर उसपर बैठें और आचमन, प्राणायाम आदि सामान्य कर्म करके संकल्प करें -

'ॐ विष्णु.........अमुक**पूजनकर्माङ्गभूतहोमकर्मांगभूतकुण्डपूजनादिपूर्वकभूशोधनपूर्वकपंचभूसंस्कारादिसहितः कुण्डे अग्निस्थापनं करिष्ये'।**

भूशोधन इस प्रकार है – **'भूरसीति भूमिशोधनम्'** अर्थात् भूरसि इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल का पंचगव्य से प्रोक्षण कर भूमि शुद्धि की भावना करें –

'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीम्मा हिꣳसीः ।1।'

हस्तप्रक्षालन करके **'अश्मा चेति मृत्तिका स्थापनम्'** अर्थात् अश्मा च इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल में पवित्र नदी की थोड़ी मृत्तिका ड़ालें –

'ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।'

तत्पश्चात् **'एष स्तोमेति दर्भं गृह्णाति'** अर्थात् एष स्तोम इत्यादि मन्त्र से दर्भ को ग्रहण कर सम्मार्जन करें –

'ॐ एष स्तोमो मरुतऽइयङ्गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः। एषामासीदूतन्वेव यां विद्याभेषं वृजनशीर दानुम्।'

कुशोदक से प्रोक्षण करें –

'ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्माऽरङ्गमाम वः।'

कुण्डाभिमानी देवता का आवाहन करें –

'ॐ आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कुण्डाय नमः। कुण्डमावाहयामि स्थापयामि। भो कुण्ड इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें -

'ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः।।'

अब गन्धाक्षतपुष्प से कुण्ड में देवताओं का आवाहन करें, सर्व प्रथम कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा का आवाहन करें -

'ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।
उपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे।।

'ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मणे नमः। विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो विश्वकर्मन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें -

'ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः। पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः।।1।।
अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः। नाशय त्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।2।।'

प्रथम सत्त्वात्मक श्वेत मेखला में -

'ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्मन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

पुनः प्रार्थना करें -

'हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते। रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।।'

द्वितीय रजोआत्मक रक्त मेखला में -

'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।।'
ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि स्थापयामि। भो विष्णो इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'ॐ विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।'

तृतीय तमसात्मक कृष्ण मेखला में –

'ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर। आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात्।।'

कुण्ड की योनि में –

'ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मा त्वा हिꣳसीन्मा मा हिꣳसीः।।
आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके। मनोभवयुते रम्ये योनिस्त्वं सुस्थिरा भव।।
ॐ भूर्भुवःस्वः योन्यां योन्यै नमः। योनिमावाहयामि स्थापयामि। भो योने इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः। चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः।।
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका।।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते।।
योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः।।'

कुण्ड के कण्ठ में –

'ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।1।।
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽधः क्षमाचराः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।2।।
कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः। अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम्।।
ॐ भूर्भुवःस्वः कण्ठे रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'कण्ठमंगलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः। परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।'

कुण्ड के नाभि में –

'ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम्पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यम्पसः।
जंघाभ्यां पद्भ्यां घर्मोऽअस्मि विशिराजा प्रतिष्ठितः।। पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृति बिभ्रती।
आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः नाभ्यां नाभ्यै नमः।
नाभिमावाहयामि स्थापयामि। भो नाभे इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें –

'नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता। अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।'

कुण्ड के अन्दर नैऋत्यकोण में –

'ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम्।।'

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तुपुरुषय नमः। वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि। भो वास्तुपुरुष इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

प्रार्थना करें -

'यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम्।।

पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तुपतिं प्रभुम्। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।

वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।।'

एकतन्त्र से कुण्ड में आवाहित समस्त देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा करें -

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्मों3प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवेयुः।

ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः सर्वेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

अब कुण्डस्थ आवाहित देवताओं को बलि देने केलिये कुण्ड के बाहर एक पात्र में दध्योदन स्थापित करें और हाथ में जल लेकर -

'ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः सर्वेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः, इमं दध्योदनबलिं समर्पयामि।

अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तानां सर्वेषां कुण्डस्थदेवानां पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः

सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।।' जल छोड़ें।

5.1.2-1 वैदिक विधि

वैदिक विधि से अग्नि स्थापना करें – चतुरस्र कुण्ड में अष्टदल के अन्दर अग्नि की सप्तजिह्वा को बनाकर हवनकर्ता आसन की कुशाओं के अग्रभाग को पूर्व या उत्तर की ओर करके बिछाकर उसपर बैठें और आचमन प्रणायाम-आदि सामान्य कर्म करके संकल्प करें–

कुण्डपूजन के अन्तर्गत कृत भूशोधनकर्म करने के अनन्तर कुण्डपूजन के पश्चात् **पांच भूसंस्कार** करें जो की इस प्रकार हैं–

1. **'यद्देवेति दर्भैः परिसमूहनम्'** अर्थात् यद्देव इत्यादि मन्त्र से परिसमूहन संस्कार करें–

'परिसमुह्य' इति सूत्रम्। **'त्रिभिर्दर्भैः पांसूनपसार्य'**– इति व्याख्या। **'कृमिकीटपतङ्गाश्च विचरन्ति महीतले। तेषां संरक्षणार्थाय परिसमुह्येति कथ्यते।।'** अर्थात् धरती पर विचरने वाले कृमि, कीट, पतिङ्गे आदि की रक्षा के लिये **'परिसमुह्य'** संस्कार कहा गया है। इस संस्कार को इस प्रकार करना है– **'धृत्वाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां मूलैः साग्रैः कुशत्रयम्। तदग्रैस्तस्य रजसां पूर्वस्यामपसमर्पणम्।'** अर्थात् अंगुष्ठ और कनिष्ठिका से अग्र सहित तीन कुशा को लेकर, उनके अग्र से थोड़ी धूल (मिट्टी; निकालकर पूर्व दिशा में फेकें। मन्त्र इस प्रकार है–

'यद्देवा देव हेडनन्देवा सश्च कृमवयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।'

2. **'मानस्तोकेत्युपलेपनम्'** अर्थात् मानस्तोक इत्यादि मन्त्र से गोबर से लीपें –

'उपलिप्य'– इति सूत्रम्। **'गोमयोदकेन'**– इति व्याख्या। **'पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रो महासुरः। व्यापिता मेदसा पृथिवी तदर्थमुपलेपनम्।।'** अर्थात् पूर्वकाल में इन्द्र ने वज्र से जब वृत्रासुर का वध किया था तब संपूर्ण पृथिवी उसके खूनादि से अपवित्र हो गयी थी, इसलिये उसे पवित्र कर हवन के योग्य बनाने के लिये उपलेनपन संस्कार करते हैं। गोमय से हवनकुण्ड को लीपें। **'गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला। यज्ञार्थे संस्कृता भूमिस्तदर्थमुपलेपनं।'** क्योंकि गोमय में लक्ष्मी का वास है, इसलिये वह पवित्र और सर्वकल्याणकारी है। यज्ञ केलिये भूमि का संस्कार करना होता है और वह संस्कार गोमय से होता है। गोमय का लक्षण–

'रुग्णा वृद्धा प्रसूता च वन्ध्या संधिन्यमेध्यभुक्। मृतवत्सा च नैतासां ग्राह्यं मूत्रं शकृत्पयः ।1।

स्वच्छं तु गोमयं ग्राह्यं स्थाने च पतिते शुचौ। उपर्य्यधः परित्यज्यार्द्रजन्तु विवर्जितम्।'

अर्थात् रोगिणी, बूढी, प्रसूता, बांझ, संधि काल में अपवित्र चीजों को खानेवाली और जिसका बछड़ा मर गया हो ऐसी गाय के दूध, मूत्र और गोबर को पूजा, हवन आदि शुभ कर्मो केलिये ग्रहण नहीं करना चाहिये। शुद्ध स्थान में गिरा हुआ स्वच्छ गोबर को ग्रहण करें, उसमें भी ध्यान रहे कि गीला न हो और कीडों से युक्त न हो एवं ऊपर व नीचे के भाग को छोड़कर लें।

'ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्रभाविनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।',

3. **'त्वामिद्धीत्युल्लेखनम्'** अर्थात्- **'त्वामिद्धि'**- इत्यादि मन्त्र से उल्लेखन संस्कार करें।

'उल्लिख्य'- इति सूत्रम् **'त्रिरुल्लिख्य- स्फ्येन त्रिरेखां कुर्यात्'**- इति व्याख्या। अर्थात् त्वामिद्धि इत्यादि मन्त्र से उक्त प्रकार से यानी तीनरेखा बनाने को उल्लेखनसंस्कार कहते हैं। **'खादिरेण हस्तमात्रेण खड्गाकृतिना स्फ्येन उल्लिख्य प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थण्डिल-परिमाणास्तिस्रो रेखा कुर्यात्'** अर्थात् खदिर (खैर) के पेड़ का एक हाथ लम्बा खड्ग के आकारवाले स्फय नामक अस्त्र को पूर्व की ओर आगे बढ़ाते हुये स्थण्डिल के नाप के अनुसार तीन रेखा बनायें। मन्त्र इस प्रकार हैं-

'ॐ त्वामिद्धि ह व हसातो वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठा सर्वतः ।1।

ॐ प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीया सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजूभिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा ।2।

ॐ दक्षिणमारोह त्रिष्टुप्त्वाऽअवतु। बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचिमारोह ।3।

ॐ प्रतीचिमारोह जगती त्वाऽअवतु। वैरूपꣳसाम सप्तदशस्तोमो वर्षा ऋतु विड्द्रविणमुदीचीमारोह ।4।

ॐ उदीचीमारोहानुष्टुप्त्वाऽअवतु। वैराजꣳसामैकविꣳशस्स्तोमः शरदृतु फलन्द्रविणमूर्ध्वमारोह ।5।',

4. **'सदसस्पतिनोद्धरणं'** अर्थात्सदसस्पति इत्यादि मन्त्र से उद्धरणसंस्कार करे।

'उद्धृत्य'- इति सूत्रम्। **'पांसूनुद्धृत्य क्षिपेत्'**- इति व्याख्या। इस संस्कार को इस प्रकार करना है। **'अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पांसूनुद्धृत्य'** अर्थात् अनामिका और अंगूठे से अभी बनायी गयी रेखाओं के बीच में से थोड़ी धूल (मिट्टी) को निकालें। मन्त्र इस प्रकार हैं-

'ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।'

स्रुवा से थोड़ी मिट्टी को उद्धृत कर अनामिका और अंगूठा से ईशानदिशा में फेंके। फेंकते वक्त इस मन्त्र को बोलें-

'ॐ व्रतङ्कृणु व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳ-सुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।।'',

5. **शन्नो देवेत्यभ्युक्षणम्** अर्थात् शन्नो इत्यादि मंत्र से अभ्युक्षण संस्कार करें-

'अभ्युक्ष्य'- इति सूत्रम्। **'अभ्युक्षणमभिषेचनञ्च कुर्यात्'**- इति व्याख्या। इस संस्कार को इस प्रकार करना है- **'मणिकाद्भिरभ्युक्ष्याभिषिच्य'** यानि मणिका युक्त जल से अभ्युक्षण और अभिषेक करें।' क्योंकि कहा है-

'आपो देव गणाः सर्वे आपः पितृगणाः स्मृताः। तेनैवाभ्युक्षणं प्रोक्तमृषिभिर्वेदवादिभिः ।1।

उत्तानेन तु हस्तेन कर्त्तव्यं प्रोक्षणं बुधैः। अवाचीनेन हस्तेन कर्त्तव्यं तदवेक्षणम् ।2।

मुष्टिकृतेन हस्तेन चाभ्युक्षणमुदाहृतम् ।3।

अर्थात् देवगण जल ही हैं, पितृगण जल ही हैं, इसलिये जल से ही अभ्युक्षण और अभिषेक करना चाहिये ऐसे वेदवादी ऋषियों ने कहा है। किस कर्म में जल का प्रयोग कैसे करें? बुद्धिमान प्रोक्षण कर्म को सदा ऊंचे हाथ से करें, नीचे की ओर हाथ करके जल का अवेक्षण करें और अभ्युक्षण कर्म केलिये हाथ में जल लेकर मुट्ठी बांधके जल को हवन कुण्ड में डालें। मन्त्र इस प्रकार हैं-

'शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।'

इस प्रकार पांच भूसंस्कारों को करके स्वस्ति वाचन करें। तत्पश्चात् अग्नि को उत्पन्न करें।

अग्नि को उत्पन्न करने अथवा लाने की विधिः- कर्मप्रयोगरत्न में कहा है कि-

'उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तजः। उत्तमः श्रोत्रियागारन्मध्यमः स्वगृहादिजः।'

अर्थात् विभिन्न साधनों से उत्पन्न की जानेवाली अग्नियों में से अरणिमन्थन से उत्पन्न अग्नि श्रेष्ठ है और सूर्यकान्तमणि (अथवा लेन्स) से उत्पन्न अग्नि मध्यम है, शेष निकृष्ट हैं। यदि अग्नि को रसोई आदि अन्यस्थान से यज्ञकुण्ड में लाना है तो श्रोत्रिय के घर की हो तो श्रेष्ठ और अपने घर की हो तो मध्यम, शेष निकृष्ट है।

अग्नि लाने में पात्र आदि का नियम-

'शुभं पात्रं तु कांस्यं स्यात्तेनाग्निं प्रणयेद्बुधः। तस्याभावे शरावेण नवेनापि दृढेन च।'

अर्थात् कांस्य का बर्तन श्रेष्ठ है और वह उपलब्ध न हो तो नये व दृढ मिट्टी के बर्तन में ला सकते हैं।

'पात्रेण पिहिते पात्रे वह्निमेवानयेत्ततः। अस्त्रेणादाय तत्पात्रं वर्मणोद्घाटयेत्तु तं।।

अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादांशं ततस्त्यजेत्। मूलेन पुरतो धृत्वा संस्कारांश्च ततश्चरेत्।'

अर्थात् कभी भी अग्नि को खुला न लायें अपितु दूसरे पात्र से ढ़ककर लायें। अस्त्रमन्त्र से लायें और यज्ञमण्डप में लाने के बाद वर्ममन्त्र से उसे खोलें। अस्त्रमन्त्र से ही क्रव्यादांश के रूप में थोड़े अंगारे को नैर्ऋत्य दिशा में फेंकें तत्पश्चात् अपने सामने रखी हुयी अग्नि की पूजा करके संस्कारों को करें। विष्णुधर्मोत्तरपुराण में अग्नि की पूजा के विषय में कहा है कि-

'मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादग्नेर्न संशयः। बहिर्नैवेद्यमात्रन्तु दातव्यमिति निश्चयः।'

पंचोपचार पूजा में जो गन्ध पुष्प आदि अर्पण करते हैं उन्हें अग्नि के मध्य में ही डालें किन्तु केवल नैवेद्य को बाहर रखके अर्पण करें।

अथ कुशकण्डिका विचारः

'अग्निमुपसमाधाय' ऐसा बोलकर कर्म के साधनभूत लौकिक अथवा स्मार्त अथवा श्रौत अग्नि को अपने सामने रखकर अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम बोलें –

'याभिर्हव्यं समश्नाति हुतं सम्यग्द्विजोत्तमैः। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।1।
स्फुलिंगिनी विश्वरुची च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः। एताश्चोक्ता विशेषेण ज्ञातव्या ब्राह्मणेन तु।2।
आहूय चैव होतव्यो यो यत्र विहितो विधिः। अविदित्वा तु यो ह्यग्निं होमयेदविचक्षणः।3।
न हुतं न च संस्कारो न तु यज्ञफलं भवेत्।4।'

ग्रहहोम में भी हवन करते वक्त ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रह के अनुसार अग्नि के नाम अलग-अलग होने से जिस ग्रह को उद्देश्य कर आहुति देनी है उसकी अग्नि का नाम स्मरण कर आहुति देनी चाहिये। उनके नाम स्कन्दपुराण में इस प्रकार बताये है –

'आदित्ये कपिलो नाम पिंगलः सोम उच्यते। धूमकेतुस्तथा भौमे जाठरोऽग्निर्बुधे स्मृतः।1।
गुरौ चैव शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः। शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः।2।'

अर्थात् सूर्य की आहुति को कपिल नाम की अग्नि में डालना है यानी सामने में विद्यमान अग्नि में भावना करें कि 'यह कपिल नाम की अग्नि है'। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में भी भावना करें। चन्द्र – पिंगल, मंगल – धूमकेतु, बुध – जाठर, गुरु – शिखी, शुक्र – हाटक, शनि – महातेजा, राहु और केतु (दोनों केलिये) हुताशन। पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में पूजन करे।

पूर्वे – **'ॐ पृथिव्याः सधस्थादग्निम्पुरो यमङ्िरस्वदच्छेमोऽअग्निम्पुरी यमङ्िरस्वद्भरिष्यामः।'**

दक्षिणे – **'ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदः सप्तसथ्ठसदोऽष्टमीभूत साधनी सकामाँ।'**

पश्चिमे – 'ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागाहि। नियुत्वान्त्सोम पीतये।'
उत्तरे – 'ॐ सोमो धेनुꣳसोमोऽर्वन्तमासुꣳसोमो वीरङ्कर्मण्यन्ददाति। सादन्यं विदथ्यꣳसभेयम्पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै।'
आग्नेये – 'ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवा2आसादयादिह।'
नैर्ऋत्ये – 'ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।'
वायव्ये – 'ॐ वायुरनिलममृतमथेदम्भस्मान्तꣳशरीरम्। ॐ क्रतो3 स्मर क्लिवे3 स्मर कृतꣳस्मर।'
ईशान्ये – 'ॐ ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।'

अब मध्य में तीन मन्त्रों से पूजन करें –

'ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।1।
ॐ प्रजापते नत्त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।2।
ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।3।'

अब लकड़ियों (ईन्धन) का शोधन करें – 'कस्त्वा सत्यो मदानामꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः दृढा चिदारुजे वसु।'

लकड़ियों को अग्नि पर स्थापित करे – 'ॐ त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वां काष्ठा सर्वतः।'

अब अग्नि को शुद्ध करें –

'ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टाऽऋषीणाम्पुत्रोऽभिशास्ति पावा। स नः स्योनः सुयजा यजे ह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयच्छन्स्वाहा।'

अग्नि को ग्रहण (स्वीकार) करें – 'ॐ मयि गृह्णाम्यग्ने अग्निꣳरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। मामु देवताः सचन्ताम्।'

अब अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कार करें –

1. गर्भाधानम्:– 'ॐ गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि।'

2. पुंसवनम्ः- 'ॐ विवस्वान्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व श्रद्धस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वामश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दतेव स्वधा विश्वा हारपऽएधते गृहे।'

3. सीमन्तोन्नयनम्ः- 'ॐ अजीजनो हि पवमानसूर्य विधारे शक्मना पयः। गोजीरयारꣳहमानः पुरन्ध्या।'

4. जातकर्मः- 'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायन्दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह।'

5. नामकरणम्ः- 'ॐ यदापि पेषमातरम्पुत्रः प्रमुदितौधयन्। एतत्तदग्नेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया। सम्पृचस्स्थ सभ्या भद्रेण पृङ्क्तो विपृचस्स्थविमा पाप्मना पृङ्क्त।'

6. निष्क्रमणम्ः- 'ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चदिशऽउदजयत्ताऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयत्तानुज्जेषम्-बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुज्जेषाम्मित्रो नवाक्षरेण।'

7. अन्नप्राशनम्ः- 'ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्प्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।'

8. चूडाकरणम्ः- 'ॐ अग्नऽऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।'

9. कर्णवेधः:- 'ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।'

10. उपनयनम्ः- 'ॐ अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयन्तामुज्जेषमश्विनो द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयन्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँल्लोकानुदजयन्तामुज्जेषꣳसोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुज्जेषां पञ्चाक्षरेण।'

11. गायत्रीश्रवणम्ः- 'ॐ भूर्भुवःस्वः वैश्वानराय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि। तन्नोऽअग्निः प्रचोदयात्।'

12. समावर्तनम्ः- 'ॐ व्रतङ्कृणु व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।

13. गोदानकर्मः- '**ॐ गावऽउपावतावतम्मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।**'

14. विवाहकर्मः- '**ॐ भग एव भगवाँ2। अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तत्त्वा भग सर्व ईज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।**'

तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर ले जाये -

'**ॐ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रङ्घर्म मीमहे। उपयाम गृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वा - नराय त्वा। ॐ वैश्वानरो न ऊतय आ प्रयातु परवतः। अग्निरुक्थेन वाहसा। उपयाम गृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा।**' तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर स्थापित करें-

'**ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति।**'

शोधित समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त यानि तेज करें -

'**ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्ज्यर्वन्। पृथुर्भवसुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः।**'

अब अग्नि से प्रार्थना करें -

'**ॐ आवाहये पुरुषम्महान्तं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्। ब्रह्मादयो यस्य मुखे विशन्ति प्रविश कुण्डे सुरलोकनाथ।**'

अब अग्नि के समक्ष आवाहनादि मुद्रा दर्शायें -

'**भो अग्ने त्वमावाहितो भव। भो अग्ने त्वं संस्थापितो भव। भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव।**
भो अग्ने त्वं सन्निरुद्धो भव। भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव। भो अग्ने त्वमवगुण्ठितो भव।
भो अग्ने त्वममृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव।'

अग्नि का ध्यान करें -

'**ॐ चत्वारि शृंगास्त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।**

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यॉं2ऽआविवेश।।1।।

रुद्रतेजःसमुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम्।

याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। स्रुवं स्रुचं च शक्तिं च ह्यक्षमालां च दक्षिणे।।2।।

तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं च वामके। बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्।।3।।

याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपंचाशत्कलायुतम्।।4।।

आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैव हुताशनम्। गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः।।5।।

त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता। रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।।6।।

स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितं मेषवाहनम्। शतमंगलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्।।7।।

त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव।।8।।

भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।।

अब प्रतिष्ठित करें –

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्मों3 प्रतिष्ठ।।

ॐ शतमंगलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।।'

कुण्ड के मध्य अथवा नैर्ऋत्य में अग्नि की पूजा करें –

'ॐ भूर्भुवःस्वः शतमंगलनाम्ने वैश्वानराय नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।'

पुनः प्रार्थना करें –

'अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।'

अग्नि के (अंगभूतकर्म सहित) संस्कार :-

पारस्कर सूत्रों के आधार पर यहां अंगभूत कर्म और संस्कारों का विधान बताया जा रहा है।

1. '**दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य**' इस सूत्र के अनुसार अग्नि के दक्षिण दिशा में यज्ञीय लकडी से बनी हुयी पीठ के ऊपर कुशा का आसन बिछायें – '**ॐ हिरण्यगर्भ समवर्ततताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।**' और उस पर जिस कर्मज्ञाता चतुर्वेदी श्रोत्रिय ब्राह्मण को ब्रह्मा नामक ऋत्विक् के कर्म केलिये वरण किये थे उन्हें बिठायें। '**ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः। शूरऽइषव्योऽतिव्याधी माहारथो जायतान्दोग्ध्रीर्धेनु वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा विष्णुरथेष्ठाः सभे ये युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे नः कल्पताम्।**' ब्रह्मासन के समीप में यजमान का आसन बिछायें– '**ॐ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयताञ्चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम्। इत क्षमाण भृगुभिः सजोषा स्वर्प्यन्तु यजमाना स्वस्ति।**' अग्नि के उत्तरदिशा में प्रणीतापात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछायें और प्रणीता आसन व अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र केलिये प्रागग्र कुशाओं का आसन बिछायें- '**ॐ परीत्यभूतानि परीत्यलोकान् परीत्यसर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्व -मनात्कमानमभिसंविवेश।**', ब्रह्मा से प्रणीतापात्र का प्रणयन केलिये अनुमति लें – '**ब्रह्मन् अपः प्रणेष्यामि**', ब्रह्माजी कहें – '**ॐ प्रणय**', बायें हाथ में प्रणीता पात्र को धारण कर उसमें दाहिने हाथ से जल भरके वायव्यकोण में पहले प्रथम आसन पर रखकर दाहिने हाथ का अनामिका से आलभन कर दूसरे आसन पर रखें।

2. '**प्रणीय**' (अप इति शेषः) अर्थात् अग्नि के उत्तर दिशा में पूर्वाग्र कुशाओं के दो आसन बिछायें। बायें हाथ में यज्ञीय लकड़ी से बना हुआ 12 अंगुल लम्बा 4 अंगुल चौडा और 4 अंगुल गहरा चमस पात्र रखकर उसमें दाहिने हाथ से उद्धृतपात्रस्थ जल को भरें। जल भरने का मन्त्र – '**ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमद्ध्यमꣳश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम।1। ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।2।**' बायें हाथ

से दाहिने हाथ में ग्रहण करे – '**ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम्मरुतो यन्त्वग्रयम्।**' उस चमस पात्र को पहले पश्चिम आसन पर रखकर आलभन करने के बाद पूर्व आसन पर स्थापित करें।,

3. '**परिस्तीर्य**' अर्थात् एक मुष्टि पूर्वाग्र सोलह बर्हि लेकर ईशानादि से उत्तर तक अग्नि के चारों तरफ (प्रत्येक दिशा में 4 बर्हि) यज्ञकुण्ड की मेखला के नीचे बिछायें। परिस्तरण कर्म इस मन्त्र से करे – '**ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञीयाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोदविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।**',

4. '**अर्थवदासाद्य**' अर्थात् जितनी सामग्री है उसी के अनुसार अग्नि के उत्तर अथवा पश्चिम दिशा में (प्रयोग करने में अपनी अनुकूलता को देखकर) पात्रासादन करें। तत्र क्रमः – "**पवित्रछेदनार्थं त्रयो दर्भाः साग्रे अनन्तगर्भे पवित्रे द्वे, प्रोक्षणीपात्रं, आज्यं, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, त्रिप्रक्षालिता तण्डुला, सम्मार्जनकुशाः पंच, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्रः, स्रुवः, स्रुक्, पूर्णपात्रं, अन्यान्युप कल्पनीयानि अर्कादिसमित्तिलादि हवनीयद्रव्याणि निधाय पवित्रे कुर्यात्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय उपरि प्रादेशमात्रं अवशेषयित्वा दक्षिणकरेण द्वयोः पवित्रयोः मूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य वामकरेण सर्वाणि पवित्राणि युगपद्धृत्वा दक्षिणकरांगुष्ठांगुलिपर्वाभ्यां उपरि प्रादेशमात्रं छित्त्वा त्रीण्युत्तरतः क्षिपेत्, द्वे ग्राह्ये।**" अर्थात् पवित्र छेदन केलिये 3 दर्भ, साग्र अनन्तगर्भ पवित्र, दो प्रोक्षणीपात्र, घी, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, तीन बार प्रक्षालित चावल, 5 सम्मार्जनकुशा, 7 उपयमनकुशा, 3 समिधा, स्रुवा, स्रुक्, पूर्णपात्र, अन्य उपकल्पित अर्कादिसमिधा सहित तिल आदि हवनीयद्रव्य को रखकर पवित्र निर्माण करें।

5. '**पवित्रे कृत्वा**' इस सूत्र के अनुसार पवित्री का निर्माण करना है जिसका लक्षण है– '**अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।**' अर्थात् अन्तर्गर्भित न हो ऐसे अग्र सहित दोदलवाले प्रादेशमात्र लम्बे कुशा से पवित्र को बनाना चाहिये। 2 के ऊपर 3 को रखकर उपरि प्रादेशमात्र को शेष करके दाहिने हाथ से 2 पवित्रों के मूल से 2 कुशाओं की प्रदक्षिणा लगाकर

बायें हाथ से सभी को एक साथ धारणकर दाहिने हाथ के अंगुष्ठ व अंगुलि से ऊपर के प्रादेशमात्र काटें। कुशाओं को प्रादेशमात्र काटने केलिये इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है – **'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्**।1। **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः**।2।' प्रादेशमात्र कुशाओं का छेदनकर 3 को उत्तर दिशा में फेंके और 2 को ग्रहण करें। कुशाओं से पवित्र को बनाते वक्त इस मन्त्र का पाठ करे – **'ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव। उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः**।1। **देवीरापो अग्रेगुवो अग्रपुवो अग्र इममद्य। यज्ञन्नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुम्यज्ञपतिन्देव युवम्**।2।' तत्पश्चात् प्रणीता आदि पात्रों को ढके– **'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।'**,

6. प्रोक्षणीपात्र– **'वारणं पाणिपात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्। पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्।'** अर्थात् यज्ञीय लकड़ी से निर्मित 12 अंगुलवाला पाणिपात्र अथवा कमल के पत्ते के आकार में बनाये हुये पात्र को प्रोक्षणीपात्र कहा गया है। इस मन्त्र से प्रोक्षणीपात्र को ग्रहण करें इस मन्त्र से– **'ॐ इदम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।'** अब दो पवित्र को प्रोक्षणीपात्र में डाले – **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णामि।'**

7. आज्यस्थाली – **'आज्यस्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा। प्रादेशमात्रदीर्घा सा ग्रहीतव्याऽव्रणा शुभा।'** अर्थात् प्रादेशमात्र नाप के कांसे की अथवा तांबे की आज्यस्थाली ग्रहण करनी चाहिये और वह चोट, छेद, दाग आदि से रहित होनी चाहिये। आज्यस्थाली ग्रहण करने मा मन्त्र– **'ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमदुधुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य घर्मणा विष्वग्भिस्तेऽजरे भूरि रेतसा।'**

8. चरुस्थाली– **'दृढा प्रादेशमात्रोर्ध्व तिर्यङ्नातिबृहन्मुखी। मृन्मयौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते।'** अर्थात् मजबूत व प्रादेशमात्र ऊंची मिट्टी से बनी अथवा गूलर की लकड़ी से बनी हुयी पात्र को चरुस्थाली के रूप में ग्रहण करना चाहिये और वह टेढी–मेढी न हो व बड़े

मुंहवाली भी न हो। चरुस्थाली ग्रहण करने का मन्त्र- **'ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि। द्विपदे शं चतुष्पदे।'**

9. स्रुवा का लक्षण- **'खादिरादेः स्रुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः। अंगुष्ठपर्वखातं तत् त्रिभागं दीर्घपुष्करम्।।'** अर्थात् खैर आदि यज्ञीयवृक्षों की लकडी से बना हुआ एक हाथ लम्बा, त्रिकोणात्मक (गोल नहीं) अंगूठे के बराबर गहरा किन्तु उसके पुष्कर लम्बे हों ऐसा स्रुवा ही कर्म में प्रयोग करना चाहिये। स्रुवा ग्रहण करने का मन्त्र- **'ॐ स्रुचश्च मे चमसा च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽअवभृतश्च मे स्वाहाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्'**

10. स्रुवसंमार्जनकुशा और उपयमनकुशा - **'स्रुवसंमार्जनार्थाय पंच वाथ त्रयोऽपि वा। प्रादेशमात्रान्गृह्णीयात्संमार्जकुशसंज्ञकान्।। उपयमनकुशाः सप्त पंच वाथ त्रयोऽपि वा।'** अर्थात् स्रुवा को साफ करने केलिये संमार्जनकुशा नाम से प्रादेशमात्र लम्बे पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें और उपयमनकर्म (स्रुवा पर बांधने केलिये) सात अथवा पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें।

सम्मार्जनकुशा ग्रहण करने का मन्त्र - **'ॐ शादन्दद्भिरवकान्दन्तमूलैर्मृदं वैस्तेमदुꣳष्ठाभ्याꣳसरस्वत्याऽअग्रजिह्वाया-ऽउत्सादमवक्त्रन्दैनतालु वाजꣳ हनुभ्यामपऽ आश्येनवृषणमण्डाभ्यामादित्याँ। श्मश्रुभिः पन्थानम्भ्रूभ्या द्यावापृथिवीवर्तोभ्यां विद्युतङ्कनीनकाभ्याꣳशुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माणि पार्या इक्षवः।'**

11. उपयमनकुशा ग्रहण करने का मन्त्र - **'उपयाम गृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन्पाहि सोमम्। उरु यरायऽएषो यजस्व।'** सम्मार्जनीकुशाओं द्वारा प्रणीतापात्रस्थ जल से स्रुवा का प्रोक्षण करें (कुशा के अग्र से स्रुवा के अग्र का, मध्य से मध्य का और मूल से मूल का शोधन करें) - **'ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।'**

12. समिधा के वृक्ष – ब्रह्मपुराण में समिधा के वृक्षों के बारे में कहा है – **'शमीपलाशन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवः** ।1। **अश्वत्थोदुम्बरौ बिल्वश्चन्दनस्सरलस्तथा। सालश्च देवदारुश्च खदिरश्चैव यज्ञीयाः** ।2।' अर्थात् याग में इन वृक्षों की ही लकड़ी प्रयोग करने योग्य हैं – शमी, पलाश, वट, वैकंकती, पीपल, गूलर, बेल, चन्दन, चीड़, साल, देवदारु और खैर।

समिधा का लक्षण – **'नांगुष्ठादधिका ग्राह्या समित्स्थूलतया क्वचित्। न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता** ।1। **प्रादेशान्नाधिका नोना न तथा स्याद् द्विशाखिका। न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु च विजानता** ।2।' अर्थात् अंगूठे से ज्यादा मोटी न हो, त्वचा रहित न हो, कीडे युक्त न हो, फटी न हो, दो शाखा युक्त न हो, पत्तों से युक्त न हो, वीर्य रहित न हो और प्रादेशमात्र से न ज्यादा लम्बी हो व न छोटी ही हो, ऐसी समिधा के योग्य पूर्वोक्त पवित्र वृक्षों की टहनियों से बनी समिधा ही हवन/याग में प्रयोग करें।

समिधा को ग्रहण करने का मन्त्र – **'ॐ समिधग्निन्दुवस्यत घृतैर्वोधयतातिथिम्। अस्मिन्हव्या जुहोतन।।'**

13. आज्य विचारः – **'उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवं। अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते** ।1।' अर्थात् गौ का घी उत्तम है, भैंस का मध्यम और बकरी का अधम, इसलिये गौ का घी ही हवन, पूजा आदि कार्य केलिये सर्वश्रेष्ठ है।

चरुविचारः – **'हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः। यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत्** ।1। **यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः। अभावे व्रीहियवयोर्दध्ना वा पयसापि वा** ।2।' अर्थात् हवन के योग्य धान्यों में जौ मुख्य है तत्पश्चात् चावल। यदि ये दोनों उपलब्ध न हो तो इनके सदृश क्षेत्रीय धान्य का प्रयोग करें, जैसे कि जौ के सदृश गेहू को और चावल के सदृश स्यांवां चावल को माना गया है। जौ व धान्य तथा गेहूँ व स्यांवां चावल उपलब्ध न हो तो दूध अथवा दही से हवन कर सकते हैं (किन्तु अग्नि बुझने का डर रहता है, अतः क्षेत्रीय द्रव्यविशेष मिलाकर हवन करें।) आज्यपात्र और चरुपात्र ग्रहण करने का मन्त्र – आज्यस्थाली में आज्य भरे और चरुपात्र में चरु भरे – **'ॐ घृताच्यासि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यासि प्रभञ्जन्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यासि ध्रुवाऽसदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यजन्तम्।।'**

14. पूर्णपात्र विचार– **'अकृते पूर्णपात्रे च छिद्रयज्ञः प्रजायते। पूर्णपात्रे च संपूर्णे सर्वसंपूर्णता भवेत्।।'** अर्थात् पूर्णपात्र न हो तो वह यज्ञ छिद्र युक्त होगा यानि यजमान केलिये हानिकारक होगा। इसके विपरीत यदि पूर्णपात्र संपूर्ण हो तो सब कुछ संपूर्ण होगा यानी यजमान की सकल कामनायें पूर्ण होंगी। पूर्णपात्र ग्रहण करने का मन्त्र – **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नीषोमो बाहुभ्यान्त्वा जुष्टन्नियुनज्मि।1। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो न त्वा मातामन्यतामनुपितानुभ्राता सगर्भ्यो सखा सयूथ्यः अग्नीषोमो बाहुभ्यान्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।2।'**,

15. **'प्रोक्षणीः संस्कृत्य'** अर्थात् प्रोक्षणीपात्र को प्रणीतापात्र के उत्तर में स्थापित कर उसमें दूसरे पात्र से अथवा अपने हाथ से प्रणीतापात्र के जल से सींच कर पवित्रों से उत्पवन करके उन पवित्रों को प्रोक्षणीपात्र में डालें। दाहिने हाथ से प्रोक्षणीपात्र को उठाकर बायें हाथ में रखकर उसके जल को उछालकर प्राणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

16. **'अर्थवत्प्रोक्ष्य'** अर्थात् आज्यस्थाली से पूर्णपात्र पर्यन्त सकल पात्रों पर जिस क्रम से उन्हें रखा गया था उसी क्रम से प्रोक्षणीपात्र के जल से प्रोक्षण करके प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र को रखें।

17. **'निरूप्याज्यम्'** अर्थात् अग्नि के निकट स्थापित आज्यस्थाली में रखे हुये घी में थोड़ा चरु का प्रक्षेप करें और चरुस्थाली में रखे हुये चरु पर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

18. **'अधिश्रित्य'** अर्थात् ब्रह्मा ऋत्विक् (उनके अभाव में अध्वर्यु/होता/यजमान स्वयं) घी का अधिश्रयण कर चरु के साथ थोड़ा घी अग्नि में डालें। **'ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।1।**
ॐ अनिशितोऽअसि सपत्नक्षिद्वा जिनिन्त्वा वाजेद्धयायै सम्मार्ज्मि।2।',

19. **'पर्यग्निं कुर्यात्'** अर्थात् जलते हुये अंगारे से घी और चरु पर प्रदक्षिणा कराके यानि घुमाके अर्धश्रित चरु पर भी घुमायें। इससे

सम्मार्जन कर प्रतपन करे – '**ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।**',

20. '**स्रुवं प्रतप्य संमृज्य**' अर्थात् दाहिने हाथ से स्रुवा को लेकर अधोमुख (उल्टा करके) अग्नि के पश्चिम भाग में पकड़के तपाकर बायें हाथ में पकड़ लें और उस पर संमार्जनी कुशाओं से स्रुवा का शोधन करें। कैसे? कुशा के अग्रभाग से स्रुवा के मूल से शुरुकर अग्र तक स्पर्श करते हुये जायें तथा कुशा के मूल से स्रुवा के अग्र से शुरुकर मूल तक स्पर्श करते जायें। पुनः स्रुवा को तपायें –

'**ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।**'

स्वस्थान में स्थापित करें – '**ॐ तमुत्त्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्रऽअथर्वणः। वृत्रहणम्पुरन्दरम्।।**',

21. '**पुनः प्रतप्य निदध्यात्**' अर्थात् पूर्ववत् दोबारा तपाकर अपनी दाहिनी दिशा में रखें। आज्यपात्र को अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें – '**ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि।।**' चरुस्थाली को भी अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें – '**ॐ पशुभिः पशुनाप्नोति पुरोडाशैर्हविꣳष्या। छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान्।।**'

22. '**आज्यमुद्वास्य**' अर्थात् आज्यस्थाली को उठाकर चरु की पूर्व दिशा से लाकर अग्नि की उत्तर दिशा में स्थापित करें और चरुस्थाली को उठाकर आज्यस्थ्थली की पश्चिम दिशा से लाकर आज्यस्थाली के उत्तरदिशा में रखें। आज्य का उत्पवन करें –

'**ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।।**',

23. '**उत्पूय**' अर्थात् घी के ऊपर पवित्रीकुशाओं (अथवा अपनी हथेली के माध्यम से) फूंक मारें।

'**ॐ आपवस्व हिरण्यवदस्ववत्सोम वीरवत्। वाजङ्गोमन्तमाभरत्स्वाहा।**',

तत्पश्चात् आज्यावेक्षण करे –

24. '**अवेक्ष्य**' अर्थात् घी को अच्छी तरह देखें (गृहस्थ हो तो पत्नी को घी देखने को कहे) और उसमें कुछ अन्य द्रव्य दीखें तो निकाले।

25. '**कुशानाधाय**' आज्य में कुशा को रखें –

'ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।',

26. '**प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्**' अर्थात् प्रोक्षणी पात्र पर भी पूर्ववत् पवित्रीकुशाओं से उत्पवन करें। जलती हुयी कुशा से आज्यपात्र, चरुस्थाली और अग्नि के ऊपर प्रदक्षिणा के क्रम से घुमाकर अग्नि में डालें – **'ॐ धृष्टिरस्यपाग्नेऽअग्निमामादृंहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह। ध्रुवमसि पृथिवीदृꣳह ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजात वन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय।।'**,

27. '**उपयमनकुशानादाय**' अर्थात् उपयमनकुशाओं को दाहिने हाथ से लेकर बायीं ओर रखें।

28. '**समिधोऽभ्याधाय**' अर्थात् बैठे हुये समिधा को घी से युक्त कर अग्नि में डालकर अग्नि को आहुतियां डालने के योग्य तेज करें।

29. '**पर्युक्ष्य जुहुयात्**' अर्थात् प्रोक्षणीपात्र के पूरे जल को पवित्री धारण किये हुये दाहिने हाथ के चुल्लु में भरकर ईशान दिशा से आरम्भकर उत्तरदिशा तक घुमाते हुये अग्नि के चारों तरफ सींचें। तत्पश्चात् संस्रव को धारण करने केलिये प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में थोड़ा जल से भरा संस्रवपात्र को स्थापित कर सर्वप्रथम गणाधिपति गणेश भगवान को आहुति देकर आघार आदि पांच वारुणक आहुतियां दें। पांच वारुणक आहुतियों के बारे में त्रिकारिका में कहा है कि –

'आघारौ नासिके ज्ञेया आज्यभागौ च चक्षुषी। वक्त्रश्चोदरकुक्षी च कटी व्याहृतिभिः स्मृता।1।

शिरो हस्तौ च पादौ च पंचवारुणकाः स्मृताः। प्रजापतिः स्विष्टकृतं श्रोत्रे द्वे परिकीर्तिते।2।'

अर्थात् ऐसी भावना करें की आप आहुतियों से अग्निदेव के शरीर का निर्माण कर रहे हैं। कैसे? दो आघार आहुतियों से दो नासिका, दो आज्यभाग आहुतियों से दो आंख, तीन व्याहृतियों से मुख, पेट का कुक्षी और कटि; पांच वारुणक आहुतियों से एक सिर, 2 हाथ और 2 पैर तथा अन्त में प्रजापति देवता की आहुति और स्विष्टकृत् होम से दो कानों के निर्मित होने की भावना करें।

5.1.2-2 अथवा **आगमिक विधि** से अग्नि स्थापना करें – रुद्रयामल तन्त्रोक्त देवीरहस्य (11.7-17) के अनुसार आगम पद्धति से अग्नि स्थापना करने की यह विधि है। **'पूर्वस्यां दिशि सद्यन्त्रात्खनेत्कुण्डं त्रिकोणकम्। हस्तैकविस्तृतं चाधो हस्तैकपरिमाणतः।।'** अर्थात् पूर्वदिशा में एक त्रिकोण कुण्ड (अन्य तन्त्र शास्त्र में योनि कुण्ड का भी विधान है।) का खनन करे। वह कुण्ड यजमान के हाथ के अनुसार तीनों भुजायें एक-एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा होना चाहिये। **'कुण्डेऽस्मिन् विलिखेद्यन्त्रं त्र्यश्रं बिन्दुविराजितम्। षट्कोणमष्टपत्रं च त्रिवृतं भूगृहांकितम्।। ततः पूजां चरेत् देवि कुण्डचक्रस्य पार्वति। यथोक्तविधिना येन साधको दीक्षितो भवेत्।।'** अर्थात् इस त्रिकोण कुण्ड में त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु का अंकन करे। उसके बाहर षट्कोण, अष्टदल, तीनवृत्त और भूपुर बनाये। हे पार्वति! कुण्डस्थ चक्र की पूजा साधक अपनी दीक्षा में जिस प्रकार बताया गया है उस विधि के अनुसार ही करे। चित्र संख्या 24 पृष्ठ संख्या 440 देखें। अथवा निम्न सामान्य विधि से करे-

1. **'गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्तथा। चतुर्द्वारेषु सम्पूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः।।'** अर्थात् भूपुर के चारों द्वार पर पूर्वादि क्रम से गणेश, यम, वरुण और कुबेर की आवाहनादि पूर्वक पूजा करे – **'ॐ गं गणेशाय नमः, ॐ यं यमाय नमः, ॐ वं वरुणाय नमः, ॐ कुं कुबेराय नमः।**

2. **'माया च मोहिनी मत्ता माध्वी वह्निवल्लभा। वर्तुली वीरसूर्वाम्या पूज्या अष्टदलस्थिताः।।'** अर्थात् अष्टदल में माया, मोहिनी, मत्ता, माधवी, वह्निवल्लभा, वर्तुली, वीरसू और वाम्या का पूजन करे। **ॐ मां मायायै नमः, ॐ मों मोहिन्यै नमः, ॐ मं मत्तायै नमः, ॐ मां माधव्यै नमः, ॐ वं वह्निवल्लभायै नमः, ॐ वं वर्तुल्यै नमः, ॐ वीं वीरसुवे नमः, ॐ वां वाम्यायै नमः।**

3. **'अम्बालिकाम्बा बगला छिन्नशीर्षाम्बिका भगा। षट्कोणमध्यगाः पूज्याः कुण्डचक्रे महेश्वरि।।'** अर्थात् हे महेश्वरि! कुण्डचक्र में स्थित षट्कोण में अम्बालिका, अम्बा, बगला, छिन्नशीर्षा, अम्बिका और भगा का पूजन करे। **ॐ ह्रीं अम्बालिकायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बायै नमः, ॐ ह्रीं बगलायै नमः, ॐ ह्रीं छिन्नशीर्षायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बिकायै नमः, ॐ ह्रीं भगायै नमः।**

4. **'वह्निं वैश्वानरं चाग्निं त्रिकोणे पूजयेच्छिवे। स्वाहाभगवतीं बिन्दौ जातवेदसमर्चयेत्।।'** अर्थात् हे शिवे! त्रिकोण में वह्नि, वैश्वानर और अग्नि की पूजा करे। **ॐ वह्नयै नमः, ॐ वैश्वानराय नमः, ॐ अग्नये नमः**। तथा बिन्दु में स्वाहा और जातवेद की पूजा करे। **ॐ स्वाहायै नमः, ॐ जातवेदसे नमः**।

5. **'अग्निं मूलेन देवेशि वह्नेर्दशकलास्ततः। तारं वह्निः शिवोऽब्धिश्च हृज्जं शक्तिर्महेश्वरि।।** अर्थात् हे देवेशि! हे महेश्वरि! बिन्दु में ही अग्नि की दस कलाओं का पूजन करे। **ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः, ॐ रं ऊष्मायै नमः, ॐ लं ज्वलिन्यै नमः, ॐ वं ज्वालिन्यै नमः, ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, ॐ षं सुश्रियै नमः, ॐ सं सुरूपायै नमः, ॐ हं कपिलायै नमः, ॐ ळं हव्यवाहिन्यै नमः, ॐ क्षं कव्यवाहिन्यै नमः**।

6. संपूर्ण चक्रका पूजन निम्न मन्त्र से करे – **'अग्रे वैश्वानरं ब्रूयाज्जटाभारेति संवदेत्। भास्वरेति त्रिनेत्रेति ज्वालामुखपदं वदेत्।। प्रज्वलेति युगं ब्रूयात्जातवेदसि संवदेत्। संवेदने च ठद्वयं मन्त्रोऽयं वह्निवल्लभः।।'** अर्थात् अग्नि का यह प्रिय मूलमन्त्र है **'ॐ रं गं रूं जं सौः अग्ने वैश्वानर जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख प्रज्वल प्रज्वल जातवेद ठः ठः स्वाहा/नमः**। अब कुण्डस्थ चक्र का पूजन इसी मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करे। आवाहनादि समस्त उपचारों को भी इसी मन्त्र से करे। **'ततो दिग्भैरवान् भूतानर्चयेत् कुसुमैः परम्। ततो देवि प्रमथ्याग्निं कुण्डचक्रे कुलेश्वरि।। बिन्दौ वह्निं समावाह्य मूलेनोज्ज्वालयेच्छिवे। अग्निं संदीप्य मूलेन प्रणमेद्वह्निमुद्रया।। मूलेनाहुतिभिर्वह्निं हुनेत् षोडशभिस्ततः। अष्टोत्तरशतावृत्त्या दद्यदाज्येन पार्वति।।'** अर्थात् पूजित उस चक्र में आठ दिग्भैरवों का और भूतों का पूजन पुष्पों से करे। हे कुलेश्वरि! तत्पश्चात् अरणि मन्थन से अथवा अपनी दीक्षा की परम्परा के अनुसार स्मार्त विधि से अग्नि को प्रज्वलित कर चक्र मध्य में स्थित बिन्दु में स्थापित करे। हे शिवे! उसमें अग्नि देवता का आवाहनादि पूर्वक पूजन पूर्वोक्त अग्नि के मूलमन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करके वह्नि मुद्रा को दर्शाये। पूर्वोक्त अग्नि का मूलमन्त्र से 18 आहुति घी का देकर अग्नि को प्रदीप्त करे। पुनः मूलमन्त्र से ही 108 आहुति घी देकर अग्नि को समस्त संस्कारों से संस्कारित होने की भावाना करे। तदनन्तर

आगमिक पद्धति से अग्नि का अन्वाधान करे जो कि निम्न प्रकार से है। 1. वास्तोष्पते प्रतिजानीहि, 2. वास्तोष्पते शग्मया – इति द्वाभ्यां पक्वहविषा; 3. वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणां, 4. वास्तोष्पते प्रतरणो, 5. अमीवहा – इति षड्भि:; 6. जातवेद – इत्यादि पंचभि:; 7. सद्योजात – इत्यादि पंचभि:; 8. शन्न इन्द्राग्नी – इत्यादि पंचदर्शाग्भि:; 9. भूरादि व्याहृतिभिश्च एकैकवारं घृतेन जुहुयात्, 10. शन्नो देवेति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि – शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च। शेषेण स्विष्टकृदादि प्रणीताविमोकान्तं कर्म कर्तव्यम्। वे मन्त्र इस प्रकार हैं –

1. **वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।1।।**

2. **वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।2।।**

–इति द्वाभ्यां पक्वहविषा। ततो केवलघृतेन–

3. **वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणाऽसत्रं सोम्यानाम्। द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा।।1।**

4. **वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व।।1।।**

5. **अमीवहा वास्तोष्पते विश्वां रूपाण्याविशन्। सख सुशेव एधि नः।।1।। यदर्जुन सारमेय दतः मिशंग यच्छसे। वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप।।2।। स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनः सर। स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानुदुच्छुनायसे नि षु स्वप।।3।। त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः। स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानुदुच्छुनायसे नि षु स्वप।।4।। सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः। ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः।।5।। य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः। तेषां स हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा।।6।।**

6. **जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः।।1।। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः।।2।। अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्**

स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः।।3। विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदस्सिन्धुं न नावा दुरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।।4।। पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमा सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अतिदुरिताऽत्यग्निः।।5।।

7. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः।।1।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।2।। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यस्सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।3।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।4।। ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।5।।

8. शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।1।।
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।2।।
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।3।।
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।4।।
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।5।।
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्यभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्राभिरिह शृणोतु।।6।।
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूपाणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।7।।
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।8।।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नः सावित्रं शम्वस्तु वायुः।।9।।
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः।।10।।
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरसवती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।।
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।12।।
शं नो अज एकपाद देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।।13।।
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रिमाणं नवीयः। शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः।।14।।
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।15।।

9. ॐ भूःस्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा – इत्येतावत्पर्यन्तमेकैकवारं घृतेन जुहुयात्।

10. शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरसवती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।1।। इति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 36x3= 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि – शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च।

5.1.2-3 अथवा निम्न **संक्षिप्त अग्नि स्थापन विधि** से भी अग्नि की स्थापना कर सकते हैं –

ॐ अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतो दिशम्।
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। विश्वरुपो महानग्ने प्रणीतः सर्वकर्मसु।

ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षञ्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदः। सप्तसꣳसदोऽअष्टमीभूत साधनी। सकामाँ2ऽअध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेमुना ॥

ॐ अग्ने न य सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ।।
ॐ अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा पाम्मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्रायस्वाहा बृहस्प्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।

5.1.3 अग्निसम्मुखीकरणम् –स्थापित अग्नि को सम्मुख कर लेने की विधि –

'सपवित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणम्। हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा बिभीतो सम्मुखो भवेत्।।'

अर्थात् सपवित्री होकर जल को हाथ में लिये हुये हवनकुण्ड की परिक्रमा करने से जल को देखके भयभीत होकर अग्निदेव सम्मुख होते हैं। अतः हाथ में जल लेकर हवनकुण्ड की परिक्रमा करें। तदनन्तरं होमो कर्तव्यः।

5.1.4 होम द्रव्य विषयक सामान्य विचार : (रुद्रयामल आदि ग्रन्थेषु)

'पायसं सर्पिषा युक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितम्। होमयेद्विधिवद्भक्त्या दशांशेन नृपोत्तम।।'

अर्थात् हे राजन्! जप के दशांश होम भक्तिपूर्वक विधिवत् घी से युक्त और सफेद तिल से मिश्रित खीर से ही करें। अन्यत्र स्पष्ट कहा है–

**'प्रधानद्रव्यमुद्दिष्टं पायसान्नं तिलास्तथा। किंशुकैः सर्षपैः पूगैर्लाजादूर्वांकुरैस्तथा।।
यवैर्वा श्रीफलैर्दिव्यैर्नानाविधफलैस्तथा। रक्तचन्दनखण्डैश्च गुग्गुलैश्च मनोहरैः।।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्सर्वद्रव्याणि च क्रमात्। पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि।।'**

अर्थात् प्रधान द्रव्य के बारे में यह उपदेश दिया गया है – खीर, तिल, किंशुक, सरसों, सुपारी, खील, दूर्वांकुर और जौ। अथवा श्रीफल और अनेक प्रकार के दिव्यफल। साथ में लालचन्दन के टुकड़े और श्रेष्ठ गुग्गुल भी जोड़ें। प्रत्येक श्लोक में सभी द्रव्यों को क्रम से अथवा

केवल खीर से अग्नि में हवन करें। सामग्रियों की मात्रा के बारे में भी कहा गया है कि -

'कर्शमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रम्पयः स्मृतम्। तत्समम्मधुदुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम्।।'

अर्थात् होम में घी की आहुति हमेशा एककर्ष यानि 16 माषा के बराबर वजन ही स्रुवा/जुहू में ग्रहण कर आहुति देनी चाहिये। इसी प्रकार दूध और शहद शुक्तिका यानि 32 माषा, दुग्धान्न (पायस/खीर) एक अक्ष यानि एक कर्ष जो 16 माषा के बाराबर होता है। 12 माषा 10 ग्राम बराबर होता है।

'दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसंमिताः। पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः शक्तवोपि तथोदिताः।।'

अर्थात् दही एक प्रसृति यानि 2 पल बराबर मात्रा, लाजा 4 पल, चिवड़े और सत्तु मुट्ठि बराबर मात्रा हो।

'गुडम्पलार्धमानं स्याच्छर्कराऽपि तथा मता। ग्रासार्धं चरुमानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मता।।'

अर्थात् गुड़ आधा पल, चीनी भी आधा पल, चरु आधा ग्रास (मुर्गी के अण्डे के बराबर मात्रा ग्रास कहा जाता है।) गन्ना आधा गांठ (यानि एक गांठ से दूसरे गांठ तक की लम्बाई का आधा भाग।)।

'एकैकम्पत्रपुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत्। कदलीफलनारंगफलान्येकैकशो विदुः।।'

अर्थात् पत्र, पुष्प, मालपुए (अपूप) एक-एक ही ड़ालना है तथा केला और नारंगी फल भी एक-एक ही ड़ालना है।

'मातुलिंगं चतुःखण्डम्पनसं दशधा कृतम्। अष्टधा नारिकेलानि खण्डितानि विदुर्बुधाः।।'

अर्थात् चकोतरा का एक चौथाई भाग, कटहल का दशांश, नारियल आठवां हिस्सा तोड़कर ही ड़ालें।

'त्रिधाकृतम्फलं बिल्वं कपित्थं खण्डितं त्रिधा। उर्वारुकफलं होमे चोदितं खण्डितं त्रिधा।।'

अर्थात् बेल का फल, कैथ का फल और ककड़ी के एक तिहाई को ही आहुति में ड़ालें।

'फलान्यन्यानि खण्डशः समिधस्तु दशांगुलाः। दूर्वा त्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुलाः।।'

अर्थात् अन्य फलों को भी टुकड़े करके ही ड़ालें, समिधा 10 अंगुल लम्बी, दूर्वा 3 एक साथ और गुडूची 4 अंगुल लम्बी ही होनी चाहिये।।

'व्रीहयो मुष्टिमात्रास्स्यु: मुद्गमाषयवाश्च स्यु:। तण्डुलास्स्युस्तदर्धांशा: कोद्रवा मुष्टिसम्मिता।।'

अर्थात् धान, मूंग, उड़द, जौ और कोदों एक-एक मुट्ठि ही हो किन्तु चावल आधी मुट्ठि ही होनी चाहिये।

'गोधूमरक्तकमला विहिता मुष्टिमानत:। तिलाश्चुलुकमात्रा स्यु: सर्षपास्तत्प्रमाणका:।।'

अर्थात् गेहूं और लाल कमल गट्ठे मुट्ठि बराबर, तिल और सरसों चुल्लू भर मात्रा ही आहुति में ड़ालें।

'शक्तिप्रमाणं लवणं मरीचान्येकविंशति:।। पुरुर्बदरमान: स्याद्रामठं तत्समं स्मृतम्।।'

अर्थात् नमक आधा तोला, मिर्ची 21 संख्या, हल्दी और हींग बेर के फल के बराबर मात्रा होनी चाहिये।

चन्दनागुरुकस्तूरीकर्पूरकुंकुमानि च।। तिन्तिडिबीजमानानि समुद्दिश्टानि देशिक:।
कर्षाणि पंचगव्यानि तत्समानि मनीषिण:।।

अर्थात् चन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर और कुंकुम को इमली के बीज के बराबर मात्रा ही ग्रहण करें। पंचगव्य को 16 माषा ही लें।

इसमें ध्यान रखें -

'तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मी यवाधिक्ये दरिद्रता। घृताधिक्ये भवेन्मुक्ति: सर्वसिद्धिस्तु शर्करा।।'

अर्थात् तिल ज्यादा हो तो लक्ष्मी प्राप्ति होगी, जौ ज्यादा हो तो दरिद्रता मिलेगी, घी अधिक हो तो मुक्ति मिलेगी और शक्कर अधिक हो तो सर्व कार्य सिद्धि होगी।

5.1.5 आहुति कब डालना है -

'सकारे सूतकं विद्याद्धकारे मृत्युमादिशेत्। आहुतिस्तत्र दातव्यो यत्र आकार दृश्यते।।'

अर्थात् स्वाहा शब्द के 'स' यानि 'स्वा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह सूतक उत्पन्न करेगा और 'ह' यानि 'हा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह मृत्यु को उत्पन्न करेगा, अतः 'स्वाहा' के बाद जब 'आ' का उच्चारण हो तब आहुति देना चाहिये। अतः 'स्वाहा आ' ऐसे उच्चारण कर आहुति देना चाहिये। यह अर्थ आगम पद्धति के अनुसार है। किन्तु वैदिक पद्धति के अनुसार इस श्लोक का अर्थ है - स्वाहा शब्द के 'स' यानि 'स्वा' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह सूतक उत्पन्न करेगा और 'ह्' का उच्चारण करने पर आहुति डालेंगे तो वह मृत्यु को उत्पन्न करेगा, अतः 'स्वाहा' शब्द के अन्तिम अक्षर 'आ' का श्रवण यानि ठीक से पूरा सुनने के बाद ही आहुति देना चाहिये।

5.2 अथ होमप्रकरणम्

5.2.1-1 आघारावाज्यभागहोमः -

अग्नि के उत्तरदिशा से पूर्वदिशा तक घी की धारा छोड़ें - **'ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।(मनसा)'** प्रोक्षणी पात्र में संस्रव छोड़ें।

पुनः पूर्व से दक्षिण तक घी की धारा छोड़ें - **'ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम।'**

उत्तरपूर्वार्ध में घी की आहुति दें - **'ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।'**

दक्षिणपूर्वार्ध में घी की आहुति दें - **'ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।'**

5.2.1-2 यजमान द्वारा द्रव्यत्याग :-

मया सम्पादितानि यथालाभोपपन्नानि समिच्चरुतिलाज्यादिहवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि, न मम। यथादैवतमस्तु।।

5.2.2 अग्नि पूजनम् -

ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्माज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।
ॐ भूर्भुवःस्वः शतमंगलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य - पांच उपचार अर्पण कर 'मुखवासनार्थे पूगीफलं, ताम्बूलं, दक्षिणां च समर्पयामि।'

5.2.3 अथ गणेशाम्बिकयोः (वराहुति)-होमः

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम । आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा । ॐ गणपतये स्वाहा । इदं गणपतये न मम ।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । ॐ अम्बिकायै स्वाहा । इदं अम्बिकायै न मम ।

ॐ त्र्यम्बकँ यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ।।

ॐ महामृत्युञ्जयाय स्वाहा । इदं महामृत्युञ्जयाय न मम । अनेन होमेन सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकः वारुणहोमोक्ता - देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.4-1 नवग्रहदेवतानाम् होममन्त्राः-

1. ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् । ॐ सवित्रे स्वाहा । इदं सवित्रे न मम।
2. ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा । ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

3. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति। ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय न मम।
4. ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय न मम।
5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये न मम।
6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय न मम।
7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शय्योरभि स्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय न मम।
8. ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम।
9. ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोर्मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम। अनेन होमेन सूर्यादिनवग्रहादेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

5.2.4-2 अथ अधिदेवतानाम् होममन्त्राः-

1. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ ईश्वराय स्वाहा। इदं ईश्वराय (रुद्राय) न मम।
2. ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण। ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा। इदं महालक्ष्म्यै न मम।
3. ॐ यदक्रन्द प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। इदं स्कन्दाय न मम।

4. ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा । ॐ विष्णवे स्वाहा । इदं विष्णवे न मम।

5. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम।

6. ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रू रपमृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः। ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम।

7. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्त आहूस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि। ॐ यमाय स्वाहा । इदं यमाय न मम।

8. ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरगमत् समोषधीभिरोषधीः । ॐ कालाय स्वाहा । इदं कालाय न मम ।

9. ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा । इदं चित्रगुप्ताय न मम ।
अनेन होमेन ईश्वराद्यधिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.4-3 प्रत्यधिदेवतानाम् होममन्त्राः-

1. ॐ अग्निं दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ2 आसादयादिह । ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम।

2. ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः । देवीरापो यो व ऊर्मि प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाजꣳसेत । ॐ अद्भ्यः स्वाहा । इदमद्भ्यो न मम ।

3. ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम ।
4. ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ्यस्य पाॅंसुरे। ॐ विष्णवे स्वाहा । इदं विष्णवे न मम ।
5. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम् हवयामि शक्र पुरुहूतमिन्द्रम् । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम।
6. ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीय पूषासि धर्म्माय दीष्व । ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा । इदमिन्द्राण्यै न मम।
7. ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।
8. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा । इदं सर्पेभ्यो न मम ।
9. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । स वुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ।

अनेन होमेन अग्न्यादिप्रत्यधिदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.5 पंचलोकपालानाम् होममन्त्राः–

1. ॐ गणानांत्वा गणपतिॅंहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिॅंहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिॅंहवामहे। वसो मम आहमजानि गर्मधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये न मम।
2. ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। इदं अम्बिकायै न मम।

3. ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम।

4. ॐ घृतं घृतपावानः पिब तव साम्बसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। इदं आकाशाय न मम।

5. ॐ यावाङ्कुशामधुमत्यश्विना सुनृतावती। तया यज्ञमिममक्षतम्। ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। इदं अश्विनीकुमाराभ्याम् न मम। अनेन होमेन गणपत्यादिपञ्चलोकपालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।।

5.2.6 अथ दशदिक्पालदेवतानाम् होममन्त्राः-

1. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।

2. ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ2आसादयादिह। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

3. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आस्ते त्रीणी दिवि बन्धनानि। ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय न मम। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः।

4. ॐ एष ते निर्ऋते भागस्त जुषस्व। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। इदं निर्ऋतये न मम।

5. ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके। ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

6. ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः। ते अग्रेऽश्वमयुञ्जंस्ते अस्मिन् जवमा दधुः। ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम।

7. ॐ वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ कुबेराय स्वाहा। इदं कुबेराय न मम।

8. ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। ॐ ईशानाय स्वाहा। इदं ईशानाय न मम।

9. ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।

10. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा। इदं सर्पेभ्यो न मम।
अनेन होमेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

5.2.7 प्रधानहोमः

कर्मदेवता का प्रधान होम करें।

5.2.8 पीठदेवतानां होमः

कर्मदेवता के पीठसम्बन्धी देवताओं का होम करें।

5.2.9 आवरणदेवतानां होमः

कर्मदेवता के यन्त्रस्थ आवरणदेवताओं का होम करें।

5.2.10 नामावलीहोमः

कर्मदेवता के 108 अथवा 1000 नामावली से होम करें।

5.2.11 तर्पण

बड़े बर्तन (परात) में दूध अथवा जल अथवा दूध मिश्रित जल ग्रहण कर कुशा अथवा दर्भो से न्यूनतम 108 बार तर्पण करें–
'ॐ *अमुकं* तर्पयामि'।

5.2.12 मार्जन

उसी सामग्री (दूध/जल/दूध मिश्रित जल) से मार्जन करें– '**ॐ** *अमुकं* **मार्जयामि**'। हाथ धोकर आचमन प्राणायाम करें।

5.2.13 वास्तुदेवतानाम् होममन्त्राः-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा । ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय महाबलाय पराक्रमाय सर्वाधिवासाश्रितशरीराय ब्रह्मपुत्राय सकलब्रह्माण्डधारिणे भूभारार्पित-मस्तकाय पुर-पत्तन-प्रासाद-गृह-वापि-सर-कूपादेः सन्निवेशसान्निध्यकराय सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वम्भराय परमपुरुषाय शक्रवरदाय वास्तोष्पते नमस्ते स्वाहा ।

1. ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिने स्वाहा ।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्याय स्वाहा ।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्ताय स्वाहा ।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः कुलिशायुधाय स्वाहा ।
5. ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय स्वाहा ।
6. ॐ भूर्भुवःस्वः सत्याय स्वाहा ।
7. ॐ भूर्भुवःस्वः भृशाय स्वाहा ।
8. ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय स्वाहा ।
9. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णे स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः वितथाय स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षताय स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाय स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजाय स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः पितृभ्यो स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवाय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्ताय स्वाहा ।

21.ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय स्वाहा ।
22.ॐ भूर्भुवःस्वः असुराय स्वाहा ।
23.ॐ भूर्भुवःस्वः शेषाय स्वाहा ।
24.ॐ भूर्भुवःस्वः पापाय स्वाहा ।
25.ॐ भूर्भुवःस्वः रोगाय स्वाहा ।
26.ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्याय स्वाहा ।
27.ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्याय स्वाहा ।
28.ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटाय स्वाहा ।
29.ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय स्वाहा ।
30.ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाय स्वाहा ।
31.ॐ भूर्भुवःस्वः अदितये स्वाहा ।
32.ॐ भूर्भुवःस्वः दितये स्वाहा ।
33.ॐ भूर्भुवःस्वः आपाय स्वाहा ।
34.ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्राय स्वाहा ।
35.ॐ भूर्भुवःस्वः जयाय स्वाहा ।
36.ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय स्वाहा ।
37.ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे स्वाहा ।
38.ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रे स्वाहा ।
39.ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वते स्वाहा ।
40.ॐ भूर्भुवःस्वः विवुधाधिपाय स्वाहा ।
41.ॐ भूर्भुवःस्वः मित्राय स्वाहा ।
42.ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणे स्वाहा ।
43.ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधराय स्वाहा ।
44.ॐ भूर्भुवःस्वः आपवत्साय स्वाहा ।
45.ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
46.ॐ भूर्भुवःस्वः चरक्यै स्वाहा ।
47.ॐ भूर्भुवःस्वः विदार्य्यै स्वाहा ।
48.ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनायै स्वाहा ।
49.ॐ भूर्भुवःस्वः पापराक्षस्यै स्वाहा ।
50.ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय स्वाहा ।
51.ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे स्वाहा ।
52.ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकाय स्वाहा ।
53.ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय स्वाहा ।
54.ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय स्वाहा ।

55. ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये स्वाहा ।
56. ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय स्वाहा ।
57. ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये स्वाहा ।
58. ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय स्वाहा ।
59. ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे स्वाहा ।
60. ॐ भूर्भुवःस्वः कुबेराय स्वाहा ।
61. ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराय स्वाहा ।
62. ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
63. ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय स्वाहा ।
64. ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसेनाय स्वाहा ।
65. ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय स्वाहा ।
66. ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय स्वाहा ।
67. ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय स्वाहा ।
68. ॐ भूर्भुवःस्वः हेतुकाय स्वाहा ।
69. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ।
71. ॐ भूर्भुवःस्वः असिवैतालाय ।
72. ॐ भूर्भुवःस्वः कालाय स्वाहा ।
73. ॐ भूर्भुवःस्वः करालाय स्वाहा ।
74. ॐ भूर्भुवःस्वः एकपादाय स्वाहा ।
75. ॐ भूर्भुवःस्वः भीमरूपाय स्वाहा
76. ॐ भूर्भुवःस्वः खेचराय स्वाहा ।
77. ॐ भूर्भुवःस्वः तलवासिने स्वाहा ।

अनेन होमेन शिखिन्यादिसप्तसप्ततिवास्तुदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.14 अथ चतुःषष्टियोगिनीनाम् होममन्त्राः-

1. ॐ भूर्भुवःस्वः दिव्ययोगिन्यै स्वाहा ।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः महायोगिन्यै स्वाहा ।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धयोगिन्यै स्वाहा ।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः गणेश्वर्य्यै स्वाहा ।
5. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेताक्ष्यै स्वाहा ।
6. ॐ भूर्भुवःस्वः डाकिन्यै स्वाहा ।
7. ॐ भूर्भुवःस्वः काल्यै स्वाहा ।
8. ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै स्वाहा ।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः निशाचर्य्यै स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकार्य्यै स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रवैताल्यै स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः भूताल्यै स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः भूतडामर्य्यै स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः विरूपाक्ष्यै स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः शुष्काङ्ग्यै स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः नरभोजिन्यै स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः भट्टार्य्यै स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरभद्रायै स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः धूम्राक्ष्यै स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः कलिप्रियायै स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः राक्षस्यै स्वाहा ।
23. ॐ भूर्भुवःस्वः घोररक्ताक्ष्यै स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः विरूपाक्ष्यै स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः भयङ्कर्यै स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिकायै स्वाहा ।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरकौमार्य्यै स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डधारिण्यै स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः सासुर्य्यै स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्रझंकारभाषिण्यै स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिपुरान्तकायै स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवध्वंसिन्यै स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोध दुर्मुख्यै स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतवाहिन्यै स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः खट्वाङ्ग्यै स्वाहा ।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः दीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः मालिन्यै स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः मन्त्रयोगिन्यै स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः चक्र्यै स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवःस्वः कंकाल्यै स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवःस्वः भुवनैश्वर्य्यै स्वाहा ।

44.ॐ भूर्भुवःस्वः कटक्यै स्वाहा ।
45.ॐ भूर्भुवःस्वः कटिन्यै स्वाहा ।
46.ॐ भूर्भुवःस्वः रौद्र्यै स्वाहा ।
47.ॐ भूर्भुवःस्वः यमदूत्यै स्वाहा ।
48.ॐ भूर्भुवःस्वः करालिन्यै स्वाहा ।
49.ॐ भूर्भुवःस्वः घोराक्ष्यै स्वाहा ।
50.ॐ भूर्भुवःस्वः कार्मुक्यै स्वाहा ।
51.ॐ भूर्भुवःस्वः काकदृष्ट्यै स्वाहा ।
52.ॐ भूर्भुवःस्वः अधोमुख्यै स्वाहा ।
53.ॐ भूर्भुवःस्वः मुण्डाग्रधारिण्यै स्वाहा ।
54.ॐ भूर्भुवःस्वः व्याघ्र्यै स्वाहा ।
55.ॐ भूर्भुवःस्वः किंकिण्यै स्वाहा ।
56.ॐ भूर्भुवःस्वः प्रेतभक्षिण्यै स्वाहा ।
57.ॐ भूर्भुवःस्वः कालरूपायै स्वाहा ।
58.ॐ भूर्भुवःस्वः कामाख्यायै स्वाहा ।
59.ॐ भूर्भुवःस्वः उष्ट्रिण्यै स्वाहा ।
60.ॐ भूर्भुवःस्वः योगपीठायै स्वाहा ।
61.ॐ भूर्भुवःस्वः महालक्ष्म्यै स्वाहा ।
62.ॐ भूर्भुवःस्वः एकवीरायै स्वाहा ।
63.ॐ भूर्भुवःस्वः कालरात्र्यै स्वाहा ।
64.ॐ भूर्भुवःस्वः पीठिकायै स्वाहा ।

अनेन होमेन दिव्ययोगिन्यादिचतुष्षष्ठियोगिन्याः साङ्गा सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.15 क्षेत्रपालदेवतानाम् होममन्त्राः-

1.ॐ भूर्भुवःस्वः अजराय स्वाहा ।
2.ॐ भूर्भुवःस्वः आपकुम्भाय स्वाहा ।
3.ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रस्तुत्याय स्वाहा ।
4.ॐ भूर्भुवःस्वः इडाचाराय स्वाहा ।
5.ॐ भूर्भुवःस्वः उक्तसंज्ञाय स्वाहा ।
6.ॐ भूर्भुवःस्वः कूष्माण्डाय स्वाहा ।
7.ॐ भूर्भुवःस्वः ऋषिसूदनाय स्वाहा ।
8.ॐ भूर्भुवःस्वः ऋणमुक्ताय स्वाहा ।

9. ॐ भूर्भुवःस्वः क्लृप्तकेशाय स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवःस्वः एकदंष्ट्राय स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवःस्वः ओघबन्धवे स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवःस्वः अंजनाय स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवःस्वः कवलाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवःस्वः गोमुख्याय स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवःस्वः वाङ्मनसे स्वाहा ।
23. ॐ भूर्भुवःस्वः छटाटोपाय स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवःस्वः झंगीवाय स्वाहा ।
27. ॐ भूर्भुवःस्वः टंकपाणये स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवःस्वः डामराय स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवःस्वः णवार्णवाय स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवःस्वः स्थिराय स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवःस्वः धनदाय स्वाहा ।
37. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रचण्डकाय स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवःस्वः वीरसंघाय स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवःस्वः मेघभासुराय स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवःस्वः एह्यवाय स्वाहा ।

10. ॐ भूर्भुवःस्वः लृपकाय स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवःस्वः ऐरावताय स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवःस्वः औषधीशाय स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवःस्वः अस्त्रवाराय स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवःस्वः खरुखानलाय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टानादाय स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डिवारणाय स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवःस्वः जटालाय स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवःस्वः जडश्चराय स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवःस्वः ठानबन्धवे स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवःस्वः ध्क्कारवाय स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवःस्वः तडिद्देहाय स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवःस्वः दन्तुराय स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवःस्वः नत्तिक्क्तांताय स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवःस्वः फट्काराय स्वाहा ।
40. ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगाय स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवःस्वः युगान्ताय स्वाहा ।
44. ॐ भूर्भुवःस्वः लम्बोष्ठाय स्वाहा ।

45. ॐ भूर्भुवः स्वः वासवाय स्वाहा ।
46. ॐ भूर्भुवः स्वः शूकनन्दाय स्वाहा ।
47. ॐ भूर्भुवः स्वः षडालाय स्वाहा ।
48. ॐ भूर्भुवः स्वः सुनाम्ने स्वाहा ।
49. ॐ भूर्भुवः स्वः हंब्रुकाय स्वाहा ।

अनेन होमेन अजराद्येकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.2.16-1 सर्वतोभद्रमण्डपस्थदेवतानां होममन्त्राः-

1. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे स्वाहा ।
2. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय स्वाहा ।
3. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय स्वाहा ।
4. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय स्वाहा ।
5. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्वाहा ।
6. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय स्वाहा ।
7. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये स्वाहा ।
8. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय स्वाहा ।
9. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे स्वाहा ।
10. ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो स्वाहा ।
11. ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो स्वाहा ।
12. ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो स्वाहा ।
13. ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां स्वाहा ।
14. ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा ।
15. ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो स्वाहा ।
16. ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो स्वाहा ।
17. ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो स्वाहा ।
18. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय स्वाहा ।
19. ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय स्वाहा ।
20. ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय स्वाहा ।
21. ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय स्वाहा ।
22. ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो स्वाहा ।
23. ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै स्वाहा ।
24. ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे स्वाहा ।
25. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै (पितृभ्यो) स्वाहा ।
26. ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा ।

27. ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये स्वाहा ।
28. ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो स्वाहा ।
29. ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो स्वाहा ।
30. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै स्वाहा ।
31. ॐ भूर्भुवः स्वः गंगादिसप्तसरिद्भ्यो स्वाहा ।
32. ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो स्वाहा ।
33. ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे स्वाहा ।
34. ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै स्वाहा ।
35. ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय स्वाहा ।
36. ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय स्वाहा ।
37. ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये स्वाहा ।
38. ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय स्वाहा ।
39. ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय स्वाहा ।
41. ॐ भूर्भुवः स्वः अंकुशाय स्वाहा ।
42. ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय स्वाहा ।
43. ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय स्वाहा ।
44. ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय स्वाहा ।
45. ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय स्वाहा ।
46. ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये स्वाहा ।
47. ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय स्वाहा ।
48. ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये स्वाहा ।
49. ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै स्वाहा ।
50. ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै स्वाहा ।
51. ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै स्वाहा ।
52. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै स्वाहा ।
53. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै स्वाहा ।
54. ॐभूर्भुवः स्वः चामुण्डायै स्वाहा ।
55. ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै स्वाहा ।
56. ॐभूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै स्वाहा ।
57. ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै स्वाहा ।।

अनेन होमेन सर्वतोभद्रमण्डलस्थब्रह्मादिसप्तपञ्चाशद्देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम ।

5.16-2 उभयं/अथवा एकलिंगतोभद्रदेवतानां होममन्त्राः-

ॐ नमः कृत्स्नाय तया धावते सत्त्वानां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।।1।।

ॐ शिवत्रऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः श्वयिः कुटरुर्दात्यौ हस्ते वाजिनां कामाय पिकः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुरुभैरवाय स्वाहा ।।2।।

ॐ उग्राँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्। ॐ भूर्भुवःस्वः चण्डभैरवाय स्वाहा ।।3।।

ॐ इन्द्रस्य क्रीडोऽअदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽअदित्यै भसज्जीमूता हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृकाभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहान् वल्मीकान् क्लोमभिग्लौंभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्नतीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याꣳ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना। ॐ भूर्भुवःस्वः क्रोधभैरवाय स्वाहा।।4।।

ॐ उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठास्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाऽ-आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः। ॐ भूर्भुवःस्वः उन्मत्तभैरवाय स्वाहा।।5।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः। ॐ भूर्भुवःस्वः कपालभैरवाय स्वाहा।।6।।

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः भीषणभैरवाय स्वाहा।।7।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च। ॐ भूर्भुवःस्वः संहारभैरवाय स्वाहा।8।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय स्वाहा।।9।।

ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारञ्च हराणि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः वासुकये स्वाहा।।10।।

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः तक्षकाय स्वाहा।।11।।

ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसोद गोधा कालका दार्वाघाटास्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः। ॐ भूर्भुवःस्वः कुलिशाय स्वाहा।।12।।

ॐ सोमाय कुलङ्गऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कुक्कुटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः। ॐ भूर्भुवःस्वः कर्कोटकाय स्वाहा।।13।।

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्। उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे। ॐ भूर्भुवः स्वः शंखपालाय स्वाहा।।14।।

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्। ॐ भूर्भुवःस्वः कम्बलाय स्वाहा।।15।।

ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मे अधस्ताद् धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याꣳसौर्यायमौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः। ॐ भूर्भुवःस्वः अश्वतराय स्वाहा।।16।।

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलिने स्वाहा।।17।।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत। ॐ भूर्भुवःस्वः चन्द्रमौलिने स्वाहा।।18।।

ॐ आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभध्वजाय स्वाहा।19।।

ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्मयऽआजग्मेदꣳसवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीꣳयस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय स्वाहा।।20।।

ॐ रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते।। ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तिधराय स्वाहा।।21।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ॐ भूर्भुवःस्वः महेश्वराय स्वाहा।।22।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। ॐ भूर्भुवःस्वः शूलपाणये स्वाहा।।23।।

ॐ चन्द्रमाऽप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳहरिरेति कनिक्रदत्।। ॐ भूर्भुवःस्वः महादेवाय स्वाहा।।24।।

ॐ भूर्भुवःस्वः परिधये स्वाहा।।25।। ॐ भूर्भुवःस्वः चतुःपुरिभ्यो स्वाहा।।26।।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। ॐ भूर्भुवःस्वः ऋग्वेदाय स्वाहा।।27।।

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमग्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवा

ऽयक्ष्मामावस्तेन ईशत माद्यथ्ठसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गौपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि। ॐ भूर्भुवःस्वः यजुर्वेदाय स्वाहा।।28।।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोता सत्सि बर्हिषि। ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय स्वाहा।।29।।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः। ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय स्वाहा।।30।।

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। ॐ भूर्भुवःस्वः भवसहितभवान्यै स्वाहा।।31।।

ॐ अग्निथ्ठहृदयेनाशनिथ्ठहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्टुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्। ॐ भूर्भुवःस्वः शर्वसहितशर्वाण्यै स्वाहा।।32।।

ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रथ्ठसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यथ्ठरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्। ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतिसहितपाशुपत्यै स्वाहा।।33।।

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियजिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानसहितेशान्यै स्वाहा।।34।।

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः उग्रसहितोग्रायै स्वाहा।।35।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्रसहितरुद्राण्यै स्वाहा।।36।।

ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। ॐ भूर्भुवःस्वः भीमसहितभीमायै स्वाहा।।37।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र

रीरिषः। ॐ भूर्भुवःस्वः महत्सहितमहत्यै स्वाहा।।38।।
अनेन होमेन एकलिंगतोभद्रमण्डलस्थासितभैरवाद्यष्टात्रिंशद्देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः प्रीयन्ताम् न मम।

5.2.17-1 फलादीनां होमः (फलीकरणहोमः) -

हाथ में जल लेकर - '**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य..........शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य सग्रहमख................................होमाख्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थमाचारात्फलहोमं करिष्ये**' जल छोड़ें।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ द्राक्षा धारण कर सूर्य का ध्यान करें -

1. **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।**

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ गन्ना धारण कर चन्द्रमा का ध्यान करें -

2. **ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।**

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ सुपारी धारण कर मंगल का ध्यान करें -

3. **ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति। ॐ भूर्भुवःस्वः भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय न मम।**

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ सन्तरा धारण कर बुध का ध्यान करें -

4. ॐ उद्‌दुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । ॐ भूर्भुवःस्वः बुधाय स्वाहा । इदं बुधाय न मम ।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ नींबू धारण कर बृहस्पति का ध्यान करें –

5. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ भूर्भुवःस्वः बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये न मम।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ बिजौरानींबू धारण कर शुक्र का ध्यान करें –

6. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ॐ भूर्भुवःस्वः शुक्राय स्वाहा । इदं शुक्राय न मम।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ उत्तति धारण कर शनि का ध्यान करें –

7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शँय्योरभिस्रवन्तु नः । ॐ भूर्भुवःस्वः शनैश्चराय स्वाहा । इदं शनैश्चराय न मम ।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ नारियल धारण कर राहु का ध्यान करें –

8. ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता । ॐ भूर्भुवःस्वः राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम ।

स्रुचि के मध्ये में घी के साथ अनार धारण कर केतु का ध्यान करें –

9. ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोर्मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः । ॐ भूर्भुवःस्वः केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम ।

10. गुग्गुलहोमः – हाथ में जल लेकर – '**अद्य.......**' इत्यादि उच्चार्य '**मम गृहे भूतादिसमग्रदोषपरिहारार्थं त्र्यम्बकमिति मन्त्रेण गुग्गुलहोममहं करिष्ये**' जल छोड़ें और गुग्गुल से हवन करें–

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वाहा।

11. सर्षपहोमः – हाथ में जल लेकर – '**अद्य.......**' इत्यादि उच्चार्य '**मम सर्वरिष्टशान्त्यर्थं शत्रुक्षयार्थं च जातवेदसे इत्यादि मन्त्रेण सर्षपहोममहं करिष्ये**' जल छोड़ें और सरसों से हवन करें –

'**ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुन्दुरितात्यग्निः।।**

ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।। स्वाहा।

12. लक्ष्मीहोमः – हाथ में जल लेकर – '**अद्य ....**' इत्यादि संकल्पं उच्चार्य '**मम गृहेऽअलक्ष्मीविनाशनार्थं दशविधलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं च लक्ष्मीहोममहं करिष्ये**'

जल छोड़ें और एक पात्र में धारित सीताफल, केला, अनार, दूध, घी, शहद, चीनी, दूर्वा, शमी, चावल और पान के पत्ता से हवन करें (ध्यान दें – बीच-बीच में स्वाहा शब्द सुनाई देने पर सामग्री को अग्नि में न ड़ालें, किन्तु अन्त में एक साथ एक बार में ही ड़ालें)–

'**ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मे धामयाषिᳯस्वाहा।। याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा।। इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्। मयि देवा दधातु श्रियमुत्तमान्तस्य ते स्वाहा।। मम गृहे लक्ष्मीः स्थिरा भवतु स्वाहा।।**'

5.2.17-2 स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनम् –

हाथ में जल लेकर – '**मया आरब्धस्य ....पूजनसहितहवनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं स्थापितादेवतानामुत्तरपूजनमहं करिष्ये।** जल छोड़ें ।

<u>आग्नेयकोण में</u>

1. गणपति पूजन – '**ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳯहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिᳯहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिᳯहवामहे वसो**

मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणपतये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।'

2. सर्वमातृका पूजन – **'ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सगणेशगौर्याद्यावाहितसकलमातृकाभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'**

3. घृतमातृका पूजन – **'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिघृतमातृकाभ्यो** (वसोर्धारादेवताभ्यो) **नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'**

नैर्ऋत्यकोण में वास्तुपुरुषपूजन –

'ॐ वास्तेष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मादिवास्तुमण्डलस्थदेवतासहिताय वास्तुपुरुषाय नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

पुनः आग्नेयकोण में गौर्यादिमातृकाओं के दक्षिणभाग में योगिनी पूजन –

'ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीमकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिताभ्यो गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

वायव्यकोण में

1. क्षेत्रपालपूजन – **'ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालसहितेभ्योऽअजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'**

2. अग्नि पूजन – **'ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्माज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं**

विधेम।। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

3. ब्रह्म पूजन – 'ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः कर्मसाक्षिणे ब्रह्मणे नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

ईशानकोण में नवग्रह पूजन –

'ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्रातमतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जꣳसमगर्भमुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।'

मध्य में – 'ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डल/एकलिंगतोभद्रमण्डलस्थदेवता समन्विताय सांगाय सपरिवाराय ....नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगण पत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ भू र्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलं च समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादि स्थापितदेवताभ्यो नमः, यथाशक्ति प्रत्येकं महादक्षिणां समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्री गणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः, सफलं विशेषार्घ्यं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।

पुनरग्निपूजनं कृत्वा

5.2.18-1 अथ सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकस्विष्टकृद्धोमः

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

5.2.18-2 व्याहृतिहोमः

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।

5.2.18-3 अथ पंचवारुणकहोमः

1. ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम।

2. ॐ सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसौ व्युष्ठौ । अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणो वीहि मृडाकꣳसुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम।

3. ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्त्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजꣳस्वाहा । इदमग्नये अयसे स्वाहा । इदमग्नय अयसे न मम।

4. ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशाः वितताः महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

5. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद् वाधमं विमध्यमꣳश्रथाय । अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणाय स्वाहा । इदं वरुणाय न मम। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः ।

6. ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। (मनसा) ।। इति प्रायश्चित्तसंज्ञको होमः ।।

5.2.19 बलिदानम्

बलिदान में प्रतिनिधि द्रव्य -

कालिका पुराण में बलिदान द्रव्य के विषय में कहा है -

'कूष्माण्डमिक्षुदण्डश्च मद्यं सारद्यमेव च। एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमाः सदा।।
अवश्यं विहितं यत्र मद्यं तत्र द्विजः पुनः। नारिकेलजलं कांस्ये ताम्रे वा विसृजेन्मधु।।'

तथा कुलचूडामणितन्त्र में भी कहा है –

'यत्रावश्यं विनिर्दिष्टं मदिरापानपूजनम्। ब्राह्मणाः ताम्रपात्रे च मधु मद्यं प्रकल्पयेत्।।'

अर्थात् कूष्माण्ड, गन्ना, शहद और जमीकन्द ये सब बकरे की बलि के समान कहे गये हैं और इनसे ही सभी देवी-देवताओं की तृप्ति कही गयी है। तथा जिस कर्म में मदिरा दान करना आवश्यक कहा गया है वहां कांसे के पात्र में नारियल के पानी को अथवा तांबे के पात्र में शहद को समर्पित करे। एवं इसी बात को कुलचूडामणितन्त्र में भी कहा है – जहां पूजन में मदिरा पान को आवश्यक कहा गया है वहां ब्राह्मण ताम्र पात्र में शहद को डालकर अर्पित करें।

विधिः –

यजमान हाथ में जल लेकर –

'मया प्रारब्धस्य सग्रहमख...........पूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं दशदिक्पालदेवतानां तथा चान्येषां स्थापितदेवतादीनां पूजनपूर्वकबलिदानं करिष्ये।' जल छोड़ें। दशदिक्पालदेवतानां बलिदानम् –

1. पूर्व में – **'ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳसवास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। इन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमेभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य** (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् न मम।।'**

2. आग्नेय में – ' ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।। अग्निं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन अग्निः प्रीयताम् न मम।।'

3. दक्षिण में – ' ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। यमं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमः प्रीयताम् न मम।।'

4. नैर्ऋत्य में – ' ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनाऽस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। निर्ऋतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् न मम।।'

5. पश्चिम में – ' ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशᳬसमानऽआयुः प्रमोषीः।। वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य

(यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वरुणः प्रीयताम् न मम।।'

6. वायव्य में – 'ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्वसवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। वायुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वायुः प्रीयताम् न मम।।'

7. उत्तर में – 'ॐ वयꣳसोमवते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तं सचेमहि।। सोमं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गन्धा द्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। सोमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सोम दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन सोमः प्रीयताम् न मम।।'

8. ईशान में – 'ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ईश्वरं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ईश्वराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ईश्वर दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ईश्वरः प्रीयताम् न मम।।'

9. पूर्व और ईशान के मध्य में – 'ॐ अस्मे रुद्रा मेहनापर्वतासो वृत्रहत्येभर हूतौ सजोषाः। यः शꣳसते स्तुवते धायिपज्र

ऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ2ऽअवन्तु देवाः।। ब्रह्माणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् न मम।।

10. पश्चिम और निर्ऋति के मध्य में – 'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। अनन्तं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् न मम।।' अथवा दशदिक्पालदेवताओं केलिये एकतन्त्र से बलि दे सकते हैं –

'ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रादिदशदिक्पालान्सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् न मम।।'

स्थापितदेवतानां बलिदानम् –

1. आग्नेय में गणपति केलिये बलि – 'ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ

हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।। गणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणपते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् न मम।।'

2. उसके दक्षिण भाग में गणेशगौर्यादिषोडशमातृकाओं केलिये बलि – 'ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीमाऽअहन्तव वीरां विदेय तव देवि सन्दृशि।। गणेशगौर्यादिमातृः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धा-द्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। गणेशगौर्यादिमातृभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणेशगौर्यादिमातरः दिशं रक्ष इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन (वसोर्धारा) सप्तघृतमातृकासहितगणेशगौर्यादिमातरः प्रीयन्ताम् न मम।।'

3. सप्तस्थलमातृकासहितश्र्यादिसप्तघृतमातृकाओं केलिये बलि – 'ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। सप्तस्थलमातृकासहिताश्र्यादि सप्तघृतमातृकाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धाद्युपचारैयुष्मानहं पूजयामि। सप्तस्थलमातृकासहिताश्र्यादिसप्तघृतमातृकाभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सप्तस्थलमातृकासहितश्र्यादि सप्तघृतमातृकाः दिशं रक्ष इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन सप्तस्थलमातृका सहितश्र्यादिसप्तघृतमातृका : प्रीयन्ताम् न मम।।'

4 नैर्ऋत्य में वास्तोष्पति केलिये बलि – 'ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितं वास्तुपुरुषं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहिताय वास्तुपुरुषाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तुपुरुष दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मादिवास्तुमण्डलदेवतासहितः वास्तुपुरुषः प्रीयताम् न मम।।'

5. आग्नेय में योगिनियों केलिये बलि – 'ॐ योगे योगे तवस्तरां वाजे वाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।। श्रीमहा कालीमहा-लक्ष्मीमहासरस्वतीसहिता गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गन्धाद्युप चारैयुष्मानहं पूजयामि। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिताभ्यो गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिता गजाननादि चतुःषष्टियोगिन्यः दिशं रक्ष इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन श्रीमहाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिता गजाननादिचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।।'

6. ईशान्य में नवग्रहों केलिये बलि –

6-1. ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्य सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्याय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि।

भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्य दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितसूर्यः प्रीयताम् न मम।।'

6-2. 'ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा । उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमेभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। उमाग्नि रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन उमाग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितचन्द्रः प्रीयताम् न मम।।'

6-3. 'ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति। स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगलं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगलाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृत बलिदानेन स्कन्दापरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमंगलः प्रीयताम् न मम।।'

6-4. 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबुधं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि।

विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबुधाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित बुध दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन विष्णुपृथिवीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित बुधः प्रीयताम् न मम।।'

6-5. 'ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ब्रह्मविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्माविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितबृहस्पते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्माविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवता सहितबृहस्पतिः प्रीयताम् न मम।।'

6-6. 'ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वक कृतबलिदानेन इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशुक्रः प्रीयताम् न मम।।'

6-7. ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शय्योरभिस्रवन्तु नः । यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशनिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशनये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशने दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितशनिः प्रीयताम् न मम।।'

6-8. ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता । कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितराहुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितराहवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितराहो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन यमसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितराहुः प्रीयताम् न मम।।'

6-9. ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोर्मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः । चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। चित्रगुप्त ब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितकेतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन चित्रगुप्तब्रह्मारूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवता-सहितकेतुः प्रीयताम् न मम।।'

अथवा एकतन्त्र से नवग्रहों केलिये बलि –

'ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जꣳसमग्रभमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवतान्सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवतान्सांगेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवाः दिशं रक्ष इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारो वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वक कृतबलिदानेन सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।।'**

7. पंचलोकपालों केलिये बलि –

7-1. ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे । वसो मम आहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् । गणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो गणपते दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् न मम।।'**

7-2. ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । दुर्गां सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकाम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। दुर्गायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो दुर्गे दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु।**

आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन दुर्गा प्रीयताम् न मम।।'

7-3. ॐ आनो नियुद्भिः शतिनिभिरध्वरथ्ठसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातः स्वस्तिभिः सदा नः। वायुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन वायुः प्रीयताम् न मम।।'

7-4. ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसाम्बसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिशः उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। आकाशं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। आकाशाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो आकाश दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन आकाशः प्रीयताम् न मम।।'

7-5. ॐ यावाङ् कशामधुमत्यश्विना सुनृतावती। तया यज्ञम्मिमिक्षतम्। अश्विनौ सांगौ सपरिवारौ सायुधौ सशक्तिकौ एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युवामहं पूजयामि। अश्विभ्यां सांगाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो अश्विनौ दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुतम्। आयुःकर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ तुष्टिकर्तारौ निर्विघ्नकर्तारौ कल्याणकर्तारौ वरदौ भवतः। अनेन पूजनपूर्वक कृतबलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम् न मम।।'

8. असंख्यातरुद्रों केलिये बलि – 'ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। रुद्रान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। रुद्रेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो रुद्रा दिशं रक्ष बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन रुद्राः प्रीयन्ताम् न मम।।'

9. विष्णु केलिये बलि – 'इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।। विष्णुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। विष्णवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो विष्णो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन विष्णुः प्रीयताम् न मम।।

10. वायव्य में क्षेत्रपाल केलिये बलि – 'ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। क्षेत्रपालसहितानजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपालदेवतान्सांगान्सपरिवारान्सायुधान्सशक्तिकान् एभिर्गन्धाद्युपचारैर्युष्मानहं पूजयामि। क्षेत्रपालसहितेभ्योऽजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपालदेवताभ्यो सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो क्षेत्रपालसहिताजराद्येकोनपंचाशत्क्षेत्रपालदेवता दिशं रक्ष इमं बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) अभ्युदयं कुरुत। आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन गणपत्यादयः प्रीयन्ताम् न मम।।

11. सपरिवार मध्यपीठस्थप्रधानदेवता केलिये बलि – 'ॐ ब्रह्म जज्ञानंम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सुबुध्न्याऽउपमाऽअस्य

विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्वितां / गौरीतिलकमण्डलस्थ देवतासमन्वितां पीठयन्त्रावरणदेवतासहितां .....देवतां सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकाम् एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्वितायै / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्वितायै पीठयन्त्रावरणदेवतासहितायै .....देवतायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवतासमन्विते / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्विते पीठयन्त्रावरणदेवतासहिते..........दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजनपूर्वककृतबलिदानेन ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवतासमन्विता / गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतासमन्विता पीठयन्त्रावरण-देवतासहिता......देवता प्रीयताम् न मम।।'**

12. महाक्षेत्रपाल केलिये बलि (एकबांस के टोकरे में यथाशक्ति संपूर्ण बलि को रखके मध्य में चार मुंहवाला एक बड़ा दीपक को प्रज्वलित कर मण्डप के बाहर बलि दें, पहले हाथ में जल लेकर) – **'ॐ मया प्रारब्धस्य सग्रहमख......पूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिनीसहितस्य सपरिवारस्य क्षेत्रपालस्य बलिदानं करिष्ये।'** जल छोड़ें, गन्धाक्षजपुष्पादि से बलिपात्र में पूजन करें। **'ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। भूतप्रेतपिशाचडाकिनीसमन्वितं महाक्षेत्रपालं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभिर्गन्धाद्युपचारैस्त्वामहं पूजयामि। भूतप्रेतपिशाच-डाकिनीसमन्विताय महाक्षेत्रपालाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादितं बलिं समर्पयामि। भो महाक्षेत्रपाल दिशं रक्ष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य** (यजमानस्य) **अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।'** प्रार्थना करें – **'नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणावृत। पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।। आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि त्वं सर्वदा मम। मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।**

सर्वदा सर्वकार्येषु क्षेत्रपालसमन्विताः। सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।।' पुनः हाथ में जल लेकर – **'अनेन पूजन पूर्वककृतबलिदानेन भूतप्रेतपिशाचडाकिनीसमन्वितः महाक्षेत्रपालः प्रीयताम् न मम।।'** तत्पश्चात् बिना पीछे मुड़कर देखे चलने का निर्देश देकर दुर्ब्राह्मण/नाई/किसी अन्य शूद्र पुरुष द्वारा चौराहे पर रखवायें। ले जाते उस पुरुष के पीछे अपने द्वार पर्यन्त जल छिड़कते जायें व अन्त में यजमान पर भी छिड़कें – **'ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।'** सपत्नीक यजमान हाथ पैर धोकर पुनः मण्डप / यज्ञस्थल लौटें, आचमन प्राणायाम करें।

5.2.20-1 पूर्णाहुति मन्त्राः –

हाथ में जल लेकर – **'ॐ मया प्रारब्धस्य सग्रहमख......पूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं वसोर्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये।'** जल छोड़ें । आचार्य / विप्र उठकर आज्यस्थली में शेष घी को भरें और आज्यस्थाली को अग्नि पर श्रपण करें। उसके बाद एकसाथ स्रुक् और स्रुवा को ग्रहण कर पहले जैसे अधोमुख कर तपायें व सम्मार्जनकुशाओं से पूर्ववत् संस्कार कर पश्चिम दिशा में रखें। तदनन्तर आज्यस्थाली को उठाकर पवित्रियों / हथेली से उत्पवन करके आज्य आवेक्षण करें। यदि अपद्रव्य हैं तो उनको हटायें। प्रणीता पात्र में पवित्री को रखें। उसके बाद स्रुचि के मध्य में स्रुवा से चार बार घी डालें व उसके ऊपर मौली बान्धें हुये नारियल को रखें। गन्धाक्षत पुष्पादि से उसकी पूजाकर हल्दी, कुंकुम, पुष्पमाला आदि से अलंकृत करें। अब उसके ऊपर स्रुवा को अधोमुख कर धारण करें और सपत्नीक यजमान बैठकर अथवा खड़े होकर –

'ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ2ऽउदारदुपाꣳशुना सममृतत्त्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवासानाममृतस्य नाभिः।।1।।
वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुःश्रृंगोऽअवमीद् गौरऽएतत्।।2।।
चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ2ऽआविवेश।।3।।
त्रिधा हितं पाणिभिर्गृह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकꣳसूर्यऽएकं जजान वेनादेकꣳस्वधया निष्टृतक्षुः।।4।।
एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्यऽआसीत्।।5।।
समरूक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एतेऽअर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाऽइव क्षिपणोरीषमाणाः।।6।।
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानाः।।7।।
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्षति जातवेदाः।।8।।
कन्याऽइव वहतुमेतवाऽउ अंज्यंजानाऽअभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽअभि तत्पवन्ते।।9।।
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।10।।
धामन्ते विश्वं भवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्तऽऊर्मिम्।।11।।
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्मणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वन्तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।12।।
मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम् । कविसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।13 ।।
पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसव समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्नवं वर्द्धयस्व सत्त्या सन्तु यजमानस्य कामाः ।।14 ।।
पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जं शतक्रतो स्वाहा ।।15 ।।
ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षञ्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमतामदः। सप्तसꣳसदोऽअष्टमीभूत साधनी। सकामाँ2ऽअध्वनस्कुरुसं

ज्ञानमस्तु मेऽमुना ।।16 ।। इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम ।।'

इति यजमानस्त्यजेत् । इति पूर्णाहुतिः ।।

5.2.20-2 वसोर्धारा होममन्त्राः - (प्रथम पक्ष के मन्त्रसमूह में 9 मन्त्र हैं)

'ॐ समास्त्वाग्नऽऋतवो वर्धयन्तु संवत्सराऽऋषयो यानि सत्या। सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाऽआ भाहि प्रदिशश्चतस्रः।।1।। सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय। मा च रिषदुपसत्ता तेऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये।।2।। त्वामग्ने वृणुते ब्राह्मणाऽइमे शिवोऽअग्ने संवरणे भवानः। सपत्नहा नोऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्य प्रयच्छन्।।3।। इहैवाग्रेऽअधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन् पूर्वचितो निकारिणः। क्षत्रमग्रे सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां तेऽअनिष्टतः।।4।। क्षत्रेणाग्रे स्वायुः सꣳरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। सजातानां मध्यमस्थाऽएधि राज्ञामग्रे विहव्यो दीदिहीह।।5।। अति निहोऽतिस्रिधोऽअत्यचितिमत्यरातिमग्ने। विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्यꣳसह वीराꣳरयिं दाः।।6।। अनाधृष्यो जातवेदाऽअनिष्टृतो विराडग्रे क्षत्रभृद् दीदिहीह। विश्वाऽआशाः प्रमुंचन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे।।7।। बृहस्पते सवितर्बोधयैनꣳसꣳशितं चित्सन्तराꣳसꣳशिशाधि।। वर्धयैनं महते सौभगाय विश्वऽएनमनु मदन्तु देवाः।। 8।। अमुत्र भूयादध वद्यमानस्य बृहस्पतेऽअभिशस्तेरमुंचः। प्रत्यैहि तामश्विना मृत्युमस्माद् देवानामग्रे भिषजा शचीभिः।।9।।'

अथवा (द्वितीय पक्ष के मन्त्रसमूह में 8 मन्त्र हैं)

'ॐ विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचु यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि। योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा।।1।। दिवो वा विष्णऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽउरोरन्तरिक्षात्। उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वाप्रपच्छ दक्षिणादेत सव्याद्विष्णवे त्वा।।2।। प्र तद्विष्णुस्तव ते वीर्येण भगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे वधिक्षियनित भुवनानि विश्वा।।3।। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि

विष्णवे त्वा।।4।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसाङ्ग्रीवाऽपि कृन्तामि। वहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद।।5।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।भवा वाजस्य संगथे।।6।। सन्ते पयाꣳसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानोऽअमृताय सोम दिवि श्रवाꣳस्युत्तमानि धिष्व।।7।। आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरꣳशुभिः। भवां नः सप्रथस्तमः सखां वृधे।।8।।'

अथवा (तृतीय पक्ष के मन्त्रसमूह में 10 मन्त्र हैं)

'ॐ सप्त तेऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा।।1।। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिमाँ2श्च। शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः।।2।। ईदृङ्चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिदृङ् च। मितश्च सम्मितश्च सभराः।।3।। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारय।।4।। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुशेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः।।5।। ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन। मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्।।6।। स्तवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।7।। इन्द्रन्दैववीर्विशो मरुतोऽअभवन्नयथेन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽअनुवर्त्मानोऽअभवन्। एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मनो भवन्तु।।8।। इमꣳस्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्रे सरीरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व।।9।। घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुवधामावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।10।।' (तीनों ही पक्ष के अन्त में कुछ विद्वानों के मत में रुद्री का चमक अध्याय, अग्निसूक्त, विष्णुसूक्त, शमरुद्री और इन्दुसूक्त का पाठ किया जाता है।) किन्तु सभी के मत में इस मन्त्र का पाठ अन्त में अवश्य करना है – 'वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। स्वाहा।। इदमग्नये वैश्वानराय न मम।।'

5.2.20-3 पूर्णपात्रदानं -

ब्रह्मा को पूर्णपात्र का दान करने प्रणीतोदक को हाथ में लेकर संकल्प करें -

'मया कृतस्य सग्रहमख......पूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणकं तुभमहं संप्रददे'

संकल्पजल, सदक्षिणा पूर्णपात्र को ग्रहण करने केलिये निवेदन कर उन्हें दें - **'प्रतिगृह्यताम्'**, ब्रह्मा ग्रहण करते हुये कहें - **'प्रतिगृह्णामि, द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु'**। तदनन्तर ब्रह्मग्रन्थि को खोलें।

5.2.21-1 भस्म धारणम् -

हवनकुण्ड / स्थण्डिल के ईशान कोण से स्रुवा से भस्म को लेकर प्रथम अपने शरीर में फिर यजमान के शरीर के अंगों पर क्रमशः भस्म लेपन करें । ललाट पर - **'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः'**, गले में - **'कश्यपस्य त्र्यायुषम्'**, दाहिने बाहुमूल में - **'यद् देवेषु त्र्यायुषम्'**, हृदय पर - **'तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्'**, **'श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।'**

5.2.21-2 संस्रवप्राशनादिकम् -

संस्रव प्राशन कर कुशपवित्रों से मार्जन करें। तदनन्तर अग्नि में पवित्रों का प्रक्षेप कर पवित्रप्रतिपत्ति कर्म करें।

5.2.21-3 प्रणीताविमोकादिः -

विप्र अग्नि के पश्चिम भाग में जाकर प्रणीता का विमोक करें और उपयमन कुशाओं से यजमान पर मार्जन करें -

'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्'।

तत्पश्चात् उन उनयमनकुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप करें।

5.2.22-1 अग्नेः प्रदक्षिणा -

'ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।1।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।2।।

5.2.22-2 गोदानादिकम् - आचार्य केलिये गोदान और प्रधानपीठादि का दान दें; ब्रह्मा केलिये बछड़ा, घोड़ा, रथ/पालकी का दान दें और अन्य ब्राह्मणों केलिये छायापात्र सहित यथाशक्ति वस्त्रादि सहित दक्षिणा दान दें।

5.2.23-1 श्रेय:सम्पादनम् -

अब वरण किये गये समस्त ब्राह्मणों सहित आचार्य उत्तराभिमुख बैठकर दाहिने हाथ में जल लेकर यजमान केलिये श्रेय:संपादन का संकल्प करें - **'कृतस्य सग्रहमख.....पूजनाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ततसंपूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये'**। और यजमान के दाहिने हाथ में जल दें - **'ॐ शिवाः आपः सन्तु'**। पुष्पादि को क्रमशः दें। सर्वप्रथम पुष्प - **'ॐ सौमनस्यमस्तु'**, गन्ध - **'ॐ गन्धाः पान्तु'**, अक्षत - **'ॐ अक्षताः पान्तु'**। आचार्य यजमान के हाथ पर तीन बार जल घुमाकर जमीन पर छोड़ें - **'ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु'**। पुनः आचार्य अपने हाथ में जल गन्धाक्षतपुष्प और फल ग्रहण कर - **'भवन्नियोगेन मया एभिर्ब्राह्मणैः सह ......पूजनाख्यकर्मणि यत्कृतमाचार्यत्वं यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यः कृतो जपः पाठः होमश्च तत्तत्कर्मभ्यो यदुत्पन्नं श्रेयः तत्तुभ्यं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयसी भव'**। कर्मारम्भ काल में वरणी के साथ दिये गये अक्षत और सुपारी सहित जलादि को आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान के हाथ में दें। यजमान स्वीकार करते हुये कहे - **'भवामि'**। जल पीकर शेष को रख लें।

5.2.23-2 अथ अभिषेकः -

अविधुर चार विप्र एक पात्र में प्रधानकलश एवं अन्यकलशों के जल को मिलाकर दूर्वा, कुशा व पंचपल्लवों से सपरिवार यजमान को पूर्वाभिमुख बिठाकर निम्न मन्त्रों से अभिषेक करें - (सर्वप्रथम नवग्रह के मन्त्रों से -)

'ॐ आकृष्णेन (आसत्येन - कृष्णयजुर्वेद) **रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि**

पश्यन्।। (– सूर्य),

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽ अमृतम्मधु।। – (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद)– आप्यायस्व स मे तु ते। विश्वतः सोम वृष्णियं। भवा वाजस्यसंगथे।। (– चन्द्र),

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।। (– मंगल),

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयञ्च। अस्मिन्सधास्थेऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। (– शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद –) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्य नमिष्ठा पूर्ते संसृजे धाम यं च। पुनः कृण्वंस्त्वा पितरं युवानमन्वातांसि त्वसि नत्नु मे तम्।। (– बुध),

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो आर्हद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसक्रत प्रजाततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम्।। (– गुरु),

ॐ शुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्तेऽअन्यद्विषु रूपेऽहनि द्यौरिवासि। विश्वा हि मायाऽवसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु। (– शुक्र),

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। – (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) – ॐ शमग्निरग्निभिस्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वा त्वरपा अपस्स्रिधः।। (– शनि),

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। (– राहु),

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।' (– केतु)। (अब निम्न 13 वैदिक मन्त्रों से –)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।1।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।2।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽअश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनौर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्म वर्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भेषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽअभिषिंचामि।।3।। शिरो

मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्।।4।। जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदाऽअंगुलीरंगानि मित्रं मे सहः।।5।। बाहू मे बलमिन्द्रियꣳहस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।6।। पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽअंगानि सर्वतः।।7।। नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽअपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जंघाभ्यां धम्मोऽअस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।8।। प्रतिक्षेत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतितिष्ठामि गोषु। प्रत्यंगेषु प्रतितिष्ठाम्यात्मन् प्रतिप्राणेषु प्रतितिष्ठामि पृष्ठे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे।।9।। त्रयो देवाऽएकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः। बृहस्पति पुरोहितो देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।10।। प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीया सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽअनुवाक्याभिः पुरोऽअनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्धयन्तु।।11।। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।।12।। त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंःपाहि श्रृणुधीः गिरः। रक्षा तोकमुत्मना।।13।। (तदनन्तर वैदिक मार्जन मन्त्रों से –) 'ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः।1। ॐ ता न ऊर्जे दधातन।2। ॐ महेरणाय चक्षसे।3। ॐ यो वः शिवतमो रसः।4। ॐ तस्य भ्राजयते ह नः।5। ॐ उशतीरिव मातरः।6। ॐ तस्मा अरंग मामवः।7। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ।8। ॐ आपो जनयथा च नः।9। (तत्पश्चात् वैदिक शान्त्यादि मन्त्रों से –) ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।1।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽअभयं नः पशुभ्यः।।2।। पुनन्तु मा देवजना पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।3।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वातः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।।4।। पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽअभवत्सरित्।।5।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव।।6।।' (पौराणिक मार्जनमन्त्रों से –) सुरास्त्वामभिसिंचन्तु ब्रह्मविष्णु

महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथः तथा संकर्षणो विभुः।1। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते। अखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।2। वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।3। कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।4। एतास्त्वामभिसिंचन्तु देवपत्न्यैः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।5। ग्रहास्त्वामभिसिंचन्तु राहुःकेतुश्च पूजिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।6। ऋषयो मुनयो गावा देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्यश्चाप्सरसां गणाः।7। अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः।8। एते त्वामभिसिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये। सिद्धिर्भवतु ते देव यशो वीर्यं च सर्वदा।9। अमृताभिषेकोऽस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

5.2.24-1 अवभृथस्नानं -

आचार्यादि ब्राह्मणों सहित यजमान नदी, तालाब आदि अथवा स्वगृह में यथासंभव प्रधानकलश के जल को थोड़ा मिश्रण कर स्नान करें।

5.2.24-2 क्षमाप्रार्थना -

'पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः। त्राहि मां (देव) **देवि** (चण्डेश) **चण्डेशि सर्वपापहरा भव।।1।। आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व** (परमेश्वर) **परमेश्वरि।।2।। यत्पूजितं मया** (देव) **देवि भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्। तत्सर्वं प्रतिगृह्णन्तु दुर्गाद्याः सर्वदेवताः।।3।। मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं** (सुरेश्वर) **सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया** (देव) **देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।4।। जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः।।5।। अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व** (परमेश्वर) **परमेश्वरि।।6।। अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व** (परमेश्वर) **परमेश्वरि।।7।।** (कर्म के देवता के अनुसार अलग-अलग क्षमा प्रार्थना का पाठ करे)।

5.2.24-3 देवादिसहितदेवी(कर्मदेवता)**विसजर्नम्** -

'**ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।1।। यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्व वीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।2।। समुद्रं गच्छ स्वाहा अन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽअहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽअग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हृदि गच्छ स्वाहा दिवं ते धूमो गच्छतु स्वज्र्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।3।।**' तथा-(यदि कर्मदेवता देव हो तो 'देवि' के स्थान में 'देव' पाठ करें एवं समस्त स्त्रीलिंग के शब्दों को पुल्लिंग में विपरिणाम कर पाठ करें)। '**उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च। कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।1।। दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे।।2।। पूजामिमां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्।।3।। यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।4।। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठे स्वस्थाने परमेश्वरि। यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन।।5।। प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।6।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।7।। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।।**'

5.2.24-4 यजमान के तिलक, रक्षाबन्धन व आशीर्वादः

(कुछ पद्धति में 'तिलक' और 'रक्षाबन्धन' कर्म के आरम्भ में ही किया जाता है। अतः क्षेत्रीय प्रथा के अनुसार ही इन दोनों कर्मों को करें)।

अथ तिलकः –

'आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमविदधात्पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।'

तिलक पर अक्षत लगायें –

'येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्। तांस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्।।'

अथ रक्षाबन्धनम् –

'ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्माऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।'

अथ आशीर्वादः –

'ॐ पुनस्त्वा आदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्राह्मणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।1।। दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।2।। विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्रद्धस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वामश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारपऽएधते गृहे।।3।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वास्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।4।। श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमविदधात् पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।5।। शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा। ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः।।6।। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।7।। मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।8।। आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।9।।'

5.2.24-5 यजमानपत्नी के रक्षाबन्धन व आशीर्वादः -

अथ रक्षाबन्धनम् -

'ॐ पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके पृष्ठेऽधिरोचने दिवः।।'

अथ आशीर्वादः -

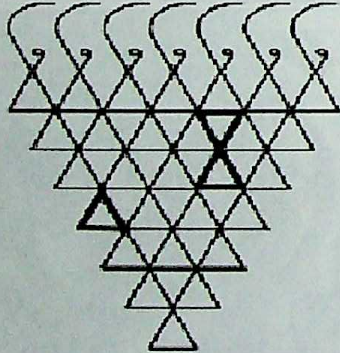
'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः सुखदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः। विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्टाभ्यस्पाहि मनोरश्वासि।।1।। यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षतिं मयि गृह्णाम्यक्षतिम्।।2।। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पक्त्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।।3।।'

5.2-25 ब्राह्मण भोजनम्।

।। इति होम विधिः।।

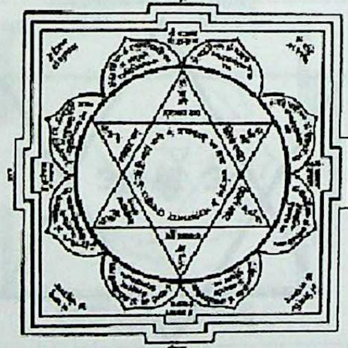
चित्र संख्या-1

श्रीसरस्वतीयन्त्रम् -1



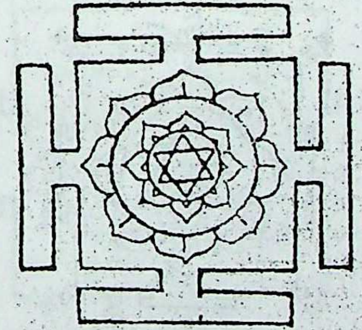
चित्र संख्या-2

श्रीसरस्वतीयन्त्रम् -2

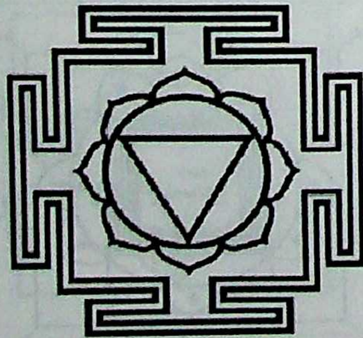


चित्र संख्या-3

श्रीभुवनेश्वरीयन्त्रम्

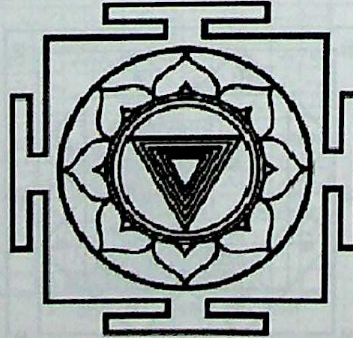


श्रीशिवयन्त्रम् -1



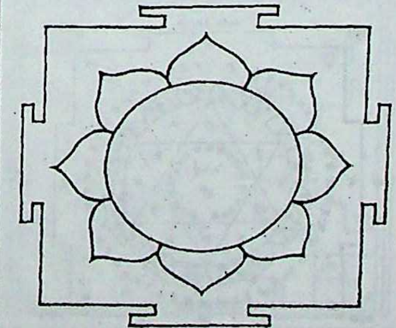
चित्र संख्या-4

श्रीशिवयन्त्रम् -2



चित्र संख्या-5

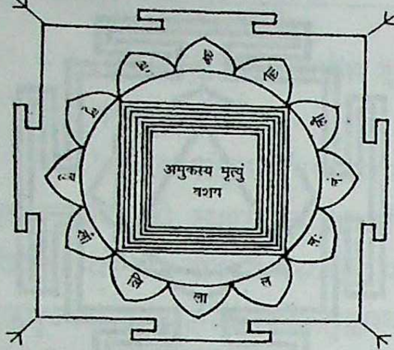
श्रीमृत्युञ्जययन्त्रम् -1



चित्र संख्या-6

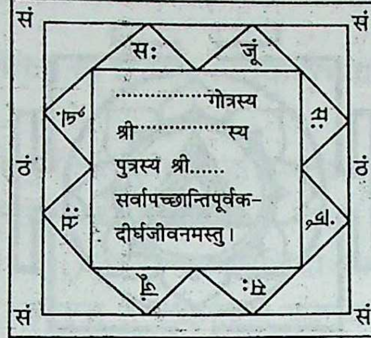
चित्र संख्या-7

श्रीमृत्युञ्जयाख्यंमृत्युदूरकरयन्त्रं -2



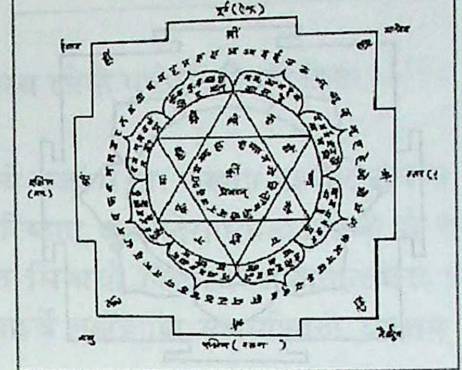
चित्र संख्या-8

श्रीमहामृत्युञ्जयकवचयन्त्रम्

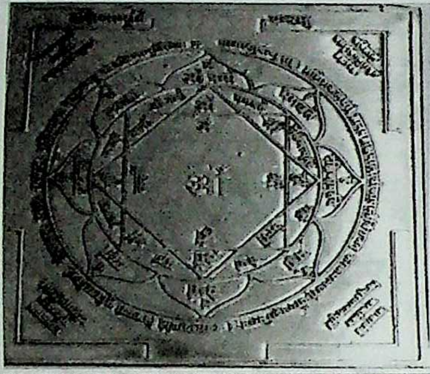


चित्र संख्या-9

श्रीगायत्रीयन्त्रम्

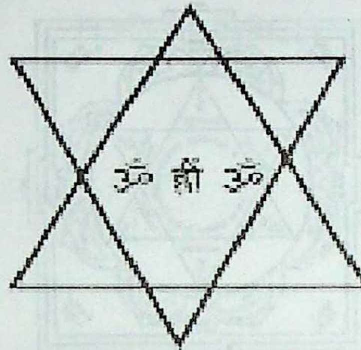


श्रीदक्षिणामूर्तियन्त्रम्



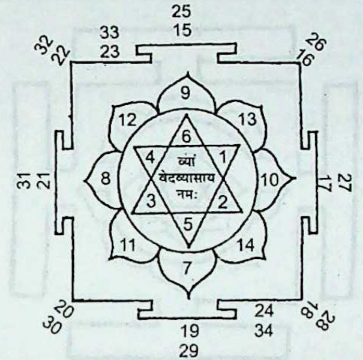
चित्र संख्या-10

श्रीचिन्तामणियन्त्रम्



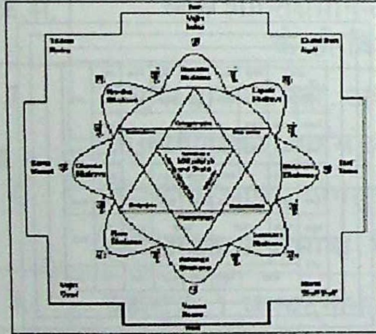
चित्र संख्या-11

श्रीवेदव्यासयन्त्रम्

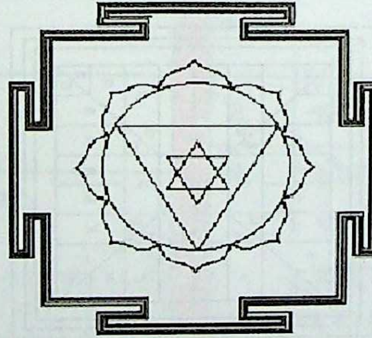


चित्र संख्या-12

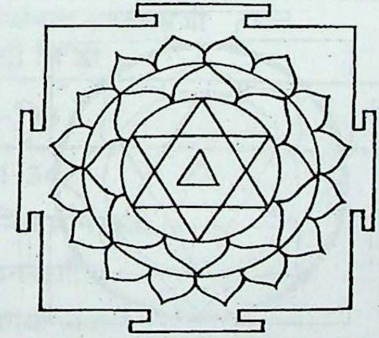
चित्र संख्या-13

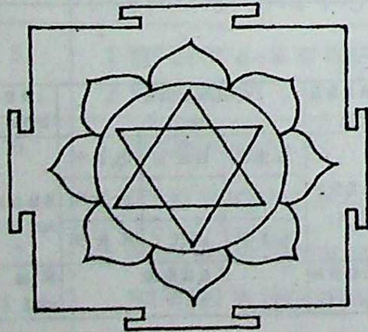


चित्र संख्या-14

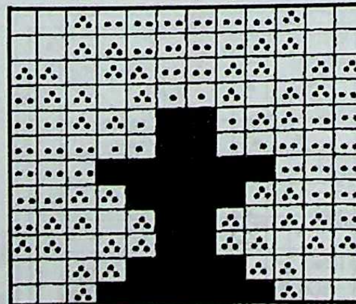


चित्र संख्या-15

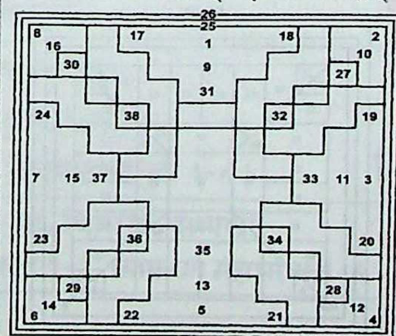




चित्र संख्या-16



चित्र संख्या-17



चित्र संख्या-18

चित्र संख्या-7

चित्र संख्या-19

श्रीकूर्मचक्रम्

8. ईशान ल क्ष	1. पूर्व क ख ग घ ङ			2. आग्नेय च छ ज झ ञ
7. उत्तर श ष स ह	16. अं अः	9. अ आ	10. इ ई	3. दक्षिण ट ठ ड ढ ण
	15. ओ औ		11. उ ऊ	
	14. ए ऐ	13. लृ लॄ	12. ऋ ॠ	
6. वायव्य य व र	5. पश्चिम प फ ब भ म			4. नैर्ऋत्य त थ द ध न

चित्र संख्या-20

विश्वकर्मप्रकाशोक्तसरजस्कं वास्तुमण्डलम् 64 पद

ई.8 पू.1 2 द.3 नै.4 प.5 वा.6

चित्र संख्या-21

विश्वकर्मप्रकाशोक्तसरजस्कं वास्तुमण्डलम् 64 पद

पूर्व

उत्तर दक्षिण

पश्चिम

यजुर्वेदीय वास्तुमण्डल 81 पद 77 देवता

पूर्व

उत्तर दक्षिण

पश्चिम

चित्र संख्या-22

यजुर्वेदीय वास्तुमण्डल 81 पद 77 देवता

पूर्व

उत्तर दक्षिण

पश्चिम

चित्र संख्या-23

हवनकुण्डस्थ यन्त्रम्/चक्रम्

चित्र संख्या-24

क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी
1.	लघुसिद्धान्तकौमुदी, अर्थसंग्रह, सांख्यकारिका, तर्कसंग्रह।
2.	वेदान्तपरिभाषा, योगसूत्र, मानमेयोदय, मानमनोहर, तर्कभाषा, शिवसूत्र।
3.	ब्रह्मसूत्रं, 1 भगवद्गीता 1-8।
4.	1 भगवद्गीता 9-10, 1 ईश से छान्दोग्य 1-5।
5.	1 छान्दोग्य 6-8 व बृहदारण्यक, 2 भगवद्गीता 1-6।
6.	2 भगवद्गीता 7-18, 2 ईश से मुण्डक तक।
7.	2 माण्डूक्य से ऐतरेय तक व अंग्रेजी में छान्दोग्य व बृहदारण्यक 1-5 तक।

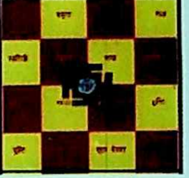
क्र.सं.	स्वा. शान्तिधर्मानन्द सरस्वतीजी के डी वि डी
8.	श्रीमद्भागवतम् 1-23।
9.	श्रीमद्भागवतम् 24-34, भागवतकथा- शान्तिधर्मानन्दजी, ठाकुरजी, काशिकानन्दजी, रामानंदजी व विश्वात्मानंदजी।
10.	भागवतकथा-पराशरजी, पंचदशी, सिद्धान्तबिन्दु व शिवदृष्टिः 1-7।
11.	शिवदृष्टिः- 8, प्रवचनसंग्रहः, उपदेशसाहस्री, त्रिपुरोपनिषद्, षड्दर्शनसूत्रपाठः, सिद्धान्तकौमुदी 1-4।
12.	सिद्धान्तकौमुदी 5-10, चित्सुखी-सम्पूर्ण, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली 1-2, व्याकरण महाभाष्यं 1-6
13.	अद्वैतासिद्धिः

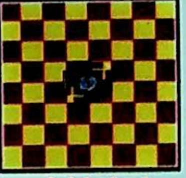

नवग्रहेभ्यो नमः

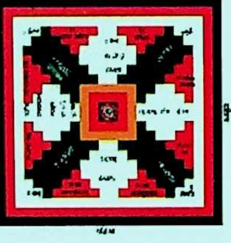

सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः

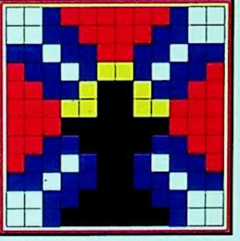


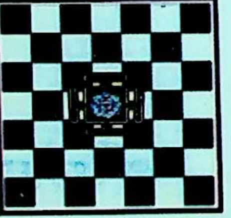



षोडशमातृकाभ्यो नमः


चतुःषष्ठीयोगिनीभ्यो नमः

सर्वतोभद्रमण्डलम्


गौरीतिलकमण्डलम् = एकलिंगतोभद्रम्


क्षेत्रपालेभ्यो नमः


वास्तुपुरुषेभ्यो नमः
